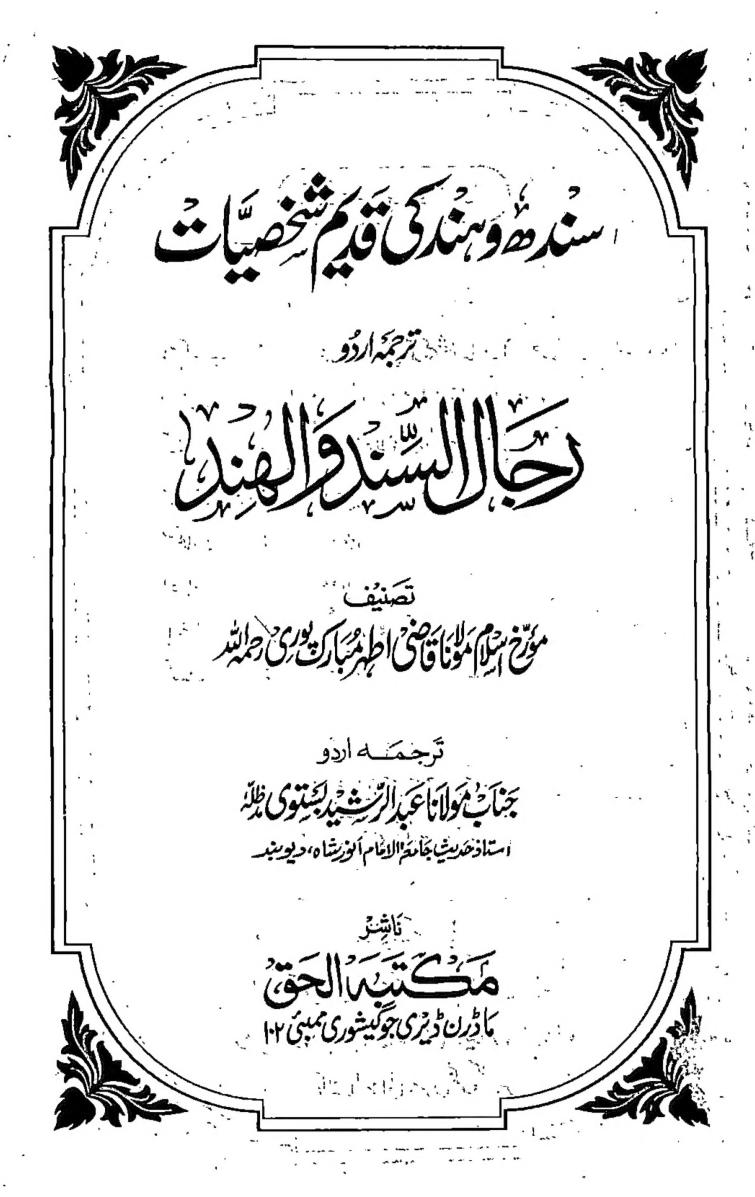
سنره وسناري فالمشخصيات

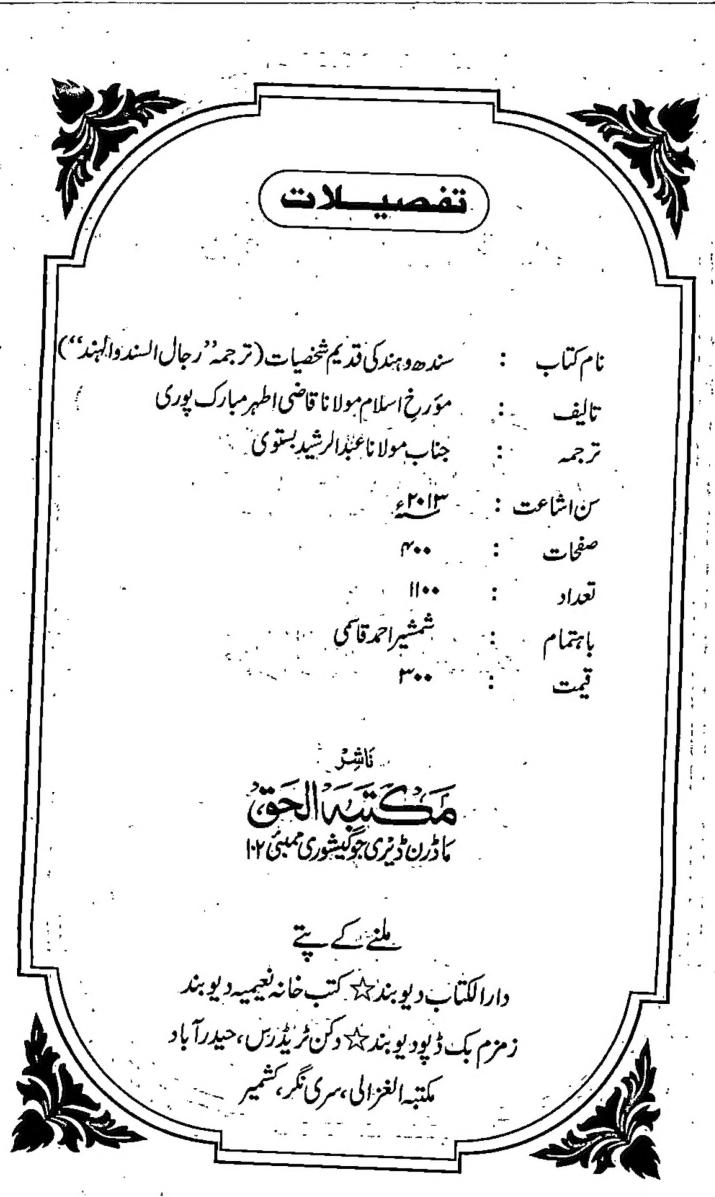
ترجم اردو

السير في المنافعة الم

تصنیف مورج مرا الراضی اطرار الراضی المرا ا

مُخْتُ سَبِينَ الْحُونُ مُ





(فهرت مضامین

. 5. √ 2.

='

| * | عوان | عنوان صفح |
|---|--------------------------|--|
| | | • |
| ومل تباب ٢٣ | • اینے موضوع برکال | יולוב יולוב |
| M | • تشكروامتان | • اظهارمسرت |
| | • مقدمه کتاب | • حرف گفتگو |
| ميات کيا | و قابل ذكراموروخصوه | • تاضى اطهر مبارك بورئ ١٧ |
| را در | • سنده ومندکی اجمیت | • پيراش در |
| ۵۳. | • الحور (اروژه) | PZ James (1) |
| ۵۵ | • اچ(اوچے) | ٥ تتون مطالعه |
| ٥٥ | • بدیم | • مضمون توليي كي ابتداء |
| 64 | • بروس (مجروج) | • زول شعروض |
| A4 | i- 15 al | • سيني زندلي كا آغاز |
| ۵۷ | • بوقان | • عروس البلاد مبلي ميس |
| ۵۷ | • پيرون | 1 |
| ۵۷ | • بيلمان(عليمان) | • عربي لصانيف |
| ۵۸ | ه باند(تقانه) | • جفيق وتعليق |
| 69 | • داور | • المات دعاء |
| ۵۹. | | مارك كوشش |
| 4. | ه رجبل | • ای ہے بری خوتی ہوئی |
| , 4 j. , | ه براندیپ(انکا) | • وعاء المنظم ال |
| YK . | • سفاله (شوياره) - سن | • تعارف |
| | و منده | • امت كافريضهادا كرديا |

| صنحہ | عنوان | صفحه | عنوان |
|------|--|--------------|--------------------|
| ۲۸ | ه معبر (کارومنڈل) | ٧٣ | • سندان (سنجان) |
| ,۷۸ | • مکران | 77 | • سومنات |
| ٠.٨٠ | ه ملتان | 77 | • سيستان |
| ٨٢ | ه مالابار | 44 | • سندا پور (گوا) |
| ٨٢ | . منڈل | . YZ | • صيمور(پيمور) |
| ٨٢ | • منصوره | 4∠ | • "قامېل |
| ۸۳ | • شهرواله (نهلواژه) | ۸۲ | • تصدار (قردار) |
| | باب الف | ۸۲ | • تفص |
| ۸۳۰ | | 49 | • تمار (تامرون) |
| 94 | • احرابن سندهی بغدادی | 49 | • قندهار(گندهارا) |
| 94 | سلطان مالدیپ احمرشنورازه | ۷٠ | • قندانيل |
| 9.4 | • احمد بن سندهی باغی مرازی | 41 | • قنوج |
| 00 | • اخمه بن سعید مالکی بهدانی | ۷۱ | ه قیقان (کیگان) |
| 1•• | • احمدا بن عبداللدز المديبلي | ۳2. | • رکسن (کچھ) |
| [+] | • احد بن قاسم معدّل | _ ∠ ٣ | • تشمير |
| 1•1 | • احمد بن محمد ابو بكر | 45 | • کلہ |
| 1+1 | • احمد بن محمد کرابیسی مندی | کار | • کلاه |
| 1+1 | • حافظ احمد بن محمد زامد | ۷۳ | • كمكم (كوكن) |
| ۱۰۳۰ | • احمد بن محمد بن حسين ابوالفوارس. | ۷۵ | • كنبايت (كممبايت) |
| 1+4 | • احمد قاضی بن صالح قیمی | 40 | • كولم (ٹراونكور) |
| 1+1 | • قارى احمد بن بارون ديبلى | 44 | • لا بمور |
| m | • قاضى أحمد بن نصر بن حسين | 4 | • محفوظه |
| | • آنگوہندی | 44 | • محل ديپ (مالديپ) |

| صفحہ | عنوان . | صفحه | عنوان |
|--------|---|---------|--|
| | داب ښاب | IIr | • ابان بن محداخباری |
| 112 | • باجهر مندي | IIY | 🛭 ایرانیم بن علی بن سندهی |
| 12 | باذروغوغیا، مندی رومی | IIA . | ابراہیم بن السندی بن شا کہ |
| 12 | • بازیگر، مندی بغدادی | 114 | ابراہیم بن عبدالسلام |
| ITA | • با کھر ہندی | IM | ابراہیم بن عبداللہ |
| IPA | • بختیار بن عبدالله، فصاد | · . 179 | • ابراہیم بن محد بن ابراہیم |
| IPA 1 | • بختیار بن عبداللدالزابد | 119 | • احيد بن حسين بن على |
| 1179 : | بشرین داؤدین بزید بن حائم | II; | • شاه سندھ:ارمیل سومره |
| 1179 | • طبیب مندی بهله ط در من | 1174 | • ار یکل مندی . |
| 114. | • بیرطن مندی نیمنی مداری این | | اسحاق بدرالدین بن منهاج الدیم |
| 120 | ا ۱۵ مران میر باری از م | 1 | • حاتم باميان:اسد |
| ותר | تاج الدین د الوی ملکه منده: تاری بنت دود | 1 | • اسلم بن سندهی |
| וריר | ت منته مده. مارن بت دود • تقی الذین بن محموداددهی | IM | • اسلامی دیبلی • |
| . וייו | • هندی طبیب: تو تشتل • هندی طبیب: تو تشتل | irr | اساعیل لا ہوری |
| . 11 1 | باب جيم | Imm | • اساعیل بن سندهی بغدادی |
| الدلد | • ہندی طبیب:جارا کا • | Imm | • اساعیل ملتانی ، زاہد |
| ۱۳۵ | • جمعر مندی نجوی | Imm | • اساعیل بن علی ،الوری سندهی |
| ira | • نجومی وطبیب: مندی جباری | ۱۳۵ | • اساعیل بن عیسی بن فرج سندهم |
| ۱۳۵ | جعفر بن خطاب قصداری | 1170 | • اساعیل بن محمد بن رجاء سندهی کشوندهی استندهی کشوندهای میشود می میشود می میشود می میشود می میشود می میشود می می میشود می |
| וויץ | جعفر بن محمد سرند بي مبندي | I IMY | • الملح بن بيارسندهي |
| ורץ | و حاكم ماتان جنم براشيبان باطني | 1 | • اندی ہندی |
| | و حاکم مکران جمال بن محمد بن | | • حاكم مالديب: أيم ملمنجا |

| صفحہ | عنوان | صفحه | بعنوان |
|-------|--|------|--|
| 121 | • شاه سنده جمید سومره | IM | • جمال الدين اوثني سندهي |
| 141 | • حيدان سندهيه | · IM | • خطيب جمال الدين بإنسوى |
| , | باب خاء | وثاا | • شاه سنده: چنیر سومره |
| 121 | • خاطف مندى افرنجى | 1179 | • جودر مندي |
| 121 | • خلف بن سالم سندهى بغدادى | 10+ | • شاه الور كابھا كَى: حِيمونا امر انى |
| . 122 | خلف بن محمد دیبلی بغدادی | | ب اب ح اء |
| 144 | • خمارةندهارىي | 107 | • حبابه سندهیه |
| 149 | • والدومحمد بن الحنفية : خوله سندهيه | 100 | • خبیش بن سندهی بغدادی |
| 149 | • والى سندھ:خيرا سومره | 100 | • حسام الدين ملتاني |
| ٠. | باب دال | 1000 | • حامم بامیان جسن |
| ΙΛ÷ | • داؤر بن محمد بن ابومعشر | 161 | حسن بن ابوائحسن بدا يونى |
| ۱۸۰. | والى ملتان: داؤ د بن نصر بن حميد | ۱۵۳ | • حسن بن حامد ديبلي بغدادي |
| IAT | داو داصغر: فرزندداو دا کبر | ייםו | • حسن بن محمد صغانی |
| IAT | • فرمان روائے سندھ: دادسومرہ | וארי | • حسن بن صالح بن ببله |
| I۸۳ | • دابرمندی | 140 | • حسن بن علی بن حسن |
| I۸۳ | دانائے ہند:ہندی خراسانی | ואוי | حسن بن محمد سندهی کوفی |
| IAM | • د مېک مېندې | arı | حسین بن محد بن ابومعشر شجیح |
| ۱۸۳ | • فرمان روائے سندھ: | IÀA | • حسين بن محمد بن اسد |
| ۵۸۱ | سلطان مالدیپ: دنی گلمنجا | 14,4 | • شاه کران:حسین بن معدان |
| ۱۸۵ | • سلطان مالديب: دې کلمنجا | 144 | • شاه مند: حلینهٔ بن دامر |
| ۱۸۵ | و رسیلی | PYI | • حمزه منصوری |
| | باب ذال | 179 | • سلطان التاركين: حميد الدين |
| YAI | ذوبان زابلىتانى بىندى | 14. | • والى ملتان: ﷺ حميد باطنى ———————————————————————————————————— |

.

•

__

| | _ | |
|---|---|--|
| - | e | |
| e | | |
| | | |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|-------------|--|---------------|--|
| r- ∠ | • سندهی خواتیمی بغدادی | | باب راء |
| 1.4 | • سندهى بن ابوبارون | IAZ | • دابعه بنت کعب قزدار بی |
| ۲۰۸ | • سندهي مولي حسين خادم | ں ۱۸۷ | • راجه بل بن سومر شيخ باطني سنده |
| r•A | سندهی بن آبان بغدادی | IAA | • راجامندی محدث |
| 1.9 | • مولى ابوجعفر منصور : | IVÝ | • راحة البندي |
| riô | • سندهی بنشاس بسری | IAA | • رائے ہندی |
| ۲۱۵ | • سندهی بن صدقه شاعر | IAA | • حاتم سندھ: دائے |
| riy | • سندهی بن عبده میکبی رازی | 1/19 | • رباح منصوري |
| , MA | • سندهی بن ملی ور اق بغدا دی | 1/19 | • رتن بن عبدالله مندی |
| *** | • سندهی بن یجی حرشی بغدادی | 194. | • رجاء بن سندهی نیسا پوری |
| ۲۲۲ | • سنگھار بن بھونگر بن سومرہ: | 19) | • رشین مندی خراسانی |
| ۲۲۳ | • شاه سنده : سومره اول | 195 | • روماہندیہ |
| | • سهل بن عبدالرحمٰن سندهی راز ک | | باب زاء |
| | مهیل بن ذکوان ، ابوسندهی مکی | 192 | • زكريابن محد بهاءالدين ملتاني |
| rra . | • سيبويه بن اساعيل قز داري كي | | . نیس جاب |
| | • سابوقه ديبلي | , IPI , | حاتم مالا بار: سامري |
| | • سیروک مندی | [*[*] | • سامور مندی |
| ۲۲۸ | • سیف الملوک اوراس کے | 1. | • بسرياتک مندي |
| | باب شین | ۲۰۵ . | • مسروتامندی |
| ۲۳۰ | • ہندوستانی طبیب شاناق | .1.0 | • سسهندی |
| ۲۳۲ | • شرف الدين ديبال پوري | نی ۲۰۲ | • سعد بن عبدالله سرند بي اصبها |
| rrr , | • تحكيم شرف الدين ملتاني | | • ملافه شدهیه |
| *** | • کیم ششر ذہندی | ŗ.Ż | ساق زوطی مندی بصری |

--:

į

Z,

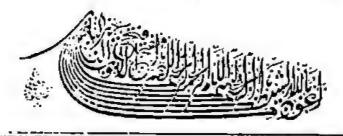
| منفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|--------------|---|--------|------------------------------------|
| 1179 | و عبدالصمد بن عبدالرحمٰن لا مورى | 777 | • شعیب بن محدد یبلی مصری |
| 44 | عبرالعزيز بن حميد الدين | سسه | شیر بامیان دول |
| TITA | امام اوزاعی عیدالرحمٰن | 444 | • شيرباميان ثاني |
| rar | عبدالرحل بن سندهی | | باب صاد |
| ram | عثان سندهی بغدادی | ۲۳۳ | • حاكم سنده:صاد |
| rom | علی بن احمد بن محمد دیبلی | ساسه | • صالح بن ببله مندى بغدادى |
| ۲۵۸ | • على بن اساعيل شيعى سندهى | የፖለ (| • حاكم اجودهن: قاضى صدر الدين |
| ran | • علی بن بنان بن سندهی | rm | • والى سندھ:صمه |
| 109 | على بن عبدالله سندهى بغدادى | 114 | • صکه بندی |
| ۲۲+ | • على بن ابومنذ رغمر بن عبدالله | ۲۳• | • صخبل مندي |
| 44+ | على بن عمر و بن حكم لا مورى | | باب عین |
| 14+ | على بن محمد سندهى كوفى | ۲۳۲ | • عباس بن سندهی " |
| 141 | على بن موسى ديبلى بغدادى | trr | • عبد بن حميد بن نفر سيدهي |
| 141 | • سلطان مالديپ علي | tra | • عبيد بن باب سندهي بعرى |
| 141 | • سلطان الديب على منجا | - 110 | • عبدالله بن جعفر منصوري |
| KAI | • عمر بن اسحاق واشي لا موري | ۵۳۲ | • عبدالله ملتاني |
| ryr | • حاكم منصوره عمر بن عبدالعزيز | rra | • عبدالله بن رتن مندى |
| 244 | • عمر بن عبدالله مباری | tra | • عبدالله بن عبدالرحم الاباري. |
| 277 | • عمروین سعیدلا ہوری | try | • عبدالله بن عمر بن عبدالعزيز |
| 247 | • حاتم سندھ:عمر سومرہ | rrz | • عبدالله بن محدداوري سندهي |
| ۲۲۷ ِ | • عمروبن مبيدين باب سندهي | المراد | • عبدالله بن مبارک مروزی مند ک |
| 140 | • حامم سنده:عمران بن موی | | • حاكم اوجيه: عبدالميد بن جعفر |
| 1/2 Y | • حامم مران عيسى بن | | • عبدالرحيم بن حماد سندهى بقرى |

| * ***j. ** | | 9 | 4 | |
|------------|------|---|---|--|
| | | | | |

| صفحه | عنوان | عنوان صفحه |
|--------------|-------------------------------------|---|
| 794 | • محمد بن احمد بن منصور بوقانی | باب فاء |
| 192 | • محد بن اسعد بوقانی سندهی | • فتح بن عبدالله سندهی |
| 19 2 | • محربن أبوب بن سليمان | • فخرالدين بن عز الدين سندهي ٢٤٩ |
| 1926 | • محد بن احمد ببرونی سندهی خوارز ک | • فخرالدين ناني بن ابو بكرسندهي ١٤٢٩ |
| r. | • محدين حارث بيلماني مندي | • فضل بن سكين سندهي بغدادي ٢٤٩ |
| r.L | • محد بن حسن كشاجم سندهى ركمي | • حاسم سندان فضل بن مامان ۲۸۱ |
| r.Z | • محمد بن حسن فخر الدين بن | • نضل الله بن محمه بوقانی سندهی ۲۸۱ |
| 17. A | • محرین حسین بن دیبلی شای | باب کاف |
| 1-1 | • حام قندا بيل جمد بن خليل | • کشاجم بن حن بن شا یک ۲۸۲ |
| 1-9 | • محمد بن رجاء سندهی نیسه پوری | • سلطان مالديب المحلمنجا ٢٨٥٠ |
| · 1~1• | • محد بن ذكريا صدر الدين مان | • سلطان مالديب كلمنجا |
| ٣١٢ | • محمد بن زيادا بن الاعراب سنتك | • سلطان مالديب كلمنجابن |
| ٣19 | • محد بن عبدالله سندهی بقری | • کنکه مندی |
| mr• - | • محربن عبدالله ديبلي شاي | باب ميه |
| " mri | • محمد بن سندهی تی | • ماشاءالله مندی |
| , LLI | • محمد بن عثان لا موري جوز جاني | • حاكم سندان: ما بان بن فضل ٢٨٩ |
| | • محداة ل بن عبد الله سلطان | • مبارک مندی مروزی |
| 244 | • سلطان مالديب: محمداو دسمنجأ | ه متی کمنجا: سلطان مالدیپ ۲۹۱ |
| mra | • محد بن على بن احد الوبكر بامياني. | • مخلص بن عبدالله مندى بغدادى ٢٩١ |
| 27 | • محد بن عبدالرحمٰن بيلماني كوفي | • مسعود بن سليمان |
| rr • | • محمد بن عنان زوطی بصری | • محدین ابراہیم دیبلی کی |
| ۳۳. | • محمد بن على بلكرا مي واسطى | • محد بن ابراہیم بیلمانی بندی ۲۹۲ |
| rr. | • محد بن عبداللد الوالمنذ ر | • محمد بن احمد بن محمد بوقانی سندهی ۲۹۲ |

| صفحه | عوان | صفحه | عثوان | |
|-------------|---|--------|---|----------|
| roy | • موی بن اسحاق صند ابوری | mm. | • محد بنظل بن مامان عالم سندان | |
| roy | . • مبراج: شاه مندوستان · | 444 | • محدين مامون لا موري خراساني | |
| rak | مبروك بن رائن: حاكم الورد | אוואוו | • محد بن محد وسبلي | • |
| • | باب نون | 220 | • جحد بن محمد لا مورى اسفرا كمنى | |
| 209 | • ناقل مندی | | • محد بن محد بن رجاء اسفرا ميني | |
| 209 | • فيح بن عبدالرحن، ابومعشر | 277 | محد بن محمد بدرالدين بحكرى سندهى | |
| | • نجيب الدين متوكل بن شعيب | 277 | محد بن مجمد صدر الدین بھکری سندھی | |
| 444 | • نفرسندهی: زنج قوم کے سربراه | 22 | • محد بن في الومعشر سندهي مدني | 3 - |
| mym | • نفرالله بن احد سندهي بغدادي | مهاسم | • محموداعر الدين بن سليمان | |
| . myk | • نفر بن سندهی بغدادی | 414. | • مسعود بن سعد بن سلمان | |
| אאת | • نفر بن ﷺ حميد باطني ملتاني | الالا | و حامم ملكي مطهر بن رجاء | |
| male | نفیس سندهی بغدادی | 4414 | • معین الدین بیانوی | |
| 240 | • شخ الثيوخ: نوح بكرى سندهى | - MAA | ه معروف بن زكر يا منرمن | |
| 240 | • نهن مندی | שיאין | ه حامم طوران بمغیره بن احمد | • |
| | باب واو | سلملم | • مفتى بن محمد بن عبرالله باسندى | |
| 244 | • وطبي المنجان سلطان مالديب | Mulu. | • ملحول بن عبدالله سندهی شامی | |
| | ا باب | MAZ. | • حامم ملتان بمنبه بن اسد قرشی | |
| ۲۲۳ | • بارون بن محمد مجروجي اسكندراني | 100 | منصور، شاعر مندی | |
| ٣٧٧ | • بارون بن موی ملتانی سندهی | ra- | منصور بن سندهی اسکندرانی | |
| M4 2 | • ببترالله بن بهل سندهی اصبانی | ra. | ه منصور بن محمر سندهی اصبها کی | |
| 244 | • بدى همنجا: سلطان مالدبيپ ب | rai | منکه مشهور مندی طبیب | |
| ryx | ، بلى منجا،: سلطان مالديپ | rar | • موسيلاني | |
| 44 | ميموه : ملكة سنده | rar | • مینی بن سندهی جرب نی | |
| | | | 7 3 | = |

| صفحه | عنوان | صفحه | عنوان |
|-------------|---------------------------------|--------------|--|
| mam. | • ابوالقوارس صابو بي سندهي مصرى | | د الله باله |
| mar | • ابدالفرج سندهي كوفي | | • ليجي ابرمعشر سندهي |
| mam. | • حامم طوران: ابوالقاسم سندهي. | . 121 | عین بن محداموی: حاکم سنده |
| 296 | • ابو محمد مندى بغدادى | 121 | • يزيد بن عبدالله قرشي بيسري مندي |
| male | • ابوجمه ديبلي بغدادي | 727 | یعقوب بن مسعود بن سلیمان |
| 290 | ه ابومعشر سندهی | 721 | |
| 290 | • ابوبيل مندي | | خاخ الإفاء |
| 790 | • ابوہندی | . 220 | ه ابوجعفرسندهی |
| 190 | • ابوالبندى نانى | 720 | • ابوحارشهندى بغدادى |
| 290 | • ابومندی کونی، شاعر | 722 | • ابورداح سندهی بقری |
| m92 | • ابوموی دیبلی بغدادی | 222 | • ابوزهر برخى ناخدا مندى سيرانى |
| | باب النبناء | MZA | ابوسالمه زوطی بندی بصری |
| 1799 | • ابن الاعرابي سند حي كوفي لغوى | ۳۸۲ | و ابوسعید مالکی بندی |
| 299 | ابن ابوقطعان دينني | 272 | ه ابوسندهی |
| 1 99 | • ابن حامد دیلی | 777 | • ابوسلع سندهی |
| . 499 | • این دهن بندی بغدادی | " ለለ" | • الوعطاء سندهى كونى |
| 17.00 | • این السندی افعدادی | 1791 | • الوعيداللدديبلي: قارى شام |
| ~** | • ابن قمانس بندی | 191 | • ابوالعباس سندهى بغدادى |
| 7.0 | • این البندی | 1 91 | • ابوعلاء مندى بغدادى |
| | | 797 | • ابوعلى سندهى بغدادى |



_---



تا ثــا

حضرت الاستاذمولا نارياست على صاحب بجنوري

استاذ حديث دارالغلوم ديوبيثر

الحمدالله وكفي وسلام على عباده الذين اصطفى الابعد!

اسلام وہ ابر رحمت ہے جو عالم انسانیت کی سیرانی کے لیے عرب کے افق سے اٹھا اور دنیا کے ہر گوشے کو سیراب کر گیا۔ اس بارانِ رحمت کے اثر سے کتنے کلتانوں میں، علم وحکمت اور رشد وہدایت کی بہاروں کے کتنے قافلے خیمہ ذن ہوئے ، اور کتنے رہ گزاروں میں اتفاقاً کتنے پھول کھلے وہ سب تاریخ کے دامن کی نرین نہ دو کر اروں میں اتفاقاً کتنے پھول کھلے وہ سب تاریخ کے دامن کی ذیبت نہ بن سکے، لیکن جن گلتانوں اور پھولوں کی عطر ریزیں ہواؤں نے تادیر فضاؤں کو معطر کیا ان میں سے کی کی کا پچھ نہ پچھ تذکرہ تراجم ، سفرناموں اور تاریخ فضاؤں کو معطر کیا ان میں سے کی کی کا پچھ نہ پچھ تذکرہ تراجم ، سفرناموں اور تاریخ ووقائع کے ذخیروں میں آگیا ہے۔

سرز مین ہندہ میں اس باران رحمت کی فیض رسانی سے محروم ہیں رہی ہمین اس کے کتنے بھولوں نے انسانیت سے خراج تحسین وصول کیا ہے ان کا نہ احاطہ کیا جا سکتا ہے اور نہ اب اس کی کوئی تدبیر ممکن ہے، تا ہم جو تذکر ہے خیم کتابوں کے ضمن میں محفوظ رہ گئے تھے انھیں حضرت مولانا قاضی اطہر صاحب مبار کیوری کے ذوق تحقیق وجتو نے ''رجال السند والہند'' میں یک جا کر دیا۔ اور اس طرح ہندوسندھ کی بہلی صدی سے ساتویں صدی تک کی سوسے زائد شخصیات کا تذکرہ کیجا ہوگیا۔ اس کے لیے موصوف مرحوم نے کتنی کاوش کی اور کتنی راتوں کو انھوں نے ہوگیا۔ اس کے لیے موصوف مرحوم نے کتنی کاوش کی اور کتنی راتوں کو انھوں نے

طلوع محر سے ملایا اس کاعلم تو خدا کو ہے لیکن ان کی اس کتاب کے دیکھنے والوں نے اس خدمت کے لیے انھیں زبر دست خراج عقیدت پیش کیا ہے۔

موصوف کی بیہ نادر تالیف عربی زبان میں تھی اوران کی خواہش تھی کہاں کتاب کواردوزبان میں منتقل کیا جائے ، شخ الہندا کیڈی دارالعلوم دیوبندگی اعزازی مگرانی کے زبان میں موصوف نے مولا ناعبدالرشید صاحب بستوی زبیر بحربهم کواس کی طرف متوج بھی کیا تھا۔

موصوف مرحوم کی زندگی میں بیکام ندہوسکالیکن بیمولاناعبدالرشیدساحب
زیدمجد ہم کی سعادت مندی اورخوش نقیبی ہے کہ انھوں نے حضرت قاضی ساحب
مرحوم ومغفور کی جمع کردہ اس امانت کو اردولیاس بہنادیا۔ راقم الحروف ترجمہ کا
بالاستیعاب مطالعہ نہ کرسکا، لیکن مترجم زیدمجد ہم کے سلیقہ اور ذوقی علمی ہے کہ امید
ہے کہ یہ خدمت قابل پذیرائی ہوگی۔

ہے کہ جدا وندکر یم حضرت مؤلف قدس مرہ اور عزیر م مترجم زبر مجدہ کی دعاہے کہ خدا وندکر یم حضرت مؤلف قدس مرہ اور عزیر م مترجم زبر مجدہ کی محنت کو آخرت میں حسنات کی میزان میں جگہ دے اور دنیا میں قبول عام کی دولت سے نوازے ۔ آمین و الحمد لله او لا و آخراً۔

ر یاست علی بجنوری غفرلهٔ خادم تدریس دارالعلوم د بوبند شاارذی الجها ۱۲۲ اه



اظهارمسرت

كرامي فدرجناب قارى ابوالحسن صاحب أظمي

استاذشعبه سجو پدوقراءت دارالعلوم دیوبند ارشاد باری ہے: إِنَّ الَّدِینَ عِندَ اللّهِ الْإِسْلَامُ (الْعَران:١٩) لِین اللّه تعالیٰ کے نزدیک دین تو الاسلام ہے۔

نیز — الْیُومَ اکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ وَرَضِیْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ وَرَضِیْتُ لَکُمُ الْإِسْلَامَ دِیْنَا وَ (المائده: ٣) لیخی آج میں پورا کرچکاتم میصارے لیے دین تمحارا اور پورا کیاتم پر میں نے احسان اپنا، اور پیند کیا میں نے تمحارے واسطے الاسلام کودین۔

بن نوع انسان کی اہدی رہنمائی کے لیے اللہ تعالی نے پینمبر علیہ الصلوة والسلام کے ذریعہ جوالمل اورجامع ترین، عالمگیراورتا قائل تنیخ بدایات دیں، وہ تمام شرائع سابقہ حقد پرمع شے زائد شمل ہونے کی وجہ سے خصوصی رنگ میں اسلام سام سے موسوم وملقب ہوئیں۔

دین اسلام کی بقاء کی طرح علوم اسلامی کی بقاء اور تروی جی ضروری ہے، بالکل اس طرح علم اسلام کے نام دکام کی بقاء اور ان کے علمی کارناموں اور قلمی کاوشوں سے آشنائی بھی ضروری ہے۔

علوم اسلامی میں تراجم اور تذکرے پرکام ہرز مان میں نہایت دقیق مشکل اور

سخت محنت طلب رہاہے، اس موضوع بر کمر بستہ صرف وہی مفرات نظرا ہے ہیں جو الله الموفق كوربارعالي سيوفي بافته موت الله الموفق كالمساقة المناس مندوستان کے مردم خیز خطہ اعظم گرم کے مؤرخ کبیرمولانا قاصی اطمیر ضاحب میار کیوری مرحوم چودھویں صدی اجری کے اٹھیں یا تو فیق علاء میں سے بیں جفين راقم الحروف طبقه علماء كالموقين وفرباد كتاب المسالة قاضی صاحب بلاشیة تحریر و حقیق کے میدان میں عازی اور علمی آثار و و خائر كعظيم مرتب ومؤلف تتصر موضوف كوان كامتنوع أوركونا كول علمي وللمي اورتحقيقي خدمات متفديين كاصف عين لا كمواكرتي بين د المدرية والمدرية واضى صاحب كى كران قدر تاليفات فين "رجال استدوالهند" ايس بلند مقام کی حال ہے جس نے عرب وعم کے عالی مقام اہل نظر علاء سے زیروست فران مسين عامل كيا بي المسال المالية ا یہ بے مثال تالیف عربی زبان میں ہونے کے باعث صرف عربی داں حضرات كوفيض ياب كرعتي في البير خال ضرورت ملى كدكوني بالمنت اورصاحب ووق محض أن نا در اور الم كتاب كواردوقالي وسيد المستدر المرارين مہولت بیندی اور کھندر کے کھ یا جائے کے اس دور ہوں میں اگر کوئی بندہ خدا إدهراً دهر كي فضول تفريحات اوريبان ومان كي حاضر باشيون سيخودكو بجاكر خدائے بخشدہ کی عطا کردہ صلاحیتیں کام میں لاتا ہے تعیقا مرت کی بات ہے۔ اسيخ موضوع بركابل احاط كرت والى ، اكابر كي على خزان كائر اغ دين والى كتاب، أيك انساميكاويديا، دريائ نابيدا كنار، وقع اورعظيم على خدمت، اجم

والی کتاب، ایک انسائیکلوپیڈیا، دریائے ناپیدا کنار، وقیع اور عظیم علمی خدمت، اہم وستاویز اور حیلے ملکی خدمت، اہم وستاویز اور حیرت انگیز کارنامہ" رَجَالَ السند والہند" کو ایشیاء کی محبوب اور دلآویز زبان اردوکا جامہ پہنانے کے لیے آج کے اس دور قحط الرجال اور سنگ لاخ ماحول میں ہمارے عزیز دوست، علمی جذبات اور امنگوں کے حامل نوجوان اور تازہ وارد

صاحب قلم مولانا عبدالرشيد صاحب بستوى عبقرى وقت اور دجال ساز استاذ حضرت مولانا وحيدالزمال كيرانوئ، كسى مثى كو دي و چك دار اور بيش قيمت سونا بنادين اورخوابيده صلاحيتول كوبيدار كردين كيسى جيرت انگيز عبلاحيت كه بنادين اورخوابيده صلاحيت كوبيدار كردين كيسى جيرت انگيز عبلاحيت كالك بيخه مولانا عبدالرشيد صاحب بستوى ان خوش بخت اورسعادت مندنوجوانول من سي جي جنس الله تعالى في وحيد دهر حضرت كيرانوئ كى خدمت ميس ر بناور تلمذ كاشرف حاصل كرف كي سعادت بخشى -

آج میہ جو ہر قابل، آسانِ دارالعلوم پرایک درخشندہ ستارے کی طرح اپنی تابندگی سے دوق وشوق کے حامل طلبہ کی نگا ہوں کا مرکز بنا ہواہے۔

راقم الحروف، مترجم موصوف کی شاندروز کی نشاطات اور علمی و قلمی سرگرمیوں پردل کی گرائیوں سے مبارک باد پیش کرتے ہوئے دعا گوہ کہ اللہ تعالیٰ آپ کی حیات اور علمی مشاغل میں برکت عطافر مائے اور جمیں ایسے کارآ مدنو جوانوں کی صحیح قدردانی کی تو فیق بخشے آمین!

الحفظ العالثاني سرصفرالمظفر اس





م و گفتگو

ہندوستان ان خوش قسمت مما لک میں ہے ایک ہے، جوجغرافیائی لحاظ سے ہزاروں میل کی طول مسافت کے باوجودہ جزیرہ نمائے عرب سے تاریخی اعتبار سے ہیشہ مربوط رہا ہے۔ظہور اسلام سے پہلے بدر ابط محض جزوی، تجارتی اور اقتصادی مركرميون تك محدودر بإليكن بيعلق اس قدرمضبوط متحكم اورمؤثر تفاكه اللعرب کے یہاں معزز ترین قبائل وعشائر کے اہم افراد کے نام "ہند کی جانب منسوب" ہے موسوم ملتے ہیں۔ سردار قرایش حضرت ابوسفیان کی زوجداور کا تب وجی حضرت اميرمعاوبيرضى الله عنه كي والده كانام بهي على اختلاف الرويات منديا منده بي تقار ظہور اسلام کے بعد بدرشتہ مزید متحکم، ہمہ کیراورشاخ درشاخ ہوتا چلا گیا۔ زبان رسالت مآب سے غزوہ مند کی پیشین گوئی اور اس میں شرکت کرنے والے باتونق مجاہدین کے لیے فضیلت ومرتبت کی خوش خبری نے پیغمبر اسلام کے براہ راست فیض یافتہ اوروی البی کے اولین مخاطب حضرات صحابہ کرام جن کی غالب اکثریت عرب تھی اوران کے بعد کی مسلم نسل کو ہندوستان کی جانب رخ کرنے کے ليے بہلے سے كہيں زيادہ راغب كرديا۔

اگر چرسندھ وہند کے علاقے میں اسلام کوتوت وشوکت، غلبہ واقتدار اور فروغ واستحکام تو نیک طینت اور جوال سال مجاہد محمد بن قاسم تعفیٰ کی یہاں آمداور فنج ونفرت کے بعد حاصل ہوا، مگر اس میں ذرا بھی شبہ بیں کہ جنوبی ہند کے ساحلی علاقوں: مالا بار، کالی کٹ اور سندھ قدیم کے بعض شہروں کے باشند ہے اس سے علاقوں: مالا بار، کالی کٹ اور سندھ قدیم کے بعض شہروں کے باشند ہے اس سے

پہلے ہی زاہر شب زندہ داراور مردان و فاشعار مسلمانوں کی قدوم سعادت از وم سے بہرہ ور ہو چکے تھے اور خلیفہ ٹانی حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ کے عہد حکومت میں ہی اسلام ان علاقوں میں پہنچ چکا تھا۔

سیسب کھا عجازتھا، نبی آخرالزماں کی رسالت کا، فرمان البی کے بہموجب
ساری امت مسلمہ کوفریضہ تبلیغ سونے جانے کا اور پھر اسلام کی صدافت وحقانیت
کا۔ ان علاقوں میں عرب اگر چہ کاروباری حیثیت سے تھبرے اور ان میں سے
بعض چندونوں قیام کے بعدوا پس چلے گئے، گروہ فریضہ دعوت سے بھی غافل نہ
دے۔ انھوں نے قول سے زیادہ اپنے پا کیزہ عمل اور گفتار سے بڑھ کر اپنے اعلی
کردار سے اسلام کا آفاقی پیغام باشندگان سندھ وہند تک پہنچایا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ان
عرب تا جروں اور ان کی اولاد کے ہاتھوں پر مقامی باشندوں کی ایک معند بہ تعداد
طفہ بگوش اسلام ہوگئ۔

محد بن قاسم کی سندھ آمد، یوں تو ایک مجبوری اور بے بس مسلم خاتون کی صدائے فریاد پر لبیک کہتے ہوئے، قدیم سندھ کے ستم شعار حاکم راجہ داہر بن صحصعہ کی چیرہ دستیوں کا قلع قبع کرنے کی غرض ہے ہوئی تھی، مگراس کے ہمراہ جذبہ جہاد سے سرشار اور اسلامی دعوت کو دنیا کے کونے کونے تک عام کرنے کے سوز دروں سے لبر برزایک عظیم نظیم بھی تھا۔ جس نے نصرف سندھ کے باشدوں کو داہر کے ظلم وستم سے نجات بخشی، بلکہ مثالی امن وابان اور عدل وانصاف پر بہنی ایک بے نظیم حکومت کی بنا بھی ڈال دی اور محد بن قاسم می نیک نفسی، صلاح و پر ہیز گاری، عفت و پاک دامنی اور عدل گستری و گلوم پروری نے سندھ کے متعصب ہندوؤں کے قلوب کو فتح کر کے آتھیں اسلام کا غلام بودام بنادیا۔

مشہور مقولہ ہے "وفی کل امر له حکمة"اس دنیا میں ایسے کتنے واقعات رونما ہوئے اور فی زمانہ بھی ظہور پذیر ہوتے رہتے ہیں، جن کے تصور سے

بی بہاڑوں کے دل دہل جاتے ہیں، انسان تصویر چیرت بنا، کف انسوس ملتا رہ جاتا ہے اور عقل عیار بھی ان کی تاویل کرنے سے عاجز نظر آتی ہے۔ ایہا ہی ایک واقعہ، منتقم مزاج اموی خلیفه سلیمان بن عبدالملک کی تنگ ظرفی، کینه پروری اورستم شعاری کے نتیج میں محد بن قاسم تقفی جیے اسلام کے مخلص جیا لے کے ساتھ پیش آیا۔ جنب اس نے سریر آرائے امارت ہوتے ہی اپنی دیرینہ آتش حسد کی تسکین کی خاطر، محد بن قاسم کی معزولی کا فرمان جاری کرتے ہوئے اسے بر عجلت تمام دارالخلافہ بغداد آنے کا حکم دیا، جہال اس مردمجامد کوسفیر ہستی سے ہمیشہ ہمیشہ کے ليے مناديے جانے كے تمام سامان يہلے سے ہى كيے جانچے تھے۔اس جال سل اور روح فرساحاد فے نے جہاں تاریخ کوجھنجھوڑ کرر کھدیا، اہالیان سندھ کے دل ور ماغ میں سے ہوئے حسین خواب چکنا چور کردیے، وہیں اس اسلامی فاتح لشکر کے بہت ے حوصلہ مند وغیرت شعار بہا دروں کوخلافت بغداد کے تنبی حد درجہ مایوی ومتنفر بھی بنادیا۔نیتجیاً کشکریوں کا ایک بڑا طبقہ داپس اینے وطن جانے کی بجائے ،سندھ ہی میں سکونت پذیر ہو گیااوراس طرح باشندگان سندھ کو بہت قریب ہے سلمانوں کود مکھنے، سننے، برننے کے ساتھ ساتھ زندگی گزارنے کا خوب خوب موقع ملا اوروہ ان کے اخلاق وکردار، معاملہ، انصاف، رواداری، سیرچشی اور دیگر اسلامی محاس ومحامد کے ایسے گرویدہ ہوئے کہ اسلام کی صداقت کا اعتراف کیے بغیر مندرہ سکے اور حلقه بگوش اسلام ہو گئے۔

محدین قاسم کی سندھ آمداوراس کی معزولی کے بعداس کے لئکر نیوں کی ایک تعداد کی سندھ ہے لیے بہت تعداد کی سندھ ہی میں اقامت گزینی ، ستقبل کے حوالے سے سندھ کے لیے بہت سود مند ثابت ہوئی۔ اس کے باعث نہ صرف یہ کہ یہاں کی صنی آشنا سرزمین ، نومرم توحید سے معمور اور نغمہ رسالت سے آبادہوگئ ، بلکہ اس کی مٹی سے ایسے زمزمہ توحید سے معمور اور نغمہ رسالت سے آبادہوگئ ، بلکہ اس کی مٹی سے ایسے تاب دارلعل وجواہر پیدا ہوئے ، جو پوری دنیائے اسلام کے آسان علم وفضل ،

صلاح وتقوی، سیاست وسیادت، امارت وقضاء اور جہاد وقبال کے درخشاں ستارے ثابت ہوئے اور جہوں نے ملاح دین کی ہمہ جہتی خدمات کے ایسے تابندہ نقوش جھوڑ ہے، جورجتی دنیا تک نشان منزل کا بہتد سے اور اپنے اولین راہ روول کی عظمت وعبقریت کی خبرد ہے رہیں گے۔

قدیم سندھ۔جس میں موجودہ پاکتان کا برداحسہ،افغانستان دایران کا ایک حصہ شامل تھا،اس طرح قدیم ہندجس کی سرحدیں موجودہ بنگلہ دیش، برما (میانمار) نیپال کے بعض حصول، پور کے شمیر ہتحدہ بنجاب کے بیشتر علاقوں سمیت شمیم ہندوستان کی شال مشرقی مجھ ریاستوں کے علاوہ، سب کو محیط تھیں — اپنی تاریخی اور جغرافیائی نیز تہذیبی حیثیت کے باوصف ارباب علم فضل اوراصحاب تصنیف و تالیف مورجین کی خاطر خواہ تو جہودل جس سے محروم رہ اوراضیں وہ مقام نبل سکا،جس مورجین کی خاطر مستحق میں سے محروم رہ اوراضیں وہ مقام نبل سکا،جس کے بیربیاطور برحق مص

یکی وجہ ہے کہ قدیم عربی تاریخ کے وسیع و عربی فرخیرے میں سندھ وہندکا حصہ بہت معمولی اور برائے نام بی نظر آتا ہے اور وہ بھی عمو ماخمی طور پر اور منتشر شکل وصورت میں۔ اس کی شاید سب سے بڑی وجہ بیر رہی کہ ہندوستان ، اپنے طویل مسلم حکر انی کے عہد میں صرف ان فر مارواؤں کے ذیر تکیس رہا ، جن کا لسانی ، تہذیبی اور وطنی تعلق قدیم فارس سے رہا اور مبط و حی سرز مین عرب سے برائے نام - اور منان سے ملی دین ملو کھم "کے بہموجب یہالی کی تمام سرگرمیاں ، خواہ ان کا تعلق سیاست و حکومت سے رہا ہو یا امارت وقضا سے ، لکھنے پڑھنے سے رہا ہویا تعلق سیاست و حکومت سے رہا ہو یا امارت وقضا سے ، لکھنے پڑھنے سے رہا ہویا اور خانقا ہوں سے ، علوم نقلیہ : کتاب وسنت اور قصہ سے رہا ہویا فراون نقاب و سنت اور قصہ سے رہا ہویا عام مدرسوں اور خانقا ہوں سے ، علوم نقلیہ : کتاب وسنت اور فقہ سے رہا ہویا علوم عقلیہ : حساب ، جغرافیہ ، مجوم ، ہیئت وغیرہ سے ، فاری زبان ، بی کاردگر دگر دش کرتی رہیں ۔ چناں چہ خود سندھ دہند سے تعلق رکھنے والے اصحاب کے اردگر دگر دش کرتی رہیں ۔ چناں چہ خود سندھ دہند سے تعلق رکھنے والے اصحاب

علم وصل نے اسلامی علوم و معارف کے حوالے سے جس قدر فاری کتب خانے کو مالا مال کیا، عربی لائبر ریری کواس کا دسوال حصہ بھی نیل سکا۔ درنہ کیا دجہ ہے کہ افریقہ کے دور دراز صحرا، بلکہ پوروپ بعید میں واقع اندلس کے تذکرول سے تو عربی تو ارتی بھری پڑی ہوں اور مندوستان جیبیا وسیع وعربیض اور مردم خیز، تاریخ ساز بلکہ عہد ساز ملک اینے واقعی اور واجی ذکر سے بھی محروم رہ جائے۔

تا ہم اس کا پیمطلب ہرگزنہیں کہ یہاں کی سرز مین نے عربی کتب خانے کو مطلقا كوئى تخفە بىنبىل دىا بضرورديا ہے اور جو تخف بھى ديا ہے وہ اينے موضوع يرسنداور بمثال ہے۔اس حوالے سے جن شخصیات کوامتیازی حیثیت حاصل ہے، ان میں امام لغت وحدیث علامه زبیدی، مولانا آزادبلگرامی، شخ محمه طاهر پینی، شخ علی مقی، شخ عبدالحق محدث وہلوی، حضرت شاہ ولی الله محدث دہلوی، ان کے صاحب زادگان، بالخصوص حضرت شاه عبدالعزيز، علامه عبدالحي لكصنوي، نواب صديق حسن خال بهويالي، مولانا عبرالحي حسى، مولانا ظفر احمد عثاني، علامه شبير احمد عثاني، مولانا محد بوسف كاندهلوى، مولانا احرعلى محدث سباران بورى، مولا ناخليل احد البيهوى، علامه انورشاه تشميري، قاضى شاءالله يانى يى ، عصر اخير مين مولا نامحد يوسف بنورى، فينخ الحديث مولانا زكريا كاندهلوى، مولانا محدادريس كاندهلوى، مولانا عبدالرحمن مبارك بورى ،مولا نا حبيب الرحن محدث اعظمى ،مولا نا ابوالحس على ندوى اورحضرت مولانا قاضی اطبر مبارک بوری خصوصیت کے ساتھ قابل ذکر ہیں۔ان کے علاوہ بھی چندعلاء نے گراں قدر تالیفی خدمات انجام دی ہیں،لیکن بیتمام تر سرمایہ آئے · میں نمک اور دریا مین قطرے سے زیادہ حیثیت نہیں رکھتا، گویا اہل سندھ وہند کی ضرورت سے زیادہ ملکی وحکومتی زبان پراعتبار وانحصار اور اہل عرب کی کیگونہ چٹم یوشی وسہل کوشی نے مل کر ایسی غفلت شعاری کا مظاہرہ کیا، جس کا نا قابل تلافی نقصان اسلامي تاريخ كوبرداشت كرنايرا

گزشته چار پانج دہائیوں سے بیغفلت شعاری جائین کی طرف سے کی قدر بیداری میں تبدیل ہورہی ہے اور سندھ وہند سے تعلق رکھنے والے ارباب فضل وکمال اور ان کے تاریخ ساز کارناموں اور تحریری کاوشوں میں تمل مختلف موضوعات کے تعلق سے کی ایک کتابیں سامنے آئی ہیں۔ان میں علمائے عرب کی مؤلفات میں وُاکٹر یونس اشیخ ابراہیم السامرائی کی کتاب "علماء العرب فی شبه القارة اللهندیة" باوجود بعض تاریخی فلطیوں کے، اس موضوع پراہل عرب کی طرف سے لکھی جانے والی تمام کتب میں غالبًا سب سے زیادہ مفصل، جامح اور محیط ہے، حب کے علاء سندھ وہندگی عربی تصنیفات میں حضرت مولانا قاضی اطہر مبارک پوری کی تالیف" رجال السند و المهند" اور حضرت مولانا عبدالحی منی کی "نزھة کی تالیف" رجال السند و المهند" اور حضرت مولانا عبدالحی منی کی "نزھة المخواط ر"سب سے زیادہ و قیح اور قائل استناد ہے۔

"علماء العرب فی شبه القارة الهندیة" صرف ان شخصیات واعلام کے تذکر رے بہشتل ہے، جن کاتعلق ساتویں صدی بجری اوراس کے بعد کے عہد سے ہے، جب کہ "رجال السند و الهند " پس سندھ و بندی الی تمایاں شخصیات پر بہت کچھ تحریری سرمایہ دست یاب ہے اور اس سے پہلے ادوار "اور حالات وواقعات اور تاریخ ووقائع کے وسیح ذخیرہ کتب بیں بھر ہے ہوئے ہیں، اس لیے یہ بات کی پر مخفی نہیں ہے کہ گوشتہ خمول سے نکال کر منظر عام پر لا نا اور بیسیوں شخیم کتابوں کے ہزاروں صفحات ہیں بھر ہے ہوئے حالات وواقعات اور تراجم کو جمح کرنا، تر تیب دینا اور ایک مربوط و مسلسل تذکر ہے کی لائی میں پرونا کس قدر مشکل، کرنا، تر تیب دینا اور ایک مربوط و مسلسل تذکر ہے کی لائی میں پرونا کس قدر مشکل، دشوار گزار اور جگر سوزی کا کام ہے، مگر جواں سال ہمتوں نے ہمیشہ ہی سے اپنے مربوط و ساسل تنا ہوں ہے ہی دریائے تلاحم خیز کی شہوں سے در شاہ وار اور پرخطر راستوں کا انتخاب کیا اور ایسے ہی دریائے تلاحم خیز کی مطابق وہ اس میں کام یاب بھی رہیں۔

بحرتلاهم کے انہی غواصوں میں ایک نمایاں اور ممتاز نام حضرت مولانا قاضی اطہر صاحب مبار کورگ کا ہے، جنہوں نے حوصل شکن اور بحشش رعنائیوں اور اپناعزم سفر جوال رکھا اور دنیائے رنگ وبو کی خیرہ کن اور پرکشش رعنائیوں اور آساکتوں سے بالکلیے صرف نظر کر کے ،علم و تحقیق کے میدان میں ایک کے بعدا یک مرحلے کا میابی کے ساتھ طے کیے ۔قاضی صاحب کی متعدد قابل قدر علمی و تحقیق کا و شوں میں "د جال السند و المهند" سرفہرست اور چندشاہ کار تالیفات میں کا و شوں میں "د جال السند و المهند" سرفہرست اور چندشاہ کار تالیفات میں سے ایک ہے، جس نے نصرف علمائے ہند، بلکہ محققین علمائے عرب سے بھی خواج شخصین وصول کیا اور جسے قاضی صاحب نے بشار علمی خرمنوں سے دانہ دانہ چن کر خود ایک حسین اور رشک علماء خرمن علم و حقیق کی شکل میں تیار کیا ۔

اس کتاب میں ساتویں صدی ہجری سے پہلے تک کی ایک سوسے زیادہ ایسی شخصیات کا تذکرہ ہے، جنہوں نے علم وضل، شخصیات کا تذکرہ ہے، جنہوں نے علم وضل، شخصیات کا تذکرہ ہے، جنہوں نے علم وضل، شخصیات و درع، اصلاح و تزکید، سیاست و حکومت اور طب و جغرافید، نجوم و ہیئت یا دیگر میدانوں میں قابل قدر خدمات انجام دیں۔

قاضی صاحب نے اصل کتاب سے پہلے مقدمہ کتاب کے طور پرسندھ وہند کے بعض مشہور تاریخی مقامات اور شہرول کا تعارف کرایا ہے، جو بجائے خود قابل مطالعہ اور لائق صد تحسین ہے۔ پھر جروف جبی کی تر تیب پر اعلام و شخصیات کا تذکرہ شامل کتاب ہے۔ ان تذکرہ شامل کتاب ہے۔ ان تذکرہ شام مارک شرح سے اہتمام نظر آتا ہے کہ کوئی بات ای امر کا شدت سے اہتمام نظر آتا ہے کہ کوئی بات ای طرف سے نہ کہی جائے، بلکہ معتبر اور متند سواخ وتاریخ نگاروں کی تحریروں کوخوب ای طرف سے نہ کہی جائے۔ ہاں بعض ناگر بر مقامات پر قاضی صاحب نے صورت انداز میں جمع کردیا جائے۔ ہاں بعض ناگر بر مقامات پر قاضی صاحب نے این تاریخی مطالع کی روشی میں تھرے اور تجربے کیے ہیں، جوخاصے کی چیز ہیں۔ آخر میں "باب الآباء" اور "باب الأبناء" کے عنوان سے ان اعلام کا تذکرہ ہے، جو ایپ والد اور بیٹوں کی جانب نبیت وکنیت سے شہرت یا فتہ ہیں۔ کتاب کا اختام ایپ والد اور بیٹوں کی جانب نبیت وکنیت سے شہرت یا فتہ ہیں۔ کتاب کا اختام

"باب المجاهيل" يركيا كياب جن كنام وغيره كى بابت تصريح دست ياب نه المحاور معلوم موسكا كمان كالعلق سنده و مندكس علاقے سے تقا؟ -

حضرت قاضی صاحب کی زندگی کے آخری چندسالوں میں بندے کوان کی خدمت میں رہنے اور قریب سے ویکھنے کا زیادہ موقع طلا، جب کوہ شخ البندا کیڈی دارالعلوم دیوبند سے عملا زیادہ وابستہ ہو گئے تھے اور ان کی دیوبند آمد ورفت بڑھ گئ تھی۔ قاضی صاحب نوجوان فضلاء کی علمی و تھی تھی کاموں کے لیے نہ صرف تھجیجے فرماتے، بلکہ ان کی علمی رہ نمائی بھی فرمایا کرتے تھے اور جب کسی فاضل کی تحریری کاوش کاعلم ہوتا

تواین دلی سرت کا ظہار فرماتے ہوئے اس کی بے پناہ تحسین فرماتے تھے۔

ناچز کے تعلق سے بھی قاضی صاحب کو کھائی تم کاحس ظن ہوگیا تھا اور وہ ہر ملاقات برنت مع موضوعات اور کتابوں پرکام کرنے کی تلقین کرتے رہتے تھے، مگر جس کام کے لیے انھوں نے سب سے زیادہ تاکید کی، اس کا تعلق خودان کی ابنی دوشاہ کار تالیفات ''رجال السند و الهند''عربی اور ''العقد الشمین فی فتوح الهند ومن ورد فیھا من الصحابة و التابعین ''عربی کے اردوتر جے سے تھا۔ لیکن بعض ناگز برمصر وفیتوں اور طبی تکاسل نے حضرت قاضی صاحب کی حیات میں اس جانب متوجہ ندہونے دیا اور چندہی مہینوں بعد قاضی صاحب کی حیات میں اس جانب متوجہ ندہونے دیا اور چندہی مہینوں بعد قاضی صاحب کی حیات میں اس جانب متوجہ ندہونے دیا اور چندہی مہینوں بعد قاضی صاحب کی حیات کوسر ھارگئے۔

سوجہ نہ وے دیا اور چید ہی ایوں بعدہ الکی جاب مولانا شفق احمد خان قاسمی کی عرصہ پہلے صدیق مرم فاضل گرامی جناب مولانا شفق احمد خان قاسمی سنوی استاذ حدیث جامعہ خدیجہ الکیری، کراچی (پاکستان) نے بہاصرارا بی اس خواہش کا اظہار کیا کہ راقم السطور' و جال السند و المهند'' کواردو قالب میں و شال دے، تاکہ اس ذخیر و علم سے اردودال طبقہ بھی مستفید و مستفیض ہوسکے۔ ان کی جانب سے یہ اصرار زور پکڑتا رہا اور بندے نے بہتو فیق اللی ترجے کا آغاز کی جانب سے یہ اصرار زور پکڑتا رہا اور بندے نے بہتو فیق اللی ترجے کا آغاز کردیا۔ گربعض نا گفتہ حالات اس راہ میں تسلسل کے ساتھ حائل ہوتے رہے اور یوں یہ کام مہینوں کے بجائے سالوں میں جا کر پایئے تھیل کو پنجے سکا۔

راقم نے ترجے میں اس بات کا جرپور خیال کموظ رکھا ہے کہ کما نب کی مشت ترجمانی کے ساتھ ساتھ اصل کما ب کی کوئی بات رہ نہ جائے۔ قاضی صاحب نے جس جگہ اپنا تھرہ شامل کیا ہے، وہاں آئر میں بین القوسین (قاضی) لکھ کر اشارہ کردیا ہے۔ البتہ بعض مقانات پر درج کماب تصا کد کے بعض اشعار، ترجے میں حذف کردیے گئے ہیں اور حاشے پر اس کی وضاحت کردی گئی ہے۔ کماب کے آخر میں "باب المحاهیل" کے عنوان کو چندان سود منداور مفید مطلب نہ مجھ کرتر جے میں نظرانداز کردیا گیا ہے۔

ترجے کے دوران چند ہاتوں کی طرف احقر کی توجہ ببطور خاص گئی، جن کے اضافے سے ترجے اور خود كتاب كى افاديت ومعنويت دوچند ہو كتى ہے، وه يہ إلى: تمام مراجع كي ممل تخ تج ، اقتباسات كالصل ما خذ كے ساتھ مقابلے كے بعد ضرورى تحديد وقليق اور بعض اليي شخصيات كے تراجم كا تذكرہ جواصل كتاب ميں شامل ہونے سےرہ کے ہیں، مرظاہر ہے کہ بیکام بہت دفت طلب اور محنت ظلب ہے، جوبہ چند وجوہ بندے کے لیے ناممکن ہے، کسی قدر کام تو ہوگیا ہے، خدا کرے کہ بعجلت تمام مكمل ہوجائے تو آئندہ ایڈیشن میں ان کے اضافے كا ارادہ ہے، بلکہ بہتر ہوتا کہ اصل عربی کتاب بھی تعلیق وتخ تا اور تحشیہ کے ساتھ از سرنو زیور طبع سے آراستہ کی جائے ۔ لیکن اس کے سبب اصل کتاب کی این اہمیت، قدرو قیمت اور افادیت کسی طرح بھی نظرانداز نہیں کی جاسکتی اور اس موضوع پر اردو میں شخفیق كرنے والوں كے ليے بير جمه بلاشبه ايك متندذ خير ه آورلائق اعتادو نيقه ہوگا۔ اس ترجے کی اشاعت کی مناسبت سے احقر ان مخلصین کا دل کی گہرائیوں سے شکر گزار ہے، جنہوں نے کسی بھی عنوان سے بندے کو گرال باراحسان کیا، بالخضوص استاذ عالى قدر حضرت مولانا نؤر عالم صاحب خليل اهني زيدمجدهم استاذ اوب عربي ورئيس تحرير ما بنامه الداعي عربي، دارالعلوم ديوبند، استاذ كرامي خضرت

مولانا رياست على صاحب بجنوري مظلهم العالى مولف "اليضاح البخاري"استاذ حديث دارالعلوم ديوبند بفق ومحرم جناب مولانا قارى ابوالحن صاحب اعظمي مدظله استاذ شعبة تجويد وقراءت دارالعلوم ديوبند ،كماول الذكرن اردو وعربي زبان وادب كاندصرف شعورعطاكيا بلكداني كونا كون مصروفيات كي باوجودز مانة تلمذي کے کراب تک ہرمر حلے پرمعلمانہ ومربیانہ رہ نمائی، نصائح اور قیمتی مشوروں سے ہمیشہ ہی سرفراز فرمایا اور ترجمتین کے اصول ومبادی ذہن نشین کرنے کے ساتھ قدم قدم پراصلا حات بھی دیں اورمؤخرالذکر دونوں محسنین نے بندے کی ہرعلمی قلمی کاوش پراین پیند بدگی کااظهار کیا، حوصله افزائی کی اور ہرممکن تعاون دیئے کے علاوہ اینے وقع تاثرات سے ترجمہ ہذا کی قدرو قیمت میں اضافہ کیا۔ حق جل مجدہ ان سب حضرات کا سایئر عاطفت، صحت وعافیت کے ساتھ تادیر ہم خردوں کے سروں یر قائم رکھے۔(آمین) نیز عزیزان مولوی محد وصی بستوی، مولوی محد سلمان سدهارت تكرى اورمولوى عالمكيرى مظفر تكرسلهم الله وزادهم علمانا فعا كالممنون مول كهانفول نے ترجے میں ناچیز كا ہاتھ بٹایا۔

دعا ہے کہ اللہ رب العزت ترجمہ ہذا کواردودال طبقے کے لیے کارآ ہد ، مؤلف مرحم اور ناچیز مترجم کے لیے ذخیرہ آخرت بنائے اور ناشر وطابع کواس کی دیدہ زیب اشاعت پراجرعطافر مائے اور انھیں مزید علمی خدمات کے لیے قبول فرمائے۔ (آمین یارب العلمین)

فاکسار عبدالرشیدبستوی ۱۲رشعبان۱۹۱۹ه



قاضى اطهرمبارك بورئ، نفوشِ زندگی

تحدید: عزیز القدرمولا نامفتی وصی اجمد قاسی/استاذمهدالانوردیوبند
صاحب کتاب حضرت مولانا قاضی اطهر صاحب مبارک پوری موجوده دور
مین "مؤرخ اسلام" کے پوشکوه خطاب کے سیح متن میں مشتحق ہیں،انھوں نے تاریخ
اسلام اور تاریخ ہندوسندھ کے متعدد گوشوں کے تعلق سے کی ایک بلند پایداعلی اور تحقیق
کتابیں تالیف کی ہیں۔ ذیل کی سطور میں حضرت قاضی صاحب کی زندگی اور علمی
وتصنیفی کاموں کا مختصر اور جامع تعارف پیش کیا جا رہا ہے، جوتمام ترخورتاضی صاحب کے تالیف کردہ رسائے تامن عادری سے جے بخاری تک" سے اخوذ ہے۔

پيدائش

المرجب ۱۹۱۲ او الا ۱۹۱۹ او الا الم المرجب ۱۹۱۲ او الم المرب المرجب المرجب المرجب المرجب المرب ا

ابتدائى تعليم كمريلوكمتب بس عاصل كى عربي تعليم كاتقريبا بوراز ماند مدرسداحياء

العلوم مبارک پور میں گزرا۔ البتہ دورہ حدیث کی تھیل مدرسہ شاہی مرادآباد میں ہوئی۔ مخصوص اسا تذہ میں مولانا مفتی محمد لیمین مبارک پوری (متوفی ۴ مهراد) مولانا شکر الله مبارک پوری (متوفی ۱۳۹۱ه) مولانا سید فخر الدین احمد مرادآبادی (متوفی ۱۳۹۱ه) مولانا سید محمد میاں دیوبندی (متوفی ۱۳۹۵ه) مولانا محمد آسلیل سنجیل (متوفی مولانا سید محمد میاں دیوبندی (متوفی ۱۳۹۵ه) مولانا محمد مولانا محمد مولانا محمد کی صاحب رسول پوری (متوفی ۱۳۸۷ه) ہیں، مؤخر الذکر سے موصوف کے دیادہ ہی متاثر ہوئے اور ان کی تقیر میں ان کابرنا حصہ ہے۔

شوق مطالعه

آب ابتداء ہی سے ایک باذوق، حوصلہ مند اور مطالعہ کے رسیا طالب علم سے، قلت وسائل کے باوجود حوصلہ کی بلندی اور شوق طلب کا بیام تھا کہ ان کے اپنے بہ قول جامع از ہر مصر میں اعلی تعلیم حاصل کرنے کا سودا ہر وقت سر میں سایا رہتا تھا، مگر جب اس کی کوئی سبیل نظر نہیں آئی تو اپنے گھر اور مدر سے ہی کوجا مع از ہر جامع قر طبہ مدر سدنظا میداور مدر سہ مستنصر بید بنالیا اور وطن ہی میں رہ کر خدا کے فضل و کرم ، اسا تذہ کی شفقت و محبت اور اپنی جدوجہد سے وہ سب بچھ حاصل کرلیا، جس سے زیادہ شایدان علمی مراکز میں بھی نہ ملتا۔

شوق مطالعہ آپ کا امتیازتھا، بلکہ حسب تصریح خود قاضی صاحب جنون ودیوائل کی حد تک بردھا ہوا تھا، زمانہ طالب علمی میں چلتے پھرتے بھی کوئی نہ کوئی التی کیاب ہاتھ میں ضرور رہا کرتی تھی، حتی کہ کھانے کے وقت کتاب سامنے رہتی، راتوں کو درسیات کے مطالع کے بعد گھنٹوں غیر دری کتابوں کے مطالع میں منہمک رہتے۔ کثرت مطالعہ اور کتب بنی سے بعض اوقات آئھ میں سوزش پیدا موجاتی، دانے نکل آتے اور سر چکرانے لگتا تھا، کین راہ طلب کے اس تیزگام مسافر کی رفتار میں کوئی کی نہ آتی۔ شوق وظلب کا یہی جذب دم واپسیں تک ہم رکاب رہا،

جس کی کافی شہادت ان کی بیش بہا تالیفات و تعلیقات ہیں۔ مضمون نو کسی کی ابتداء

تصنیف و تالیف کا ذوق خداداد تھا، قلم پکڑنے اور کے ہونہ کھ کھنے کا شعور اردو تعلیم کے زمانے سے ہی بیدا ہو جلا تھا، عربی شروع کی تو اس شوق کو اور مہیزگی، لیکن چول کہ معلومات کی فراہمی، ان کی تر تیب اور اسلوب نگارش وغیرہ میں کسی کی رہنمائی حاصل نہ ہو تکی، اس لیے شروع میں ایک مضمون کئی بار لکھتے اور پھاڑ کر بھینک دیے اور کافی محنت کے بعد ہی وہ ان کے ذوق کے مطابق ہوتا۔ دیمبر مجینک دیے اور کافی محنت کے بعد ہی وہ ان کے ذوق کے مطابق ہوتا۔ دیمبر ۱۹۳۳ء میں سب سے پہلا مضمون برعنوان ''مساوات'' مومن نامی بدایوں کے ایک رسالے میں شائع ہوا۔ اس وقت آپ عربی کے ابتدائی ورجات کے طالب علم تھے، مضمون کی ایک جھلک ملاحظہ ہو:

''بی نوع انسان میں مساوات و یکسا نیت کا صداعتدال پر قائم رکھنا اتنا ضروری اورلازی ہے کہ اس کے بغیر نہ کی سلطنت کا نظام اچھی طرح قائم رہ سکتا ہے اور نہ دنیا کی کوئی جماعت فروغ پاسکتی ہے، جو فد بہب یا قانون مساوات و یکسانیت سے خالی ہو، سمجھ لو کہ وہ بالکل ناقص ہے، اس طرح جو جماعت یا سوسائٹی اپنے افراد میں مساوات دیکسانیت بدد جہ اتم بر قرار ندر کھ سکتی ہو، یقین کرلو کہ وہ آج نہیں تو کل دنیا سے فنا ہوجائے گی، اس طرح بر نظام اور سوسائٹی کی دوح رواں در حقیقت مساوات اور صرف مساوات ہے، آج کل دنیا کی کوئی قوم اور ند بہب ایسانہیں جو مساوات کا دور سے دار نہ بنتا ہو، لیکن جب ایک انساف پیند انسان سمج طریقے پر اس کی جانج کو کے نام کے ساوات ایک انسان بیند انسان سمج طریقے پر اس کی جانج کرنے بیٹھتا ہے، تو اسلام کے سواد نیا کا کوئی ند بہب اس امتحان پر پورانہیں اتر تا''۔

ذوق شعروخن

اردوتعلیم ہی کے زمانے سے شعروشاعری کا ذوق بھی ابھرنے لگا تھا،اس

وقت آپ کی عمر تیره چوده سال کی تھی مضمون نگاری کی طرح شعروشاعری میں بھی سے اصلاح یا مشورہ کی باری نہیں آئی، ذوق ہی واحد رہنما تھا،خوداعمادی کے ساتھ آمے بوتھے، تو اس میدان کے بھی شہروار ثابت ہوئے، آئے دن جلسول كے ليے ملى ، قومى ، سياسى اور مذہبى نظميس كہنے لگے ، سب سے پہلے ظم "دمسلم كى دعا" كے زيرعنوان ماه نامه الفرقان بريلي جمادي الثانيه ١٣٥٧ هيس شائع موئي - جامع معجدمبارک بورے چندہ کےسلسلہ میں بہت ی نظمیں کہی تھیں، جنھیں بعد میں "اذان كعب"ك نام سے يجاكرديا كيا،اس كى ايك نظم كے چند بند ملاحظه،ول: نظر جب جب اٹھائی جارہی ہے اٹھاکی جارہی ہے نظر میں نور پیدا ہورہاہے اللہ دل شاد تمنا ہورہاہے زمیں ہے عام چرچا ہورہاہے اللہ یہ شور بریا ہورہاہے بناؤ مسجد جامع بناؤ الله برهاؤ دين كي شوكت برهاؤ كماؤ دولت عقبى كماؤ الله الورح حاتم كو بلاؤ یہاں ہمت دکھائی جارہی ہے اللہ مسلماں س ذرا گوش صفا ہے ملماں کام لے جو دوسی سے اس شملیاں جوڑرشتہ مصطفیٰ سے مسلماں تیزی ذہب سے خدا سے اللہ محبت آزماتی ہے

تصنيفي زندگي كا آغاز

مخصیل علم سے رسی اور عرفی فراغت کے بعد تدری و تصنیفی زندگی شروع ہوئی۔ ہم اء سے ۱۹۲۲ء تک مدرسہ احیاء العلوم مبارک پورسے وابست رہے، اس دوران اس تذہ و تلاندہ میں عربی زبان وادب کا ذوق پیدا کرنے کے لیے "دابطه الا دباء" کے نام سے ایک ادارہ قائم کیا، "مجلة دابطة الا دباء" کے نام سے دوتین نمبر بھی شائع کیے، مگر باوجوہ کام آگے نہ بردھ سکا۔ اسی زمانے میں شاب مینی دوتین نمبر بھی شائع کیے، مگر باوجوہ کام آگے نہ بردھ سکا۔ اسی زمانے میں شاب مینی

ممبئ کے لیے سید جمال الدین افغانی کے دوعر بی رسالوں کا ترجمہ کیا۔ ۲۷ رنوم روم معبئ کے لیے سید جمال الدین افغانی کے دوعر بی رسالوں کا ترجمہ کیا۔ ۲۵ رادو معبئ اور سے متعلق رو کر دو شیعیت وقادیا نیت پر مضافین لکھے۔ ۱۳ ارجنوری ۱۹۴۵ء تا کیم جون ۱۹۴۱ء زمزم مسبئی لمیٹڈ لا ہور سے منسلک ہوکرساڑھے نوسو صفحات میں منتخب التفاسیر مرتب کی۔ تقسیم ملک سے کچھ پہلے مئی یا جون میں ایڈیٹر روز نامہ '' زمزم'' مولا نا محمد عثان فارقلیط کے ہمراہ اس خیال سے وطن آگئے کہ ہنگاہے کے بعد واپس چلے جائیں فارقلیط کے ہمراہ اس خیال سے وطن آگئے کہ ہنگاہے کے بعد واپس چلے جائیں الماری سے اللہ مور کے زمانہ میں درج ذیل کتابیں تھنیف فرمائیں: استخب التفاسیر جس کی کتابت تیرہ پاروں تک ہوچی تھی۔

۲-علمائے اسلام کی خونیں داستانیں: جس کے مہم صفحات کی کتابت احسان دانش مرحوم ما لک مکتبددانش کرا حکے تھے۔

۳-ائمهار بعه: اس کی پوری کتابت تنظیم الل سنت امرتسر نے کرائی تھی۔ ۴-الصالحات: اسے ملک دین محمد اینڈ سنز کشمیری بازار لا ہور نے بیغرض اشاعت لے لیا تھا۔

لیکن افسوس کہ ان میں ہے کوئی کتاب شائع نہ ہوسکی اور تقسیم ملک کی نذر ہوگئی، تقسیم ملک کی نذر ہوگئی، تقسیم کے بعد بھی اگر چہ بعض اکا براہل علم وقلم کا بیاصرار رہا کہ موصوف دوبارہ لا ہور جا کر تصنیف و تالیف کا سلسلہ جاری کریں ،لیکن ایساممکن نہ ہوا۔

۱۹۲۸ء کی ابتداء میں مولانا محفوظ الرحمٰن نا می سکریٹری آف حکومت یوبی کی زیر گرانی بہرائے سے آپ نے ہفتہ وارا خبار 'انصار' جاری کیا، جس کے شریک اوارت مولانا عبدالحفظ بلیاوی مرحوم مصنف"مصباح اللغات ' تھے، یہ اخبار حکومت کے عتاب کی وجہ سے سات آٹھ ماہ بعد بند ہوگیا۔ قیام بہرائے ہی کے دوران آپ نے اپنی تصنیف" تذکرہ علمائے مبارک بور' کے لیے ابتدائی معلومات فراہم کیں۔ اپنی تصنیف" تذکرہ علمائے مبارک بور' کے لیے ابتدائی معلومات فراہم کیں۔ شوال کا ساتھ سے شعبان ۱۸ ساتھ تک جامعہ اسلامیہ ڈابھیل گرات میں شوال کا ساتھ سے شعبان ۱۸ ساتھ تک جامعہ اسلامیہ ڈابھیل گرات میں

تدریی خدمت انجام دیں، یہاں کے ظیم الثان کتب خانے سے خوب خوب استفادہ کیا اور بہیں اپنی بلندیار پر بی تصنیف 'رجال السند والہند'' کی تالیف کا آغاز کیا۔

عرون البلاد مبني مين

آئھ سال تک مبارک پور، امرتسر، لاہور، بہرائی اور ڈابھیل میں گزار نے

بعد ۱۹۸۸ دی الحجہ ۱۳۸۸ الا مطابق نومبر ۱۹۲۹ء کوعروس البلاد بمبئی پہنچہ، جوآپ

علمی سفری آخری منزل تھی۔ ابتداء میں دفتر جعیۃ علماء بمبئی میں افاء اور دوسری

تحریری ذمہ داریاں سنجالیں، ۱۵ رجون ۱۹۵۰ء سے روز نامہ "جہوریت" کا اجراء

ہواتو آپ اس کے سب الیہ یئر بنائے گئے۔ پھراس مستعفی ہوکر ۱۹۳ رفروری ۱۹۵۱ء

ہواتو آپ اس کے سب الیہ یئر بنائے گئے۔ پھراس مستعفی ہوکر ۱۹۳ رفروری ۱۹۵۱ء

سے روز نامہ "انقلاب" سے وابستگی اختیار کرلی اور متواثر چالیس سال تک "جواہر

القرآن "داحوال" اور"معارف" کے عنوان سے ہرتم کے ملمی، دینی، سیاسی اور

تاریخی مضامین بلاناغہ تین متقل کا کموں میں لکھتے رہے۔ کسی ایک اخبار سے چالیس

سال تک اس طرح کی وابستگی صوافتی تاریخ کا ایک ریکارڈ ہے۔

سال تک اس طرح کی وابستگی صوافتی تاریخ کا ایک ریکارڈ ہے۔

سال تک اس طرح کی وابستگی صحافتی تاریخ کا ایک ریکارڈ ہے۔ ۱۹۵۲ء میں انجمن خدام النبی کی طرف سے جب ماہ نامہ 'البلاغ'' اور ہفت

روزه "البلاغ" جاری ہواتو دونوں کی ادارت میں آپ شریک رہے، ہفت روزه تو چھ ماہ کے بعد بند ہو گیا ؛ لیکن ماہ نامہ" البلاغ" آپ کی ادارت میں پیپیں سال سے زیادہ مدت تک جاری رہا۔ اس طرح آپ نے تقریباً دسیوں رسالوں کی ایڈیٹری زیادہ مدت تک جاری رہا۔ اس طرح آپ نے تقریباً دسیوں رسالوں کی ایڈیٹری

ك فرائض انجام ديو كذلك يفعل الكبار

احیاء العلوم مبارک بوراور جامعہ اسلامیہ ڈائھیل کے علاوہ آپ نے انجمن ہائی اسکول بمبئی اور دارالعلوم امدادیہ بمبئی میں بھی مذریسی خدمات انجام دیں۔ ہائی اسکول بمبئی اور دارالعلوم امدادیہ بمبئی میں بھی مذرسہ بھی قائم کیا جو ماشاء 1901ء میں بھیونڈی میں مفتاح العلوم کے نام سے ایک مدرسہ بھی قائم کیا جو ماشاء اللہ اب مہاراشٹر کاعظیم دینی ولمی ادارہ بن چکا ہے۔

ار دوتصانیف

مختلف موضوعات پرار دوش آپ کی درج ذیل تصانیف ہیں: ۱-عرب و مندعهد رسالت میں ۲- مندوستان میں عربوں کی حکومتیں ۔۳-خلافت

ا - برب و مندوستان - ۱۷ - خلافت امونیه اور مندوستان -۵ - خلافت عباسیه اور راشده اور مندوستان -۵ - خلافت عباسیه اور

مندوستان - ۲ - اسلامی مندکی عظمت رفته نه - مآثر ومعارف - ۸ - دیار بورب میں علم وعلاء - ۹ - آثاروا خبار -

بیسب کتابیں ندوۃ المصنفین دہلی سے شائع ہو تیں اور پہلی پانچ کتابوں کو سنظیم فکرونظر سمرسندھ پاکستان نے دوبارہ شائع کیا۔ عرب وہندعہدر سالت میں اور ہندوستان میں عربوں کی حکومتیں کو مکتب عارفین کراچی نے دوبارہ شائع کیا۔ پہلی دو کتابوں کا مصری عالم ڈاکٹر عبدالعزیز عبدالجلیل نے عربی میں ترجمہ کیا، پہلی کتاب کا ترجمہ "المھینة المصریة لکتاب مصر" نے اور دوسری کا "مکتبة آل عبدالله البکویة ریاض "نے شائع کیا، اس کے علاوہ پہلی کتاب کا سندھی ترجمہ بھی تنظیم فکرونظر سے شائع ہوچکا ہے۔

۱۰- مخقرسوائح ائمہ اربعہ ۱۱- تدوین سرومغازی ۱۱- فیرالقرون کی درسگاہیں اوران کا نظام تعلیم وتربیت سا- فیوا تین اسلام کی دینی ولمی خدمات بید کتابیل شخ البند اکیڈی دارالعلوم دیوبند کی طرف سے طبع ہوئیں ۱۹- معارف القرآن تاج ایجنسی بمبئی سے شائع ہوئی۔ ۱۵- علی وحسین ۱۲- طبقات الحجاج ۱۰- ۱۲- تاج ایجنسی بمبئی سے شائع ہوئی۔ ۱۵- علی وحسین ۱۲- طبقات الحجاج ۱۰- ۱۱- تا دارے میں تذکرہ علیائے مبارک بور ۱۸- تعلیمی سرگرمیاں عہد سلف میں ۱۹- افادات میں محتلف بھری۔ ۲۲- اسلامی نظام زندگی۔ ۱۱- ج کے بعد۔ ۲۲- مسلمان ۱۳۳- اسلامی شادی ۱۲۰- قاعدہ بغدادی سے مجھے بخاری تک نیدکتابیں مختلف اوقات میں مختلف اداروں سے شائع ہوئیں، آخرے چندرسائل متعدد بارطیع ہوئے۔

عربي تصانيف

اردو کے علاوہ عربی میں بھی آپ کی بیش قیمت تھنیفات ہیں:

ا-ر جال السند و الھند کیلی بار محدا حرمیمن برادران کے زیرا ہتمام مطبع جازیہ بہتری میں چھی، دوسری بار حک واضا نے کے بعد دواجز اء میں دارالا نصار قاہرہ سے شاکع ہوئی۔ اس کتاب کو اب اردو کے قالب میں ڈھال کرشائع کیا جا ذہا ہے۔

ا- العقد الشمین فی فتوح الھند و من ور دفیھا من الصحابة و التابعین کیم بار ابناء مولوی محمد بن غلام السورتی بمبئی نے شائع کیا، دوسری بار دارالا نصار قاہرہ سے شائع ہوئی۔

س- الهند في عهد العباسيين دارالانصارقابره مصر عطيع بوئي ـ

شحقيق تعلق

تقنيفات كے علاوہ آپ كى عربى تحقيقات وتعليقات بھى ہيں:

ا-جواهر الاصول في علم حديث الرسول الأبي الفيض محمد بن محمد بن محمد بن على الحنفي الفارسي.

۲-تاریخ أسماء الثقات لابن شاهین البغدادی: ان دونول كتابول كو مشرف الدین الكتبی و أو لاده بمبی في شائع كیا، بهلی كتاب كودارالسلفیه بمبی ادر مكتبة علمیة مدینه منوره نے بھی شائع كیا۔

۳- دیوان احمد، یه آب کے نانا مولانا احد حسین صاحب کے عربی اشعار وقصا کدکا مجموعہ ہے، جے آب نے مرتب ومدون کر کے شاکع کیا۔

ان مستقل تصنیفی و تالیفی کامول کے علاوہ آپ نے بہت سے علمی و تحقیقی مضامین معارف اعظم گڑھ برہان دہلی، صدق لکھنو، دارالعلوم دیو بند اور دیگر

اخبارات ورسائل میں لکھے، بلکہ اخبار'' انقلاب'' میں جالیس سال تک جومضامین مختلف موضوعات پر لکھے ہیں، اگران کو سلیحدہ علیحدہ عنوان سے جمع کر دیا جائے تو بلاشبہ سیکڑوں جلدیں تیار ہوسکتی ہیں۔ بلاشبہ سیکڑوں جلدیں تیار ہوسکتی ہیں۔ خدا تعالیٰ حضرت قاضی صاحب کی ان تالیفی غدمات کو قبول فرمائے اور انھیں

خدا تعالی حضرت قاضی صاحب کی ان تالیفی خدمات کوقبول فرمائے اورانھیں اعلیٰ علیین میں جگہ نصیب فرمائے ۔ آئین!

بنده

وصى احد بستوى القاسى خادم تدريس معهدالانورديو بنذ ۱رمرم الحرام ۱۳۲۴ اهد





كلمات وعاء

حضرت علا مه ابوالوفاء افغانی صدر بجنه احیاء معارف نعمانی حیدر آباد (دکن)

الحمدالله العلى العظيم والصلواة والسلام على رسوله النبى الكريم وعلى آله وصحبه الذين فازوامنه بحظ عظيم، المابعذ!

احقرنے علیا ہے سندھ وہند کے حالات پر فاضل جلیل برادرم قاضی اطہر صاحب
مبارک پوری کی کتاب ' رجال السند والہند' کا جستہ جستہ مطالعہ کیا، یہ دکھ کر بوئی
خوثی ہوئی کہ موسوف نے مختلف بنیادی کتابوں سے بوئی دیدہ وری کے ساتھ یہ
کتاب ترتیب دی ہاور بوئی حد تک وہ خلا پر کردیا ہے جواب تک علماء کی توجہ سے
محروم تھا۔ خدااان کی اس کا وش کو قبولیت سے نواز ہے، تحریر وتخلیق کا غازی بنائے اور
اس کتاب کی تحکیل کی توفیق دے ؟ تا کہ اس موضوع پر ایک کا فی ووافی ذخیرہ جمع
ہوجائے اور کتاب ہر اعتبار سے کممل اور اہل علم کے لیے نفع بخش اور چشم کشا ثابت
ہو۔ دعا ہے کہ اللہ تعالی مؤلف موصوف کو مزید نیک کا موں کی توفیق دے اور اس قسم
کے ملمی آ ناروذ غائر کی ترتیب و تالیف کے لیے تادیر بقید حیات رکھے۔

£3£3£3

ميارك كوشش

مصرکے مشہور حقق ونقا دشنے عبد المنعم النمر رکن از ہرڈیلی گیشن ورکن اسلامی کانفرنس، برائے ہند

فاضل رفیق مولانا قاضی اطهر صاحب مبارک پوری کی تھنیف "رجال السند دالہند" کوخاص خاص مقامات سے دیجنے کا موقعہ لا، مجھے محسوس ہوا کہ موصوف نے مختلف ما خذ ومراجع سے اس کتاب کو ترتیب دینے میں بڑی محنت کی ہے، اس کتاب کے ذریعہ سندھ وہند میں گزری ہوئی ہر شعبہ کزندگی سے متعلق نمایاں شخصیات کو بہ خوبی جانا جاسکتا ہے، یہ ایک الیس مبارک کوشش ہے جس کی وجہ سے مخصیات کو بہ خوبی جانا جاسکتا ہے، یہ ایک الیس مبارک کوشش ہے جس کی وجہ سے مولف موصوف ہر قاری کی طرف سے شکر یے کے مستحق ہیں۔ مجھے امید ہے کہ قاضی صاحب ساتویں صدی ہجری کے بعد کی سندھ وہندی شخصیات کا صدی وار قاضا کیں گئے، تا کہ عربی داں حضرات برصغیر ہندویاک کی شخصیات کا صدی وار مطالعہ کرسکیں۔ احقر فاضل برادر احمد غریب کو مبارک باد چیش کرتا ہے کہ ان کی کوششوں کے مفیل یہ کتاب قار کین تک ہی ہی ہی۔

**

بر ای مسرت ہوئی

فاضل كرامي قدرشنخ عبدالعال عقباوي

رکن از ہرڈیلی کیشن ورکن اسلامی کانفرنس برائے ہند

مشیت ایزدی ہے جمبی میں میری ملاقات فاصل برادر جناب قاضی اطہر صاحب مبارک بوری سے ہوئی ،اس وقت سندھ وہند کی ہر طبقے کے عظیم شخصیات کے حالات برمشمل ان کی کتاب ' رجال السندوالہند' ' کوچھی و مکھنے کا موقع ملاءاس ب مثال كتاب كى تاليف مين موصوف نے جس غير معمولى سر كرمى اور دفت نظر كا مظاہرہ کیا ہے اس سے مجھے برسی خوشی ہوئی، بیان کی الی قابل قدر کاوش ہے جس کے نتیج میں ابتدائے اسلام سے لے کرساتویں صدی ججری تک کی اسلامی مندکی شخصیات کا تعارف آسان ہوگیا ہے۔انھوں نے حالات نگاری میں حروف جی کی آسان ترتیب کو طحوظ رکھا ہے، کتاب میں مذکورہ ما خذ ومراجع ہی ہے اس کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ اس بیش قیت کتاب کی تصنیف میں مؤلف نے کس قدر محنت وجاں فشانی ہے کام لیا ہے۔ رب کریم انھیں صحت وتندری سے نواز ہے اور ان کا سابیتا دیرقائم رکھے تا کہاس کتاب کا دوسرا حصہ بھی منظرعام پرآ جائے ، دعاہے کہ الله تعالى مؤلف كوان كى اس كوشش كا بهترين صله عنايت فرمائ - وهو نعم المولى ونعم المعين

وعاء

مشهور دمعر وفحقق ومؤرخ احدسباعی مکی مؤلف تاریخ مکه مرمه

تاریخ کے مختلف ادوار میں اسلامی تحقیقات کے حوالے سے علائے ہند کی خدمات ایک واضح حقیقت ہیں، ان میں فلاسفہ بھی گزرے ہیں، حفاظ حدیث بھی، راویان حدیث بھی گزرے ہیں، مفسرین بھی، ادباء بھی گزرے ہیں اور تھوں دلائل سے زندیقوں اور ملحدوں کارد کرنے والے مناظرین و محققین بھی، بلکہ اس باب میں ان کی خدمات کا نیلز ااوروں کی بہنست جھکا ہوانظر آتا ہے، اس لیے بیکوئی تجب خیز بات نہیں ہے کہ کوئی شخص ان عظیم شخصیات پر کچھ لکھے، البتہ یہ بات ضرور حرت انگیز از رقالم بند کردیے جا کیں کہ بہ ظاہر ایسا کرنا ممکن نہ ہو۔ قاضی اطہر صاحب انداز پر قلم بند کردیے جا کیں کہ بہ ظاہر ایسا کرنا ممکن نہ ہو۔ قاضی اطہر صاحب مبارک پوری نے کہی کچھ کیا ہے، مجھے" دیا السند و الهند" نامی ان کی یہ جامع کتاب دیکھ کر بہت خوشی ہوئی، دعا ہے کہ خدا تعالی مسلمانوں کوقاضی صاحب جیسی عظیم ہستیوں سے محروم نہ کرے۔ إنّه سمیع مجیب الدعاء.

(1)

تعارف

يروفيسراحمد فريدامقيم بمبئ

اپی حالیہ تصنیف ' رجال السندوالہند' دکھانے کے بعد محقق جناب قاضی اطبر صاحب مبارک پوری نے جھ سے بیخواہش ظاہر کی کہ بین ان کی بیش قیمت کتاب کے تعلق سے بھت تعارفی کلمات لکھ دول۔ اس بین شک نہیں کہ قاضی صاحب نے اس کتاب کے ذریعہ عربی لائبر ری کی ایک بری ضرورت پوری کردی ہے، عام مور خین محققین کی نظروں سے پوشیدہ اپنے متند تاریخی آخذ کی بدولت کی کتاب جلد ہی ادبی اور تاریخی حلقوں میں اپنا ایک مقام پیدا کر لے گی۔ اس کتاب میں آپ کو ہزن کی دل نشیں اور دل کش پیرائے میں ان علائے ہند کے حالات پر ھے کو ملیں گے جو ہرفن میں کال دست گاہ رکھتے تھے جو ماضی میں مینارہ نو راوراب سلف صالحین شار ہوتے ہیں۔ کتاب کے مطالع سے آپ کو محسوں ہوگا کہ یہ کوئی انسائیکلو پیڈیا ہے، ہو ہوتے ہیں۔ کتاب کے مطالع سے آپ کو مسامت تاریخ کا وہ اہم باب ہوگا جس کی اسلام کے سنہرے دور کی ان عظیم شخصیات سے واقفیت کے لیے ضرورت تھی۔ اسلام کے سنہرے دور کی ان عظیم شخصیات سے واقفیت کے لیے ضرورت تھی۔

یہاں اس حقیقت کا ظہار بھی ضروری معلوم ہوتا ہے کہ مؤلف موصوف نے
اس کتاب کے ذریعہ ایک ایسی وقع علی خدمت انجام دی ہے جوایے نامساعد
حالات میں انھیں جیسوں کا حصہ ہوسکتا ہے، بلاشبہ یہ ایک تاریخی دفتر ہے جواپ
اندر ماضی کے تمام واقعات اور اس دور میں گزری جملہ شخصیات کے اخوال وآ ثار کو
سمیٹے ہوئے ہے۔ یہ ایک دستاویز ہے جس سے برصغیر کے مسلمانوں کوظیجی ممالک
سے جوڑنے میں مدد ملے گی، کیوں کہ یہ ماضی میں عرب وجم کے روحانی نہ ہی اور
ترنی وثقافتی تعلقات اور رشتوں کی منظر کئی کرتی ہے، اس لیے ہر مسلمان اور ہرعر بی
مفکر سے میری گزارش ہے کہ وہ اس قیمتی کتاب کو ضرور بڑھے تا کہ اسے ان مقائق کا
علم ہوجس کی اسے تلاش ہے۔ اخیر میں احقر مؤلف موصوف کی خدمت میں عزت
افرائی اور شکر یے کے جذبات بیش کرتا ہے۔

امت کافریضه ادا کردیا علامه سلیمان دارانی دشقی استاد جامع بی امیه دشق

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على رسوله محمد وآله و اصحابه اجمعين المالحد!

مین نے فاصل مؤلف مولانا قاضی اطهر صاحب حفظہ اللہ کی کتاب "رجال السند والہند" کے بعض مقامات کو دیکھان ماشاء اللہ انھوں نے اس سلسلے میں علمائے امت پر عاکد ذمہ داریوں کو کسی حد تک پورا کردیا ہے۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ اولیاء اللہ کا ذکر خیر باعث رحمت خداوندی ہے اور بیعلاء ہی اولیاء امت ہیں، کیوں کہ اگر انھیں بھی ولی نہ مانا جائے تو روئے زمین ہی ولایت سے فالی ہوجائے گی، یہ چند تعارفی جیلے ہیں جو میں نے اس کتاب کے حوالے سے لکھے ہیں، اگر چیس اس لائق نہیں ہوں کہ کی کتاب پر تقریف کھوں نے تو مص خدا کی تو فیق ہی ہی جو اسکی ہے، الکہ خیس ہوں کہ کی کتاب پر تقریف کھوں نے تو مص خدا کی تو فیق ہی ہی جاسمتی ہے، اللہ وقتی و ھو بھدی السبیل۔

اینے موضوع برکامل و کمل کتاب شیخ سعد بن عبدالله شملان ایمشهور بحرینی عالم

وباللہ التوفیق 'رجال السند والہند' نامی قاضی اطہر صاحب مبارک بوری کی کتاب نظر نواز ہوئی ہُنگی وقت کے باعث بالاستعیاب تواس کا مطالعہ نہ کرسکا، کیک جو یہ اس کی روشی میں اسے ایک عمدہ اور اپنے فن میں کامل وکمل کتاب کہہ سکتا ہوں، پایہ محکیل تک پہنچنے کے بعد بلاشہ بیا کابر کے علمی خزانے کا سراغ دینے والی ایک شان دار کتاب ہوگی خدااس کتاب کوافادہ عام کا ذریعہ بنائے ،سلف صالحین کی زندگیوں سے ہمارے لیے عبرت کا سامان کرے اور ہمیں ان کا پیروکار بنا کر کردار وسل کا غازی بنائے ، یہ بھی دھا ہے کہ وہ دین اسلام کوسر بلندر کھے،اس کی خدمت وشرت کے لیے نیک اور صالح افراد مہیا کر اور ایمان پر ہمارا خاتمہ فرمائے۔

تشكروا متنان

ا خیر میں احقر ان تمام جلیل القدر علماء ومشائخ کاشکریدادا کرتا ہے جفوں نے
اپنی تقریظات سے اس کتاب کی اہمیت وافا دیت کا احساس دلایا، اسی طرح وہ لوگ
بھی شکریے کے مستحق ہیں جن کا اس کتاب کی طباعت کے سلسلے میں کسی بھی قتم کا
تعاون رہا ہے، خصوصاً حضرت مولانا غلام محمد صاحب خطیب جامع مسجد بمبئی، مولانا
محمد عثان مبارک بوری، عالی جناب الحاج محی الدین منیری اور برادرم محمد سیق
صاحب قادری جیسے مخلص حضرات کا راقم الحروف کچھذیا دہ ہی شکر گزار ہے۔
صاحب قادری جیسے مخلص حضرات کا راقم الحروف کچھذیا دہ ہی شکر گزار ہے۔
مؤلف کتاب

مقدمكتاب

الرمؤلوس: (حضرت مولانا قاضي اطهرصاحب مبارك بوري) الجمدالة رب العالمين والصلوة والسلام على سيدنا ونبينا ومولانا محمد صلى الله عليه وعلى آلة وأصحابه وأتباعه أجمعين وسلم. احقر قاضى اطهر بن محرصن بن لال محد بن شيخ رجب بن المام بخش بن محدرضا میارک بوری اعظمیٰ رقم طراز ہے کہ جس طرح علماء فے عالم اسلام حی کہ چھو نے چھوٹے شہروں اور دیہاتوں پر بہت کھ لکھ رکھا ہے اور اس میں انھوں نے فتو حات، رمایا وسلاطین کے حالات اور اسلام ومسلمانوں کےسلسلے میں روتما ہونے والے واقعات درج کے ہیں، تاریخ بغداد، تاریخ اصفہان، تاریخ جرجان اور تاریخ شام وغيره جغرافيه اسفار ، تاريخ اورطبقات كى سكرون كتابين جس كابين جوت بين اى طرح مؤرخین نے زمانہ قدیم بی سے مندکی تاریخ فو خات اور یہاں کے باشندوں کے حالات سے بھی دل جسی کی ہے۔ ابن ندیم کی تصریح کے مطابق علی بن محد بن عبدالله مدائتي (مون مدن مدن مدن عدال موضوع ير مغفر الهند "اور"عمال الهند" نامي دوكاليس تصنيف كين، علماء كے بول خراسان، مندوستان اور ايران كے حالات ے ان سے زیادہ اس وقت کوئی دوسر اوا قف نہ تھا ، مدائن کی بیکتا بیل اب نابید بین ۔ مدائن کے بعد احد بن میکی بن جاہر بلاؤری (موق وعدم) نے اپنی کتاب "فوح البلدان مين فتوحات سنده منعلق ايك تقل باب قائم كرت كتاب كالفنيف ك وقت (١٥٥ه) تك كرسار عالات قلم بندكردي بن ، تارائي بنديرات تيسري تفنيف مجما جائے فور البلدان كاليه خصر كتاب كي ساتھ وسكياب تے۔علامة عبدالكريم ابن ابويكر سمعاني مروزي (مون المهاعة) كي ووكتاب الإنساب" من يقي

سنده و مند کی شخصیات کا پھی تذکرہ موجود ہے، فتوح البلدان کی طرح ہے کتاب بھی دستیاب ہے۔ شہرالور کے قاضی اور خطیب شخ اساعیل بن علی بن جمر ثقفی سندھی کے آباء واجداد کی بھی اس موضوع پر 'تاریخ المسئلدو غزوات المسلمین علیہا و فتوحاتہم " نام کی ایک عربی تصنیف موجود ہے ' کشف المطنون " میں تاریخ سندھ سے مرادشاید یہی کتاب ہے۔ افسوس کہ یہ کتاب بھی علامہ دائنی کی کتابوں کی صندھ سے مرادشاید یہی کتاب ہے۔ افسوس کہ یہ کتاب بھی علامہ دائنی کی کتابوں کی طرح زمانے کے دست برد سے محفوظ نہرہ کی ، اساعیل تعفی کے بعد ۱۱۳ ھیں علی بن حامد ابن ابو بکر کوئی اوشی نے تاریخ سندھ پر ایک فاری تصنیف یا دگار چھوڑی ، وہ اپنی اس کتاب کے تعلق سے کسے ہیں کہ 'الور' میں میری قاضی اساعیل بن علی ثقفی سندھی سے ملاقات ہوئی ان کے پاس ان کے آباء واجداد کی عربی تصنیف 'تاریخ السند'' کے بچھا جزاء دکھ کر میں نے آفسیں لے لیا اور بعد میں اس کا فاری ترجمہ کردیا ، السند'' کے بچھا جزاء دکھ کر میں نے آفسیں لے لیا اور بعد میں اس کا فاری ترجمہ کردیا ، کوئی اوشی کی یہ کتاب '' بھی خام سے مشہور ہے۔ خدکورہ بالا تمام کتابیں اس موضوع سے متعلق ساتویں صدی ہجری تک کی معلومات فراہم کرتی ہیں۔ موضوع سے متعلق ساتویں صدی ہجری تک کی معلومات فراہم کرتی ہیں۔

اس کے علاوہ سندھ وہند کے حالات، فتو حات اور شخصیات کا تذکرہ بہت ک کتب غروات وفتو حات، کتب طبقات اور سفر ناموں میں بھی موجود ہے جیسے سلیمان تاجر (متونی ۱۳۲۵) ابوزید سیرانی (متونی ۱۳۳۵) کے سفرنا ہے، علامہ ابن خرداؤ بہ (متونی ۱۳۵۰) کی ''المسالک و الممالک ''علامہ بمدانی سفرنا ہے، علامہ ابن خرداؤ بہ (متونی ۱۵۰۵) کی ''المسالک و الممالک ''علامہ بمدانی (متونی ۱۸۵۰) کی ''کتاب المبلدان ''بزرگ بن شہریا ررام برمزی کی 'عجائب المهند ''الفهرست ''علامہ ابرائیم بن محموط کی (متونی ۱۳۵۰) کی ''مسالک الممالک الممالک ''الفهرست ''علامہ ابرائیم بن محموط کی (متونی ۱۳۵۰) کی ''مسالک الممالک البین جول بغدادی (متونی ۱۵۰۸) کی ''صور الارض ''علامہ مسالک الممالک الممالک الممالک مقدی معرفة الأقالیم ''مسعودی کی ''قانون '' مرخی ۱۳۵۰) کی ''الم علاق مورخ بیرونی (متونی ۱۳۵۰) کی ''کتاب المهند '' ابن رستہ (متونی ۱۳۵۰) کی ''الم علاق

النفیسة "قدامه بن جعفر (مون ۱۹۹۱ه) کی "کتاب النحواج وصنعة الکتابة" علامه ادریس متوفی (مون که ۵۱۰) کی "عجانب البروالبحو" زکریا قزویی متوفی (۱۸۲ه) کی "آثار البلاد" ابوحامه عرن کی اندی متوفی (۱۸۵ه) کی "تحفة الالباب" اورعلامه یا قوت حوی بغدادی (متون ۱۲۲ه) کی "معجم البلدان" وغیره یا تیمام کتابیس سانویس صدی بجری تک کے تاریخی، سیاسی و ثقافتی حالات پرمشمل بین، جواسلامی عظمت واقترار کاسب سے تابناک دور ہے۔

ساتویں صدی جمری کے بعد امیر معصوم بکری سندھی (متونی ۱۱۰۱ھ) اور شیخ محمہ طاہر مصفوی (متونی ۱۰۳۰ه) نے فارس میں سندھ کی تاریخیں لکھیں۔ شیخ علی شیر (متونی ١٨٨ه) نے " تخفة الكرام" كے نام سے تاريخ بنديرايك مبسوط كتاب تصنيف فرماكى، اس کی تنیسری جلد سندھ کے حالات پرمشمل ہے۔علاوہ ازیں "ارغوان نامہ اور "ترخان نامه "میں بھی مندکا کچھ تذکرہ موجود ہے۔صاحب کشف الظنون رقم طراز ہیں کہ محد بن پوسف ہروی نے جدید مغربی ہندوستان کی ترکی زبان میں ایک تاریخ لکھی تھی۔اس کا ایک فرنچ محقق نے ترجمہ کیا اور بہت سی باتوں کا اضافہ بھی کیا۔ چناں چداس نے اس علاقے کے واقعات معروف بہ" یک دنیا" اس کے اوصاف وخصوصیات، نیزید بات بیان کی کهمتقدمین جس دنیا تک پہنچنے میں نا کام رہے، وہاں تک متاخرین کس طرح بینیے؟ انھیں زمانوں میں بعض ہندوستانی علماء نے بھی تاریخ مندير كتابيل لكصيب، مثلاً فارى مِن شيخ عبدالحق محدث دبلوي كي "أخبار الأخيار" محمد قاسم فرشته ک''ناریخ فرشتهٔ 'اس کے علاوہ اور بہت سے علماء نے یہاں کی شخصیات كوموضوع تحرير بنايا ہے، ليكن ان كاطريقة تصنيف وتاليف متقدمين علماء سے الگ اوراینے زمانے کے حالات اور تقاضوں کا نتیجہ تھا جس کا اِظہار ہندوستان کے عظیم مؤرخ مولانا غلام على آزاد بلگرامى (١٢٥٠ه) نے يوں كيا ہے، موصوف اپنى كتاب "مآثر الكرام" من المانظام الدين كتذكر ي كضمن من لكسة بن: " حقیقت ہے کہ ہمار مے تفین نے صرف یہاں کے صوفیا ہے کرام ہی کے دوسری حالات اور کار تاموں سے دل چینی کی، برائے نام ہی انھوں نے یہاں کی دوسری نامور شخصیات کا ذکر کیا۔ یہی وجہ ہے کہ تاہنوز اس سلسلے میں کوئی مستقل کتاب دستیا بنیں ہے، "عین العلم" "نامی کتاب اس بات کی واضح دلیل ہے کہ اس کا مصنف اپنے زمانے کا انتہائی جلیل القدر عالم ہے۔ سے تول کے مطابق بہندی نژاد ہے، جیسا کہ ملاعلی قاری نے اپنی شرح میں بحوالہ حافظ ابن جمرعسقلائی تقریح کی ہیں بحوالہ حافظ ابن جمرعسقلائی تقریح کی ہیں مورت نے اپنی شرح میں بحوالہ حافظ ابن جمرعسقلائی تقریح کی ہیں دورتیانی مورخ نے ان پر پھینیں کھا اور ای لیے اس عظیم الثان تعنیف کے ہندوستانی مؤرخ نے ان پر پھینیں کھا اور ای لیے اس عظیم الثان تعنیف کے باوجود دنیا میں ان کا کوئی نام لیے والانہیں ، ہمارے مؤرضین کی ای کوتا ہی کے سبب باوجود دنیا میں ان کا کوئی نام لیے والانہیں ، ہمارے مؤرضین کی ای کوتا ہی کے سبب علی کے ہندکا خاطر خواہ تذکرہ کی ابوں میں نہیں ملتا"۔

نکورہ طریقے ہے ہے کربعض علاء نے متقد مین کے نیج پربھی کا بیں گھی ہیں جیسے شخ عبدالقادر عیدروں بھر و چی کی کتاب 'النور العاشر فی اعبان القرن العاشر ''اورشخ زین الدین مجری مالا باری کی تصنیف 'تحفة المحاهدین فی بعض اخبار البرتگالیین ''لیکن پہلے ہی طریقہ 'تصنیف کے عام ہونے کی وجہ سعض اخبار البرتگالیین ''لیکن پہلے ہی طریقہ 'تصنیف کے عام ہونے کی وجہ سے اسلامی ہند کی بہت می شخصیات طاق نسیاں ہوکر رہ گئیں، مثلاً صاحب ''مشارق الانوار والعباب'' امام صن صفائی لاہوری، صاحب ''کنزل العمال ''امام علی متقی، صاحب' مجمع البحاد ''علامہ طاہر پٹنی گجراتی، صاحب ''تاج العروس ''علامہ مرتضی زبیدی بلگرامی اور مکہ مکرمہ کے قاضی القصاۃ امام فطب الدین نہروالی وغیرہ بہت سے جبال علم کا ہندی نژاد ہونے کے باوجود یہاں کی کتابوں میں خاطر خواہ تذکرہ نہیں ملتا اور وہ لوگ جوان سے علم وضل میں بدر جہا کی کتابوں میں خاطر خواہ تذکرہ نہیں ملتا اور وہ لوگ جوان سے علم وضل میں بدر جہا کم شخصیات کے میں کوتا ہی اور اس کی اسلامی تاریخ پرظلم ہے!!!

خدا بھلا کرے مولانا غلام علی آزاد بلگرای کا کہ وہ پہلے میں جھوں نے اس خلا کو مسوس کیا اور ممکنہ حد تک علائے ہند کے حالات اپنی فاری تھنیف "مآثر الکو ام" اور عربی تھنیف" سبحہ المرجان فی آثار الهندوستان " میں جمع کردیے، ان کے بعد حفرت مولانا عبرالحی مشی (متن استاہ) نے اپنے دور تک کی شخصیات پرایک انتہائی مبسوط کتاب " نوه المحواطر و بھجہ المسامع و النواظر" تھنیف فرمائی۔ انتہائی مبسوط کتاب " نوه المحواطر و بھجہ المسامع و النواظر" تھنیف فرمائی۔ یا بیک ایسی عمده اور متند کتاب ہے جس کا اب تک کوئی جواب ہیں۔

چوں کہ اس موضوع پرابھی کچھاورکام کرنے کی گنجائش تھی اس لیے دل میں خیال آیا کہ سندھ وہند کی شخصیات کے حالات کو خاص طرز پرایک ایس کتاب میں جمع کردوں، جس کی اپنی الگ خصوصیات وانتیازات ہوں، اس کے لیے بیس نے سالہاسال تاریخی وسوانحی کتابوں کی چھان بین کی اوراب میری ان کوششوں کا نتیجہ ''رجال السند والہند'' کے نام سے کتابی شکل میں آپ حضرات کے سامنے ہے والفضل للمتقدم۔

قابل ذكرامور وخصوصيات

ا - رجال السند والبند سے ہماری مراد وہاں کے علماء، محدثین، راویان حدیث، نقہاء، اولیاء، قضاۃ، ادباء، شعراء، نحویین، لغویین، اطبا، فلاسفہ، حکام، سلاطین اورمسلم تجار وصنعت کار ہیں، ان کے علاوہ دیگرفنون سے وابستہ افراد کا تذکرہ بہت کم اوروہ بھی تکیل مبحث کے لیے ہوا ہے۔

۲- رجال سند وہند سے مراد وہ لوگ ہیں جھوں نے یہاں پیدا ہو کر زندگی گزاری، خواہ ان کی وفات وہیں ہوئی ہویا کسی اور جگہ، ای طرح وہ لوگ بھی مراد ہیں، جن کے آباء واجداد وہیں کے تھے، لیکن ان کی پیدائش اور وفات کسی اور ملک ہیں ہوئی۔ رجال السند والہند کے شمن میں ایسے لوگوں کا تذکر ہیں آئے گا جو کہیں

اورے آگریہاں کے مورے حالان کہانے لوگوں کی تعداد بھی کھے کم نہیں۔

ساسوائے نگاری کے سلسلے میں جب ہمیں ہندوستانی مؤرخین کے بہاں کوئی خاص بات نہیں ملی تو ایسے موقعوں پر ہم نے عام تاریخی اور سوائی کما بوں کی طرف رجوع کیا ہے۔

۳۰-زیرنظر کتاب ہماری کوئی با قاعدہ تھنیف نہیں ہے، بلکہ مختلف کتابوں کے ضروری اقتباسات کوہم نے بیجا کردیا ہے اوراس نقل وتر تبیب میں ہم نے بوری احتیاط برتی ہے، کوشش بہی رہی ہے کہ عبارت ہو بہوفل کردی جائے حتی کہ مضامات پرہم نے دانستہ غلط عبارتیں ہی فقل کردی ہیں، پھر بعد میں ان کی اصلاح کی ہے۔

۵- تاریخ وفات وغیرہ کا بھی ہم نے اہتمام کیا ہے، اگر متعلقہ شخصیات کے حالات میں یہ چیز زمل سکی تو ہم نے ان کے اسا تذہ ، تلا غدہ یا معاصرین کے حالات سے ان کی تاریخ وفات وغیرہ کی تعیین کی ہے۔

۱- چوں کہ بیا کیسوائی اور تاریخی کتاب ہے، نہ کہ فضائل ومنا قب کی،
اس لیے ہم نے متفد مین کی اتباع میں بڑی بڑی ہستیوں کا تذکرہ القاب وغیرہ کے
ساتھ نہیں کیا ہے، اس کے باوجود اگر کچھ القاب آگئے ہیں تو وہ بہ طور اقتباس اور
حوالے کے ہیں۔

2-اس طرح ہم نے سوائح کے ضمن میں آنے والے مباحث سے مطلق تعرض نہیں کیا ہے الاید کہ وہ سوائح کا جز ہوں۔

۸-سندھ وہند کا تذکرہ ہم نے قدیم عرب مؤرخین کی عادت کے مطابق بحثیت دوملک کے کیا ہے۔

وعام كرب كريم ال كتاب كوائي رضا وخوش كا بهترين در العد بنائد وصلى الله على سيدنا و نبينا و مولانا محمد و آله و أصحابه و أتباعه اجمعين برحتمك يا أرحم الراحمين.

سنده و مندى الميت، عالم اسلام ميں

اب ہم قار کین کے سامنے بیٹھول سندھ وہند عالم اسلام کے سب سے تابناک اور شافی قدروں کا بول بالا تھا، مسلمان اسلام کے سابے تلے انہائی خوش حالی اور امن وامان کی زندگی بسر کررہے تھے، تمام شعبہ ہائے زندگی میں ان کے تیز قدموں کی چاپ صاف سائی ویتی عقائد وعبادات کی روح پوری اثر آئیزی کے ساتھ ان کے جسم میں رواں دواں تھی۔ حافظ ذہی 'تذکو ق المحفاظ'' میں اس زمانے کا حال بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ اسلام اور اہل اسلام دونوں ہی اس دور میں معزز تھے، تم کا دور دورہ تھا، جہادی سرگرمیاں زوروں پرتھیں سنتیں معمول بہاتھیں، بدعات کا نام ونشان ندتھا، تھا، جہادی سرگرمیاں زوروں پرتھیں سنتیں معمول بہاتھیں، بدعات کا نام ونشان ندتھا، حق گوئی کا بے پناہ جذبہ تھا، زاہدین واولیاء اللہ بھی بکثر ت تھے اور مغرب قصی و جزیرہ انہ سے لے کر حبث اور چین و ہندتک لوگ مامون اور آسودہ حال تھے۔

علامہ مقدی بشاری رقم طراز ہیں کہ عالم اسلام (خدااس کی حفاظت فرمائے)

ہے ہموار اور مسطح علاقوں کا نام نہیں کہ طول وعرض اور مربع بیائش سے اس کی تحدید
کی جاستے، بلکہ بہت منتشر، شاخ درشاخ، بہاڑ اور گھاٹیوں ٹیرشل ہے جو تحص سورج
کے طلوع وغروب ہونے کے مقامات برغور کر ہے، دنیا کے مما لک کا گشت کرے،
راستوں کا اسے علم ہواور فرتخ سے دنیا کے علاقوں کی بیائش کرے، اسے اس کا
اندازہ ہوسکتا ہے، تا ہم راقم سطور ارباب عقل وخرد کے لیے عالم اسلام کی منظر شی،
تعارف اور شیح خدوخال واضح کرنے کی ہرمکن کوشش کرے گا۔

عالم اسلام کاسورج مغرب اقصیٰ کے ساحل بحراثلانک میں غروب ہوتا ہے، بحرقلزم اور مراکش کے درمیان واقع ملک مصرتک بھیلتا چلا گیا ہے، مراکش مصر سے بحراثلانک تک ایک مٹی کی شکل میں بڑھتا چلا گیا ہے، شام کی سرحد چوں کہ جانب شال میں مصرے ملک روم تک جاملتی ہاں لیے اس کامل وقوع بحروم اور صحرائے عرب کے درمیان ہے، صحرائے عرب اور شام کا بچھ علاقہ جزیرہ نمائے عرب کے بچھ حصے سے ملتا ہے۔ شالی عراق کا پڑوی ملک '''افوز' ہے، مغرب میں دریائے فرات ایک کمان کی شکل میں اسے گھیرے ہوئے ہے، فرات کے عقب میں بقیہ صحرائے عرب اور شام کا بچھ حصہ واقع ہے، ریم رسمالک کی تفصیل ہے۔

مما لک عجم کا تعارف اس طرح ہے : مشرقی عراق کی سرحد پرخوز شتان ہمشرقی افور کی سرحد پر ملک رحاب اور خوز ستان کے بعد ایک لائن میں فارس ، کرمان اور مندھوا قع ہیں ، جن کے جنوب میں سمندراور شال میں صحرااور خراسان ہیں ، سندھ وخراسان کی سرحدیں جانب مشرق میں غیر مسلم مما لک سے اور رحاب کی سرحد مغرب وشال میں روم ہے اور ریاست دیلم رحاب ، خراسان ، پہاڑوں اور جنگلات کے درمیان واقع ہے۔

ذراغور بیجئے بیتیں عالم اسلام کی حدود۔ جو تخص مغرب سے لے کرمشرق تک سلطنت اسلامیہ کاسفر کرے، اس کورائے کی نشیب وفراز اور بے چیدگی کاسامنا کرنا پڑتا، بحرا ٹلائک ہے مصر کے لیے راست راستہ موجود تھا، وہاں سے عراق کے لیے تھوڑا مڑنا پڑتا تھا، پھر ذراشال میں ہے کرخراسان اور عجم کی حکومتیں پڑتی تھیں، اس کے بعد بخارا کے دائیں جانب 'سے سورج طلوع ہوتا نظر آتا تھا۔

عالم اسلام کارقبہ ذکورہ بالاتفصیل کے مطابق بیتھا: بحراثلاثلک سے قیروان کی مسافت ۱۲۰ اردن کی، قیروان سے دریائے نیل تک ۲۰ دہاں سے دریائے دجلہ تک ۵۰ دجلہ سے دریائے جیحون تک ۲۰ بیجون سے ''تو کلت'' تک ۱۸ اراور دہاں سے طراز کی مسافت ۱۱ ریوم کی تھی اور اگر آپ فرغانہ کی طرف چلیں تو جیحون سے ''اوز کند'' کی مسافت ۱۳۰ ریوم کی اور کا شغرجانے کی صورت میں ۴۰ ریوم کی ہے۔ دوری جانب ساحل یمن سے بھرہ کی مسافت ۱۷ ریوم کی ، وہاں سے دوری جانب ساحل یمن سے بھرہ کی مسافت ۱۷ ریوم کی ، وہاں سے

اصفہان کی ۱۳۸ رفر سخ ،اصفہان سے نیشا پور کی ،سار نیشا پور سے جیون کی ۲۰ رپھر جیون کی ۲۰ رپھر جیون کی ۲۰ رپھر جیون ہے جس میں مقرو جیون سے طراز کی مسافت ۳۰ رپوم کی ہے، یہ سیدھی پیائش ہے جس میں مقرو مراکش اور شام بیس آتے۔گویا اس تفصیل کی روشی میں عالم اسلام کاکل طول تقریباً ۲۰۸۰۰۰ کلومیسر ہے۔

عالم اسلام کے وض کے متعلق یہ ہے کہ اس میں بکسانیت نہیں ہے، چنال چہ مراکش اور مصر کا عرض کم ہے، لیکن جب آپ مصر کی طرف بردھیں گے قوعرض بردھ جائے گا اور بردھتا ہی چلاجائے گا، یہاں تک کہ دریائے جیون کے اس بار ملک سندھ تک کی یہ پوری مسافت سار ماہ کی ہے، ابوز پر سیرافی نے عالم اسلام کا عرض "ملطیہ" سے جزیرہ، عراق، فارس اور کر مان بوتے ہوئے منصورہ تک مانا ہے کین انھوں نے مسافت کا ذکر نہیں کیا ہے جو عالیا تقریباً سم رماہ کی ہوگی، لیکن ہماری بات زیادہ واضی اور مقت ہے۔

کتے ہیں کہ ۱۳۳۲ ہیں جب محصولات اور ٹیکس کے علاوہ تمام ملک سے خلیفہ کو حاصل ہونے والی آمدنی کا صباب لگایا گیا تو وہ ۲۳۲۲ ۱۳۲۲ دینارتھا، یہ بھی بیان کیا جاتا ہے کہ جب ایک بار خلیفہ معظم باللہ عباسی نے روم سے ملنے والے فیکس کو شار کیا اور وہ ۱۳۰۰ میں رینار سے کم نکا تو اس نے شاہ روم کو لکھا کہ تیرے میں سے گھٹیا اور خراب علاقے سے جس کے حکمرال بھی سب سے گھٹیا اور خراب بیا، جو خراج آتا ہے، تمھا را خراج اس سے بھی کم ہے۔

یہ چوشی صدی ہجری کی اسلامی حکومتوں کا اہمالی بیان تھا ہوا س دور کا وسطی زمانہ ہے جس دور کی کچھ طیم شخصیات کے حالات ہم لکھنے جارہ ہیں۔ مذکورہ بالا تفصیل سے قارئین کے سامنے بہ شمول ہنداس دور کے عالم اسلام خصوصاً مشرقی مما لک کا ایک نقشہ ضرور آگیا ہوگا۔ امام تاج الدین سکی شافعی مطاقات الشافعیه الک کا ایک نقشہ ضرور آگیا ہوگا۔ امام تاج الدین سکی شافعی کی طبقات الشافعیه الک کو کرتے ہوئے رقم طرازیں:

" جاننا جاہیے کہ ہمارے علماء (علمائے شوافع) مختلف ملکوں کے رہنے والے تھے، کچھسمرقنز، بخارا، شیراز، جرجان، رے، طور، ساوہ، ہدان، دامغان، زنجان، بسطاله، تبریز، ببهق،میهنداوراسترآ با دوغیره-مادراءالنبر کے شہروں اور خراسان، آذر بائیجان، مازندان،خوارزم،غزنه،صحاب،غور، کرمان اورسنده وغیره، مشرقی ممالک كے بھی باشندے تھے۔ يبي نہيں بلكه ملك چين تك يورا مادراء النهر ادرعراق عرب وعراق عجم ایسے بہت سے مردم خیز شہروں اور علاقوں مثیمتل تھے۔ یہاں تک کہ ۲۱۲ھ میں چنگیزخاں دشت قبیحاق ہے برق وباد کی طرح اٹھا، آباد یوں اور بستیوں کوتاراج كردالا، ب كنابون كاقتل عام كيا عورتون كالصمتين لولين بغرض سارى دنيا كوديران وبرباد کردیا۔اس کے بعداس کی اولا دا کی انھوں نے بھی اس کی روش اختیار کی ، بلکہ ظلم وبربریت میں اس سے بھی آ کے بروھ گئے۔ تباہی دبربادی اس صد تک پھیلی کہ خدا کی پناہ، بغداد ہلاکو خال کے ہاتھوں وریان کردیا گیا، خلافت کی دھجیاں اڑادی گئیں، خلیفة المسلمین قبل کردیا گیا، عام مسلمانوں کا یہی حال ہوا، بھی بنوعباس کےمحلوں پر صلیب نصب کی گئ تو مجھی معجدوں سے ناقوس کی آوازیں تی گئیں، کھلے بندوں حرام کاری کی گئی، مساجد ومعابد کواجاڑ دیا گیا اور اسلامی عظمت وشوکت کے تمام نشانات منادیے گئے، شاعر کہتاہے:

ئم انقضت تلك البلاد وأهلها الله وكانها وكأنهم أحلام بعروه بستيال اوربستى والله السلاح مث كري كوياوه كوئى خواب تصد

تا تاریوں کا ایک دسته غزنه اور اس سے ملحقه مما لک سندھ، ہند، سجستان اور کر مان تک پہنچ گیا، کھیتیاں اور بستیاں جلادیں گئیں اور ملک تباہ و ہر بادگر کے ایک و برانے میں بدل دیا۔

بغدادمشرق میں اسلامی تہذیب وثقافت اور دنیاجہان سے آئے ہوئے اصحاب علم وفضل اور ارباب صنعت وتجارت کا مرکز تھا، جس طرح مغرب میں

اندلس ان تمام چیزوں کی سر پرسی کررہا تھا۔ دیگر اسلامی ممالک کی طرح ہندوستان بھی در بار بغداد سے وابستہ تھا۔ ابن جوزی (متونی ۵۹۷ھ) بغداد کی مرکزیت کی منظر منظر ته موئ این كتاب "صفوة الصفوة" كثروع مي رقم طرازين: بغداد چوں کہ عالم اسلام کامرکز ہے اس کے اس کی مرکزیت کا خیال کرتے ہوئے اسلامی دنیا کے حالات لکھتے وقت آغاز اس سے ہونا جاہیے تھا، کیکن اپنی تمام تر خوبیوں کے باوجوداسے حرمین شریفین پر فضیلت نہیں دی جاسکتی،اس لیے میں نے ا بن اس کتاب کا آغاز حرمین ہی ہے کیا۔ اس کے بعد طائف اور پھریمن کا، پھر کہیں حاكر دارالخلافه بغدادكا، پهريدائن اورواسط كا، پهريفره اورملنكا، پهرعبادان تستر، شيراز، كرمان، ارجان، سجستان، ديبل اور بحرين كا، پهر يمام، دينور، بهدان، قزوین،اصفہان، رے، دامغان،بسطام، نیشابور، اورطوں کا، پھر ہرات، مرو، ملخ، تر ذر ، بخارا، فرغانہ اور شخشب کا ،اس کے بعد مشرقی مما لک کے ان حضرات کا جن کے نام اورشروں کا تذکرہ کتابوں میں موجوز ہیں، اہل مشرق کے تذکرے کے بعد ہم نے پھر دارالخلافہ بغداد کاذکر کیا ہے،اس کے بعد مغربی ممالک کاذکر آیا ہے،اس کے تحت بم نے اہل عکرہ موسل برقہ، شام، بیت المقدی اور جبلہ کا تذکرہ کیا ہے، پھران بندگان شام کا تذکرہ ہے جن کے وطن کا پہتہیں ،اس کے بعد عسقلان ،مصر،اسکندر سے اور مراکش کا تذکرہ ہے، بعد ازال بہاڑوں، جزیروں اور ساحلوں پر بسے والے حضرات زیر بحث ہیں،ان کے بعد صحراؤں اور جنگلات میں آبادلوگوں کے احوال کا بیان ہے بالکل اخر میں ان لوگوں کے حالات ذکر کیے گئے ہیں، جن ہے سی راستے میں ملاقات ہوگئی کیکن وہ کہاں کے تھے، جس ملک کے تھے؟ کچھ پیتر ہیں۔

ابوالقاسم عبیداللدابن عبداللد بن خرداد به این کتاب "المسالك والممالك" میں لکھتے ہیں كہ ہر ملك كے قبلے كى جہت الگ ہے، مثلاً الل آرمیدیا، آذر بائیجان، بغداد، واسط، كوف، بھرہ، مدائن، حلوان، دینور، نہاوند، ہمدان، اصفہان، رے،

طبرستان، خراسان اور تشمیر کا قبله اس دیوار کعبه کی جانب ہے جس میں دروازہ ہے،
باشندگان تبت، ترکستان، چین اور منصورہ کا جمراسود کی طرف ہے، یمنی حضرات کا
رکن یمانی کی طرف اور اہالیان مراکش، افریقہ، مصر، شام اور جزیرہ کا قبلہ رکن شامی
کی سمت میں ہے، قبلے کی بی مختلف جہتیں ہیں جن کی طرف درخ کر کے پوری دنیا
کے مسلمان نماز اواکر تے ہیں۔

یاسلامی مما لک بشمول ہند، اسلام کے زیر سایدانتہائی پرسکون اور خوش حال زندگی بسر کررہے ہے۔ مختلف علوم وفنون کا دور دورہ تھا، ہر طرف چہل بہل اور بیداری تھی اور جگہ جگہ مسلمانوں کی فرہبی تحریکات کے دیدہ زیب ودل فریب مناظر دعوت نظارہ دے رہے تھے کہ ساتویں صدی ہجری کے نصف میں ایک طوفان تا تا ہے اور ساری دنیا کو تباہ و ہر باد کر جاتا ہے۔ یہ وہی طوفان ہے جے دنیا بورش تا تا تارکے نام سے یا دکرتی ہے۔

ذیل میں ہندوسندھ کے بعض مشہور ترین شہروں ، ان کی فتح اور اسلام کے ذیر تکیں آئے کا تذکرہ کیا جارہا ہے۔ جن شہروں سے ارباب علم وعلاء پیدا ہوئے اور ساری دنیا ، اسلام اور مسلمانوں کے سب سے زیادہ ترقی یافتہ دور میں ان کے فضل و کمال سے مالا مال ہوئی ، ان میں سے اکثر ارباب فضل و کمال انہی شہروں کی جانب منسوب ہیں۔

الور (ارور)

سندھ کا ایک قدیم شہرجس پردائے راجاؤں کی حکومت تھی، نہروں اور
باغات کے درمیان، دریائے سندھ کے ساحل پرواقع بیا لیک متازشہرتھا، اس کی
سرحدمشرق میں کشمیرو، مغرب میں مکران ودیبل، جنوب میں بندرگاہ سورت اور شال
میں قندھار، سیستان اور کرمان سے ملتی تھی۔علامہ بلا ذری لکھتے ہیں کہ جب محمد بن
قاسم ''الور'' کے ارادے سے بیلے، تو راستے میں ان کی ملاقات ہاشندگانی ساوندری

سے جو کہ آج سلمان ہیں، ہوئی انھوں نے امان جاہی، جو انھیں لشکر اسلام کی فیادت اوراس کی رہ بری کی شرط پر دے دی گئی، اس کے بعد وہ 'سمہرے' پہنچے، وہاں کے لوگوں نے بھی ساوندری والوں کی شرط پر مصالحت کرلی، بعد از ال الور کی طرف بروھے، پیشر پہاڑ پر آباد تھا، مہینوں محاصرہ کرنے کے بعد بالآخراس معاہدے پر سلم ہوئی کہ مسلمان ان کی عبادت گا ہوں سے کوئی تعرض نہیں کریں گے ، محمد ہن قاسم نے مہان الور پر تیکس لا گوکیا اور وہاں ایک مسجد کی تعمیری۔

الق (اولام) المستحدد المراب المستحدد المستحدد المستحدد المستحد المستحدد الم

ملتان کے مضافات میں بیا ایک قدیم اور مشہور علاقہ ہے، سندھ کے چھ معروف قلعول میں رائے سامسی بن سہر ان کامشہور قلعہ یہیں ہے، رائے سامسی نے چوں کہ اپنی رعایا کومٹی جمع کر کے قلعہ کے لیے ایک اونچی جگہ بنانے کا تھم دیا تھا، اس لیے اس علاقہ کانام' اچ'' بمعنی بلند پڑگیا۔

بالربهم

علامہ حوی کہتے ہیں کہ "ہد ہد طوران، کران، لمان اور منصورہ کے درمیان دریائے مہران کے مغرب میں واقع بہندھ کے ایک وسیع وعریض علاقے کا نام ہم اونٹ پالنا یہاں کے لوگوں کا بیشہ ہے، منصورہ سے بد ہدی مسافت ۵ردن کی ہے آور کران کے شہر" کیز" سے بد ہداور بد ہد سے مران کے ساحلی شہر" تیز" کا فاصلہ بالتر تیب دس اور ہندرہ دن کا ہے حوی کتے ہیں کہ اس کا نام باء کی بجائے نون کے ساتھ بھی آیا ہے، کیل مجھے اس کی صحت میں شک ہے، اس لیے بہتر یہ ہے کہ اس کی محت میں شک ہے، اس لیے بہتر یہ ہے کہ اس کی مغرب میں عمان ہے، مران یا سندھ کے ساحل پر واقع ہے جس کے معرف کی معرف کے معرف کی معرف کے معرف کی معرف کی معرف کے معرف کے معرف کے معرف کی معرف کے معرف کے معرف کی کو معرف کی معرف

يروس (مجروج)

علامہ یا قوت حموی لکھتے ہیں کہ بروس، ہند کے بروے شان دار اور مشہور ترین ساحلی شہروں میں سے ایک ہے، یہاں سے نیل - نیلارنگ بنانے کے کام میں آنے والا ایک قتم کا گھاس - لک - سرخ رنگ، جس سے کھال رنگ جاتی ہے، ہیرون ملک برآمد کی جاتی ہے۔ مسعودی کے بہقول بروس اپنے علاقے کا پایڈ تخت تھا، اور اس علاقے کے بہت سے گاؤں اس کی طرف منسوب ہوکر بروس کہلاتے تھے، کتابوں میں مذکور ' بروسی نیز ہے' کی نسبت اسی طرف ہے۔ علامہ بلاؤری لکھتے ہیں کہ حاکم بحرین وعمان: عثمان بن ابوالعاص ۵ اھنی میں برز مانہ حضرت عمر بن خطاب اپنے برادر تھم بن ابوالعاص کو تھانہ اور بروس روانہ کر چکے تھے، بروس ہی کو آئ کی کل جروج کہاجا تا ہے، جوسوبہ گرات کا ایک مشہور صلع ہیڈ کوارٹر اور شہر ہے۔

بلوص (بلوچ)

علامہ حوی کہتے ہیں کہ بلوص کردوں کی طرح ایک تو م ہے جو فارس وکر مان
کے درمیان ایک وسیع علاقے میں کثیر تعداد میں آباد ہے، یہ بڑے جری اور دلیر
ہوتے ہیں ''قفص'' نامی غارت گر برادری سے جوانھیں کے آس پاس بستی ہے
بالکل خوف نہیں کھاتے ، بہادر ہونے کے باجود بے ضرر ہیں، تفص برادری کی طرح
ڈاکہ زنی اور قتل و غارت گری بھی نہیں کرتے ۔ مورخ ابوالفد اء تقویم البلدان ،
میں لکھتے ہیں کہ یہ لوگ جبال تفص کے دامن میں سکونت پذیر ہیں اور خانہ بدوشوں
کی طرح مویش پالنا اور ان کے بالوں سے گھر بنانا ان کا پیشہ ہے، فی زمانا ان کو
زوط – جانے – کہتے ہیں ، ان کی زبان ہندوستانی زبان سے ملتی جلتی ہے۔

. يوقان

علامہ یا توت حوی کے برقول ہوقان سندھ کے ایک شہر کا نام ہے۔ بلا ذرک کہتے ہیں کہ جب گورز زیاد بن ابیے نے ابوالا شعث منذر بن جارود عبدی کو سرحد ہند کا حاکم بنایا، تو انھوں نے بوقان وقیقان پر چڑھائی کی اور فتح یاب ہوئے، پھر ابن احری با بلی اس علاقے کے امیر ہوئے، جھول نے شدید جنگ کر کے ان علاقوں کو زیر گئیں کیا۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ عبیداللہ بن زیاد نے ابن جارود کے بعداس علاقے کا امیر سنان بن سلمہ بذکی کو بنایا، البتہ ابن احری با بلی بھی ان کے ساتھ تھے، یہاں کا امیر سنان بن سلمہ بذکی کو بنایا، البتہ ابن احری با بلی بھی ان کے ساتھ تھے، یہاں کے باشند سے بھر للہ آج مسلمان ہیں، خلیفہ معتصم باللہ کے عہد خلافت میں عمران بن موئی بن یکی برکی نے دو بیضاء 'کے نام سے یہاں ایک شہر آباد کیا تھا۔

بيرون

علامة تلقشندی کہتے ہیں کہ بیرون، دیبل اور منصورہ کے مابین دیبل کا آیک مضافاتی شہرہے، قانون میں کھاہے کہ اس کا طول ۹۳ ردرجہ ۳۰ ردقیقہ اور ۲۰ ردرجہ ۳۰ ردوقیقہ اور ۲۰ ردرجہ ۲۰ ردوقیقہ کے مطابق بیرون فلیج فارس میں سندھ کی ایک بندرگاہ ہے۔ ابن سعید کی تصریح کے مطابق بیرون فلیج فارس میں سندھ کی ایک بندرگاہ ہے۔ تاریخ عزیزی میں باشندگان بیرون کومسلمان بتایا گیا ہے، یہاں سے منصورہ کا فاصلہ ۱۲ رمیل ہے۔

بيلمان (كفليمان)

علامہ حوی کہتے ہیں کہ بیلمانی تلواری "اس کی طرف منسوب ہیں، یہ جمیمکن علامہ حوی کہتے ہیں کہ بیلمانی معام کا نام ہو۔ بلاذری نے فتوح البلدان میں لکھا ہے کہ بیلمان، سندھ وہند کا وہ علاقہ ہے جس کی طرف "سیوف بیلمانی" کی نسبت کی جاتی

ہے۔جنید بن عبد الرحمٰن مری نے جو خلیفہ شام بن عبد الملک کے زمانے ہیں سندھ کے کسی علاقے کے حاکم تھے، اس کا حکم پاکر ' کیرج'' پر فوج کشی کی اور اپنے عاملوں کو مربددھنج اور بھروچ کی طرف روانہ کیا۔ ایک لشکراڈین۔ اُجین۔ بھی گیا، ایک اور دستہ حبیب بن مرہ کی قیادت میں مالوہ بھیجا گیا۔جنید کو بیلمان میں فتح ہوئی جس کے نتیج میں اس کے کل میں نذرانے کے علاوہ چالیس لا کھ دینار اور اتن ہی قیمت کے ساز وسامان کا ڈھیرلگ گیا۔ بیلمان دراصل ' بھیلمان' ہے جہال سندھ، گجرات، کا ٹھیاواڑ اور مارواڑ کی مرحدین آکر ملتی ہیں۔ یہ پہلے بھیل بعدازال گوجرقوم کامرکز رہاہے۔ اور مارواڑ کی مرحدین آکر ملتی ہیں۔ یہ پہلے بھیل بعدازال گوجرقوم کامرکز رہاہے۔

تانه (تھانہ)

تقویم البلدان میں ابوالعقول، عبدالرحمٰن ریان ہندی کے والے سے تحریر کے دیا کے سیاسی شہرے، جس کا طول ۱۱ اردر جد ۲۰ روقیقد اور عرض ۱۹ ردر جد ۲۰ روقیقد ہے، اس کے باشندے بت پرست اور کا فریس کچے مسلمان بھی یہاں آباد بیں ۔ ابور یحان بیرونی کہتے ہیں کہ اس کی نبیت '' تاثی'' ہے'' المثیاب المتانشیة'' میں یہی نبیت ہے۔ علامہ بلا ذری کے بہقول جب امیر المونین حضرت عمر بن خطاب کی طرف سے عثان بن ابوالعاص بحرین ویمان کے گور فریخ تو وہ اپ بھائی خط کے کر ین جھائی میں کھا نہ کے لیے ایک اشکر روانہ کیا، جب کھی کہ کو بحرین کی خدمت میں ایک اطلاعی خط کشکر سالما غانما واپس آگیا تو انھوں نے امیر المونین کی خدمت میں ایک اطلاعی خط کھی موزت عرضی طرف سے اس کا جوتا ریخی جواب آیا، اس میں لکھا: اے ثقفی کھی اس میں لکھا: اے ثقفی بھائی! حمدا اگر کے دور کی کی سواری وی) بہندا اگر وہ ہلاک ہوجات تو میں تیری تو مے ان کی تعداد پوری کرتا۔ تھانہ وی البلادم بی کے دور یہ واقع ضلع ہیڈکوارٹر ہے۔

داور(۱)

علامه حوى كہتے ہيں كماس علاقے كوك" داور" كو" زمنداور" جمعنى ز مین دار بولتے ہیں، بیعلاقہ "بست وغور" ہے متصل مختلف شہروں اور دیماتوں پر مشمل ایک وسیع ریاست ہے۔علامہ اصطحری کے بقول داور سجستان کی طرف غور کی ایک ہری جری سرحدی ریاست کا نام ہے، داور اور" درخور" وریائے" ہندمند" کے ساحل پر واقع ہیں، جب عبدالرحمٰن بن سمرہ کا خلافت عثمانی میں سجستان پر قبضہ ہوا، تو انھوں نے ''ر فج ' کے راست داور پہنچ کرزون نامی بہاڑ میں اہل داور کا محاصرہ كرليا _ بالآخران كى طرف _ آتھ برار كے اسلام لشكر كے ليے ضرود يات زندگى ی فراہمی کی پیش کش پر سلح ہوگئ، بعد از ال عبد الرحمٰن بن سمرہ" زون" نام کے یا توتی آنکھوں والےسونے کے بت کے پاس محے،اس کا ہاتھ کا ٹا،اس کی دونوں أي كصي نكاليس، چرسردار كفار سے خاطب موكر فرمايا بيسونے اور جواہرات ركھاد، ميرامقصود أخيس لينانبيس صرف شمصي بيبتانا تفاكه بيربت كمى نفع وضرركا مالكنبيس ہے۔ حموی کہتے ہیں کہ داور میں سونے اور جوابرات سے مرصع "زور" نام کا ایک بت تقاای کانام بعد میں راء کونون سے بدل کرزون رکھ دیا گیا۔

وبلخي

علامہ قلقشدی تقویم البلدان کے حوالے سے لکھتے ہیں کہ دہلی دوردورتک کھیلا ہوا ایک وسیح وعریض شہر ہے۔ زمین ہموار، کیکن ریبلی اور پھر ملی ہے، طول ایک وسیح وعریض شہر ہے۔ زمین ہموار، کیکن ریبلی اور پھر ملی ہے، طول ۱۲۸ درجہ ۵ دوقیقہ ہے۔ جب سلطان شہاب الدین غوری نے لا ہوراور دہلی وغیرہ ہند وسندھ کے علاقوں کو فتح کیا تو اپنے لائق غلام (۱) بعض محقین نے لا ہوراور دہلی وغیرہ ہند وسندھ کے علاقوں کو فتح کیا تو اپنے لائق غلام

سلطان قطب الدین ایک کود ملی کافر مان روا بنایا۔ بیدواقعہ 20ء کے قریب کا ہے۔ قطب الدین نے اپنی فوجیں بھیج کرایے بہت سے علاقوں کوزیر نگیں کیا، جہاں اب تک مسلمانوں کے قدم نہیں بہنچ تھے۔ بہقول صاحب تقویم البلذان مسلمان ایک کے ذمانے میں مشرق میں بنگال اور اس سے بھی آگے تک جا بہنچ۔

ويبل

علامہ حوی کہتے ہیں کہ دیبل (دال کے فتہ ، یاء کے سکون اور یاء کے ضمے کے ساتھ) بحر ہند کے ساحل پر ایک مشہور شہر ہے جس کا طول مغرب میں ۹۲ ردرجہ ۲۰۱۰ د قیقہ اور عرض جنوب میں ۲۲۷ رورجہ ۱۳۰۰ر قیقہ ہے۔ بیا یک بندرگاہ بھی ہے، جس سے گزر کر لا ہوراور ملتان کے دریا جر ہند میں پہنچتے ہیں اور میہیں سے دیبل کی مصنوعات بیرون ملک بھیجی جاتی ہیں۔صاحب تقویم البلدان کے بقول یہاں بھیڑیے بہت ہیں، مجور بھرہ سے منگائی جاتی ہے۔ بلاذری لکھتے ہیں کہ حاکم بحرین وعمان: مغیرہ بن ابوالعاص تقفی نے دور فاروقی میں این بھائی عمان بن ابوالعاص کو لیج دیل روانه کیا جہاں ان کی وحمن سے تر بھیر ہوئی اور وہ کامیاب رے۔آگے لکھتے ہیں پھر محد بن قاسم تقفی حجاج کے زمانے میں مکران آئے ، یہاں كى دن قيام كيا، "قنز بور" - كمنج بور- "ارما ئيل" كوفتح كيا پھر جمعه كوديبل يہني، حسن اتفاق کدافراد، ہتھیاراورساز وسامان ہےلدی ہوئی کشتیاں بھی آپ کی مدد کو آپہنییں، دیبل پہنچ کر آپ نے خندق کھودی، اس پر تیرانداز بھائے اورایک منجنیق نصب کی ، دیبل میں ایک بہت برا بت خانہ تھا جس پرا یک طویل سرخ پر چم ہمہ دقت لہرا تار ہتا تھا، محد بن قاسم نے دہ پرچم گرادیا، جس سے کفار کی بدشگونی ادر بے چینی مزید بردھ گئ، بردی لاکار کے بعدوہ باہر نکلے، پھر جلد ہی پسیا ہوکر قلعہ بند ہو گئے۔ سالار کشکر کے ایماء پر سٹرھیاں لا کی گئیں جن پر چڑھ کر بزور فتح کرلیا گیا۔

سندھ کے راجہ داہر کا عامل بھاگ پڑا اور ان کا سب سے بڑا ہجاری گرفتار ہوکر مقتول ہوا۔ محمد بن قاسم نے وہاں ایک معجد تغییر کی اور ۱۰۰۰ مرنفوں کوآ بادکیا۔ ابن جوزی کتاب المنتظم میں لکھتے ہیں کہذی الحجہ ۲۸ھ میں دیبل سے ایک خطآ یا جس کے الفاظ ہے تھے:

" ارشوال کو یہاں جا ندگہن ہوگیا، پھراخیر شب میں پچے دوشن ہوگی، بعدازاں صح سے عصر تک شدیداندھیرار ہا، عصر کے وقت ساہ آندھی جل، جس کا سلسلہ تہا گی رات تک جاری رہا، اس کے بعد زلزلہ آیا جس میں چند مکانات کے علاوہ پوراشہر کھنڈر ہوگیا، خط کھے جانے تک وہ وہ ارافراد وفن کیے جاچکے جیں، ملبوں سے الشیں نکا لئے اور وفن کرنے کا سلسلہ تا ہوز جاری ہے، ملبوں سے برآمدانسانی الاشوں کی تعداد بقول بعض ایک لاکھ بچاس ہے۔ امام سیوطی نے اپنی کتاب تاریخ المخلفاء میں بھی اس کا مختصر تذکرہ کیا ہے، زلز لے کا بیوا تعد خلیفہ ابوالعباس احمد معتصد باللہ کے عہد کا ہے۔ دیبل ہی کا دومرانا مختصر ہے، جوشہر کراجی کے قریب آبادھا"۔

بىراندىپ (لنكا)

علامہ حموی کہتے ہیں کہ ہندی میں جزیرے کو' دیپ' کہتے ہیں البتہ'' سمرن'' کامعنی میں نہیں جانتا، شاعر کہتا ہے۔

و کنت کما قد یعلم الله عازما ﴿ اروم بنفسی من سرندیب مقصدا

جیسا کراللدتعالی کولم ہے کہ میں نے اپنے سفر میں سراندیپ کا ارادہ کیا تھا۔

یہ بحر مند کے آخری ساحل پر ایک جزیرہ ہے جس کی لمبائی ۱۲ رکلومیٹر ہے،

سراندیپ ہی میں وہ بہاڑ ہے جس کے بارے میں مشہور ہے کہ اس پر حضرت آدم کا

نزول ہوا تھا۔ اس بہاڑ کو ' راہون' - راون - کہا جا تا ہے۔ یہ بہاڑ بہت او نچا ہے دور

ہی سے بحری مسافر دل کونظر آتا ہے، کہا جا تا ہے کہ سرخ یا قوت انہی بہاڑ دول پر پایا

جاتا ہے جوسیلاب اور ہارش کی وجہ سے بہرینچا جاتا ہے ان میں الماس بھی دستیاب ہے اور بہول بھی الماس بھی دستیاب ہے اور بہول بعض عود بھی یہاں سے حاصل کیا جاتا ہے ، اس جزیرے میں ایک الیسی خوشبو دارگھاس بائی جاتی ہے جس سے دوسرے مما لک محروم ہیں اس کا طول ۱۲۰ر درجہ اور عرض اردرجہ ہے۔

بزرگ بن شهر يار رامبرمزي معجائب الهند" من الصفي بن كرسرانديب اور اس ہے متصل جرائر کے باشندوں کو جب آب صلی الله علیہ وسلم کی بعثت کی خبر ملی تو انھوں نے دریافت احوال کی خاطر اپنا ایک زیرک وجھے دار آ دی آب صلی اللہ علیہ وسلم كي خدمت ميں روانه كيا، كيكن مختلف بريشانيوں اور ركاوٹوں كا دور دورہ تھا اس مخف نے حضرت عرض ملاقات کی اور آپ سلی الله علیہ وسلم کے حالات ودعوت کے متعلق میجی سوالات کے حضرت عمر نے بوری تفصیل سے اس کا جواب دیا، بدآ دی والیسی میں مران کے مضافات میں انقال کر گیا۔اس کے ساتھ ایک ہندوستانی غلام تھا، جس نے سراندیب کانچ کرسارا ماجراسایا، مثلاً یہ کہ مارے پہنچنے سے بل ہی آپ صلی الله عليه وسلم كا انقال موچكا تها اورجم في عمرنا ي ان كايك سأتقى سے ملاقات كى اوران ہی سے ان کے بی کے بارے میں کچھ سوالات کیے۔اس غلام نے حضرت عمر ی تواضع و خاکساری کا بھی تذکرہ کیا کہوہ پیوند لگے کیڑے پینتے ہیں اور مسجد ہی میں رات گزارتے ہیں۔صاحب عائب البند کہتے ہیں کہ الل سراندیپ میں آج کل جو تواضع، پیوند کی کیروں کا استعال ادرمسلمانوں سے الفت و محبت وغیرہ کی خوبیاں پائی جاتی ہیں، وہ انہی باتوں کا اثر ہے جوغلام نے آگر آپ سلی اللہ علیہ وسلم اور آپ كے سحابہ كے بارے ميں بيان كي تھيں

سفاله (سو باره)

مورخ ابوالفداء تقويم البلدان مين البيروني كحوالے سے لكھتے ہيں كم

"سفالہ "دراصل مندوستانیوں کے لیے بیسفالہ ایسا ہی جبیسا کے جبشوں کے یہاں ایک سفالہ ہے۔ مورخ ادر لیلی کہتے ہیں کہ یہ گفتی آبادی والا ایک آباد شہر ہے جہاں برے بیان نرگی کا جملہ سامان دستیاب رہتا ہے، برخ مندکی ایک بندرگا ہے، یہاں شکارگاہیں ہیں اور موتی بھی نکالے جاتے ہیں، یہاں سے سندان کا فاصلہ پانچ یوم کا ہے، صاحب "کتاب البلدان" کی تصریح کے مطابق لونگ سفالہ ہی سے درآ مدکی جاتی ہے۔

سفالہ اور سوفارہ در حقیقت شالی مبئی کامشہورعلاقہ سویارہ ہے جس کا ذکر جغرافیہ کی کتابوں، سفر ناموں اور تاریخوں میں ملتا ہے۔ (قاضی)

سنده

علامة حوى كتے بيل كه سنده، مندوستان اوركر مان و جستان كورميان ايك ملك ہے۔ يكولوگوں كا كهنا ہے كه سنده اور بهند بوقير ابن يقطين ابن حام ابن نوح كك دوبيثوں كا نام ہے۔ سنده كه ايك باشندے كوسندهى اورايك يا دوسے زاكدكو سنده كها جا تا ہے، بالكل ايسے بى جيسے كه ايك جبنى كے ليے زخى اور بہت مول كي ليے زخى بولا جا تا ہے۔ بعض مورض كران كوسنده كا حصه بتاتے بيل اور كہتے بيل كه يہ باخى اللاع ميشمل تھا۔ بہلامكران كير طوران كير سنده كا حصه بتاتے بيل اور كہتے بيل كه يہ باخى اللاع ميشمل تھا۔ بہلامكران كير طوران كير سنده كي بهنداور ملتان سنده كا ايك ساحلي شهر ديل ہے۔ جو جائ بن يوسف تقنى كے باير تخت "منصور " ہے اس كا ايك ساحلي شهر ديل ہے۔ جو جائ بن يوسف تقنى كے زمانے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں فتح ہوا، يہال حفيوں كى اكثر يت ہے عبدالله بن سويدشاع كہتا ہے ميں بن بيان ميرا آنا ہے، ايك اليے لگام ديے ہوئے بہوئے بہادر كے پاس جے قوم نے جنجور ديا ہوں۔ ۔

فلما دناللز جراز رعت نحوه الله بسيف ذباب ضربة المتلوم

ود جب وه قریب آیاتو میں اس کی طرف لیکا، دھار دارتلوار کے کر اور اسی زور سے تلوار کا دار کیا، جیسے کوئی منتظر بیٹھا ہو'۔

شددت له كفى وأيقنتُ أننى الله على شرف الموت ان لم اصمم وديس في الموت ان لم اصمم وديس في الله على الله

ابوالقاسم عبیدالله بن عبدالله "المسالك و السمالك" بین لکسته بین كرسنده کرخت، قیقان، بند، مران، مید، قدهار، قصدار، بوقان، قندابیل، قنز بور، ارمائیل، دیبل قدیلی، كدیایا، سببان، سدوسان، راسک، الور، ساوندری، ملتان، مندل، بیلمان، سرشت، كیری، مرمد، بالی، دینج اور بحروج وغیره بهت سے شرآت بین-

سندان (سنجان)

مورح ابوالفد اء تقویم البلدان میں لکھتے ہیں کہ سندان ساحل ہند پر تھانہ کے علاقہ میں ایک مقام کا نام ہے۔ تاریخ عزیزی میں ہے کہ یہاں سے منصورہ کا فاصلہ ۱۱۰ رکلومیٹر ہے، یہ ایک عام گزرگاہ اور بندرگاہ ہے، عود، نیزے کی لکڑی اور زکل پیدا کرنے والے علاقوں میں سے ایک ہے۔ علامہ حوی نفر کے حوالے سے رقم طراز ہیں کہ سندان 'قصبہ بلادالهند'' ہے پھر خود ہی کتے ہیں کہ معلوم نہیں کہ اس جملے سے نفر کی کیا مراد ہے؟ کیوں کہ عربی میں 'قصبہ' کسی علاقے کے کہ اس جملے سے نفر کی کیا مراد ہے؟ کیوں کہ عربی میں ندکورہ حیثیت کا اس نام سب سے اہم اور مرکزی مقام کو کہتے ہیں اور ہندوستان میں ندکورہ حیثیت کا اس نام سب سے کوئی شیر موجود نہیں، ہاں سندھے کے قریب اس نام کا ایک شیر آباد ہے، جہاں سے دیل اور منصورہ واریوم کی سافت پرواقع ہیں۔

بحرى كاكہنا ہے:

ولقد ركبت البحر في أمواجه الله وركبت الليل في بياس

ودمن نے دریا کا موجول پرسواری کی ہے اور دات کے خطرے میں کھی اس کی دہشت پرسوار ہوا ہوں '۔

وقطعت اطلوال البلاد وعرضها في مابين سندان وبين سجاس وقطعت اطلوال البلاد وعرضها في مابين سندان اورجاس

كردمان بل"-

سندان اسلامی ماہائی سلطنت کا کم از کم ۱۹۲ھ سے لے کر ۲۲۷ھ تک پایہ خت رہا ہے۔ بلا ذری کے بقول ان سے منصور بن جاتم نے بیان کیا کہ فارک سندان بنوسامہ کے غلام افضل بن ماہان ہیں۔افعول نے سندان پر قضے کے بعد خلیفہ مامون رشید عبائی کے پاس خطاکھااور اس کے لیے وہاں کی جامع محبر ہیں دعا بھی کرائی فضل کے بعد اس کا بیٹا محم جانشین ہوا ،اس نے سات جنگی شتوں کے ساتھ اسندو ہند' پر چڑ حال کر کے بہتوں کو جریح کیا۔ پالی فتح کرنے کے بعد جب ساتھ اسندو ہند' پر چڑ حال کر کے بہتوں کو جریح کیا۔ پالی فتح کرنے کے بعد جب ہو چکا ہے اور خلیفہ معتصم باللہ سے خط و کہ ابن بن فضل تحت سلطنت پر قابض ساکون کی ایک ایس کری گئے میں دی ہے جو کہائی اور چوڑ اگی میں اپن نظیر آپ ہو چکا ہے اندوائی میں اپن نظیر آپ ہے۔ باشندگان ہندگا میلائی چوں کہ محمد کے بھائی فضل کی طرف تھا اس لیے انھوں نے محمد کو چھائی دے دی اور خود سندان پر قابض و متصرف ہو گئے البتہ انھوں نے وہاں کی مجد بغیر کوئی نقصان پہنچا ہے مسلمانوں کے حوالے کردی۔

شاعر ابوالعناميه لكصنابين سه

مَاعلَى ذَاكِنَا اقْتُرَفْنَا بِسَنَدًا فَيْ نَ وَمَا هَكُذَا عَهِدْنَا الْأَحَاءُ وَمَا هَكُذَا عَهِدْنَا الْأَحَاءُ وَمَا هَكُذَا عَهِدْنَا الْأَحَاءُ وَمَا مَا مُلِكُمُ وَمُا اللَّهُ مَا اللَّهُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّالِمُ اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِلَّا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مَا اللَّهُ مَا الل

الماع المالية المالية

تضرب الناس بالمهند البيائية في على عدرهم وتنسي الوقاء

دو کہ لوگوں کی گردنیں ماردے سفید ہندی تکوارے مان کی غداری پراوروفا شعاری کوفراموش کر بیٹے'۔

سندان دراصل سنجان ہے جوآج کل ممبئی کے قریب ممبئی اور سورت کے جی ایک ایک جھوٹا سار ملوے اسٹیشن ہے۔

سومنات

تقویم البلدان میں ہے کہ سومنات صاد کے ساتھ اور بہ تول بعض سین کے ساتھ بھر واؤ سا کہ اور میم ونون کے فتح کے ساتھ ایک مقام کا نام ہے جس کا طول ۱۶ مرد جہ ارد قیقہ اور عرض ۲۲ مرد جہ ۵ رد جہ میں اس کی بوی شہرت ہے اور د بلادلار 'کے نام سے جانا جا تا ہے ،اس کی جائے وقوع سمندر کی داخلی سمت میں ہے۔

ایک جھوٹی خلیج بھی ہے جوشال سے مشرق تک بھلے ہوئے ایک بڑے پہاڑ سے بنتی ہے یہاں ایک بت ہے جس کی مند وبڑی تعظیم وتکریم کرتے ہیں، سومنات کی طرف نبیت کرکے اسے ''صنم صومنات'' کہاجا تاہے، یمین الدولہ سلطان محود غرنوی نے سومنات پر حملہ کرکے اسے توڑ دیا تھا۔

سيبتان

علامہ حوی کے بہ قول بدریائے سندھ کے پاس واقع سندھ کا ایک برواشہر ہے، جس کی آمدنی خوب ہے، اس کے تحت بہت سے شہراور دیہات آباد ہیں۔ ایک دوسرے مؤرخ کا کہنا ہے کہ سیستان سیوستان، سیوان اور سہوان بیسب ایک ہی قدیم شہر کے مختلف نام ہیں جو کسی سندھی حاکم کے نام پر بسایا گیا، یہاں گذشتہ ذمانہ کا ایک مشہور قلعہ بھی ہے، پہلے یہاں شاہان – الور – اروڑ کی حکومت تھی، بعد میں کا ایک مشہور قلعہ بھی ہے، پہلے یہاں شاہان – الور – اروڑ کی حکومت تھی، بعد میں

يراجكان لفق كقض من جلاكيا

سندابور (گوا)

مؤرخ ابوالفد اء تقویم البلدان میں سندان کے تذکرے کے ضمن میں البحث بیں کہ یہاں سے سندابور کا فاصلہ تین دن کا ہے۔

سنداپورسب سے آخری جزیرہ اور مالا بارکا ابتدائی حصہ ہے، یہال کے گھڑیال استے مہذب ادر شجیدہ بیں کہ تا ہنوز کسی کو خلیج سنداپور میں ان سے کوئی اذیت نہیں بینجی _صندابور کا تذکرہ مسعودی، بزرگ بن شہر یا راور مشہور سیاح ابن بطوطہ نے اپنی کتابوں میں کیا ہے۔ یہ معرب ہے چندابور کا جوانڈیا میں پر تکالیوں کا مرکز ہے اور جے آج کل 'دگوا'' کہا جاتا ہے۔

صيمور (چيمور)

علامہ حوی کہتے ہیں کہ اس کا نام بالنون صیمون بھی آتا ہے۔ بیسندھ کے
پاس دیبل کے قریب ہند کا ایک شہر ہے جوایک غیر مسلم مہارا جا' ولیھے رائے'' کے
ماتحت ہے، لیکن اس کا اور'' کہا مہ' کا جو کہ مسلم آبادیاں ہیں مقامی حاکم مسلمان ہی
ہوتا ہے۔ چیمور میں ایک جامع مسجد بھی ہے جس میں جمعہ ہوتا ہے، ولیھے رائے جو
کہا یک وہیج مملکت کا تاج دارہ کا پایہ تخت ''منگرور'' ہے۔

و قامهل

علامہ جوی کہتے ہیں کہ یہ ہند کا ایک سرحدی شہرہے یہاں سے چیمورتک کاعلاقہ ہند کا حصہ ہے اور قامبل سے ملتان تک سکران اور بدھ وغیرہ کا علاقہ سندھ میں شامل ہے، یہاں ایک جامع مجد بھی ہے جس میں باضابطہ نماز ہوتی ہے۔منصورہ کا فاصلہ

يہاں سے ٨ردن كا ہے اور كھمبابت يہاں سے ٨ ريوم كى مسافت بردا تع ہے۔

قصدار (قردار)

علامہ یا قوت محوی کے بقول قردارا یک ہندوستانی علاقہ ہے جہاں ہے "بست" کا فاصلہ ۱۲ رکلومیٹر ہے۔ آھے کہتے ہیں کہتے ہیں کہتے ہیں کہ قصدار سندھ کا ایک علاقہ اور طوران کا مرکزی مقام ہے۔ طوران کی جھوٹا سا حصہ ملک ہے۔ صاحب فتوح البلدان کی جی دیہا توں اور شہروں پڑھائی کی جی وٹا ساحصہ ملک ہے۔ صاحب فتوح البلدان کی جی ہیں کہ جب ابوالا شعث زیاد بن منذر بن جارود عبدی سرحد ہند کے امیر بنے تو انھوں نے بوقان اور قیقان پر چڑھائی کی جس میں جارود عبدی سرحد ہند کے امیر بنے تو انھوں نے بوقان اور قیقان پر چڑھائی کی جس میں انھیں کا میابی ملی اور مال غنیمت بھی ہاتھ لگا بحد از ال انھول نے ہندوستانی علاقوں میں فوجی دستے روانہ کیے اور قصد ارکو فتح کو لیا اور وہیں موسم سرما گزارا۔

ابوالاشعث سے پہلے سنان بن سلمہ مذلی قصدار کو فتح کر چکے ہتے اور وہیں ان کا انقال بھی ہوا تھا۔ شاعر کہتا ہے۔

حلّ بقصدار فاضحی بھا ﴿ فَيَ القبر لم يقفل مع القافلين و تصداراً ياتوو بين مرفون يهي بوگيا، دوسر عالي والول كساتهوه لونانبين "-

ققص

تقویم البلدان میں ہے کہ جہال قفص جس کے بارے میں ابھی گزرا کہاں کے دامن میں قبیلہ بلوچ آباد ہے، کے جنوب میں سمندراور شال میں 'جیرفت' کی سرحد ہے، مخترک' میں صراحت ہے کہ قفص قاف شکے ضمے اور فاء کے سکون کے ساتھ فارل اور کرمان کے نیچ کردوں کا ایک پہاڑ ہے جس کے باشند سانتہائی شریبند ہیں۔ بلاذری کہتے ہیں کہ مجاشع بن مسعود نے آکر بردر بازد' جیرفت' کوفتح کیا، پھرآ کے بردھ کرکرمان کومغلوب کیا وہاں سے قفص پہنچے۔ جلا وطن عجمیول کا جم غفیر

'' ہرموز'' میں یکجا ہوگیا تھا اس نے ان سے جنگ کی اور میدان مجاشع کے ہاتھ رہا، بہت سے کرمانی بھاگ نکلے، پچھ کران اور سجنتان جلے گئے، ان کے فرار کے بعد عرب فوجوں نے ان کے مکانات اور جائدادیں باہم تقشیم کرلیں، زمینوں کوآباد کیا ان کاعشرادا کیا اور مختلف مقامات پر کنووُں کی کھدائی گی۔

قمار (قامرون)

حموی کہتے ہیں کہ قامرون ہند میں ایک جگہ کا نام ہے جس کی طرف عود منسوب ہے، یہ توعوام کی بات ہے۔ واقف کار حضرات کا کہنا ہیہ ہے کہ قامرون ہند کا ایک ایسا مقام ہے جس کی عود انہائی عمدہ ہوتی ہے ان کا دعویٰ ہے کہ اگر اس پر مہر ماری جائے تو اس پرمہر کا نشان پڑجا تا ہے۔ ابن ہرمہ کہتے ہیں ن

أحب الليل إن خيال سلمى الله إذا نمنا ألم بناقراراً

" مجصرات معبت م، كول كملى ك خيال آن سيميل سكون ملاً
ع، جب جميل نيندا جاتى م "-

کان الرکب إذ طرفتك باتوا ﴿ بمندل أوبقارعتى قمارا دو گويا كرقافله سواراان، جباس نے تجھے دستك دى، سوگئے منڈل من يا قمار ميں مير بے كھنكھنانے سے "۔

قدهار (گندهارا)

علامة حوى كے بقول يسنده و مندكا أيك شهر ب جس كاطول الدرجه اور عرض المسدد و مندكا أيك شهر ب جس كاطول الدرجه اور عرض المسدد و جب المناد بين ال كابرا تذكره ب المهاجا تا ہے كه عباد بن زياد نے سرحد سنده اور سجستانى علاقة "روذبار" منده اور سجستانى علاقة "روذبار" موتے ہوئے اور كھ سے صحرانوردى كرتے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے اور كھ سے صحرانوردى كرتے ہوئے

فندهارا نے اہالیان فندهارے جنگ کرے انھیں تر نتے کیا اور فکست دی عباد فندهارا نے اہالیان فندهارے جنگ کرے انھیں تر نتے کیا اور فکست دی عباد نے ان کی لمبی ٹوییاں دیکھ کرخود بھی انھیں استعمال کرنا شروع کیا، جس کی وجہ ہے اس کی ٹوپی کانام 'عبادیہ' پڑگیا۔ شاعر بزیدین مفرغ کہتا ہے: ن

کم بالجروم وأرض الهند من قدم الله ومن سرابيل قتلى ليتهم قبروا
" كت جرائم بين كررزين مند پر بدن معمقول بين ، كاش أنسين قبرين وفن كردياجاتا".

بقندهار ومن تکتب منیته الله بقندهار یرجم دونه المحبر
"قدهار من اورجس کی موت قدمار من مقدر ب، تواس کی خرکو بھی سنگ ساز کردیا جا تا ہے "۔
سار کردیا جا تا ہے "۔

"ظفر الواله بعظفر وآله" میں ہے کہ فندھار کی کھیا ہے یا ایک چھوٹی کی بندرگاہ ہے۔ بلا ذری کہتے ہیں کہ عمروبن عمل جب بشام بن عمروتنا کی طرف سے باربد (بھاڑ بھوت) آئے تو یہاں سے بذراید کشتی فندھار گئے، اسے فنح کیا اور ایک عبادت خانہ منہدم کر کے اس کی جگہ ایک مجد کی بنیا در کھی۔ فندھار کو آئے کل "گندھارا" کہتے ہیں جو ضلع بحروج گجرات میں واقع ہا کی اور فندھارکا بل کے قریب ایک مشہور مقام کانام ہے۔

قندابيل

علامہ حوی کہتے ہیں کہ قندائیل سندھ کا ایک شہرادر بدھ نامی ریاست کا صدر مقام ہے، یہیں ہلال بن اجوز مازنی شاری کی مہلب سے جنگ ہوئی تھی ،قصداراور منصورہ کا فاصلہ یہاں سے بالتر تیب مہم رکلومیٹراور ۸ردن کا ہے اور ملتان سے پہلے ماریوم کی مسابات کا طوئیل صحرا حاکل ہے۔
ماریوم کی مسابات کا طوئیل صحرا حاکل ہے۔
حاجب بن ذبیان مازنی کہتا ہے۔

فإن ارجل فمعروف حليلي المهاوان اقعد فمالي من حمول "دار مي كوچ كرماول توميرادوست معروف و ميرود مادرا كريس بيهدا، تومير المرسي ميرادوست معروف و ميراكي مي ميرادوست معروف و ميراكي مين كيا كي ست دو حادث مول كان -

قنوح

علامہ تموی کتے ہیں کہ توج ہے القاف وتشد یدالنون ہندیں ایک مقام کا نام
ہے۔ از ہری کا کہنا ہے کہ یہ ایک جھاڑی کا نام ہے۔ علامہ ابن الجزری قرماتے ہیں
کہ قنوج قاف کمور اور نون مشدد مفقوح کے ساتھ ہندگا ایک چھوٹا ساتھ رہدریائے
سعید کے بہ قول اس کا طول ۱۳۱۱ ردرجہ ۵ ردقیقہ اور عرض ۲۹ ردرجہ ہے مید دریائے
گاک درمیان واقع اور لا ہور کا پایر تخت ہے۔ مہلی کہتے ہیں کہ ملتان ہے ۲۸۱ ر
فریخ پر واقع یہ شرقی ہندگا آخری حصہ ہے ہندوستان کا انتہائی عظیم الشان شہر ہے۔
نز ھة المستاق میں ہے کہ یہ ایک حسین شہر اور تجارتی منڈی ہے، اندرونی اور
پیرونی شمیر دونوں اس کے علاقے ہیں مسعودی جس کی آلہ ہندوسندھ میں سے تھا، بلبر اکا بھی
میں ہے کہتے ہیں اس وقت قنوج کا راجہ جوراجگانِ سندھ میں سے تھا، بلبر اکا بھی
عمران تھا۔ فرورہ ایک شہر ہے، اس کے حاکم کے نام پر ہی اسے فرورہ کہا جائے
گئران تھا۔ فرورہ ایک شہر ہے، اس کے حاکم کے نام پر ہی اسے فرورہ کہا جائے
گا۔ اب یہ اسلام کے ذریکیس آگیا ہے اور ' ملتان' کے ماتحت ہے۔

و علامة يا قوت جوى كنت بين كرقيقان ميسر القاف بها كتاب الفتوح مين

ہے کہ حفرت کی کے زمانہ خلافت میں ۳۸ھے اخیراور ۳۹ھ کے آغاز میں حارث
بن مرہ عبدی نے امیر المونین کی اجازت سے رضا کارانہ طور پر حدود کا رخ کیا۔
یہاں پہنچ کر جنگ کی جس میں انھیں فتح ہوئی اور کافی مال غنیمت اور قیدی ہاتھ گئے
چنال چاہیہ ہی دن میں انھول نے ایک ہزار غلام ، باندی تقیم کیے۔

صاحب کتاب الفتور کے برقول تیقان، خراسان سے ملا ہوا سندھ کا ایک شہر ہے، حارث بن مرہ کے دوسال بعد ۲ ساھ میں مہلب نے جملہ کیا، قیقان میں مہلب کا مقابلہ ایسے اٹھارہ ترک گھوڑ سواروں سے ہوا، جو باہم قدم سے قدم ملا کر چلے والے گھوڑ وں پرسوار سے اٹھوں نے اس سے جنگ کی اور سب کوئل کردیا۔

پھر ۲۵ ہے میں حضرت امیر معاویہ کے زمانہ میں عبدالرحمٰن بن سوار عبدی کو مرحد اور بہقول بعض خود حضرت معاویہ ہی کی طرف سے عبدالرحمٰن بن سوار عبدی کو مرحد ہندگا امیر بنایا گیا، اٹھوں نے قیقان پر جملہ کیا جس میں اٹھیں خاصا مال غیمت ہاتھ لگا، بعد از ال سوار عبدی ایک وفد کے ہمراہ حضرت معاویہ کی خدمت میں پہنچے اور آٹھیں بعد از ال سوار عبدی ایک وفد کے ہمراہ حضرت معاویہ کی خدمت میں پہنچے اور آٹھیں بعد از ال سوار عبدی ایک وفد کے ہمراہ حضرت معاویہ کی خدمت میں جہنچ اور آٹھیں عرصے میں ترکول کے دو صلے بلند ہو گئے چنال چراٹھوں نے آٹھیں شہید کر دیا۔

عرصے میں ترکول کے دو صلے بلند ہو گئے چنال چراٹھوں نے آٹھیں شہید کر دیا۔

اسی بابت شاعر کہتا ہے: ب

وابن سوار علی أعدائه ﴿ موقد النار وقتال السغب ابن سوارائے دشمنوں کے ق میں، آگ کی بھی اور بھوکا جنگ جوئے۔
عبدالرحمٰن بن سوارعبدی بڑے دریا دل فرمال روا تھے، ان کے علاوہ کسی کے عبدالرحمٰن بن سوارعبدی بڑے دریا دل فرمال روا تھے، ان کے علاوہ کسی کے یہاں چولہا نہیں جاتا تھا۔ ایک رات انھوں نے ایک جگہ آگ دیکھ کر یو چھا کہ یہ یسی آگ ہے؟ لوگول نے بتایا کہ ایک نفساء عورت تھجوراور تھی کا طوا بنارہی ہے، انھول نے کم دیا کہ تین دن تک لوگول کو اب طوائی کھلایا جائے۔ خلیفہ ابن خیاط کہتے ہیں کہ سے مربعہ مربعہ وہ اور ان کے سیابی کہ سے مربعہ مربعہ مربعہ الله بن موار نے قیقان پر حملہ کیا جس میں وہ اور ان کے سیابی

ترکوں کے ہاتھوں قبل کردیے گئے اور قبقان پر کفار ہی کا قبضہ رہا۔ قبقان، گیگان کامعرب ہے جسے آج کل' قلآت' کہتے ہیں۔ (قاض)

رکس (کچھ)

علامہ جوی کہتے ہیں کہ 'کس' کاف کے کسرے اور سین کی تشدید کے ساتھ سمرفند کے قریب ایک شہرے اور بلاذری کے بہتول 'صغد' ہی 'دکس' ہے، نیزیہ سندھ کے ایک شہور کا نام ہے جس کا تذکرہ نتو صات میں بھی ماتا ہے۔ صاحب 'مند' عبد الحمید عبد بن حمیدگسی کی نسبت اسی طرف ہے۔ عباد بن زیاد نے سختان سے سرحد مند پر چڑھائی کی ، وہاں سے ''ساور د' گئے ، ساور دسے جستانی قلاقہ '' روذبار' ہوتے ہوئے ' مبندمند' بہنچے ، مندمند سے کس اور کس سے قندھار آکر قندھار ہیں سے دودوہ آتھ کرکے آئیس شکست دی۔ کس جرجان سے ۱۲ کی کو میٹر دور ایک بستی ہے ، کس اور کش میں کھر میٹر دور ایک بستی ہے ، کس اور کش یہ عرب ہے '' بیٹھی گا بعض کتابوں میں کھی '' بالصادی آیا ہے۔

المشمير

علامہ حوی کے بہ قول سمیر بکسرالکاف وسکون اسین وسط مند کا ایک شہر ہے۔
مسعودی کہتے ہیں کہ یہاں کے داجہ ''دائے'' کہلاتے ہیں یہ بندگی ایک عظیم اور طاقت
بہاڑی ریاست ہے، جولگ بھگ سر یا اسی ہزار شہروں اور دیہا توں پر مشتل ہے، صرف
ایک ہی داست کاصرف ایک ہی دروازہ
ایک ہی داست کاصرف ایک ہی دروازہ
ہے، یہ دیاست ایسے نا قابل شخیر اور بلند بہاڑوں کے داس میں آبادہ ہے جن کی بلندی
تک انسان تو کیا؟ وشی درندے بھی نہیں پہنچ سکتے اور جہاں بہاڑ نہیں وہاں پر بی وادیاں، جھاڑیاں اور باغات سے کھر نے ہوئے سے تیز رووریا ہیں۔ اس ریاست کی مضوطی
کی خراسان وغیرہ ملکوں میں بھی شہرت ہے اور اسے دنیا کا ایک عوبہ شار کیا گیا ہے۔

علامہ بلا ذری کہتے ہیں کہ خلیفہ منصور عباس نے جب ہشام بن عمر و تفلبی کو سندھ کا والی بنایا، تو اس نے دشوار گزار مقامات کوخود فتح کرنے کے بعد عمروبن جمل کو 'بارید' اور ہندوستان بھیجا ،عمرونے کشمیرکوفتح کرلیاجس میں اسے بہت سے قیدی ہاتھ لگے۔

کلہ

علامہ حوی کہتے ہیں کہ میر عمان اور چین کے مابین خط استواء پر واقع ایک بندرگاہ کا نام ہے جس کا طول ساار درجہ اور عرض نامعلوم ہے۔ مہلی کہتے ہیں کہ یہاں ایک آبادوشاداب شہرہے، جہاں بلاا متیاز مسلم اور غیر مسلم دونوں رہتے ہیں تہ دوکائ کی نسبت کاہی ہے۔

كلاه

علامہ یا توت جموی کہتے ہیں کہ کلاؤ، ہندگا ایک دور در از شہر ہے جہاں سے عود برآمد کیا جاتا ہے۔ سیف الدولہ کا در باری شاعر ابوالعباس صفری کہتا ہے: ۔
لها أرج يقصر عن فداہ ﴿ فَيْ فَتِت الْمسك والعود الكلاهی دور کے چورے بھی ہیں ہے ہے ۔ ۔
داس کی خوش ہو کی انہاء کومشک اور کلا ہی عود کے چورے بھی ہیں ہے ہے ۔ ۔

كمكم (كوكن)

ابن رسته اپنی کتاب "الاعلاق النفیسة" بین راجبلیر اکی بابت رقم طرازین کدوه شیر کمکم میں رہتا ہے جہال ساگون خوب پیدا ہوتا اور سپلائی کیا جاتا ہے۔ ابن خرداذبه "المسالک والممالک" میں لکھتے ہیں کہ ہند کا سب سے برا راجبلیر اہے، جس کے معنی شہنشاہ کے ہیں، اس کی انگوشی کا نقش ہے "جس کی دوئی تمھار ہے ساتھ کی غرض ہے ہے وہ خص غرض پوری ہوتے ہی تمھارا ساتھ چھوڑ دے گا"۔ بیرونی کتاب الهند میں لکھتے ہیں کہ جنوب میں "دھار" سے وادی نمیہ تک میں کہ جنوب میں "دھار" سے وادی نمیہ تک

سات "مهرت دلین" تک اشاره اور ریاست "کنکن" جس کا مرکزی اور ساحلی مقام تفاند ہے، تک بچیس بوم کا فاصلہ ہے۔ براری کنکن (دا تک) میں ایک جانور پایا جا تا ہے، جے "نشرو" کہتے ہیں۔ صاحب کیاب البند فرماتے ہیں کہ تفانہ سے "رتا گری" تک کا علاقہ کوکن کہلا تا ہے جس میں تفانہ، چیمور، سوماره ، دابول ، جیول اور جزیرہ جیستان وغیرہ مقامات شامل ہیں۔

كنيايت (كھمبايت)

قلقشدی کے بین کہ مسالات الابصاد "کی عبارت سے پیتہ جاتا ہے کہ
کہایت اصل میں "انبایت ' ہے کیوں کہاں کی نسبت انباتی آتی ہے، بر بہند کے سامل
پریدا کے شہر ہے جس کا طول ۹۹ رورجہ ۲۷ روقیۃ اور عرض ۲۲ رورجہ ۲۷ روقیۃ ہے۔ تقویہ
المبدان میں ہے کہ بیٹائی شہر "معرہ" ہے بھی کافی پر ااور خوب صورت ہے۔ مسعودی
کتے بیں کہ یہ بندوستان میں واقع ہے، کمابوں میں فرور کہاتی جوتے کی نسبت ای
طرف ہے، اس سے قریب بی سندان اور سوہارہ کے شہرآباد ہیں، وہاں میراجانا ۲۳ سامہ
ملی آب والے سلمانوں اور دیگر فرقے والوں سے مناظرہ کرنے میں بری دل چسی کمی شہر کھی ایت دریا ہے نیل، وجلداور فرات کی فلیجوں سے وسیع و عریض ایک فلیج کے
میں بری دل جسی ایری دار بریاں کی اہم پیداوار
قریب آباد ہے، جہاں بہت سے شہراور بستیاں ہیں، مجور اور ناریل یہاں کی اہم پیداوار
اور موروطوطے یہاں کے فاص پر ندے ہیں۔
اور موروطوطے یہاں کی اہم پیداوار

كولم (شراوتكور)

صاحب تقویم البلدان اورابن سعید کے برقول' کوم' مشرقی ہند میں مرج پیدا کرنے والا آخری شہرے، جہاں سے مرجیل عدن جیجی جاتی ہیں۔ وہاں جا کیے

in the state of th

بعض لوگوں نے ہمیں بتایا کہ کولم مرج پیدا کرنے والا ایک فلجی شہر ہے، وہاں ایک مسلم محلّہ ہے جس میں ایک جامع مسجد بھی ہے، یہاں کی زمین ریگستان ہے، باغات بہت ہیں اوراناری شکل کا دوقع 'نامی ایک درخت پایا جاتا ہے جس کی بیتاں عناب کی پیوں کی مانند ہوتی ہیں ۔کولم آج ٹراوکورکا ایک حصہ ہے۔ لا ہور

علامہ حموی کہتے ہیں کہ یہ مندوستان کا ایک عظیم الثان شہر ہے، کتاب
الفتوح میں ہے کہ مہلب ابن ابی صفرہ نے حضرت امیر معاویہ کے زمانے میں
الفتوح میں مرحد مند پر چڑھائی کی، پھریند اور لا ہور جو کہ ماتان اور کا بل کے درمیان
دوشہر ہیں پہنچ، وہاں دشمن سے مقابلہ ہوا اور دشمن شکست کھا کر مع اپنے ہمراہیوں
کے جہنم رسید ہوا از دی کہتا ہے: ۔

قلفندی کہتے ہیں کہ اس کا طول ۱۰ اردر جدادر ۱۳ ردقیقہ ہے، یدا یک برا اردخیز اور مردم خیز شہر ہے، بہت سے علاء کا مسکن رہا ہے۔ سلطان شہاب الدین غوری نے کہ ۵۴۷ ہیں فتح کر کے اور بھی بہت سے علاقے زیر تگیں کیے، ''عبر'' اور'' کا بل'' میں اس فتح ۹ کے درج ہے۔ لا ہور کولو ہور، لہا ور اور لہا وور بھی کہا جاتا ہے۔ معجم البلدان میں ہے کہ لا ہور دریائے راوی کے پاس شمیر کے جنوب میں ایک ہندوستانی ریاست ہے جہاں سے ہندوستان افغانستان ، اور ایران کے قافے ہوکر گزرتے ہیں، ریاست ہے جہاں سے ہندوستان افغانستان ، اور ایران کے قافے ہوکر گزرتے ہیں، یہاں کچھ خوبصورت میں تین میں نیز دیرا جگانِ ہند کا پایہ تخت بھی رہا ہے۔
محقوظہ

علامہ بلاذری کہتے ہیں کہ مم بن عوانہ کبی ایسے وقت میں یہاں کے حاکم بن

کہ بجر ایک قصبے کے بورا ہندوستان گفرستان بنا ہوا تھا مسلما نول کے لیے الگے کوئی بناہ گاہ نہیں تھی تو انھوں نے ایک جھیل کے پاس دمحفوظ کے نام ہے ایک شہر آباد کیا اور اس کومسلمانوں کی بناہ گاہ قر اردیا عمر بن محمد بن قاسم اس مفریس آن کے ساتھ تھے اور محفوظ سے انھیں ان کے کاموں اور ذھے دار بول کی اطلاع دینے رہمے تھے۔ پھر جب وہ یہاں آئے اور حالات سازگار ہو گئے تو انھوں نے جھیل کے سامنے "منصورہ" کے نام سے ایک دوسر اشہر آباد کیا جہال آئے گل سربر اہان حکومت کا قیام رہتا ہے۔

محل ديپ (مالديپ)

يتخ محرسعيد مالد بي ازبري تحفية الاديب في اسمساء سلاطين محلدیب "میں رقم طراز میں کہ مالدیب چندایے چھوٹے چھوٹے اور ملے ہوئے جزائر کے مجوعے کا نام ہے جن میں سب سے بڑے جزیرے کا رقبطول میں ۵ر میل انگریزی ہے۔ بیانگا کے جنوب مغرب میں بخر ہند میں واقع ہے، خط استواء ان جزار کے جو لی جھے سے ہور گزرتا ہے۔ جاروں طرف سے سمندر ہونے کی وجدسے یہاں کی فضااس کے منطقہ جاڑہ میں ہونے کے باوجود لطیف اور یا گیرہ ہے، کل جزائر کی تعداد ۱۵۲ ارہے جن میں ۱۳۲ را بادادر ۹۳۹ رغیر آباد ہیں، البت کاشت سب میں ہوتی ہے، یہاں کی خاص پیداوار چھلی، ناریل اور گھو تکھے ہیں، إكثريت كالبيثة مجهل كاشكاركرنا اورانهين سكها كرسيلون ايكسپورٹ كرنا ہے، بيه جزائر داخلی طور برخود محتار ہیں ، ۱۳۵۰ ہے-۱۹۴۱ء کی مردم شاری کے مطابق بیال کی آبادی ١٥٥٥ عرب، جن من مردون كي تعد أدسام ١٩٨٧ مراور توريون كي تعداد ١٣٨٧ ١٨٠٠ ہے، بقیہ تعداد غیرمکی تاجروں کی ہے، جن کی تعداد ۲ مهر بتائی جاتی ہے۔اس طرح مجوى آبادى ملكى وغيرملكى افرادكوملا كركل ٩٩٥٩ مرموجاتى ہے۔ جمد الله بيسب ك سب سلمان ہیں، یہ جزائر سیلون (سری لنکا) ہے ، ۴۸ رمیل کے فاصلے پرواقع ہیں،

قديم كتابون شن ان كاتذكره 'فيبة المهل" اور ' فيبحيات كتام سے ب

مؤرخ ابولفد اء تقویم البلدان میں لکھتے ہیں کہ مجر ہندکا آخری علاقہ ہے۔
ابن سعد لکھتے ہیں کہ "مجر" زبان زدخاص وعام ہے اس کے شالی پہاڑوں کی سرحدیں شہنشاہ ہند بلیر اکے ملک سے ملتی ہیں، پچھم میں دریائے "صولیا" بہتا ہوا سمندر میں جا گرتا ہے۔ مجر "کولم" کے جنوب مشرق میں جاریائے یوم کی مسافت پرواقع ہے اور بالکل مشرق میں مالابارے ملا ہوا ہے۔ آج کل سے" کارومنڈل" کہتے ہیں۔

مكران

علامہ حوی کہتے ہیں کہ یہ مجمی لفظ ہے، عرب شعراء عمو آاسے کاف مشدد کے ساتھ استعال کرتے ہیں۔ عربی کے اعتبار سے یہ 'ماک' کی جمع ہو گئی ہے جیسے کہ فارس کی جمع فرسان ۔ یہ بھی ممکن ہے کہ یہ مرکی جمع ہوجیے وغد کی جمع وغدان اور بطن کی جمع بطنان آتی ہے۔ جمزہ کہتے ہیں کہ ادھر بہت سے علاقے چاند کی طرف منسوب ہیں، چوں کہ چاند کا ہریا کی وشادانی میں برداد فل ہے اس لیے ہرشہر کواس کی طرف منسوب ہیں، چوں کہ چاند کا ہریا کی وشادانی میں برداد فل ہے اس لیے ہرشہر کواس کی طرف منسوب ہیں، چوں کہ جاند کا ہریا گئا، انھوں نے اس کی چند مثالیس بھی بیان کی ہیں۔ پھر لکھتے ہیں کہ مران دراصل ماہ کر مان تھا، اختصار کے پیش نظر مکران ہوگیا، مکران سمندر کے کیا نے دور فاروتی میں اسے فتح کیا نے اسے بیشد یدا لکاف پڑھا ہے چنال چہ وہ کہتے ہیں ۔ م

لقد شبع الأرامل غير فحر الله بفي جاء هم من مكران
دو بيوه عورتيل آسوده بوكني اوراس من كولى فخركى بات نبيس ،اس مال غنيمت مع حوكران سا يا تقا" -

اتاهم بعد صعبة وجهد النه وقد صفر الشتاء من الدخان.
"بيمال غنيمت برى وشوارى اورمشكل ك بعد آيا، جب كردهوال كسبب موسم مرماز دد دو كيا تها".

فانی لایدم الجیش فعلی الله ولامیفی یدم ولاسنانی
"نتواشکرمیرےاسمل کی ندمت کرسکتا ہوادنہ ہی میری شمشیر والوار کی
ندمت کی جاسکتی ہے'۔

غداة أرفع الاوباش رفعا الله السند العريضة والمدان ربحس من كويس اوباش م كوكول كورسيع وعريض سنده اور مدان ك علاقي من يبنيار باتها"_

ومهران لنا فیما اردنا الله مطیع غیر مسترخی الهوان

"اور مهران جیما که م نے چا به ہمارا مطیع ہوگیا، ذلت کا پردہ لاکائے بغیر"۔

احمد بن کی بن چا بر کے برقول عہد معاویہ میں زیاد بن ابوسفیان کی طرف
سے ایک فاضل اور لاکق محص سنان بن سلمہ بن حمق بندلی ادھر کے والی ہے۔ سنان
پہلے سپہ سالا رہیں جھول نے اپنی فوج سے فرار کی صورت میں اپنی بیویوں کے مطلقہ ہوجانے کی قتم لی ۔ انھوں نے سرحد پر پہنچ کر بر در باز دکران کوزیر کیا اور اس کا مناسب بندوبست کرنے کے بعدد ہیں کے ہور ہے۔

ابن کلبی کی تحقیق میرہے کہ مران کے فاتے حکیم ابن جبلہ عبدی ہیں ان کے بعد زیاد نے راشد بن عمر وجد بدی از دی کو بہال کا عامل بنایا۔ انھوں نے آگر قیقان پر چڑھائی کی اور فتح یا ب رہے۔ بعد از ال سندھ پر حملہ کیا اور شہادت یائی۔ اس وقت نظم ونسق سنان بن سلمہ نے سنجالا، جنھیں بعد میں مکر ان کا والی بنادیا گیا، جہال وہ دوسال مقیم رہے۔ اعتیٰ ہمدانی مکر ان کی بابت کہتا ہے:۔

ولم تك من حاجتي مكران الله ولا الفزو فيها ولا المتجر

"نہ تو مران کی مجھے کوئی ضرورت تھی اور نہ ہی اس پر حملہ کرنے کی اور نہ ہی ا تجارت کی"۔

وحدثت عنها ولم آنها ﴿ فَمَا لَتَ مِن ذَكُوهَا احْبِر " مِحْصَ مُران كَي بابت بتايا تو كيا مرش دبال آيانه تقا، مجھے تواس كے تذكر سے بى بہر دوركيا جا تاربا"۔

ہان الکئیر بھا جامع ﴿ وان الفلیل بھا معود ''کروہاں الدارکے پاس تو بہت ہا در تک دست پریشان ہے''۔
ان اشعار کی حقیقت ہے کہ یہ فی الواقع حکیم بن جبلہ عبدی کے کچھنٹری جملے ہیں جنعیں اشعار کا جامہ بہنا دیا گیا ہے۔ موزعین کا کہنا ہے کہاں علاقہ کا نام مران برادر کرمان و مران بن نارک بن سام بن نور نے کے نام پردکھا گیا ہے، کیوں کہ' بابل'' میں خلط ملط ہوجانے کے بعدانھوں نے اسے بی اپناوطن بنالیا تھا۔
مران مختلف شہروں اور دیہا تو م شرق ایک و سیے ریاست ہے جس کے مغرب میں کرمان بشرق میں ہندوستان، جنوب میں سمندراور شال میں جستان واقع ہیں۔
میں کرمان بشرق میں ہندوستان، جنوب میں سمندراور شال میں جستان واقع ہیں۔

ملتان

علامہ یا قوت حموی کہتے ہیں کہ سے ہندگی طرف غزنہ کے قریب ایک مسلم اکثرین شہر ہے۔ اصطح کی کہتے ہیں کہ ملتان جس کا نام ''فوج بیت المذھب'' بھی ہے رقبے میں منصورہ کا تقریباً آ دھا ہے۔ یہاں ایک بت کی ہندو بہت تعظیم وکر یم کرتے اور دور در از مقامات سے اس کی زیارت کے لیے آتے ہیں۔ مؤرفین نے کھی ہے کہ ایک باریہاں کی ایک برترین کا فرقوم'' کرک' نے پچھ سلم عورتوں کو گلی دے دی، ان میں ایک عورت نے باختیار' یا ججاجاہ'' کہہ کر فریاد کی ، جب گلی دے دی، ان میں ایک عورت نے باختیار' یا ججاجاہ'' کہہ کر فریاد کی ، جب یہ بات جاج کومعلوم ہوئی تو اس نے ''دبیل'' کے راجہ داہر کے پاس اپنا اسلی بھی جسے ہے۔

کر تھم دیا کہ مجرموں کوسزادی جائے۔داہر نے یہ کہہ کرسی ان می کردی کہاس کا
ان مجرموں پر بس نہیں چانا، اس پر تجاج نے خلیفہ عبدالملک سے دیبل پرشکرشی کی
اجازت چاہی لیکن اس کا کوئی مثبت جواب نہیں ملا، پھر جب ولید کا زمانہ آیا تو اس
نے اس کی اجازت دے دی،اجازت ملنے کے بعد جابح نے تھ بن قاسم کوائیک لشکر
کے ساتھ سندھ روانہ کیا،سخت مقابلے کے بعد داہر قتل ہوا اور سندھی شہر ملتان فتح
ہوگیا۔ اس کے ساتھ ہی خلیفہ ولید کا انتقال ہوگیا، ولید کے بعد جب اس کا بھائی
سلیمان بن عبدالملک خلیفہ بنا تو اس نے باہمی عداوت کی وجہ سے محمد بن قاسم کو
بلوا کرکوڑے لگوائے اور ٹائ کالباس پہنایا۔ انتہا یہ کہ فتح سندھ کی مہم میں بائی کروڑ
کی بفتر رجواخراجات آئے تھے، اس کا دوگنا بہطور تا وان اس سے وصول کیا۔خلاصہ
کی بفتر رجواخراجات آئے تھے، اس کا دوگنا بہطور تا وان اس سے وصول کیا۔خلاصہ
یہ ہے کہ فتح ہند کا سہرا اموی خلیفہ ولید بن عبدالملک کے سر ہے اور اس وقت سے
تا ہنوز یہ ملک مسلمانوں کے قبضے میں ہے۔
تا ہنوز یہ ملک مسلمانوں کے قبضے میں ہے۔

مسعودی کہتے ہیں کہ والی ملتان سامہ بن غالب کی اولا دمیں سے ایک طاقت وراورلشکر دارشخص ہے۔اعداد وشار کے مطابق ملتان کے اردگرد ۱۴ رہزار بستیال ہیں۔ ملتان ہی ہیں ملتان نام کا وہ مشہور بت ہے جس کی زیارت کے لیے سندھو ہند کے دور دراز علاقوں سے ہزاروں کی تعداد میں لوگ آکر مال ودولت اور مختلف قتم کی عمده عطریات کا نذرانہ پیش کرتے ہیں۔ گورزملتان کی آمدنی کا بیش تر حصداس بت کونذر کی جانے والی خالص عود کا مربون منت ہے جس کے ایک اوقیہ کی قیمت ۱۰۰ اردینار ہے۔ عود کی نزاکت کا عالم یہ ہے کہ مہرلگانے براس پر ایسے ہی نشانات پڑجاتے ہیں بیسے کسی موم پر مہر مارنے سے ،علاوہ ازیں اور بہت کی جیب وقریب اشیاء اس بت کی جوتا ہے اور مسلمان اپنے اندرمقا بلے کی طاقت نہیں پاتے ،تو وہ اس بت کونوڑنے کی موتا ہے اور مسلمان اپنے اندرمقا بلے کی طاقت نہیں پاتے ،تو وہ اس بت کونوڑنے کی دیتے ہیں اُنٹر کا فار یہ ہیں اُنٹر کا فاریہ سنتے ہی والیس ہوجا تا ہے۔ مسعودی کہتے ہیں کہ میراوہ اِس محکی دیتے ہیں اُنٹر کا فاریہ سنتے ہی والیس ہوجا تا ہے۔ مسعودی کہتے ہیں کہ میراوہ اِس

کاسفر مس کے بعد ہوا، اس وقت والی ملتان ابوالالہا ہ مدبة بن اسد قریشی تھے۔

علامة حوى كہتے ہيں كه يد فاكنور" دمنجرور" اور جسل" وغيره بہت سے شهروں مشمل وسط منذكى ايك بؤى رياست ب جس كى مرحدي ملتانى علاقول سے ملتى ہیں۔مرج یہاں ہے بوری دنیامیں سپلائی کی جاتی ہے۔صاحب تقویم البلدان لکھتے ہیں کہ یہ مالدیب کے مشرق میں ہرے جرے شہروں والی ایک ہندوستانی ریاست ہے، جہال پانی کی بہتات اور لیک دار درختوں کی بھر مار ہے۔ بیر بات علم میں رہے کہ مالا بار، ملیار، ملیسار اورمنییاریهسب ایک ہی نام کی مختلف شکلیں ہیں،"ملی، جمعنی یہاڑ اور"بار"باركامعرب إس ليمليبار كمعنى موع" يباركامار"

علامه یا قوت حموی لکھتے ہیں کہ یہ ہند کا ایک شہرے جومنڈل نا می بہترین عود برآ مدکرتا ہے۔ ای کے بارے بین شاعر کہتا ہے: ن

إذا ما سنت نادى بما في ثيابها ﴿ فَي لَا لَهُ السَّدَاوِ المندلي المطير "جبوه چلتی ہے تواس کے کیروں کی تیزخوش بواور مندلی عود کی چھوار آوازدیت ہے'۔ آج کل اکثر باشندگان منڈل کے نام کے اخیر میں منڈل لگا ہوتا ہے،مثلاً محدمندل ،عبدالله مندل اورعبدالرحن مندل وغيره-

علام جموی کہتے ہیں کہ مصورہ ہند کے ایک علاقے کی راجد هانی ہے۔ بیا یک برا اور انتائی زرخیز شرے یہاں ایک مجدے جس کے ستون ساگون کے ہیں،قریب ہی دریائے سندھ کی تاہے ہے۔ حمزہ کی تحقیق کے مطابق برہمن آبادنا می سندھ کے قدیم شہرہی کانام آج کل منصورہ ہے مسعودی کہتے ہیں کہ بیاموی گورزمنصور بن جمہورے نام

سے موسوم ہے ، مغرب میں اس کاطول ۹۳ ردرجہ اور جنوب میں اس کاعرض ۲۲ ردرجہ ہے۔
ہشام کہتے ہیں کہ منصورہ نام اس لیے پڑا کہ بانی منصور بن جمہور کلبی ہیں ، یہ ہارون رشید
کے خالف اور سندھ میں مقیم ہتھے۔ حسن بن احمہ کمبلی کے بہ قول اس شہر کا نام منصورہ اس
لیے رکھا گیا کہ عمر دبن حفص مہلی نے خلیفہ منصور عباس کے دور میں اسے بسایا تھا۔

خلیج سنده کی وجہ سے منصورہ جزیرہ نما ہوگیا ہے یہاں کے باشند ہے مسلمان با مروت، دین داراور تجارت بیشہ ہیں، پانی کی ضرورت دریائے سنده سے پوری ہوتی ہے، یہاں گری اور پسوبہت ہے۔ دیبل یہاں سے چھ، ملتان، بارہ، طوران پندرہ اور بدہ ہو بہت ہے۔ دیبل یہاں سے چھ، ملتان، بارہ، طوران پندرہ اور بدہ ہو ہو ہو ہیں مسافت پرواقع ہیں۔ مسعودی کہتے ہیں کہ جب میراوہاں کا سفر ہواتو اس کے وقت وہاں کے حاکم ابوالمنذ ر بن عبداللہ تھے، میں نے اس کے وزیر زیاد اوراس کے دوصا حب زادوں: محمد اور علی سے ملاقات کی، ایک عرب سردار اور حزہ نامی ایک عرب بردار اور حزہ نامی ایک عرب مردار اور حزہ نامی ایک عرب بادشاہ بھی وہاں نظر آیا، یہاں سیدنا حضرت علی کی سل کے بھی کچھلوگ آباد ہیں، والیان منصورہ اور قاضی ابوالشوارب کے درمیان قرابت ورشتے داری ہے کیوں کہ یہاں کے والیان ہبار بن کردکی اولاد ہیں۔ منصورہ نامی پیریاست ۱۲۳۳ رتک آبادرہی۔

نهرواله (نهلواره)

قلقندی کہتے ہیں کہ اس کا طول ۹۸ ردرجہ ۲۰ رد قیقہ اور عرض ۳۳ ردرجہ ۳۰ رد قیقہ اور عرض ۳۳ ردرجہ ۳۰ رد قیقہ اور عرض ۳۳ ردرجہ ۳۰ ردی دوققہ ہے۔ مالا بار کے مغرب میں واقع یہ کھمبابت سے بھی بڑی ریاست ہے، اس کی آبادی باغات اور پانی میں بٹی ہوئی ہے۔ سمندر سے اس کی مسافت، ۱۳ ردن کی ہے۔ صاحب ما قانے اپنی تاریخ میں لکھا ہے کہ یہ ہندوستان کا سب سے براعلاقہ ہے۔

باب: الف

احدابن سندهى بغدادي ابوبكرالزامد

خطیب بغدادی، تاریخ بغداد میں ان کی بات رقم طراز ہیں: احمد بن سندھی بن صن بن بحر، ابو بکر حداد نے محمد بن عباس مؤدب، حسن بن علویہ قطان اور حافظ حدیث موی بن ہارون سے حدیث کا ساع کیا۔ ان سے ابن رزقویہ نے ابو حذیفہ بخاری کی ''کتاب المبتدا'' وغیرہ کی اور ابوعلی بن شاذان اور ابوئیم اصفہائی نے حدیث کی روایت کی ۔ بی تقد، راست گو، نیک، صاحب نصل و کمال تھے۔ بغداد کے محلہ بنی حداد میں رہائش بذیر سے۔

خطیب بغدادی کھتے ہیں کہ ہم سے حسن بن ابوہر، ان سے احمد بن سندھی مداد نے ، ان سے محمد بن عباس مو دب نے ، ان سے کی بن نعمان نے ، ان سے محمد بن عباس مو دب بروایت زبیر عن مجاہد بیر دوایت بیان کی کہ دھزت عائشہ سے بروایت زبیر عن مجاہد بیر دوایت بیان کی کہ دھزت عائشہ صدیقہ نے بیان کیا کہ حضورا کرم شکھا کا ارشادگرامی ہے "ماذال جبریل عائشہ صدیقہ نے بیان کیا کہ حضورا کرم شکھا کا ارشادگرامی ہے بروی کی بابت یو صینی بالمجاد حتی ظننت انہ سیور ٹه "حضرت جبریل مجھے بروی کی بابت اس طرح تاکید کرتے رہے کہ میں نے سمجھا پڑوی میراث کا وارث ہوجائے گا۔
مزید فرماتے ہیں کہ ہم سے حافظ ابوئیم نے ، ان سے احمد بن سندھی بن بحر نے جن کا شارابدال میں ہوتا تھا، بیان کیا فرماتے ہیں کہ میں نے حافظ ابوئیم سے احمد بن سندھی کی بابت دریافت کیا تو فرمایا کہ وہ ثقہ تھے۔ ان کے بارے میں یہ بات بن سندھی کی بابت دریافت کیا تو فرمایا کہ وہ ثقہ تھے۔ ان کے بارے میں یہ بات مشہورتھی کہ وہ مستجاب الدعاء ہیں۔ خطیب کھتے ہیں کہ میں نے امام ابو بکر برقائی سے ابن سندھی کا تذکرہ سنا، انھوں نے ان کی توشق فرمائی اور ثقہ قرار دیا۔ محمد بن ابوفوارس این سندھی کا تذکرہ سنا، انھوں نے ان کی توشق فرمائی اور ثقہ قرار دیا۔ محمد بن ابوفوارس این سندھی کا تذکرہ سنا، انھوں نے ان کی توشق فرمائی اور ثقہ قرار دیا۔ محمد بن ابوفوارس

فرمات بين كم ابو بكرسندهي حداد جوايك تقدعالم بتصنى وفائت ٩٥٩ صين موكى -المام الوسعد عبد الكريم بن الوبكر سمعاني وبحتاب الانساب ومن يفخ احد حدادی یارے میں لکھتے ہیں کہ احمد بن سندھی بن حسن حداد نے ، امام علوبیا سے كتاب المبتداء كي روايت كي، نيزامام فرياني اور محدين عباس مؤ دب وغيره سي بهي روایت مدیث کی ہے۔ امام این اخیر جزری نے سیکتاب اللباب فی تھذیب الانساب" من لفظ "جدارى" ك بادے من لكھا ہے كہ بغداد ك ايك محل " تطبیعہ بن جدار" کی طرف منسوب کے اور احمد بن سندھی بن جسن بح جداری بغدادى كاتعلق بهي اى محلف على الله محلف الله معلاوق وتصفيف خطيب بغدادي في محلف اين تاریخ مین ان کا تذکرہ کیا ہے اور لکھا ہے کہ ابو بکر صداوے محدین عباس مؤدت سے حدیث کا ساع کیا اور ان سے این رزقویہ نے روایت کی ہے۔ امام این العماد عنا نے اپنی کتاب میشدرات الذهب فئی اخبار من ذهب" مین ۲۵۹ء کے تذكر في حدويل مين لكها ب كذائ سال يفتح احدين سندهي ابوبكر بعدادي خذادكا بھی انقال ہوا۔ انھول نے حسن علوملے وغیرہ سے روایت کی ہے۔ حافظ الوقعم فرماتے بین کران کا شار "ابدال" میں تھا۔ اس میں است میں اور اندال استان کا شار "ابدال" میں تھا۔

ما فظالونيم اصفهائي "حلية الأوليا" من صفرت على كند كر ال على من الله الله من الله من

"بني الاسلام على أربعة أركان: على الصبر، واليقين، والجهاد، والعدل. وللصبر أربع شعب: الشوق، والشفقة، والزهادة، والترقب. فمن اشتاق إلى الجنة سلاعن الشهوات. ومن أشفق من النار رجع عن الحرمات. ومن زهد في الدنيا تهاون بالمصيبات. ومن ارتقب الموت سارع في الخيرات. ولليقين أربع شعب: تبصرة القطنة، وتاويل الحكمة ، ومعرفة العبرة، واتباع السنة. فمن أبصر الفطنة تأوّل الحكمة ومن تأول الحكمة عرف العبرة ومن عرف العبرة اتبع السنة ومن اتباع السنة فكأنما كان في الأولين. وللجهاد أربع شعب: الأمر بالعمروف، والنهي عن المنكر، والصدق في المواطن، وشنآن الفاسقين. فمن أمر بالمعروف، ونهى عن المنكر أرغم أنف المنافق، ومن صدق في المواطن قضى الذي عليه وأحرزدينه، ومن شنأ الفاسقين فقد غضب لله ومن غضب الله يغضب الله له. وللعدل أربع شعب: غوص الفهم ، و زهرة العلم، وشرائع الحكم، وروضة الحلم . فمن غاص الفهم فسرجمل العلم ، ومن رعى زهرة العلم عرف شرائع الحكم ، ومن عرف شرائع الحكم ورد روضة الحلم. ومن ورد روضة الحلم ، لم يفرط في أمره وعاش في الناس و هم في راحة ". توجمه: اسلام کی بنیاد جارارکان برے: صبر، یقین، جہاداورعدل مبر کے جار شعبے ہں:

''ا۔ شوق ، ۲۔ خوف، ۳۔ زہد فی الدنیا ، ۲۔ موت کا انظار۔ جو مخف جنت کا مشاق ہوگا، و ونفسانی خواہشات سے بازرہے گا، جے جہنم کا خوف ہوگا و ہدکاری سے دورہے گا، جو مخف و نیاسے بے رغبتی رکھے، میبنیں اس کے لیے آسمان معلوم ہوں گی اور جس کوموت کا انتظار ہوگا، وہ نیکی میں جلدی کرے گا۔ یقین کے بھی جیار

شعبے میں: اردوراند کئی۔ اے حکمت ودانائی ساعبرت آموزی۔ اتباع سنت۔ جوعفي سنت كى اتباع كرے، يون جمها جا ہے كدوہ اولين من سے ہے۔ جہادك بھی جا رشعے ہیں:ا۔امر بالمعروف آ۔ نبی عن المنكر سائير وفت سے بولنا۔ المناق وفارس فرت وعداوت جوفس نيك باتون كاحكم دساس فموس كى يشت مضبوط كى جونى عن المنكر كرتا بال في منافق كورسوا كيا جو برموقع بر راست کوئی سے کام لے، اس نے اپناواجی فرض ادا کیا اور دین کی حفاظت بھی کی اورجو بدكارون سے نفرت كر اس في في خدا كے ليے عصر كيا اور جو في للدفي الله غضب رکھے تو الله اتعالى اس كے ليے غضب رکھتے ہيں۔ يفين كے بھى جا رشعب بن: ا- ذبانت كي بصيرت،٢- تشريخ حكمت،٣- عبرت وموعظت كي شناخت، - .. اور ابتاع سنت ہے جس کی ذہانت وبھیرت آمیز ہو، وہ حکمت سے والف ہوا۔ جو مخص حکمت سے واقف ہوا،اسے عبرت حاصل ہوگی اور جس کوعبرت کاعلم وادراك مواوه انباع سنت كرك كارعدل وانضاف كهي خارشعي بين المرك سوچھ بوچھ۔ ایکم کی چک سے تقائے مسائل سرسنجدگ وبرد باری کا چن ۔ جس مخض ک نہم گری ہوگی ، وہ علم کے اجمال کی وضاحت کر سکے گا۔ جو مضم علم کی ان بان اور چک دمک کی باس داری کرنے،اے شرائع ویم کی معرفت ہوجائے کی اور جے تضایے مسائل کاعلم ہوجائے وہ بروباری کے چمن تک بھنے گیا اور جو برد باری کے چن تک بینے گیا، وہ بھی اینے فیلے میں افراط وتفریط کا شکارنہ ہوگا اور وہ لوگوں میں اس طرح رہے گا کہ انھیں اس کے سبب آرام وراحت عاصل ہوگی ا حافظ ابولعيم اصفهاني ،حضرت مقداد بن ابود کے تذکرے کے شمن میں لکھتے ہیں کہ ہم سے ابو براحمر بن سندھی نے ، ان سے جافظ موی بن مارون نے ، ان سے عباس بن وليد في ان بيت بشربن مفضل في ان سابن عون في بدروايت ميران اسجاق، جعرت مقدادين اسودي بيان كياء انعون فرمايان سي

"استعملنى رسول الله على عمل فلما رجعت قال : كيف وجدت الإمارة ؟قلت : يارسول الله اما ظننت إلا أن الناس كلهم خول لى والله لا آتى على عمل مادمت حياً".

توجمه بحصر سول اکرم علی نے ایک جگہ کا عالی بنا کر بھیجا، جب بیں واپس آیا تو اسٹ نے معلوم کیا کہ گورزی کیسی گئی؟ بیں نے عرض کیا اللہ کے رسول! بیں نے سمجھا کہ سارے کے سارے انسان میرے غلام یا ندی ہیں۔ خدا کی تتم جب تک میں بقید حیات رہوں گا، کی طرح کی امارت ہر گز قبول نہ کروں گا، '۔

عافظ موصوف، حضرت عبدالله بن عبال کے تذکرے کے تحت رقم طرازیں کہ ہم (حافظ البونیم) سے احمد بن سندھی نے ، ان سے حسن بن علی نے ، ان سے اساعیل بن عبیر عطار نے ، ان سے اسحاق بن بشر بن جو ببر نے بدروایت حضرت ضحاک، حضرت عبدالله بن عباس رضی الله عندسے قل کیا کہ انھوں نے فر مایا:

"يا صاحب الذنب! لاتأفن من سوء عاقبته، ولما يتبع الذنب أعظم من الذنب إذا عملته، فان قلّة حياتك ممن على اليمين وعلى الشمال وأنت على أعظم من الذنب الذى علمته، وضحكك وأنت لا تدرى ماالله صانع به أعظم من الذنب، وفرحك من اللنب إذا ظفرت به أعظم من الذنب، وحزنك على الذنب إذا فاتك أعظم من الذنب إذا فاتك أعظم من الذنب إذا ظفرت به، وحوفك من الريح إذا حركت ستر بابك وأنت على الذنب، ولا يضطرب فؤادك من نظر اللّة إليك أعظم من الذنب إذا عملته، ويحك هل تدرى ماكان ذنب أيوب عليه السلام فابتلاه الله بالبلاء في جسده وذهاب ماله؟ إنما كان ذنب أيوب عليه السلام فابتلاه السلام أنه استعان به مسكين على ظلم يدرأه عنه فلم يعنه ولم يأمر بمعروف ولم ينه الظالم عن ظلم هذا المسكين فابتلاه الله عزوجل.

ترجمه ومرتكب كناوا تحفي كناه سے انجام بدے مطمئن بين مونا جا ہے۔ كناه كے بعد جو يد حياتى آتى ہے، وہ كناه ب على بدھ كر باكرتم في كناه كرليا - كول كة ترى يرب حيال ان فرشتول كمائة عجوتير داكس اور باكس كند ه پرتعینات ہیں اورتم ارتکاب کروہ کناہ ہے بھی سنگین بے حیالی میں بتلا ہو۔ تیری بیہ السي حالان كداس كى مجي خريس كذفدا تير ساته كيا معامل كرف والاع، كناه ے کہیں بر ھرے کا اے ارتکاب میں کامیانی پراظہار مسرت،اس کناہے متلین تر ہے۔ گناہ کا او تکان نہ کر سکنے پر رنج وغم ، اس گناہ سے بھی سکین تر ہے۔ مناه میں ملوث رہتے ہوئے ہوا جلنے برء جس سے دروازے پر براہوا بردہ بلنے لگتا ہے، تمھارڈرنا جب کراس ہے تمہاراول بالکل پریشان ندموک خدامسیں و مجور با ہے، اس کناہ سے تعین تر ہے اگرتو اس کاارتکاب کر لے۔ تیرا تاس ہوکیا تھے چھے معلوم بيس كرحفرت الوب عليه السلام كاكيا تصورتها، حس كي وجه ساللدف أتفيس ان كيجهم اور مال واسباب كي آز مائش على جنلا كيا؟ ان كاقصور صرف اتناتها كمان ے ایک مرورولا جارا دی نے اپنے اور ہونے والے الم کے خلاف مدد جا بی تھی، مرانوں نے اس کی دوندی ، نہ نیکی کاظم دیا اور نہ بی ظالم کواس لا جار برظم کرنے ے روکا، جس کی وجہ ہے اللہ تعالی نے انھیں اس آز مائش میں جتلا کیا"۔

حافظ موصوف بی خودامام ابن سرین کے تذکرے کے من میں لکھتے ہیں کہ ہم سے اسمد بن سندھی نے ، وہ کہتے ہیں کہ ہم سے محد بن عباس مؤدب نے ، وہ فرماتے ہیں کہ ہم سے محد بن عباس مؤدب نے ، وہ فرماتے ہیں کہ ہم سے خاد بن زید فرماتے ہیں کہ ہم سے خاد بن زید نے بدروایت میاں کی ہے کہ انھوں نے فرمایا:

"مثل الذي يجلس ولا يخلع نعليه مثل دابة يوضع عليها الحمل ولا يوضع الاكاف".

توجمه الشخص كى مثال جوميع مرجوت ندا تارى الى ب جلي جانور بربوجه

تولاددياجائ مركة اشركهاجائ ...

ابورجاءعطاردی کے تذکرے کے تحت کھتے ہیں کہ ہم سے احمد بن سندھی بن بھر نے ان سے بشر بن ولید نے بھر نے ، ان سے بشر بن ولید نے اور ان سے دکریا بن محمد بن حاتم عبید جی نے ، ان سے بشر بن ولید نے اور ان سے ذکریا بن محمد مطی نے ابورجاءعطاردی سے بروایت خفر سے بداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ اید دیں یہ کہ حضور ارکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فر مایا:

"لاتقولوا قوس قرح فان قرح شيطان. ولكن قولو قوس الله عزوجل فهوامان لاهل الارض".

توجمه " قوس قزح مت كبوكرية شيطان كي قوس بالكدالله تعالى فوس كبوكة المراكة وس كبوكة المراكة وس كبوكة المراكة وس كبوكة المراكة وس كبوكة المراكة والمان من المراكة والمراكة والم

حافظ الوقعيم فرماتے ہيں ہے حديث براويت الودجاء غريب ہے۔ مير عظم كے مطابق ذكريا بن حكيم كے علاوہ كى دوسر داوى نے اسے مرفوعاً روایت نہيں كہا ہے۔ حضرت مالك بن دينار كے تذكر بيس لكھتے ہيں كہ ہم سے احمد بن سندهى نے ، ان سے جعفر بن احمد بن حبار بن مناب نے ، ان سے بعفر بن احمد بن عبدالله بن ذيا د نے اوران سے مالك بن دينار نے ، ان سے ابوسلم انسارى محمد بن عبدالله بن ذيا د نے اوران سے مالك بن دينار نے بروایت حضرت انس بن مالك رضى الله عنه بيان كيا ، انھوں نے فرمايا كه حضور اكرم صلى الله عليه وسلم كاارشاد كرا مى ہے :

"اخبرنى جبريل عن الله تعالى أن الله عزّ وجلّ يقول: وعزتى وجلالى ووحدانيتى وفاقة خلقى إلى واستوائى على عرشى وارتفاع مكانى إنى الأستحيى من عبدى وأمتى يشيبان في الإسلام ثم أعذبهما. ورأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم يبكى عند ذلك. فقلت مايبكيك يارسول الله افقال: بكيت لمن يستحى الله منه والا يستحيى من اللة تعالى"

توجمه " بحصالتد تعالی کاطرف سے حضرت جریل نے بتایا کہ اللہ تعالی فرمائے
ہیں کہ میری عرف وجلال کی تم ، میری وجدا نیٹ کی تم ، میری محلوق کی میری جانب
احتیاج کی تم ، میر رے عرش پراستواء کی تم امیری بلندی مرتبہ کی تم میں اپنے ایسے
بندی اور بند نے سے جو اسلام میں بوڑ سے ہوگے ہوں ، شرما تا ہوں کہ پھر آئیس
عذا بدوں حضرت انس وضی اللہ عند فرمائے ہیں کہ اس وقت میں نے ویکھا کہ
اللہ سے رسول روز ہے بین میں نے عرض کیا اللہ کے رسول! آپ کون روز ہے
بیں؟ فرمایا میں اس محض کے لیے روز ہا ہوں جس سے خدا تو شرما تا ہے مگر وہ خدا
ہیں؟ فرمایا میں اس محض کے لیے روز ہا ہوں جس سے خدا تو شرما تا ہے مگر وہ خدا
ہیں؟ فرمایا میں اس محض کے لیے روز ہا ہوں جس سے خدا تو شرما تا ہے مگر وہ خدا

خافظ موصوف لکھتے ہیں کہ مالک بن ڈینار سے بیر حدیث سوائے ابوسلمہ انصاری کے کسی اور نے روایت ہیں کی۔اسی طرح ابوسلمہ سے روایت کرنے ہیں یجی بن خذام بھی تنہا ہیں۔

خافظ الوقعم، الوغران جونی کے مذکر سے میں رقم طراز میں کہ ہم سے احمد بن سندی نے ، ان سے عبید الله بن عمر نے اور ان سے عبید الله بن عمر ان سے عبید الله بن عمر ان سے معالی مو دب نے ، ان سے عبید الله بن عمر ان کے بیان کیا وہ کہتے ہیں کہ میں نے سنا کہ الوعمر ان نے آیت والله لا محل ابدا" لدینا انکالا و جا جیما" حلاوت کی اور اس کی تفییر 'قیودا و الله لا محل ابدا" سے کی کہ زکال سے مرادا ہی بیڑیاں ہیں جو بخدا بھی بھی نے ملیل گا۔

حضرت سعید بن جبر کے تذکرے میں فرماتے ہیں ہم سے احمد بن سندھی نے ،ان سے جعفر فریا بی نے ،ان سے محمد بن حسن بخی نے اور ان سے حصر ت عبد الله بن مبارک نے ، ابولہ یع عضاء بن دینار بردوایت حضرت عبد اللہ بن جبیر بیان کیا۔ انہوں نے فرمایا:

" خشیت بید ہے کہم خدا سے اس طرح ورد کہ خوف خدا تمہارے اور معصیت کے درمیان مائل ہوجائے، تب ہے بی خشیت اور ذکر خداوندی اللہ تعالی کی

اطاعت شعاری ہے جس نے اللہ کی اطاعت کی ، اس نے اس کا ذکر کیا اور جواس کی اطاعت نہ کرے تو وہ ذاکر نہیں ہے ، خواہ وہ بہ کشرت بیج پڑھے اور زیادہ سے زیادہ قرآن کی تلادت کرے '۔

حافظ موصوف حفرت وہب بن منبہ رضی اللہ عنہ کے تذکرہ کے ضمن میں کھتے ہیں کہ ہم سے احمد بن سندھی نے ان سے حسن بن علوبہ قطان نے ،ان سے اساعیل بن عیسی عطار نے اور ان سے ادر لیس نے اپنے دادا حضرت وہب بن منبہ کی روایت سے بیان کیا کہ انھوں نے فرمایا:

"دحفرت لقمان تحکیم نے اپنے صاحب زادے سے فرمایا بیٹے اللہ سے عقل وہم طلب کروکیوں کہ اللہ سے عقل کے طلب کردہ لوگ سب سے زیادہ اچھی عقل کے ہوتے ہیں شیطان عاقل آدمی سے بچتا ہے اسے فریب اوردھو کہ ہیں دے سکتا"۔

حضرت وہب بن مدیہ کے تذکرے میں مزید فرماتے ہیں ہم سے احمد بن سندھی نے ، ان سے اس بن علویہ قطان نے ، ان سے اساعیل بن عیسی نے ، ان سے اساعیل بن عیسی نے ، ان سے اساق بن بشر نے اور ان سے ادر لیس نے اپنے داداحضرت وہب بن مدید کی روایت سے بیان کی کہ حضرت وہب ئے فرمایا:

"الله تعالی کی عبادت عقل سے زیادہ بہتر کی اور چیز سے نہ کی گئی۔ کی انسان کی عقل اس وقت تک کمل نہیں ہوتی، جب تک اس کے اعدد در شاہیں کی جانہ ہوجا کیں۔ اس میں نیکی پیوست ہوجائے۔ ۲- وہ ہوجا کے ساموہ بقل رکفاف دنیا سے خوش رہ اور جوزیادہ ہوا سے خرج کردے۔ ۲- و نیا کے اندر تواضع واکساری، اس کے نزدیک اعز از وشرف سے زیادہ مجبوب ہو۔ ۵- دنیا کی قرات ورسوائی عزت و مر بلندی سے زیادہ عزیز ہو۔ ۲ - زندگی بحروہ طلب علم سے نہ والس فی میں اس کے خور بروانہ منائے۔ ۸- دوسرے کے معمولی احسان کو بھی بہت استمجے۔ ۹ - ویے بناہ احسان کو معمولی گردانے۔ ۱- اور دسویں خصلت اصل

الاصول ہے اس سے اس کوظمت وہزرگی حاصل ہوگی، اس سے اس کا چرچہ عام ہوگا اوراس سے دونوں جہان میں اس کورجہ بلند ملے ملے گا۔ عرض کیا گیاوہ دسویں خصلت کیا ہے؟ تو فر ایا وہ ہے۔ کہ سمارے انسانوں کواہی ہے بہتر اور برتر شار کرے اور کسی کواہی سے بہتر اور دونیل نہ سمجھے۔ جب اپنے سے بہتر و برتر کودیکھے تو اسے اچھا گے اور اس کی آرزوہ کو کہ وہ بھی ایسانی ہوجائے۔ جب اپنے سے برتر اور دونیل کی آرزوہ کہ کہ شایداسے نجات ال جائے اور میں بلاک اور اس کی اور میں کہا کہ شایداسے نجات ال جائے اور میں بلاک اور اس کے فاہر کی بابت یہ بھے کہ شاید سے جو بھی پر ظاہر نہ ہوسکا جو بہت بہتر ہے۔ اور اس کے فاہر کی بابت یہ بھے کہ شاید سے میر کے دینا برنہ ہوسکا جو بہت بہتر ہوا در اس کے فاہر کی بابت یہ بھے کہ شاید سے میرے لیے بہت براہے۔ تب جا کر اس کی عقل ممل ہوگی اور اہل کی لگام کی سیاست، زمانداس کے ہاتھ میں ہوگ ۔ نیز ان شاء اللہ وہ جنت میں بھی پہلے ہی داخل ہونے والا ہوگا''۔

حافظ موصوف مزید لکھتے ہیں ہم سے احمد بن سندھی نے، ان سے حسن بن علویہ نے، ان سے حسن بن علویہ نے، ان سے اسلامی نے، ان سے اسلامی نے، ان سے اسلامی بن بشر نے، انھوں نے علویہ نے، ان سے اسلامی میں بشر نے، ان سے حضرت وہب سے روایت کرنے والے ایک شخص نے بیان کیا کہ حضرت وہب نے فرمایا:

"جب حفرت یوسف علیه السلام کو بادشامت کی پیش کش کی گئ تو افهول نے درواز مے پر کھڑ ہے بید عاپر بھی : حسبی دینی من دنیای، وحسبی دبی من خلقه عزجاره و جل ثنائه لا الله غیره ۔ پھراندر گئے جب بادشاه محر کی نظران پر پڑی تو ده این تخت سے اثر گیا اور ازراه تعظیم مجدے میں گرگیا۔ پھرا ہے ہم راه افعیس تخت پر بٹھایا اور کہا "إنك لدینا مكین أمین "اس پر حضرت یوسف علیه انسام نے فرمایا" اجعلنی علی خزائن الارض إنی حفیظ علیم" كه مس السلام نے فرمایا" اجعلنی علی خزائن الارض إنی حفیظ علیم" كه مس ان سالوں اور ان میں ذخره كرده غله جات كی تفاظت دیكہ بانی كروں گا اور مجھ آنے والے لوگوں كی زبانوں كا بھی علم ہے"۔

حضرت میمون بن مهران کے ترجے میں فرماتے ہیں ہم سے احمد بن سندھی نے ،ان سے ابوائیے رقی نے ،ان سے ابوائیے رقی نے ،ان سے ابولیم علی نے ،ان سے ابوائیے رقی نے مان سے میمون بن مہران کی روایت سے بیان کیا کہ انہوں نے فرمایا:

"ذكركى دوسمين بن: ذكر باللمان أوراس سے افضل يہ ب كرتم الله كويادكرو

معصیت کے وقت جب تم اسے کرنے ای والے ہو''۔

عامر شعبی کے تذکرے میں لکھتے ہیں کہ ہم سے احمد بن سندھی نے ، ان سے حسن بن علویہ نے ، ان سے اساعیل بن عیسیٰ عطار نے ، ان سے اسحاق بن بشر نے وہ کہتے ہیں مجھے عبد اللہ بن زیاد نے خبر دی ، انعول نے کہا کہ مجھے سے ابوالحن ملائی نے بردوایت امام عامر شعبی بیان کیا کہ ان سے آسمان کی بابت دریا ہنت کیا گیا تو فرمایا: ''موج مکفوف، وسقف مسقوف، وبحر محفوف'' آسمان ، روکی گرموج ہوئی حجب ہوئی حجب ہوئی حجبت ہے اور گھرا ہواسمندر ہے۔

حضرت عکرمہ مولی ابن عباس کے تذکرے میں لکھتے ہیں کہ ہم سے احمد بن سندھی نے ، ان سے اساعیل بن عیسی عطار نے ، ان سے اساعیل بن عیسی عطار نے ، ان سے اساعیل بن عیسی عطار نے ، ان سے اساق بن بشر نے وہ کہتے ہیں کہ ہم سے ابن جرت کے نے بروایت حضرت عکرمہ بیان کیا کہ انھوں نے فرمایا:

"دصرت عبدالله بن عباس کے پاس گیاء وہ قرآن شریف کھو لے اس میں غور وکر کررہ سے اور رورہ سے میں فیوس کیا ابوالعباس! آپ کیوں رورہ ہیں؟ فرمایا قرآن شریف میں چندآ بیش ہیں جن کے سبب میں رور ہا ہوں۔ میں نے دریافت کیا وہ آ بیش کون کی ہیں؟ فرمایا ایک قوم نے اچھی باتوں کالوگوں کو تھم دیا اور بری باتوں سے روکا تو آٹھیں نجات مل گئی اور دوسری قوم نے امر بالمعروف اور نہی عن المنظر نہ کیا تو دیگر اہل معاصی کے ساتھ اسے بھی ہلاک کردیا گیا۔ ارشاد فداوندی ہے "واسالھم عن القریة التی کانت حاضرة البحر" الآبیة اس

معراد ایل، کستی ہے جوساطل سمندر بردا تع تھی۔اللہ تعالی نے بی اسرائیل کو بی م دیا تھا کہ وہ جمعہ کے روز ہرطرح کے دنیوی مشاغل سے فارغ رہیں۔اس پر انھوں نے عرض کیا کہ ہم سنچر کو فارغ رہیں گے، کیوں کہ اس روز اللہ تعالی کا تنات کی تخلیق سے فارغ ہوئے تھے اور تمام چیزیں درست اور ٹھیک ٹھاک ہوگئے تھیں۔ اس بنایرالله تعالی نے سنیجر کے دوز ان بریخی کردی اوراس دن شکار کرنے سے منع كرديا۔ جب سنيح كادن موتاتو مجيليوں كے جھنڈان كے گھاٹ تك آجاتے اورون عجرو بیں نے خوف وخطر کھیلتی رہتیں۔ جیسا کہ قرآن میں ارشاد ہے:إذ تأتیهم حیتانهم یوم سبتهم شرعاً لیکن نیچری شام موکراتواری رات جیسے بی آتی ہے مجیلیاں میلے کاطرح ممرے یائی میں چلی جاتیں۔اس کے باعث بی اسرائیل کو برى وشوارى بيش آتى كيول كرمجيليال عى ان كا ذريعه آمدنى تفارا يك مرتبه إيها موا کہ بی اسرائیل کی ایک باندی نے سنچر کو مجھلی کا شکار کر کے اسے گھڑے میں ڈال لیا ادر الواركوكهاياتوات كى طرح كاكوئى نقصان نه مواراييااس سے بہلے حضرت داؤد عليه السلام بھي كر يكے تھے اور انھوں نے يوم سبت من ظلم كرنے والوں يراحت جیجی - اس باندی نے اپنے آتا وال سے کہا کہ میں نے سنیر کو مجھلی مکڑی اور اتو از میں کھا گئی مگراس ہے مجھے کوئی نقصان نہیں ہوا۔ چناں چہ انھوں نے بھی سنچر کو مجھلی کا شكاركيا اوراے اتو اركو بيجا اور استعال كيا اس طرح أنھيں بے پناہ مال ودولت ماتھ لگ گئے۔ جب دوسروں کومعلوم ہواتو انھوں نے بھی سنچر کومجھلیوں کا شکار کرنا شروع كرديا۔ اس بر بچھلوگوں نے ان سے كہا كہ ہم تہيں سنير كے روز شكاركرنے كى اجازت بین وے سکتے۔ مردوسرے لوگوں نے مداست کا مظاہرہ کیا۔ اور کہنے ك (لم تعظون قوماً الله مهلكم أومعذبهم عذاباً شديداً) جنمين الله ہلاک کرنا اور سکین عذاب دینا جا ہتا ہے، تم زخمین نصیحت کیوں کرر ہے ہو۔ اس پر امر بالمعروف اور نبي عن المنكر كرف والول في جوكها (معدرة الى ريكم ولعلهم یتقون) شاید که وه شکار کرنے سے باز آجا ئیں۔ لیکن آتھیں شکار کرنے سے منع کیا تو انھوں نے جواب میں کہا کہ اللہ تعالی نے توسینی کے روز مجھلی کھانے سے منع کیا ہے، نہ کہ شکار کرنے اور پکڑنے سے اور سنیچ کو پھر پورا نداز میں شکار کرنے اور پکڑنے سے اور سنیچ کو پھر پورا نداز میں شکار کرنے دالے شہر سے باہر چلے گئے۔ شام کو اللہ تعالی نے حضر سے جریل کو بھیجا، آٹھوں نے زور کی ایک جی ماری جس سے وہ سب کے سب ذالیل وخوار بندر بن گئے۔

حضرت ابن عباس فرماتے ہیں کہ جم کوجب کوئی بھی گھرے نہ لکلا تو شہرے نكل جانے والے لوگوں نے ايك مخض كو بھيجا جب وہ شہر يمن آيا تو اسے كوئى بھى انسان نظر نہ آیا۔ حویلیوں میں جا کر دیکھا تب پھی کوئی نہ ملا۔ جنب وہ گھروں کے اندر گیا تواے گھروں کے کونوں میں کھڑے بندرہے جوئے نظرآئے۔اس نے آ کر درواز و کھولا اور آوازلگائی۔ جیرت ہے کہ پیلوگ بندر بن مچکے ہیں جن کے دم ہیں اور وہ بندروں کی طرح بولتے بھی ہیں۔ جئب وہ لوگ شہر ہیں آئے تو یہ بندراپتا نب بہیان رہے تھے، مربیلوگ ان بندروں کا نسب بالکل نہ بہیان سکے۔ اس کی بابت ارشاد ب(فلما نسوا ماذ كروابه) لين جب تصحت اورعذاب الى ورنے کی بات کونظر انداز کردیا تو (اخلانا هم بعداب بنیس) مم نے انھیں سنكين عذاب ص كرفار كرديا اوز (لما عنوا عما نهواعنه) جب مع كرده امور كى بابت سركشى كامظامركياتو (قلنا لهم كونا قردة خاسئين) مم نے ان سے كهاكه ذليل وخوار بندرين جاؤت (فجعلنا ها نكالا " لمابين يديها وما خلفها) اورجم نے اے ان کے اہل زمانہ کے لیے سبق آموز بھیجت بناذیا۔ پھر اللدتعالى في أهيس بلاك كرديا وجفرت ابن عباس في فرماياروز قيامت اللدتعالى انصیں انسانوں کی شکل میں اٹھا تیں ہے۔ جن لوگوں نے سنچر سے روز زیادتی کا ارتكاب كيا ہوگا ، انھيں جہنم ميں داخل كردياجائے گا اور جن لوگوں نے مداست سے

کام لیا تھا، ان سے باز پر سہوگ ۔ یہ ضورت دنیا علی سزادی گئ، کیوں کہ انھوں نے امر بالمعروف اور نہی تن المحکر کافریف انجا مہیں دیا تھا۔ ابن اسحاتی کابیا ن ہے کہ جھے سے عثان بن اسود نے بدروایت حضرت عرمہ بتایا کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا: لیت شعری ما فعل المداهنوں؟ مدامنین نے کیا جرم کیا تھا؟

و محکرمہ کہتے ہیں اس پر علی نے یہ آیت پڑھی: (فلمانسوا ما ذکروا به انجینا الذین ینھون عن السو ء واحدنا الذین ظلموا بعذاب بنیس بما کانوا یفسقون) اس پر حضرت ابن عباس نے فرمایا خدا کی تم ، یہاری قوم بلاک ہوگئ عرمہ کہتے ہیں کہ پھر جھے اپنی طرف سے ، انھوں نے دو کپڑے اپنے باتھوں سے بہتے ہے۔

احرابن سندهى بغدادي

تاریخ بغداد میں خطیب بغدادی ان کی بابت لکھتے ہیں کہ احمد بن سندھی بن فروخ مطرز بغدادی نے بعقوب بن ابراہیم دور قی سے حدیث کی روایت کی اوران سے عبداللہ بن عدی جرجانی نے روایت حدیث کی ہے۔خطیب نے مزید لکھا ہے کہ احمد بن سندھی نے، یعقوب سے ساع حدیث ' بھرہ'' میں کیا۔

علامہ سمعانی نے بھی دسکتاب الانساب "میں ان کا تذکرہ کیا ہے اور لکھا ہے کہ محصان کاسن وفات معلوم نہ ہوسکا۔البتہ ان کے شخ دور تی کی وفات ۲۵۲ ھیں ہوئی اس سے معلوم ہوتا ہے کہ احمد بن سندھی مطرز تیسری صدی ججری کے تقے۔(تاضی)

سلطان مالديب: احمد شنورازه

جزیرہ مالدیپ کے بادشاہ 'محد بن عبداللہ' کا نام قبول اسلام سے پہلے ''شنورازہ' تھا۔ جب مسلمان ہو گئے تو ان کا نام ''احد شنورازہ'' رکھ دیا گیا۔اس کا

تذکرہ مشہور سیاح ''این بطوط نے اپنے سفر نامے میں کیا ہے۔ احمد شنورازہ نے مافظ ابوالبرکات بربری مراکشی مالکی کے ہاتھ پراسلام قبول کیا ان کے قبول اسلام کا واقعہ بھی بہت عجیب غریب ہے۔ بعض تاریخی روایات میں آتا ہے کہ انھوں نے شخ یوسف شمس الدین تبریز گ کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا۔ ان کی زبان میں ان کو' محمد رمونت' کہا جاتا تھا۔ ان کا تفصیلی تذکرہ ''محمد اول بن عبداللہ'' کے تذکرے کے ذیل میں آئندہ کیا جائے گا۔

احربن سندهی باغی مرازی

امام ابن ابو عاتم رازی اپنی کتاب "کتاب الجوح والتعدیل" میں ابراہیم بن محد بن ابو یکی اسلمی کے تذکرے کے شمن میں فرماتے ہیں کہ ہم سے عبدالرحمٰن نے ،ان سے احمد بن سندھی رازی نے بیان کیا، وہ کہتے ہیں کہ میں نے ابراہیم بن مویٰ سے سنا، ان سے عبدالرحمٰن بن حکم بن بشیر نے بدروایت حضرت سفیان بن عیدنہ بیان کیا کہ انھوں نے ایک روز فرمایا کہ محمد بن منکدر سے روایت حدیث کرنے والا، مجھ سے زیادہ اب کوئی روئے زمین پرزندہ ہیں رہ گیا۔ان سے عرض کیا گیا کہ ابراہیم بن ابو یکی کی بابت کیا فرماتے ہیں؟ کہنے لگے میری مراد الی صدق رادیوں سے ہے نہ الل صدق رادیوں سے ہے نہ

ابوعبدالله بن محرحميدرازى كے تذكر بے كتحت لكھتے ہيں كہ ہم بے عبدالرحمٰن في بيان كيا، وہ كہتے ہيں كہ ہيں نے اپنے والد سے سنا وہ كہد ہے تھے كہ ابوعمران صوفی كے داماد عبدك كى دكان پر ميں اور احمد بن سندهى گئے۔ اس كے پاس دو جلد بيں ركھی ہوئی تھيں۔ ميں نے معلوم كيا كہ بيجلد بي تمہارى ہيں؟ كہنے لگا ہال۔ ميں نے كہاكس سے بيحد يشين سنيں؟ بتايا كہ ابوز ہير عبدالرحمٰن بن مغراء سے جب ديكھا تو بہلی جلد كے شروع ميں "أحاديث لمحمد بن اسحاق شم على أثو

ذالك شيوخ على بن مجاهد" لكفا بوا تقار اور دوسرى جلد ك شروع ميل "أحاديث سلمةبن الفضل" من في لما كما يك طلد من على بن مجابد ك اوردوسرى میں سلمہ بن فضل کی روایت سے احادیث ہیں تواس نے کہانہیں۔ ہم سے بیحدیثیں ابوز ہیرنے بیان کیں۔اس سے بھے بچھ شن غریب احادیث کاعلم ہوا۔ جتب میں نے اس کے بحث و تکر ارکر تا ہوا و یکھا تو دونوں جلدیں اس کے یاس چھوڑ کر باہر تکل آیا۔ اس کے چھادنون بعد میں اور این سندھی ابن حمید کے باس كے ۔ وہ كہنے لكے كہ چندا طاريث أيى مين جن براب تك تمارى نظر مبيل كئ ہے اور دوجلد میں نکال کرمیز نے سامنے رکھ دیں۔ توان جلدوں میں وہی احادیث کھی ہوئی منعين جوشابقة دونون جلدول مين نظرت كزرجي تعين اورغريب احاديث بهي موجود تھیں وہ اس جلدی حدیثوں کی بابت بتائے گئے کہ میں نے معبدک سے و كركيا تفاكم بين عام عن عام عن على بن عجام كي حديث المرحس ك بارت مين بي كما تفاكريسلم بن فضل سے مروى بين، الحين وه سلمه بى سے بيان كرنے لگے۔ اس يريس في ابن سندهي سے كہا و يكھے! يو وائى احاديث بيل جنہيں آپ نے عَبْرُكَ مِنْ يَالَ وَوَجِلْدُولَ مِينَ وَيَكُمَّا ثَقَا إِحْبُ مِينَ ابْنَ حَيْدٌ كَ بِهِالَ وَأَبِّن مُواْلِ جب كرين نے وہ غريب احاديث لكولين جن كا محص عبدك السے ساع كى شديد خواہش تھی اور میں نے ابن خمید سے سنا اور عبدک نے میری دوکان بران دونوں علدوں کودیکھا تو اٹھیں لے کر چلا گیا۔

ابن حمیدرازی نے جتنا کھ کھا ہے، اس نے زیادہ کوئی بھی بات بھے اس عظیم محدث کی بابت معلوم نہ ہوگا۔ مگر اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ احادیث ور دایات کے ساتھ انھیں کس قدر شغف تھا اور نید کہ خراسان کے بڑے علماء وصلحاء میں ان کا شارتھا۔ لگتا ہے کہ احمد بن سندھی رازی تیسری صدی جری کے علماء میں متھ ' باغ ' ایک بستی کا نام ہے، جومرو سے دوفر سے کے فاصلے پرتھی۔اسے ' باغ میں ان کا شام ہے، جومرو سے دوفر سے کے فاصلے پرتھی۔اسے ' باغ

بروزان' کہاجا تا تھا۔فضل بن موی سے روایت کرنے والے مشہور محدث اساعیل باغی اس بستی کے رہنے والے تھے۔ (تاض)

احد بن سعيد مالكي بهداني ، ابن الهندي

شخ برہان الدین ابراہیم بن علی یعمری مدنی "الدیباج المدذهب فی اعیان علماء المدذهب" میں احمد بن سعید کی بابت بدالفاظ لکھتے ہیں: احمد بن سعید بن ابراہیم ہمدانی معروف بدابن البندی۔ ابن حبان فرماتے ہیں کہ وہ اپنے زمانے میں علم شروط کے اندر یکنائے روزگار تھے، جس کا اعتراف تمام علمائے اندلس نے بھی کیا علم شروط پران کی ایک نہایت اہم کتاب بھی ہے جس میں بہت اندلس نے بھی کیا گیا ہے۔ اندلس اور مراکش کے حکام اور و ثیقہ نویسوں کا اس پر اعتماد تنا اس کیا اعتراف کا اس پر اعتماد کا اس کے انداز تحریر اختیار کیا اعتماد تا انداز تحریر اختیار کیا ہے۔ ان کی وفات ۱۹ سے میں ہوئی۔

ابن الہندی کی ایک دوسری تصنیف بھی ہے، جس کا نام 'سکتاب الدقائق''
ہے علامہ ابو المطر ف عبد الرحمٰن بن مروان قنازی قرطبی متوفی سام ھنے اس کا اختصار کیا جیسا کہ علامہ یعمری نے اپنی کتاب' الدیباج المدھب" میں قنازی کے تذکرے کے ذیل میں اس کی صراحت کی ہے۔ (تاضی)

احدابن عبداللدزامدديبلي نيسابوري

علامہ سمعانی نے "کتاب الانساب" میں ان کی بابت لکھا ہے: احمد بن عبداللہ بن سعید ابوالعباس دیبلی نے طلب علم کے لیے بہت اسفار کیے، بیدرولیش، زاہد و عابد ہے اور ابو بکر محمد بن اسحاق بن خزیمہ کے دور میں خانقاہ حسن بن یعقوب میں رہائش پذیرر ہے۔ ان کی شادی مدینہ داخلہ میں ہوئی اور بیج بھی ہوئے۔ اس خانقاہ کے اندران کے گھر پرنمبر پڑا ہوا تھا۔ پانچوں نمازیں مبحد بیل پڑھ کرتب شہر میں اپنے گھر آتے ۔ لباس کے لیے اون استعال کرتے تھے۔ بسا اوقات نگے پاؤں ہی چل پڑتے ۔ انھوں نے بھرہ میں ابوحنیفہ قاضی سے، بغداد میں جعفر بن محمر میں فریا بی سے، مکہ کرمہ میں مفضل بن محمد جندی اور حمد بن ابراہیم دیبلی سے، مصر میں علی بن عبدالرحلن اور حمد بن زیان سے، دشق میں ابوالحن احمد بن عمیر ابن جوصا سے، بیروت میں ابوعبدالرحلن کھول سے، حران میں ابوالحن احمد سین بن ابومعشری سے، بیروت میں ابوعبدالرحلن کھول سے، حران میں ابوعروب حسین بن ابومعشری اور نیسا بور میں اجد بن زمیر تستری سے، عسر میں حافظ کرم بن عبدان بن احمد سے اور نیسا بور میں ابو کر حمد بن خریمہ اور ان کے ہم عصر علیاء سے احاد بیث کا ساع کیا۔ ان کی وفات نیسا بور میں رجب سا سے میں ہوئی اور تہ فین 'مقبرہ چرہ' میں کی گئے۔

احدين قاسم معدل، بيع اين سندهي بغدادي

خطیب تاریخ بغداد میں ان کے متعلق کھتے ہیں :احد بن القاسم بن سیماء
ابو بکرالیج ، دیعر ف بابن السندی خطیب مزید لکھتے ہیں کہ انھوں نے احمد بن محمد بن اساعیل آدمی اوراسا عیل محمد صفار سے صدیث بیان کی اوران کی روایت سے، مجھ سے عبدالعزیز بن علی از جی نے بتایا کہ ابن سندھی معد لین میں سے ایک ہتے۔
احمد بن قاسم ابن السندی چوھی صدی ،جمری کے ہیں 'معد لی' اس شخص کو کہا جاتا تھا جومقد مہ کے وقت قاضی کے روبر ولوگوں کی عدالت کی شہادت دیتا اور قاضی کوان کے حالات سے باخبر کرتا تھا۔ معدلین لوگوں کے نام اور صفات اپنے رحمہ میں کالی کو میں حکومت کی طرف سے دی جاتی رجمہ میں قلم بند کرلیا کرتے اور بیذ مہداری انھیں حکومت کی طرف سے دی جاتی محمد بنی اس شخص کو کہا جاتا تھا جو بائع اور مشتری کے درمیان ، منڈیوں میں نالثی کا فریضہ انجام دیتا اور دلالی کیا کرتا تھا۔ (تانی)

احدين محرابوبكر، منصوري بكرآبادي

حافظ البوالقاسم مهمی این کتاب "تاریخ جو جان" میں ان کی بابت لکھتے ہیں البو بکر اسلامیل اور ہیں البو بکر اسلامیل اور بین البو بکر اسلامیل اور جان کا ابو بکر اسلامیل اور حافظ این عدی سے روایت کی ۔ ۲۹ رجمادی الاول ۴۲۲ ھیں بروز پیروفات ہوئی ۔ اور تدفین ایکے روز منگل کو ہوئی ۔

احرين محركرا بيسي مندي

ملاکا تب جلی نے "کشف الطنون" میں ان کی بابت صرف اتنا لکھا ہے کہ احمد بن محد کر ابنیسی ہندی کی "کتاب الوضایا" ہے" الیوفی" کھون وفات ذکر نہیں کیا ہے۔

مؤلف عرض گزار ہے کہ نہ تو کا تب چلی نے ان کا من وفات ذکر کیا اور نہ ہی مجھے اس سے زیادہ معلومات ان کی بابت ان سکیس۔ ان کے الفاظ سے بین طاہر ہوتا ہے کہ شخ احمد بن محمد صاحب تصنیف اور عظیم المرتبت فقیہ تھے اور متفذ میں میں سے تھے در ابنی 'سوتی کیڑوں کی تجارت کرنے والے کو کہا جا تا تھا۔ بہت سے علماء اس بیشے سے وابست رہے ہیں اور وہ سب ''کرا بیسی'' کی نسبت سے مشہور ہو گئے۔ (تافی)

حافظ احربن محمرز امد، ديبلي مضري

امام بکی 'طبقات الشافعیة الکری ' میں لکھتے ہیں جافظ احمد بن محر، ابو عباس دیبلی زاہد، مصر میں سکونت پذیر ہے۔ ابن صلاح فرماتے ہیں کہ ابوالعباس نبوی نے ابن کتاب میں ان کا تذکرہ کیا ہے اور لکھا ہے کہ وہ فقیہ تھے، معلومات انجی تھیں، شافعی المسلک تھے۔ کیڑوں کی سلائی کرکے روزی روٹی کماتے تھے۔

ایک کرتا ایک درجم اوردودائق بین سینے اوران کا گزربسرای پرتھا، جا ہے گرائی ہویا ارزانی۔ انھوں نے مصر میں کسی سے ایک گھونٹ یانی تک نہیں ما نگا۔ بیرصاحب کشف وکرامت اور حال وقال کے مالک بزرگ تھے۔ ان کی وفات کے وقت ابوالعہاس نسوی اور ابوسعید مالینی موجود تھے۔ ان دونوں نے روح کے تفس عضری سے پرواز کرنے تک ان کی حلاوت قرآن یاک کی بابت عجیب وغریب باتیں بتا کیں۔ ۳۷۳ ہے بیں ان کی وفات ہوئی۔

العض علماء كاخيال ہے كہ "ديلي" ہے مراد" ادب القضاء" كے مصنف ميں، حالانكہ اليانبيل ہے كيول كہادب القضاء كم مصنف كانام على بن احمہ ہواور الن كااحمہ بن محمد نيز "كتاب الانساب" للسمعانی ميں ان دونول ميں ہے كى ايك كا بھى ذكر نيز "كتاب الانساب" للسمعانی ميں ان دونول ميں ہے كى ايك كا بھى ذكر نيز "

صاحب تذکرہ اجمد بن محمد اور"ادب القضاء" کے مصنف علی بن احمد دونوں" دیبل" کے رہے والے تھے۔ان شاء اللہ علی بن احمد دیبلی کے تذکر بے میں اس کی تفصیل بیان کی جائے گی۔ (قاضی)

احربن محربن حسين أبوالفوارس أبن السندي مضري

علامہ سیوطی نے ''حسن المحاضرة فی أخبار مصر والقاهرة ' میں مصر کے ان محد ثین کے دیا ہے وعلوا ساد میں تفاظ حدیث اور منفر وین کے در ہے تک ن کئے سکے، احدین محرکا تذکرہ اس طرح سے لکھا ہے ۔ ابوالفوار آل الصابوئی احمد این محرحسین بن السندھی ، الثقة ، المعمر ، مند دیار مصر مزید لکھا ہے کہ افعول نے ابن محرد من عبداللہ اور علی امام مزنی اور دوسرے کیار محدثین سے روایت کی اور ان سے ابن نظیف نے روایت محدیث کی ۔ ۲۵ رسال کی عمر میں شوال امسام میں ہوئی ۔ ابن نظیف نے روایت حدیث کی ۔ ۲۵ رسال کی عمر میں شوال امسام میں ہوئی ۔ ابن العماد عبلی نے بھی ''شدر ات الذهب '' کے اندر ان کا تذکرہ کرتے ۔ ابن العماد عبلی نے بھی ''شدر ات الذهب '' کے اندر ان کا تذکرہ کرتے

ہوئے سیوطی کی بیمبارت نقل کی ہے۔علامہ ذہبی نے 'تلہ کو قالحفاظ'' میں حافظ عسال متوفی ماہ رمضان ۱۹ سرمے حالات کے دیل میں ان کی بابت کھا ہے کہ اس سال ان کے ساتھ، مندممر ابوالفوارس احمد بن حمد بن حسین بن سندھی صابونی کی بھی ۱۵ رسال کی عمر میں وفات ہوئی۔ پھر حافظ ابوزر عدرازی صغیر کے مذکرے کے خمن میں کھا ہے کہ ابوز رعدنے ابوالفوارس سندھی سے ساع حدیث کیا ہے۔ بعد ازاں حافظ ابوولید نیسا پوری متوفی سمس کے کیات وخدمات پر کھتے ہوئے فرمایا کہ اس سال احمد بن حسین بن سندھی کا بھی انقال ہوا اور دیار مصر کے محدث حافظ ابو محد رہے بن سلیمان مرادی ، تلیذ امام شافعی کے حالات کے ضمن میں محدث حافظ ابوالفوارس سندھی سے بھی حدیث کی روایت کی ہے۔

حافظ ذہی 'میزان الاعتدال' کے اندرسلامہ بن روح آگلی کے تذکرے کے تخت لکھے ہیں کہ ہم سے محد بن حسین نے ،ان سے محد بن محد بن رفاعہ نے ،ان سے الحد بن محد بن سخد بن رفاعہ نے ،ان سے الحد بن محد بن سخد بن سندھی نے ،ان سے احمد بن محد بن محد بن سندھی نے ،ان سے احمد بن محد بن مزیز نے ،ان سے سلامہ بن روح نے ،ان سے عقیل نے بواسط امام زہری حضرت انس سے میدید یث بیان کی کے حضور اکرم سے تقالی نے فرمایا 'اکٹر اُسے مید عدیث بیان کی کے حضور اکرم سے تقالی نے فرمایا 'اکٹر اُسے اللہ نا کہ میں مدین کو ابن عدی نے چودہ روات سے روایت کیا ہے۔

تاریخ بغداد میں خطیب بغدادی ، موکل بن اہاب متوفی کرر جب ۲۲۲ه کے تذکرے کے من میں لکھتے ہیں کہ مجھ سے صوری نے لفظا ، ان سے ابوالعباس احمد بن محمد الحاج اشبیلی نے مصر میں ،ان سے احمد بن حسین سندھی نے ،ان سے محمد بن عمر بین حسین سندھی نے ،ان سے محمد بن عمر بین حسین نے ،وہ کہتے ہیں کہ مجھ سے ملی بن محمد ابوسلیمان نے بیان کیا کہ:

"موکل بن اہاب، رملہ آئے تو اصحاب مدیث ان کے پاس جمع ہوگئے، موکل گھرائے ہوئے موکل بنے اور منع کررہے تھے۔ جب ان لوگوں نے اصرار کیا تب بھی صدیث بیان کرنے سے انکار کردیا۔ تب بیسارے کے سارے لوگ دوجماعتیں

بناكر سلطان كے ياس محق اس سے جاكركما كم ماراايك غلام ب جس كاوير ماری تعلیم وربیت کا حسان ہے۔اس نے ممل تعلیم وربیت حاصل کی اور بہت ببترطور برحاصل كاب نوبت اس كا الى كديم قلم دوات كرطلب حديث كے ليے جع ہوئے۔ ہم نے اسے فروخت كرنا جا با، مكراس نے الكار كرديا۔ إسى بادشاه نے کہا کہ جھے آپ حفرات کی بات کی صدافت کاعلم کیے ہو؟ انھوں نے عرض کیا مل کے دروازے بر حاملین حدیث، طالبان علم اور تقد حصرات کی ایک جماعت موجود ہے، ان سب لوگوں کواس بات کاعلم ہے، آپ کے لیے انھیں دیکھ لینائی تقدیق کی بابت کافی موگا معلوم کرنے کی ضرورت بی ندیزے گا ۔ وراب البيس اندرآن كي اجازت دين علك ان عقد يق فرما عيس- چنانچه اندر بلا کران کی بات می اور مول کے بیچیے بولیس اہل کاروں کو بیجا کہ انھیں بادشاہ کے یاس لے کرا کیں۔ مول نے معذرت کی تو تھینے اور تھینے ہوئے لے کرائے اوران ے كئے ليك كريمين معلوم بوائے كم بھا كا عائے ہو۔ موك ان بوليس والوں كے مراه سلطان کی خدمت میں مینچے۔ جب اندر منجے تو بادشاہ نے ان سے کہا، بھا گنا منهيس كهام نداع كاادرانيس قيدكردي كاحكم ديا، چناني قيدكردي محي مول شكل وصورت كاعتبار بزرور مكا، ليم، ملى دارهي كالل حادك غلامون كی طرح لكتے تھے۔ يورم تك قيد ميں رہے، تا آن كمان كے بھا يوں كواس كاعلم ہواتو انھوں نے سلطان كے ياس اكر كہاموكل بن اہاب آپ كى قيد ميں بقصور بند ہیں۔بادشاہ نے ان سے بوچھامول برظلم سنے کیا؟ بھائیوں نے عرض کیا آپ نے۔اس پرسلطان نے کہانداس کی بابت مجھے چھمعلوم ہے نہ میں مول کو جانتا ہوں كرده كون بين كيابين؟ بها يون في بتايا كه بهت كوكون في ان كرد جمع بوكريد كما تها كريه بها كا مواغلام ب- جب كمامروا قعدية الم كدوه غلام بن بلكه حديث ك المام بين متب بادشاد ف الن كى ربالى كالحكم ديا اوران في الن كى بابت معلومات كين و

انھوں نے وہی بات بتائی جوان کے بھائیوں نے بادشاہ سے کہی تھی۔اس پرسلطان نے انھیں واپس جانے کے لیے کہا اور درخواست کی کہان سے دیر تک نفع اٹھانے ویں۔اس واقعہ کے بعد مؤل نے بھی تاحیات اس طرح انکارنہ کیا۔

احرقاضي بن صالح تيمي داؤ دي منصوري

ابن ندیم 'الفهر ست' میں ان کی بابت لکھتے ہیں کہ مضوری سے مرادا حمد بن صالح ہیں۔ بیداؤد ظاہری کے مسلک پر عامل تھے اور اس حلقے کے اکابر علماء میں شار ہوتے تھے۔ ان کی کئی ایک اہم اچھی اور بڑی کتابیں بھی ہیں، جن میں کتاب المصاح الکبیر، کتاب الہادی اور کتاب النیر شامل ہیں۔

ابواسحاق شیرازی "طبقات الفقهاء" میں رقم طراز بین که قاضی ابوالعها سام احد بن منصور کتاب النیر کے مصنف بین ۔ انھوں نے اسپنے آزاد کردہ غلام سے علم حاصل کیا، حصول علم کی خاطر بغداد گئے، پھر"منصور" واپس آئے۔

شیرازی کی عبارت میں حذف واضافہ ہے۔اصل میں احمد بن محمد بن صالح منصوری ہونا چاہیے تھا۔اس طرح "منصورہ" کے آخر کی تائے مدورہ بھی اس میں ساقط ہوگئ ہے۔ علامہ مقدی بثاری اپنی کتاب "احسن التقاسیم" کے اندر سندھ کے تذکر ہے کے من میں لکھتے ہیں: اہل سندھ کا مسلک عام طور پراصحاب صدیث کا مسلک ہے۔ البتہ مجھے قاضی ابومجم منصوری، داؤدی مسلک کے پیروکار بلکہ امام نظر آئے۔ان کاحلقہ درس بھی ہاودگئ ایک کتابیں بھی، انھوں نے متعدد الجھی کتابیں تھی، انھوں نے متعدد الجھی کتابیں تھی۔ (تاضی)

حموی "معجم البلدان" میں سندے کا تذکرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں: اہل سندھ میں ایک سندھ میں ایک سندھ میں ایک فقیہ ہیں، جن کی کنیت ابوالعباس ہے، جوداؤ دظاہری کے مسلک کے ہیں۔ اس میں ایک فقیہ ہیں، جن کی کتابیں ہیں ہے" منصورہ" کے قاضی متھاورہ ہیں کے دہنے والے بھی۔ منصورہ" کے قاضی متھاورہ ہیں کے دہنے والے بھی۔

امام ذہی "میزان الاعتدال" میں فرماتے ہیں: قاضی احمد بن محمد بن صالح بن عبدویہ مصوری "مفورہ" کے رہنے والے سے انھوں نے ابوروق حضرائی سے ایک موضوع حدیث روایت کی جوان کے لیے آفت بن گئی۔ ہم نے اس بات کا تذکرہ ابوروق کے ترجے کے ذبل میں کردیا ہے، ابوروق کے تذکر سے میں لکھتے ہیں: میری رائے میں ابوروق" مسدوق" ہیں۔ محران سے ابوالعباس مضوری نے روایت کی ، ان سے امادی نے بیان کیا ، ان سے عبدالرزاق نے ، ان سے عمر نے ، ان سے علی بن حسین نے اور انھوں نے اینے دادا حضرت علی ان سے مرفوعاً بیان کیا "اول مین قامن ابلیس فلا تقیمت وا" سب سے پہلے ابلیس نے قیاس کیا جات کی میاری ذمدداری نے میاری ذمدداری دمفوری" برجاتی ہے جو کہ ظاہری المسلک سے۔

"مضوری" برجاتی ہے جو کہ ظاہری المسلک سے۔
"مفوری" برجاتی ہے جو کہ ظاہری المسلک سے۔

الم معانی "انساب" میں لکھتے ہیں: قاضی ابوالعباس احمد بن صالح ہمی منصوری دمنصوری "کر ہنے والے ستھے۔ کھی دنوں عراق میں بھی سکونت پذیر ہے۔ جن علاء کو میں نے دیکھاان میں سب سے زیادہ ظریف اور بذلہ سنج تھے۔ اُھول نے فارک میں ابو العباس ابن الاثرم سے اور بھر ہمیں ابودوق ہراتی سے ساع حدیث کیا ہے۔

اجرین می بن صارح یمی منعوری چھی صدی بجری کے تھے۔ کول کہ مقدی کی سندھ آمدہ سے اس یاس ہوئی ہے۔ ان کی اجرین محمہ نے منعورہ "میں ملاقات ہوئی، مگر اس نے ان کی کنیت ''ابوجھ'' ذکر کی، جب کہ دوسرے لوگ ''ابوعیاس'' کھھے ہیں۔ ہوسکتا ہے کہ ان کی دو کھیل رہی ہول یا یہ کہ مقدی سے ہو گیا ہو منعوری کی نسبت سندھ کے ایک مشہور شہر'' منعورہ "کی طرف ہے، جہال بہت سے علماء پیرا ہوئے ہیں۔ تا ہم یہ جمی مکن ہے کہ یہ نسبت شہر کی طرف نہ ہو بلکہ ''منعورہ ''نامی کی امیر کیریا بادشاہ کی چا نب ہو۔ (قانی)
بلکہ ''منعورہ 'نامی کی امیر کیریا بادشاہ کی چا نب ہو۔ (قانی)

جوصاحب تذكره سنده مين سكونت پذير بوگئے تصاور دہان بيكانى پيل گئے تھے

دخميم كے الماء مين كي تصحيف ہوگئ، چنان چسندهى زبان مين اسے "التهم"

ہماجا تا ہے، جيے كه بى مغيره كو " مديره" كران اور سنده كے علاقے مين، قبيله بى

ميم كے مجاعہ بن سعرتيمى، سب سے پہلے آئے ۔ انھيں جاج بن يوسف نے كران

اور حدود سنده كا گورز بنا كر بيجا تھا۔ انھوں نے آكر حمله كيا تو "قذا ايل" كے بہت

اور حدود سنده كا گورز بنا كر بيجا تھا۔ انھوں نے آكر حمله كيا تو "قذا ايل" كے بہت

مامن مشاهد كى الذي شاهدته الله الايزينك فركوها مجاعا

مامن مشاهدك الذي شاهدتها الله الايزينك فركوها مجاعا

یزید بن عبدالملک نے سندھ میں بن مہلب کی سرکوبی کے لیے ہلال بن احوز سمیں کو بھیجا جس نے آکر انھیں قبل کر دیا اور اموی دور میں سندھ کا گورزتمیم بن زید تھی کو بنایا گیا۔ مگر میہ کمزور ثابت ہوئے۔ ان ہی کے دور امارت میں مسلمان ہندوستان میں اپنے مرکزی علاقوں سے نکل کر دوسری جگہ چلے گئے اور تیسری صدی ہجری تک واپس ندا ہے۔ تمیم بن زید کی وفات ' دیبل' کے نزدیک ہوئی۔ خلاصہ یہ کہ سندھ میں جو تمیمی ہیں، وہ انہی حکمر انوں اور گورنروں کی نسل سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تامنی)

قارى احدين بارون ديبلي رازى بغدادي

ز پنت حاصل ہوگی''۔

خطیب بغدادی، ان کی بابت لکھتے ہیں کہ ابو کر احمد بن ہارون بن سلیمان بن علی حربی نے جو کہ رازی اور دبیلی سے مشہور ہیں، جعفر بن محمد فریا بی اور ابراہیم بن شریک کوئی سے حدیث کی روایت کی ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ انھوں نے حسون بن میٹم دوری سے قرآن کریم حفص کی روایت کے ساتھ، بطریق ہمیر و بن محمد عاصم کی

قراءت سے پڑھا۔ان سے احمد بن علی باوانے روایت کی اوران کی روایت سے، ہم سے ابویعلی دو مانقالی اور قاضی ابوعلاء واسطی نے حدیث بیان کی۔قاضی ابوعلاء ان کی روایت سے امام عاصم کی قراءت رولیۃ اور تلاوۃ سند بیان کرتے تھے۔

خطیب بغدادی فرماتے ہیں کہ ہم سے حسن بن نعالی نے ، ان سے احمد بن محمد بن محمد بن محمد بن محمد بن محمد بن مابد نے ، ان سے جعفر بن محمد فریا بی نے ، ان سے محمد بن عابد نے ، ان سے بیشم بن حمید نے ، ان سے علاء بن حارث اور ابو وہب نے ، ان دونوں نے محول سے بیر وایت ابواساء رجبی ، حضرت تو بان مولی رسول الله علی اسے بیان کیا کہ:

"قال ثوبان :بين أنا أمشى مع رسول الله على إذ مر برجل يحتجم بعد ما مضى من شهر رمضان ثمانى عشر، فقال رسول الله على: أفطر الحاجم والمحجوم".

" حضرت ثوبان کہتے ہیں کہ میں حضورا کرم عظیم کے ہم راہ چل رہا تھا کہ آپ علی کے ہم راہ چل رہا تھا کہ آپ علی کا گزرایک مخص کے پاس سے ہوا جوا تھارہ رمضان کو بچینا لگوارہا تھا تو آپ علی کے افسار علی کے بینالگانے والے اور بچینا لگوانے والے دونوں نے افسار کرلیا"۔ (روز ہ ٹوٹ گیا)

مزید لکھتے ہیں ہم سے ابو بر محر بن علی المقر ی خیاط نے ، ان سے ابو حسین احمد بن عبداللہ بن خفر سنجر وی نے بیان کیا کہ میں نے ابو براحمد بن محمہ بن بارون مؤدب معروف بدرازی سے معلوم کیا کہ آپ نے قرآن کس سے پڑھا؟ تو فرمایا کہ ابور ہج عامر بن عبداللہ بن عبدالبر سے ، انھوں نے ابوعلی حسون سے پڑھا، مگر ابوعلی کی مجلس میں حاضر ہوئے۔ ان حاضرین مجلس میں سے کسی نے مجھ سے کہا کہ انھوں میں حاضر ہوئے۔ ان حاضرین مجلس میں سے کسی نے مجھ سے کہا کہ انھوں (حسون) نے ، ہمار سے علاقے کے ایک عالم سے ، جوروازی کے لقب سے مشہور ہیں ، قرآن پڑھا اس خص سے بی بڑایا کہ اس نے بھی حسون سے پڑھا ہے ، مگروہ خص کون تھا اس خص سے بی بڑایا کہ اس نے بھی حسون سے پڑھا ہے ، مگروہ خص کون تھا اس وقت معلوم نہ ہوسکا۔ جب گھروا اپس آکراس کی بابت معلوم کیا تو بتایا گیا

کروہ ابن ہارون سے۔ایک روز وہ میرے پاس آگے۔ میں نے ان سے دریافت کیا ابو کر آ آپ نے جھے سے بہت کہا تھا کہ میں نے ابور ہے نے بر ھا ہے اور ابور ہے نے مسون سے؟اس پراٹھوں نے کھ دیر کے لیے سر جھکا کے رکھا اس کے بعد فر مایا (و بان یک کاذبا فعلیہ کذبه) ابو سین فر ماتے ہیں کہ پھر میری ملاقات، مقری ابو حفص عمر بن احمد آ جر سے ہوئی۔ میں نے ان سے کہا کہ ابن ہارون کا کہنا ہے کہ میں نے رابی ہارون کا کہنا ہے کہ میں نے رابی ہارون کا کہنا ہے کہ میں نے رابی ہارون کا کہنا ہے کہ میں نے رابعون "بر ھا۔ چنا نچہ میں باقری کی مجلس کے حاصرین میں سے، جن لوگوں نے داجعون "بر ھا۔ چنا نچہ میں باقری کی مجلس کے حاصرین میں سے، جن لوگوں نے حسون سے بر ھا تھا، ان کے پاس آ کر اٹھیں ہے بات بتائی تو وہ رک گئے۔ حسون سے بر ھا تھا، ان کے پاس آ کر اٹھیں ہے بات بتائی تو وہ رک گئے۔

خطیب لکھتے ہیں کہ ہم سے قاضی ابوعلاء محمد بن لیفوب نے بیان کیا کہ میں نے ابو بکر احمد بن محمد بن ہارون بن سلیمان بن علی دیبلی رازی سے ان کی تاریخ بیدائش دریافت کی تو انھوں نے 2018ھ بتائی جب کہ ان کا انتقال و 20 ھیں ہوا۔ چیاں چہ بچھ دنوں کے بعد قاضی ابوعلاء کی کتاب میں انہی کے قلم سے لکھا ہوا دیکھا کہ احمد بن محمد بن ہارون حربی کی وفات بروز پیر ۲۱ رد جب و 20 ھیں ہوئی۔

علامہ ابن الجزری 'فعایة النهایة فی طبقات القراء' میں لکھتے ہیں کہ احمد بن مجد بن ہارون بن علی، ابوبکر دیبلی بغدادی، معروف بہ مہیر کی' مشہور ومعروف قاری ومجود تھے۔ ابن جزری کابیان ہے کہ انھوں نے فضل بن شاذان سے قرآن پڑھا اورعلامہ ہمیر ہ کے شاگرد، حسون بن بیٹم سے ۱۸۹ھ میں تین ختم قرآن کر قراءت عرضاً روایت کی۔ اس کا انھوں نے انکار کیا اور کہا کہ میں نے عامر بن عبراللہ سے انہی کی روایت سے بڑھا ہے اور ان سے قاضی ابوعلاء محمد بن بیقوب واسطی نے بھی پڑھا ان کا انتقال رجب مصروب میں ہوا۔

علامہ ذہبی فرماتے ہیں کہ عبدالباقی بن حسن ہی کانام محکمہ بن احمد بن ہارون ما مددانی نے ان کے حسون سے عرضاً برھنے کو ثابت کیا ہے۔ واللہ اعلم۔

یرا (ابن الجرری) خیال ہے کہ علامہ دائی نے جس صون ہے انکا پڑھنا ثابت کیا ہے ان کا نام محربی احدین ہارون رازی ہے دوہر فیضی بین وہ صون تو تقد، مامون بین لیکن ان کی بابت خطیب بخدادی کھے بین کہ تراءت بین بیمقول نیس معلوم کی تھے۔ قاضی ابوعلاء فرماتے بین کہ میں نے ان سے ان کی تاریخ بیرائش معلوم کی تو کے کر بتائی اور یہ کہ میں نے جسون سے ۸۸۸ھیں پڑھا ہے۔ اس ابن ہارون کی وفات بروز بیر ۲۳ سرون کے سوئی سے ۸۸۸ھیں پڑھا ہے۔ اس ابن ہارون کی وفات بروز بیر ۲۳ سرون کے سام کو مولی۔

قاضى احدين نفرين حسين، ديبلي موصلي انباري

مشهورمورخ اورجغرافيه نكارعلامه حوى ومعجم البلدان "كاندرو انبارة كيسليل ميں لکھتے ہيں كربہت سے علماء ومصنفين انبار كى طرف منسوب رہے ہيں۔ ان میں متاخر من علماء میں قاضی احمد بن نقر بن حسین ابوعیاس موصلی معروف ب ریبلی بھی میں جواصلاً انہار کے باشندے ہیں۔ میمشہورشافقی فقیہ تھے۔ جب سے بغدادا في توبغداد ك قاضى القصاة ابوالفصائل قاسم بن يجي شفروري في الحين قصر دارالخلافه میں قضاء کے سلسلے میں اپنا تا تب مقرر کیا۔ یہ بہت نیک برمیز گار، دین داراورنیکوکارتھے۔ یہ ہیرگاری، دین داری اور ناجائز معاملات میں فیصلہ دیے سے انکار کرنے کے حوالے سے، ان کے بہت سے واقعات ہیں۔ انھوں نے آیسے بہت سے احکام روکرویے جن کاروکرنا کئی کے بس میں ندھا۔ حق کے تیک ہے گی کی مذمت ادر ملامت کی مطلق کوئی برواه نه کرتے تھے۔ میرے اویرتو ان کا بہت برا احسان ہے۔ رحمہ الله رحمة واسعة اوروه يه كمانھول نے ازراه مدردي وشفقت مجھے میراایک حق دلایا، حالال که نہ تو ان سے میرا کوئی تعارف تھا اور نہ ہی گئی نے سفارش کی علی ، بلکہ محض حق کی خاطر انھوں نے فریق مخالف کو مجھایا بجھایا آور فری کے ساتھاں سے گفتگواور فہمائش کی ۔ بالآخراس نے جوبات حق تھی،اس کا قرار کرلیا۔

یہ نیابت قاضی القصناۃ کے منصب پر فائز رہے اور جب ابوالفصائل قاضی القصناۃ کے عہدے سے برطرف کردیے گئے تو یہ بھی ازخودا لگ ہو گئے اور 'موصل'' واپس آھئے جہاں ۹۸ ھیں انقال فر مایا۔

"انبار" وریائے فرات کے ساحل پر بغداد سے مغرب میں واقع ہے۔ بغداد اور انبار کی مسافت دی فرت ہے۔ نیز "انبار" نام کی دوسری آبادی بھی ہے جو "نبخ" کے نزد کی واقع اور جوز جان کے اطراف میں ایک جھوٹا سا قصبہ ہے۔ گر تاریخی کتابوں میں دریائے "فرات" کے ساحل پر واقع شہر ہی" انبار" کے نام سے مشہور ہے اور صاحب سوائح کا تعلق بھی ای انبار سے تھا۔ (تاضی)

آ نگو ہندی

ابن النديم الفهرست سيس فرات بي كه علائے بنديس جن كى طب ونجوم ميں تفنيفات مجھ تك بيني بيں ، ان ميں سے ايك آگو بندى بھى بيں ۔

"" گو"قد يم بندوستان كے الل علم سے تعلق ركھتے ہيں ۔ اس كتاب ميں ان كا اور ان جيے دوسر لوگول كا نذكره ازروئے احاط كرديا گيا ہے۔ عرب محم دانوں ميں سے جن حفرات نے بندوستان كے معاملات وحالات سے دلچيى لى ، ان ميں يكي بركى اور بحض دوسر برا كمہ ہيں ۔ انھول نے خليفہ ہارون رشيد كے قائم كرده "بيت المحكمة" ميں جے مامون رشيد نے مزيد فروغ اور ترقى دى ، بندوستانى اطباء اور دانش ورول كو بلايا اور ان كے علوم وتصانيف سے بھر پور دل بھي لى ۔ تا تاريوں نے ٢٥٦ ھيں ذوسر على اداروں اور كتب خانوں كى طرح" بيت المحكمة" كو بين ذوسر على اداروں اور كتب خانوں كى طرح" بيت المحكمة" كو بين دوسر على اداروں اور كتب خانوں كى طرح" بيت المحكمة" كو بھی دوسر على اداروں اور كتب خانوں كى طرح" بيت المحكمة" كو بھی تا خت وتارائ اور تاہ و بربا دكر دیا۔ (تاضی)

ابان بن محراخباری، سندهی کوفی بغدادی

ان كى بابت "معجم المصنّفين" كالفاظيم بين: ابان بن محدسندهى، بكل،

بزاز، معروف بسندهی، بغدادی، قدیم علمائے عراق میں شار ہوتے ہیں۔اس بات کا تذكره حافظ في "كسان الميزان" مين كياب اور لكهاب كدابان بن محمد بكل كوفي، معروف برسندهی کا ذکر د منجاشی و شیعه علماء میں کیا ہے اور لکھا ہے کہ "کتاب النوادر"نامی ایک کتاب کے وہ مصنف بھی ہیں۔ حافظ نے بس اتنابی لکھا ہے۔ جم المصتفین مے مؤلف کہتے ہیں کہان کے حالات کی بابت بہت اختلافات بائے جاتے ہیں جس سے بیا ندازہ ہوتا ہے کہ ان کی شخصیت چندال شہرت یا فتہ نہیں تھی۔ چنال چہ محربن اساعيل "منتهى المقال" مين (حرف سين) كي تحت سندى بن ربيع بغدادى نام لکھتے ہیں اور فرماتے ہیں کہ انھوں نے ابوالحسن موی سے روایت حدیث کی ہے۔ ان کی ایک کتاب بھی ہے جس کی روایت ان سے صفوان بن کی وغیرہ نے کی ۔ مگر حاشيه مين "ربيع" ك جكه "محد" كالفظ لكها باورفر مايا ب كدسندى بن محد كانام ابان تقاادر كنيت ابوبشر،ان كاتعلق تبيله جبينه سے تھا۔ يجھ لوگ كہتے ہيں كه قبيله بجيله سے تعلق تھاادر بہی بات زیادہ مشہور بھی ہے۔ میصفوان بن کیلی کے بھا نجے تھے۔ ہمارے كوفى علماء مين تقداور باحيثيت تقع وسكتاب رجال الهادى "مين مذكور بكرسندهى بن محر علی بن محر کے بھائی تھے۔ نیز ہے کہ جن روات نے ائمہے روایت نہیں کی ہے، ان میں ایک سندھی بن محر بھی ہیں ان سے صفار نے روایت کی ۔ میں کہتا ہوں کہ سندھی بن رہیج کی بابت گزرچکا جیسا کہ ایک نسخ میں ہے کہ بیان میں شامل ہیں،جنہوں فے امکہ سے روایت نہیں کی۔ (این)

کتاب مذکور ہی کے اندر ''حرف عین ''کے تحت ان کے بھائی علی بن اساعیل کے تذکرے کے ذیل میں لکھاہے کہ انھیں علی بن سندھی کہا جاتا ہے۔ گر میں کہتا ہوں کہ بیدا ساعیل سندھی ہیں''کشی'' کے حوالے سے کہاہے کہ انھوں نے فرمایا کہ میر بے زد کی سخچ لفظ ''سدی' ہے پھر علی بن سدی کوفی لکھ کر کہا ہے کہ انھوں نے ابوعبداللہ سے دوایت کی ہے۔ اس میں بھی کشی کا ہی حوالہ دیا ہے۔ آھے

کھا ہے کہ نفر بن صباح بن علی بن اساعیل ثقہ ہیں اور بہی علی بن سدی ہیں۔
اساعیل کا لقب سدی بیان کر کے لکھا ہے کہ علی بن سندی کی بابت ابھی گزرا ہے کہ
وہ علی بن اساعیل بن عیسی ہیں۔ اس سے بچھ ہی بہلے یوں لکھا ہے کہ خلا صہ کلام بیہ
ہے کہ علی بن محمد خز ارسندی ہی علی بن سندی ہیں۔ جب کہ ''حرف حاء' کے ضمن میں
انھیں کے بارے میں لکھا ہے: حسن بن سدی کا تب عبدی انباری معروف بہ
''الکا تب' میرا خیال ہے کہ آبندہ جملے سے یہ جملہ بظاہر ملتا جلتا ہے، چنال چہ بعد
میں لکھتے ہیں حسن بن سدی کو فی ، کا تب اور ثقہ ہیں۔ انھوں نے اور ان کے بھائی
علی دونوں نے ابوعبد اللہ سے روایت کی۔ ان کی ایک کتاب بھی ہے۔

''رف الف'' کے ذیل میں لکھا ہے کہ اساعیل بن عبدالرحمٰن بن ابوکر یمہ سدی، ابوحر قرشی سری کوفہ کے رہنے والے تھے (جب کہ بیہ مشہور مفسر علامہ سدی کبیر کا نام ہے) اس کے باوجو وعلی بن سدی کو فی کے حالات میں لکھا ہے کہ بہتر بات یہ ہے کہ یہ سری ہے نہ کہ سدی اور یہی ہونا چاہیے اور وہی اساعیل بن عبدالرحمٰن بن ابوکر یمہ سندی ہیں۔ جب کہ علی بن سندی کے ترجے میں رقم طراز ہیں کہ یہ یک بین اساعیل بن عیسی بن فرخ سندی، مولی علی بن یقطین ہیں، یہ سندھ ہیں کہ یہ یہ بیاں ہوئی بن اساعیل بن عیسی بن فرخ سندی، مولی علی بن یقطین ہیں، یہ سندھ کے رہنے والے تھے۔اس وجہ سے ان کی اولا دبھی ''سندھی'' کے لقب سے مشہور ہوگئی، انھیں میں سے ایک اسلمیل بھی ہیں جنہیں صرف ''سندگ'' کے لقب سے مشہور ہوگئی، انھیں میں سے ایک اسلمیل بھی ہیں جنہیں صرف ''سندگ'' کے لقب سے ہی یا دکیا جا تا ہے (انتہی المقال منتخباً من التواجم)۔

مؤلف کتاب کی رائے ہے کہ ان مذکورہ تراجم میں کئی اعتبار سے تضاد اور اختلاف پایا جاتا ہے۔ ارمری ہیں یاسدی۔ ۲۔ ان کا لقب اساعیل بن عبدالرحمٰن تھایا اساعیل بن عیسی یقطین کہ ان کی اولاد: ابان علی اور حس بھی اسی لقب سے مشہور ہوئے؟ ۔ سے زیر تذکرہ ابان ، ابان بن محمد ہیں یا ابان بن اساعیل؟ پھر سے ابان بن اساعیل بن عیسی ابان بن اساعیل بن عیسی ابان بن اساعیل بن عیسی ابان بن اساعیل بن عیسی

یقطین؟ غرض کریدایسے تضادات ہیں جن میں نظیق کی کوئی صورت نظر نہیں آئی۔
علاوہ ازیں اگر صاحب تذکرہ نے ابوالحن موی کاظمی سے روایت حدیث کی
ہوتو وہ تیسری صدی ہجری کے ہیں۔ واللہ اعلم۔ جب کہ میں نے ''نجاشی' کے
تلانہ کی بابت و یکھا کہ ان کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ محمہ بن ابان بحل ہی
''سندی یا برازی' سے مشہور ہیں جیسا کہ مجھ سے قاصی ابوعبداللہ جفی نے، ان
سے احمہ بن سعید نے اور ان سے محمہ بن احمہ تلائی اور محمہ بن تلائی نے ابان بن محمہ
سے ان کی کتاب ''کتاب النوادر'' کی روایت کی۔ یہی ابان، صفوان بن کی سے ان کی کتاب النوادر'' کی روایت کی۔ یہی ابان، صفوان بن کی کے بھا نجے ہیں جیسا کہ ابن نوح نے فرمایا ہے نہیں۔

شخ ابوجعفر طوی 'باب کنی الفهرست ''میں لکھتے ہیں کہ ابوالفرح سندی کی الفہرست ''میں لکھتے ہیں کہ ابوالفرح سندی کا ایک کتاب بھی ہے۔ یہ بات ہم ہے ایک جماعت نے بہروایت تلعکمری بتائی۔ افھول نے ابوہ ام ہے، افھول نے حمیدہ، افھول نے قاسم بن اساعیل ہے، افھول نے احمہ بن رباح ہے اور افھول نے خود ابان سے علامہ طوی 'حرف سین ' کے تحت کھتے ہیں کہ سندی بن محمد کا نام ابان اور کنیت ابوبشر ہے، قبیلہ جہینہ اور بقول بعض قبیلہ بجیلہ کے رہنے والے تھے اور بہی بات زیادہ مشہور ہے۔ یہ مفوان بن کچی کے بھائے کی ہے اپر المعقم کے دوالے سے مان کی ایک کتاب بھی سے ہم سے یہ بات کئی ایک لوگوں نے ابوالمفصل کے حوالے سے، افھول نے ابوبطہ کے حوالے سے، انھول نے ابوبطہ کے حوالے سے، انھول نے ابوبطہ کے حوالے سے، بیان کی۔ (انہی)

الفھرست "میں حرف مین" سے قل کرتے ہوئے" منتھی المقال" کے خلاصے میں "حوف الف" کے خت بیات ذکر کی گئی ہے۔ اس میں اتنااضافہ بھی علی اس کے خت بیات ذکر کی گئی ہے۔ اس میں اتنااضافہ بھی ہے کہ ان کی ایک تعنیف ہے" کتاب النوا در" ان سے محمد بن علی بن محبوب نے روایت کی ہے اور حرف سین اور" الکن" کے شمن میں اس کا ذکر آرہا ہے۔ جب کہ

"کتاب المشترك" کے حوالے سے لکھا ہے کہ ابن محر بجلی معروف بہ سندی تقہ بیں۔ ان سے احر بن محر قلائی ، محر بن علی بن مجبوب صفار اور احر بن ابوعبد اللہ نے روایت کی۔ جب اطمینان کرنامشکل ہوجائے جیسے کہ ابان بن علی بن حکم کے ابان سے روایت کی بابت تو روایت اس کے مسلک پرموتو ف ہوجائے گی جو بعد میں ہو۔ کیوں کہ" ابان" انیس آ دمیوں کے ناموں میں مشترک ہے۔ ان میں کے ایک یہ ابان تقدیمی ہیں اور ان کے علاوہ دوسر ہے بھی یہ مان کر کہ تعمی کو" کوئی" کے علاوہ دوسر نے بھی یہ مان کر کہ تعمی کو" کوئی" کے علاوہ دوسر شخص سمجھا جائے۔ انہیں ۔ پھر اس خلاصے میں" حرف سین "کے تحت ان کا تذکرہ ہے۔ اس میں کنیت "الخلاصة" کے حوالے سے ابو بشر ندکور ہے اور لکھا ہے کہ سے کہ کیے کئیت ابوبشر ہے بغیریاء کے ، بعد از ان" اکنی "کے ذیل میں بھی ابوبشر ہی لکھا ہے (ا)۔

ابرابيم بن على بن سندهي

انھوں نے محد بن عبداللہ یزیدمقری سے روایت کی ہے اور ان سے عبداللہ بن محد نے امام ابونعیم اصفہانی "حلیة الاولیاء" کے اندر حضرت شفی بن مانع اسجی کے حالات کے تحت لکھتے ہیں کہ ہم سے عبداللہ بن محد نے ، وہ کہتے ہیں کہ ہم سے ابراہیم بن علی بن السندی نے ، وہ کہتے ہیں کہ ہم سے محد بن عبدالله بن یزیدمقری ابراہیم بن علی بن السندی نے ، وہ کہتے ہیں کہ ہم سے محد بن عبدالله بن یزیدمقری نے ، وہ فرماتے ہیں کہ ہم سے مروان بن معاوید نے بیان کیا ، انھوں نے اساعیل بن عیاش نے تعلیہ بن مسلم عمی سے ، انھوں نے ایوب بن بیر عبی سے ، انھوں نے شقی بن مانع اسمی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

"أربعة يؤذون أهل النار على مابهم من الأذى يسعون مابين

⁽۱) حضرت تامنی صاحب نے ان تضادات اور اختلافات کی بابت کو کی تبھرہ نہ کرتے ہوئے آخر میں اتنا لکھا ہے کیا گردابان "کاسندھی ہونا ٹابت ہوجائے تو علی اور حسن بھی سندھی مانے جائیں گے۔ (ع ربستوی)

الحميم والجحيم، يدعون بالويل والثبور. ويقول أهل النار بعضهم لبعض: مابال هؤلاء قد آذونا على ما بنا من الأذى. قال: فرجل مغلق عليه تابوت من جمر، ورجل يجر أمعاءه، ورجل يسيل فوه قيحا ودما، ورجل ياكل لحمه. فيقال لصاحب التابوت: مابال الأبعد قد آذانا على ما بنا من الأذى؟ فيقول: إن الأبعد في عنقه أموال الناس. ثم يقال للذى يجر أمعائه مابال الأبعد قد آذانا على ما بنا من الأذى؟ فيقول الأبعد قد آذانا على ما بنا من الأذى؟ ميتل فوه قيحاً ودماً: مابال الأبعد قد آذانا على ما بنا من الأذى؟ ميتل للذى يسيل فوه قيحاً ودماً: مابال الأبعد قد آذانا كلمة يستلذها على مابنا من الأذى فيقول: إن الأبعد كان ينظر الى كلمة يستلذها على مابنا من الأذى فيقول: إن الأبعد كان ينظر الى كلمة يستلذها كما يستلذ الرفث. ثم يقال للذى كان ياكل لحمه: مابال الأبعد قد آذانا على مابنا من الأذى؟ فيقول الأبعد: كان يأكل لحمه: مابال الأبعد قد

" چارتم کے لوگ اہل جہم کو، ان کی تکلیف و پریشانی کے باو جود مزید تکلیف دیں گے۔ یہ لوگ گرم کھولتے ہوئے پانی اور جہم کی آگ کے درمیان دوڑیں گے، ہلاکت اور بربادی کو آواز دیں گے۔ جہنی آیک دوسرے سے کہیں گے ان لوگوں کا کیا حال ہے کہ افھوں نے ہمیں تکلیف بالائے تکلیف میں جہلا کر دیا ہے۔ حضور علی ایک خص ایسا ہوگا جو انگاروں کے تابوت میں بند ہوگا ایک اپنی استین گھیدٹ رہا ہوگا ، تیسرے کے منص سے پیپ اورخون بہدر ہا ہوگا اور چوتھا خص اپنا کوشت کھار ہا ہوگا ۔ تابوت والے سے پوچھا جائے گا، اس مردود کا کیا حال ہے جس نے ہمیں تکلیف در تکلیف میں جہلا کرد کھا ہے تو وہ کے گا کہ اس کی گردن پر لوگوں کے روسیٹے پینے ہیں۔ پھراس سے پوچھا جائے گا ، اس مردود کا کیا حال ہوگا ور سے پینے ہیں۔ پھراس سے پوچھا جائے گا جوا پی آستیں تھیدٹ رہا ہوگا کہ اس مردود کا کیا حال ہے بی نے ہمیں مشقت بالائے مشقت میں ڈال دیا گا کہ اس مردود کا کیا حال ہے، جس نے ہمیں مشقت بالائے مشقت میں ڈال دیا ہو وہ کے گا کہ اس مردود کا کیا حال ہے، جس نے ہمیں مشقت بالائے مشقت میں ڈال دیا ہو وہ کے گا کہ اس بات کی مطلق پروانہ رہتی تھی کہ پیشا ب کہاں لگا اور شدی کی کہ بیشا ب کہاں لگا اور شدی کی کہ بیشا ب کہاں لگا اور شدی کے گا کہ اس بات کی مطلق پروانہ رہتی تھی کہ پیشا ب کہاں لگا اور شدی کی کہ بیشا ب کہاں لگا اور شدی

اسے دھوتا تھا۔ پھرجس کے منھ سے بیپ اورخون بہدر ہا ہوگا ،اس سے کہا جائے گا
کہاں مردود کا کیا حال ہے تو وہ کہے گا کہ وہ گندی حرکت دیکھ کرای طرح اس سے
لذت لیتا تھا، جیسے کہ وہ بدکاری سے لذت لے دہا ہو۔ پھر جواپتا گوشت کھار ہا ہوگا
اس سے ای طرح سوال کیا جائے گا تو وہ جواب دے گا کہ وہ لوگوں کے گوشت کھایا
کرتا تھا''۔ (غیبت کیا کرتا تھا)

ال سند سے بیہ حدیث، حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم سے صرف حضرت شنی فی دوایت میں مفرد ہیں۔ حضرت شفی کی بابت اختلاف ہے، بعض حضرات کی رائے ہے کہ انھیں حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم کی صحبت کا شرف حاصل ہے۔ بہی روایت اساعیل بن عیاش سے مروان بن معاویہ نے کی ہے اور اس میں ان الفاظ کا اضافہ کیا ہے : فی عنقه موال الناس لم یدع لها و فاء و لا قضاء، و قال : یعمد الی کل کلمة قدعة حبیثة، و قال : یا کل لحوم الناس ویمشی بالنمیمة. اس کی گردن قذعة حبیثة، و قال : یا کل لحوم الناس ویمشی بالنمیمة. اس کی گردن پرلوگوں کے پیسے تھے، اس نے ان کی ادا گی کے لیے نہ تو مال و جا کداد چھوڑی اور براوگوں کے گوشت کی ادا کرنے والا وارث ۔ وہ عمراً ہرگندی حرکت دیکیا تھا اور لوگوں کے گوشت کھا تا تھا اور چیل خوری کرتا تھا۔

ابراہیم بن علی السندی کے اس قدر حالات ہمیں معلوم ہو سکے۔ یہ چوتھی صدی ہجری کے علماء میں ہیں اور غالبًا ان کا تعلق علمائے بغداد سے تھا۔ (تاضی)

ابراہیم بن سندی بن شا کب

ابراہیم بن سندھی بن شا مک کا تعلق سندھ کے ایک ایسے گھرانے سے تھا جس نے شروع ہی سے عباس سلطنت کی بڑی خدمت کی۔ان کے والدسندھی بن شا مک تضاء کے منصب پر فائز تھے نیز شام کے گورز بھی رہے ہیں۔ بیدان لوگوں شا مک تضاء کے منصب پر فائز تھے نیز شام کے گورز بھی رہے ہیں۔ بیدان لوگوں

میں شامل تھے، جنھوں نے محر بن عیلی بن تھیک اور سلیمان بن ابوجعفر منصور کے ساتھ مل کر امویوں پر غلبہ حاصل کیا تھا۔ سندھی بن شا کر کے بھیتیج: ابراہیم بن عبدالسلام اسی گھرانے سے تعلق رکھتے تھے۔مؤرخ طبری نے منصور کے حالات میں ان کا تذکرہ کیا ہے۔

جاحظ نے اپنی مشہور تفنیف "البیان والتبیین" میں باب أسماء الحطباء و البلغاء و ذكر قبائلهم و أنسابهم كاندران كالتارف كرات موئے لکھاہے کہان (عباسیوں) کے موالی میں سندھی کے دونوں صاحب زادے: ابراجيم اورنفر بھي بيں نفر بن سندهي مؤرخ اور محدث تھے۔وہ ابن الكلبي اور بيثم کی حدیث سے تجاوز نہیں کرتے تھے۔ مگر ابراہیم بن سندھی تو بے مثال آ دی تھے۔ مقرر تنه ما ہرانساب تھے، فقیہ تھے، علم نحواور عروض میں امام تھے، حا فظ حدیث تھے، اشعار بہت یا دیتھ،خود بھی شاعرتھے۔ان کے الفاظ نہایت پرشوکت اور معانی بہت یا کیزہ ہوا کرتے تھے، کا تب علم بھی تھے، کا تب عمل بھی، برسی سنجیدہ گفتگو کرتے تھے،خراج کے دیوان لکھتے تھے، نجومی اور طبیب بھی تھے، کبار متکلمین میں شار ہوتا تھا، سلطنت عباسيه اور اصحاب دعوت وتبليغ كى بابت انھيں بڑى معلومات تھيں ،سى ہوئی بات سب سے زیادہ انھیں یادرہتی تھی ،سوتے کم اور جاگتے زیادہ تھے۔انھول نے عبداللہ بن صالح ،عباس بن محد ، اسحاق بن عبیلی ، اسحاق بن سلیمان اور ابوب بن جعفر سے حدیث کی روایت کی ہے۔ اور ان سب کو، قریش ،سلطنت اور مشہور اصحاب دعوت تبليغ كى بابت بهت زياده معلومات تفيس ـ حافظ لكھتے ہيں كه ابراہيم بن سندھی نے ان لوگوں سے ایک ایس حدیث روایت کی ہے جوہیشم بن عدی اور ابن الکلمی کی کتابوں میں موجود حدیث کے خلاف ہے جب اسے آپ نیل گے تو بیقین کرلیں گے کہ میر بات سی جھوٹے مصنف کی نہیں ہو عتی۔

جاحظ نے ویعمل فنی الخواج بعمل زاذان - ساس امرک جانب

اشارہ کیا ہے کہ خلیفہ عبد الملک بن مروان کے عہد تک، عراق کے رجٹروں کے اندراج کے کام پراہل فارس کی ایک جماعت مامورتھی۔اس لیے خراج اور دیگر حساب كتاب فارى زبان ميں لکھے جاتے تھے ليكن حجاج بن يوسف عراق كا گورنر بناتو ايك حساب کنندہ پراسے شبہ ہو گیا، تب اس نے کہا کہ کیا کوئی ایسا شخص نہیں ہے جو بیرجسٹر عربی زبان میں منتقل کردے؟اس پراس ہے " خروج اعور" نے جوخود بھی حساب و كتاب كے اندراخ كرنے دالوں ميں شامل تھے، كہا كميں بيكام كرسكتا ہوں، جنال جەاس نے نمونے کے طور پرتھوڑ اساتر جمہ کرکے دکھایا تو مجاج بہت خوش ہوا اوراہے ترجمہ کا کام جاری رکھنے کا تھم دیا۔ جب اس کاعلم اہل فارس کے بڑے حساب کنندگان کوہوا تو دہ مارے عصہ کے آگ بگولہ ہو گئے۔اعور کے پاس جا کراس سے بہت کچھ وعدہ کیا ، مال متاع کا لا کچ دیا کہ وہ ترجمہ کرنے سے اپنی معذوری ظاہر کردے تاکہ جاج اس کام ہے باز آجائے اور بعد میں اسے ایسا کرنے برسٹکین نتائج کی دھمکی بھی دی، مگروہ نہ مانا دور ان رجسروں کے عربی ترجمہ کا کام مکمل کر دیا اوراس طرح خروج اعور نے عربی زبان برنا قابل فراموش احسان کیا۔ (قاضی)

جاحظ ترکوں کے مناقب پراپ تھنیف کردہ رسالے میں ابراہیم بن سندھی ،
کی بابت لکھتے ہیں کہ وہ سلطنت کے عالم سے ، دغات و مبلغین سے بے حد محبت تھی ،
ان کی تاریخ انھیں بخو بی یا دھی ، لوگوں کوان کی اطاعت شعاری کی دعوت دیتے اور ان کی تاریخ انھیں کو بی یا دھی ، لوگوں کوان کی اطاعت شعاری کی دعوت اور معانی بہت ان کے فضائل کا تذکرہ کرتے سے ۔ ان کی عبارت نہایت پر شوکت اور معانی بہت بلند ہوتے ہے ۔ اگر میں یہ کہہ دوں کہ ان کی زبان اس ملک کے خلاف وس ہزار تلوار بازوں اور تیرا ندازوں کی بہنست کہیں زیادہ تاہ کن تھی تو یہ بالکل درست ہوگا۔ ان کی بابت جاحظ نے لکھا ہے کہ طبیب ہونے کے باعث ان کا شار فلاسفہ اور مشکمین میں جانے جاتے ہیں ' المبیان مشکمین میں تانے جاتے ہیں ' المبیان و التبیین میں کھتے ہیں کہ ابراہیم بن سندھی تقریر کرتے وقت شفقت و محبت کے والتبیین '' میں لکھتے ہیں کہ ابراہیم بن سندھی تقریر کرتے وقت شفقت و محبت کے

مارے اڑے جاتے اور عصر کے سبب شعلہ باز ہوئے جاتے تھے۔ ابن تنبیب اور نقالی نے اکھا ہے کہ یہ کی وقت کوف کے گورز بھی رہے بین ا علامة شهرستاني وكتاب الملل والنحل "من لكه مي كعيس بن الوموي مز دارنے ایک بار، ابراہیم بن سندھی ہے تمام انسانوں کی بابت معلوم کیا تو انھوں نے سب كى تكفير كردى _اس يرعيسي بن بني في الدين جنت جس كى چوزانى آسانون اور ر مین کے بفتر کے اس میں صرف آپ آور تنین دولوگ بی جا کیل کے، جوآپ کے ہم نوایس، بین کرابراہیم بن سندھی جھینے گئے اور کوئی جوانب ندرے سکے عسی بن سیج کوبشر اور معتمر سے ملمذهاصل ہے، مرعلم معتمر سے حاصل کیا۔ بعد مين زيدافتياركرليا تفاداى وجدف وزاهب المعتزلة "كنام عواف جات میں دیگرعلمائے معتر کہ کے برعکس چند مسائل میں ان کا تفرد ہے۔ اوقدر کی بابت ان كى دائے ہے كم اللہ تعالى دروئ كوكى اورستم رسانى پرقادر ہاروہ دروغ كوكى اورظم كرف وه طالم اورجمونا خدا موجاع كا (معاد الله) يا -تولدكى بابت اليخ استاذ ہی کی طرح خیال رکھتے ہیں، البتہ اثنا اشارہ کیا ہے کہ تولد کے طور پر ایک ہی كام دوفاعل سے مؤسكا ہے اس فرآن كے سلسلے ميں كہتے تھے كدانيان فصاحت، نظم الفاظ اور بلاغت كاعتبار في آن جيسي عبارت لكه سكتے بيل (وائن) المعيلي بن منتهج نے ہی و خلق قران اس مسلے میں خدے زیادہ غلو کرائے ہوئے ان ممام لوگول كوكا فرقر ارديائے، جواس كے قديم اور غير كاوق موف كے كائل مول كمانهول نے دوقد يم چيرول كوقد يم ابت كيا، آئ طرح ان لوگول كي كفرك قائل میں جو یہ بھتے میں کہ بندون کے اعمال اللہ تعالیٰ کے پیدا کردہ میں اور نیا کہ اللہ رب العرب آلكھوں سے و كيف بين د مكفيرك با بنت با حد غلو اسے كام ليا، بيان تك كمدويًا كدلوك لا الدالا الله كمن كالسلط ميل بهي كافر بين - ليه با تلك علامه شرستانی نے لکھی ہیں۔ انہی باتوں کی بنیاد پر ابراہیم بن سندھی نے میں انہی باتوں کی بنیاد پر ابراہیم

زمین کے بارے میں معلوم کیا تھا،جس پرانھوں نے سب کو کا فربتایا تھا۔

ابن قتيبه في "عيون الاخبار" ميل كها ب كهمروبن بحر (جاخط) في ابراجيم بن سندهی کے حوالے سے لکھا ہے کہ اہراہیم بن سندھی کہتے ہیں کہ مین نے کوفد کی گورنری کے زمانے میں کوفہ کے ایک معزز مخض سے جس کا نہ جگر خشک ہوتا نہ، دل کو چین آتا اور نه بی لوگول کی ضروریات کی طلب اور کمزورول تک ضروریات زندگی بہنجانے میں اس کی سرگرمی رہتی تھی یہ بہت بولتا تھا۔ میں نے کہا کہ ذرا مجھے میہ بناؤ کہ کس چیز کی وجہ سے میر پریشانی شمھیں آسان معلوم ہوتی ہے کہتم اس کے برداشت پر قادر ہو؟ اس نے بتایا بخدا! میں نے صبح کے وقت، درخت کی شاخوں پر برندوں کا چیجہانا،سارنگی کے تاروں کا بجنا اورخوش شکل گلوکارارؤں کی آوازیں سنیں،مگر مجھےان سب سے بھی ایسی خوشی نہ ہوئی، جیسی کسی اچھی زبان سے اچھی تعریف سے اور کسی شکرگزار کے محتسب سے سفارش کی درخواست کنندہ کی طرف سے شریف کرم فرماکی شكر گزارى سے ہوتى ہے۔ ابراہيم بن سندھى فرماتے ہيں كديدى كرميں نے كہالله أبوك تم سرايا شرافت تصيو الله في شرافت دو چند كردى كيكن بيو بتاؤ كه بيه باربار ك آمدورفت اوربية تلاش وجنجو كيول كرآسان بهوئى ؟ تواس نے كہا كماس ليے كميس نہ تو تھک ہار کر بیٹھتا ہوں اور نہ ہی ناجا بڑ کا سوال کرتا ہوں۔اس نے مزید کہامیرے نزدیک سچی معذرت وعدہ وفا کرنے کی برنسبت زیادہ نا گوارنہیں ہے۔ نہ ہی سائل کو بھائے رکھنا سوال کردہ مخفل کی حق تلفی سے زیادہ قابل نفریں ہے، نہ ہی میں خواہش مند کا اینے او پر کوئی حق واجب سمجھتا ہوں، اس شخص کے تیس جوایئے حسن ظن کے سبب مرغوب اليدكے باس آئے، جس نے اس كابارا تھايا ہو۔ ابراہيم سندهى فرماتے ہیں کہاس سے زیادہ برخل اور برموقع گفتگویس نے بھی نہیں تی۔

حافظ البیان و التبیین "میں رقم طراز بین کہ جھے سے ابراہیم بن سندھی نے بتایا کمشہور شاعر عمانی زاجرہ، خلیفہ ہارون رشید کے پاس شعر سنانے کی غرض سے آیا،

اس سے سریرایک لمبی ٹونی اور پیر میں معمولی انداز کا موزہ تھا۔ بیدد مکھ کر ہارون رشید نے کہا۔ خردار میرے سامنے تب بی شعرسانا جب تہارے سریر بوی بیجوں والی دستاراور پیر میں عدومم کے دوموزے ہول۔ ابراہیم بن سندھی کابیان ہے کہ ابولھر نے بتایا کہ الگے روزسورے ہی وہ شاعر پھر آیا۔اس بار بدوؤں کا سالیاس زیب تن كے ہوئے تھا۔ شعرسایا پھرقریب جاكر ہارون رشیدے ہاتھ كو بوسد دیا اور كہنے لگا امير المؤمنين! خدا كاتم من في مروان بن الحكم كوشعرسنايا، اس كاچره و يكهاماته چوما ادرانعام سے سرخرو ہوا۔ یزید بن ولیداور ابراہیم بن ولیدکوشعرسنایا ان کے چہرے و سی ان کی دست بوی کی اور انعام وا کرام سے سرفراز ہوا۔ مبدی کے سامنے شعر سنایا، چېره د یکها، پاتھ چوے اور دادودېش سے نوازاگیا۔منصورکوشعرسنایا چېره دیکها، دست ہوی اور نوازشات سے بہرہ ورہوا ان کے علاوہ بہت سے خلفاء، گورٹرول، سربراہان حکومت اورمعزز لوگوں کی طرف سے بھی ای طرح نوازا گیا۔لیکن امیرالمونین! خدا کی م ان میں سے کوئی بھی آب سے زیادہ خوش محل، خوب رو، خوش حال اورخوش عیش نظرند آیا۔ بخدا اگرمیرے دل میں پیربات القاء کی جائے کہ میں آپ کی بابت کھ کہوں تو میں آپ کی بابت وہی کہوں گا جوابھی کہی ہے۔ یہن کر ہارون رشید نے اسے اس کے شعر پر برا انعام عطا کیا اور اس کی جانب متوجہ ہوکر اے خوش کردیا۔ یہاں تک کہ شاعر نے یہ آرزوکی کہ کاش وہ سارے لوگ، جن کے پاس وہ جاچکا تھا،ای حشیت اور مقام ومرتبے کے مالک ہوتے۔

جاخط مزید لکھتے ہیں کہ بھے سے اہر اہیم بن سندھی نے بتایا کہ عبد الملک بن صالح کے یاس جب رومیوں کا وفد آیا وہ اس وقت ملک ہی ہیں تھا، تو اس نے قطار اندر قطار چندا سے لوگوں کو کھڑ اکر دیا جن کے سربہ ونڈے ہوئے ، مونچھیں اور بال سے اندر قطار چندا سے لوگوں کو کھڑ اکر دیا جن کے سربہ ونڈے ان میں سے ایک شخص ایسا تھا جس کا چرہ بطریق (یاری) کی گدی سے ملتا جاتا تھا کہ است میں اس نے آہتہ سے کا چرہ بطریق (یاری) کی گدی سے ملتا جاتا تھا کہ است میں اس نے آہتہ سے

چھینکا۔اس پرعبدالملک نے کن انگھیوں سے دیکھا۔گراس شخص کومعلوم نہ ہوسکا کہ کیا بات عبدالملک کو نا گوار معلوم ہوئی ہے۔ جب بیہ وفد جلا گیا تو عبدالملک نے اس شخص سے کہا تیراناس ہو تیرانھنا اور حلق کی جڑ تنگ کیوں نہ ہوئی تا کہ اتنی زور سے چیخ مارتا جس سے بردے بردے بہادروں کے دل بھی دہل جاتے۔

ای کتاب میں لکھتے ہیں کہ ابر اہیم بن سندھی کا خیال ہے، انھوں نے کہا کہ جھے سے ایسے خص نے بتایا، جس نے عیسی بن علی سے سنا، وہ فرماتے بتھے کہ نضول نگائی خواہ مخواہ کے خیالات سے ہوتی ہے، فضول نگائی فضول گوئی کا باعث ہوتی ہے اور نضول گوئی کا باعث ہوتی ہے اور نضول گوئی کا باعث ہوتی نظامی کی خرابی کا مذارک کر ہے تو وہ بات کو بری سمجھنے سے نکل جا تا ہے اور اگر دیر کر سے تو وہ بات کو بری سمجھنے سے نکل جا تا ہے اور اگر دیر کر سے تا خیر کے سبب بضول سے بری بات کی طرف چلا جا تا ہے۔

مزید لکھتے ہیں کہ جھ سے ابراہیم بن سندھی نے اپنے والد سے نقل کرتے ہوئے بتایا کہ بنی ہاشم سے تعلق رکھنے والا ایک جوال سال شخص خلیفہ منصور کے پاس آیا منصور اس کے والد کی وفات کو معلوم کرنے لگا تو اس نے بتایا کہ میر سے والد فلال تاریخ کومرض الموت میں مبتلا ہوئے اور انصوں نے اتنی اولا دچھوڑی ۔ اس پر رہے نے اس نو جوان کوڈانٹا اور کہا کہ امیر المونین کے روبروا پنے باپ کے لیے دعا کیے جارہا ہے؟ نو جوان نے جواب دیتے ہوئے کہا کہ میں آپ کو برا بھلانہیں کہتا ، کیوں کہ والد کی حلاوت ولذت ہے آپ نا آشنا ہیں۔ سندھی کا بیان ہے کہ سوائے اس روز کے، مصور بھی اس طرح سے نہیں ہنا کہ اس کی ڈاڑھ کے وانت بھی نظر آگئے ہوں۔

مزید لکھتے ہیں کہ ابراہیم بن سندھی نے اپنے والد سے روایت کر کے مجھ سے بتایا کہ ایک روز بنو ہاشم کا ایک نو جوان منصور کے باس آیا۔منصور نے اسے بٹھایا اور کھانا منگوایا۔ نو جوان سے کہا کھانے کے قریب آجاؤ۔ نو جوان نے عرض کیا امیر المومنین! میں کھانا کھا چکا ہوں۔ اس پر رہیج نے نو جوان کوروکا۔ہمیں شبہ ہوا کہ

شايدريج نے اس كى بات بھى نہيں۔ جب وہ باہرآنے كے ليے كھر اہوا تو اسے روك ليا۔ جب وہ يردے كى آڑ ميں ہوگيا تواس كى گدى يردهكا مارا۔ جب جاجب نے بیصورت حال دیکھی تو انھوں نے بھی گدی پردھکا مارکراسے گھرے باہرنکال دیا۔اس کے بعدنو جوان کے جیا کے خاندان کے پچھاوگوں نے منصور کے ہاس آگر ال سے رہی کی شکایت کی منصور نے کہا کہ رہیج ایبا قدم ای وقت اٹھا سکتے ہیں جب ان کے یاس اس سلسلہ میں کوئی تھوس شوت ہو۔اب آپ چا ہیں تو جو پھے ہوا ال يرخاموشي اختيار كرليس اورا كرآب كى خوائش موتو ميس ربيع سے معلوم كرتا موں اورآب حضرات سنیں۔ان لوگوں نے کہارہے سے معلوم کریں۔رہے کو بلوایا گیا۔ ان لوگول نے ساراوا قعہ بیان کیا۔ رہے نے بتایا کہ بینو جوان دور سے ہی خلیفہ کوسلام كرك وايس جار ہا تھا۔ امير المونين نے اسے بلوايا كمزو كيك آكر سلام كرے، پھراس سے بیٹھنے کو کہااور اس کے سامنے ہی کچھانسی غداق کی یا تنیں کی اور کھانا تناول كرنے لگے۔اسے بھی بلایا كەدسترخوان برساتھ بى كھانا كھالے، مراس نوجوان كى جہالت تو دیکھوکہوہ امیر المونین کے مقام ومرتبے سے کتنا بے خبرتھا کہ جبات ساتھ کھانے کے لیے کہا تو یہ کہنے لگا کہ میں کھانا کھاچکا ہوں۔ حالال کہ امیر المومنین کے ساتھ جس نے بھی کھانا کھایا اس نے بھوک کی عادت بندی اور اس طرح کا آدمی بات سے بیں ، لات سے بی درست ہوسکتا ہے۔

اس کتاب میں آگے لکھتے ہیں کہ مجھ سے ابراہیم بن سندھی نے بہ روایت اپنے والد بیان کیا ان کے والد نے کہا خدا کی شم ا میں ہارون رشید کے سر ہانے اور فضل بن رہتے اس کی با کیں طرف کھڑے شے اور حسن لؤلؤی اس سے معلومات کرر ہے اور مختلف امور کی بابت گفتگو کرر ہے تھے حسن لؤلؤی نے سب سے آخری میں ام ولد کی بیجے وشراء کے بارے میں سوال کیا۔ تو اس وقت اگر مجھے یا دندر ہتا کہ میں ام ولد کی بیج وشراء کے بارے میں سوال کیا۔ تو اس وقت اگر مجھے یا دندر ہتا کہ بردے کے بیجھے کی حکومت حاجب کی گھر کی باڈی گارڈ ، محافظ کی ہوتی ہے اور میری

بادشاہت صرف اس لیے ہے جو گھر کی حدود سے باہرنگل گیاہو، تو میں حسن اوّلو کی کا باز واور گردن بکڑ لیتا۔ جب ہم پردے سے باہر ہوئے تو میں نے حسن اوّلو کی سے کہا جب کہ فضل بن رہیج بھی من رہے تھے سنو خدا کی تنم !اگریہ بات تہاری طرف سے سفر میں ہوتی تو مجھے یقین آتا کہ دوئی کے قابل کچھ ایسے لوگ ہیں جو تہاری مجلس کی اس سے حفاظت کرتے ہیں۔

اس واقعہ کی نسبت قاضی صاحب کا خیال ہے کہ اس کی وجہ یہ ہے کہ اس طرح ہارون رشید کے گفتگو کرنا جب کہ یہ بات سب کومعلوم ہے کہ ہارون رشید کی مال خور بھی ام الولد تھی جس کانام خیز ران تھا، بے اد لی اور گستاخی تصور ہوتی ہے۔ مگر یہاں یہ امر فراموش نہ کرنا جا ہے کہ سلطان دین، سلطان و نیا کے مقابلے میں بوا اور مضبوط تر ہوتا ہے اور یہ حسن لوکو کی، حضرت امام اعظم ابو حنیف ہے جلیل القدر شاگرد حسن بن زیاد تھے۔

مزید لکھتے ہیں کہ مجھ سے ابراہیم بن سندھی نے بیان کیا کہ مقام''رقہ''میں ایک رات کوشن لؤلؤ کی امون رشید سے بات چیت کررہے تھے، اس وقت مامون خلیفہ بن چکا تھا۔ اتنے میں مامون او تکھنے لگا تو اس سے حسن لؤلؤ کی نے کہا امیر المومنین! آپ سو گئے تھاس پراس نے اپنی آٹکھیں کھولیں اور کہا رب کعب کی قتم! غلام ان کا ہاتھ پکڑلو۔

ابراہیم کا بیان ہے کہ ایک روز ہم لوگ زیاد بن محد منصور بن زیاد کے یہاں سے فضل بن محد نے ہمارا کھانا تیار کرار کھا تھا۔ اس مجلس میں ہمار ہے ساتھ ایک غلام بھی تھا۔ فضل بن محد کا قاصد زیاد کے پاس آکر کہنے لگا کہ آپ سے آپ کے بھائی بوں کہ درہے ہیں کہ ہمارا کھانا تیار ہو چکا ہے، البذا آپ حضرات چلیں۔ اس مجلس میں ہمار سے ساتھ دیگر ادباء اور علماء کے علاوہ ابراہیم بن قطان، احمد بن یوسف اور قطرب نحوی بھی تھے۔ مگر ہم میں سے کسی کا ذہن اس قاصد کی غلطی کی طرف نہیں گیا تب

مبشر خادم نے اس سے کہا کمین زادے! توایخ آقاکے پاس کھڑا ہوکراس طرح بات کررہاہے، جیسے کوئی شخص دنیاوی سامان کھولنے کو کہدرہا ہو۔ کیا تو یہبس کہ سکتا تھا میرے آقا! آپ سے آپ کے بھائی نے یوں کہلوایا ہے کہ آپ این جملہ ساتھیوں سمیت آجا کیں کہ سب کام ہو چکا ہے، کھانا لگ چکا ہے۔

حسن لؤلؤی کا کا مامون کے ساتھ یہ واقعہ جو بیان کیا جاتا ہے، اس کی کوئی اصل نہیں ہے، بلکہ یہ از قبیل خرافات ادبیہ ہے جس کی طرف مطلق توجہ نہ دینی چاہیے۔ اس لیے کہ اس واقعہ ہے اگر لؤلؤی کی بابت یہ باور کرانا مقصود ہو کہ آخیں عربی زبان نہیں آتی تھی تو اس سے کیا ہوتا ہے جب کہ ان کے استاذ حضرت امام اعظم کے بارے میں یہ کہا گیا کہ آخیں نحونہیں آتی تھی۔ اس طرح کی باتیں امراء وحکام کے کاسہ لیسوں اور ان کے دستر خوان کے خودرہ چینوں سے کچھ بعیر نہیں ہے۔ تاریخ وتر اجم کی کتابوں میں حسن لؤلؤی کے تفصیلی حالات درج ہیں، جہاں ان کی زندگی اور ان کی علمی حیثیت وغیرہ کود یکھا جاسکتا ہے۔ (تافی)

ابراجيم بن عبدالسلام سندهى بغدادي

ابوطوط، ابراہیم بن عبدالسلام، سندھی بن شا ہک بغدادی کے بیتیج تھے۔ مؤرخ طبری تاریخ طبری تاریخ طبری کا ابوطوط ابراہیم بن عبدالسلام نے بتایا کہ بخص سندھی بن شا ہک نے بیتیج، ابوطوط ابراہیم بن عبدالسلام نے بتایا کہ بخص سے سندھی بن شا ہک نے بیان کیا کہ بیس "جرجان" بیس موسی کے ساتھ تھا کہ و بیں اسے خلیفہ مہدی کی وفات اور اس کی خلافت کی خبر بینجی تو وہ سعید بن اسلم کوساتھ لے کر بغدادا کے لیے روانہ ہوگیا اور مجھے خراسان بھیج دیا۔

قاضی صاحب لکھتے ہیں کہ ابراہیم بن عبدالسلام کے اس سے زیادہ حالات مجھے نہیں مل سکے۔ بیر عبد عباسی میں سلطنت کے اور سیاست ملکی کے چند گئے جنے لوگوں میں سے تھے اور ان کا تعلق مندھ کے اس گھرانے سے تھا جس نے شروع لوگوں میں سے تھے اور ان کا تعلق مندھ کے اس گھرانے سے تھا جس نے شروع

ہے ہی عباسی خلافت کے تنیک وفا داری اور خلافت گزاری کا بھر پور حق ادا کیا۔

ابراجيم بن عبدالله سندهي بغدادي

علامہ ابوالفرج اصفہانی اپی شہرہ آفاق کماب 'الاغانی ''میں ابراہیم بن عبداللہ کی روایت سے لکھتے ہیں کہ ان کا بیان ہے کہ مامون رشید خراسان سے چل کر بغداد آیا اور تھم دیا کہ شعراء وادباءی فیم میرے لیے نام زدی جائے کہ وہ میرے ساتھ آھیں بیٹھیں اور میرے ساتھ قصہ گوئی کریں۔ ایسے چند حضرات کے نام اس کے سامنے ذکر کئے گئے، انہی میں حسین بن ضحاک بھی تھے، جواس سے پہلے محم مخلوع کے ہم نشین رہ چکے سختے۔ مامون نے ان ادباء کے نام پڑھے۔ جب "دھین بن ضحاک ''کانام آیا تو کہا کیا بیودی شخص تو نہیں ہے جس نے محمد کی بابت ورج ذیل شعر کیے ہیں:

هـ للا بقيت لسد فاقتنا الله وابداً وكان غيسرك التلف فلقد خلفت خلائف سلفوا الله ولسوف يعوذ بعدك الخلف

"تو ہمارافاقہ دورکرنے کے لیے ہمیشہ کیوں ندر ہا کہ تیرے علادہ سب بریکار تھے۔ یو جانشین بناگر رے ہوئے لوگوں کا مرتبرے بعد جانشین ہونامشکل ہے"۔

پھر مامون نے کہا مجھے اس شخص کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ اس نے مجھے
ہمیشہ داستے ہی میں دیکھا ہے۔ تا ہم مامون نے حسین بن ضحاک کے طنز وتعریف پر
سی طرح کی سرزنش نہ کی اور حسین بھرہ چلے گئے اور جب تک مامون برسر حکومت
ر مابھرہ ہی میں مقیم رہے۔

قاضی صاحب کھتے ہیں کہ مجھے ابراہیم بن عبداللہ سندھی کی بابت سوائے اس کے اور کوئی معلومات نہ ہوسکیں کہ یہ بھی مذکورۃ الصدر، ابراہیم بن عبدالسلام سندھی بغدادی کی طرح ہی تھے۔

ابراتيم بن محمر بن ابراتيم ديبلي بغدادي

علامہ سمعانی "الانساب" میں لکھتے ہیں کہ ابراہیم بن محمد بن ابراہیم بن عبداللہ، دیبلی نے موی بن بارون اور محمد بن علی الصائغ الکبیر وغیرہ سے روایت کی عبداللہ، دیبلی نے موی بن بارون اور محمد بن علی الصائغ الکبیر وغیرہ سے روایت کی ہے۔ امام ابو محمد عبدالغنی مصری اپنی کتاب "مشتبه النسب" میں محمد بن ابراہیم دیبلی کے مذکر مے میں فرماتے ہیں کہ بیابراہیم بن محمد والد ہیں، جنہوں نے موسی بن محمد والد ہیں، جنہوں نے موسی بن مارون اور محمد بن صائغ کبیر سے روایت کی ہے۔

مؤرخ جوی معجم البلدان "مین رقم طراز بین کدابو عفر هدین ابرائیم دیبلی کے صاحب زادے: ابرائیم بن محددیای کوموی بن ہارون سے شرف روایت حاصل ہے۔
خطیب "تاریخ بغداد" میں ابویعلی حزہ بن محد بن حزہ قزوین کی بابت کھیے ہیں کہ ججے نے فراغت کے بعدوہ بغداد آئے، جہاں ابرائیم بن محمد بن محد بن محد

ابراہیم بن محمد چوتھی صدی جری کے ہیں، کیوں کہان کے والد کی وفات سے ۳۲۲ ھیں ہوئی۔(تامنی)

احيد بن حسين بن على بامياني سندهي

شهر "فبامیان" کے متعلق "معجم البلدان" میں علامہ حموی لکھتے ہیں کہاں شہر سے اصحاب فضل و کمال کی ایک جماعت تیار ہوئی ہے۔ انہی میں سے ایک الوحمد احید بن حسین بن علی بن سلیمان سلمی بامیانی بھی ہیں جنہیں کی بن ابراہیم سے شرف روایت حاصل ہے۔

احید بن حسین کی بابت بس اسی قدر معلومات دستیاب ہوسکیں۔ ہاں اتنا ضرور ہے کہ بیرقد ماء محدثین میں سے تھے۔ (تاضی)

شاه سنده: ارمیل سومره

ارمیل، سومرہ خاندان سے تعلق رکھتا تھا، جوسندھ کا بادشاہ بھی رہا چوں کہ بیہ نہایت ظالم وجا برشخص تھا اس لیے سومرہ برادری ہی کے پچھلوگوں نے اس کے خلاف بغاوت کرکے ۲۵ کے میں اسے آل کردیا۔ (تخة الکرام)

"منتخب التواريخ" بين مذكور ہے كه خاندان سومره كة خرى بادشاه كانام "خميز" تھا۔ يہ نہايت ظالم مخص تھا اس ليے اس كى قوم كے لوگوں نے ہى اسے تل كر ڈالا ممكن ہے كہ ارميل سندھ كے بچھنوا حى علاقوں پرقابض رہااورظلم وزيادتى كے باعث اس كى قوم نے اسے تل كر ديا ہواور يہ بھى ہوسكتا ہے كہ يہ خاندان سومره ميں سے كوئى مستقل بادشاہ رہا ہو جب كہ بعض محققين كا خيال ہے كہ يہ دونوں ايك شخص كے نام شخص نامی شخص نے اللہ اس كو "رونه" كما جانے لگا۔ اس كو "رونه" كانام شے۔ اصل نام "حمير" ہى تھا جے بگا ڈكر" ارميل" كہا جانے لگا۔ اس كو "رونه" نامی شخص نے تل كيا تھا جس نے بعد ميں اپنی خود مختارى اعلان كيا۔ (قاضى)

اریکل ہندی

ابن النديم في الفهرست "مين اريكل مندى كاتذكره ان علمائي مندك و ابن النديم كل مندك و بندك و بندك و بندي النديم كل بنيس النديم كل ال

اسحاق بدرالدين بن منهاج الدين د بلوى اجودهني

یہ مشہور شخ طریقت اور صاحب کشف وکرامات بزرگ شخ مسعود فرید الدین سنج شکر یے خلیفہ اور داماد تھے۔شروع میں دہلی کے ''مدرسہ معزبیہ' میں مدرس تھے،صوفیاء، نقراء اور عبادوز ہادسے مطلق کسی قتم کی عقیدت نہ رکھتے تھے۔

ایک مرتبہ ایا ہوا کہ چند مسائل ان کے سامنے ایسے آئے، جنہیں علاء طل نہ كرسكي للبذا انهول في "جارا" جانے كا اراده كيا۔ جب" اجودهن كينج تو ان مے رفقائے سفریٹ فریدالدین سے ملاقات کے لیے گئے اور ان سے بھی شخ کے یا س جلنے کو کہا مگر انھوں نے بیا کہ کرجانے سے انکار کردیا کہ میں نے اس طرح کے فقیر بہت ہے دیکھر کے بیں، ان کے پاس کھیل ہے، بلکان کے پاس بیمنا تصبیع وقت ہے۔ لیکن احباب نے جب بہت اصرار کیا تو چلے گئے۔ بیلوگ جاکر شع کے یاس بیٹھ گئے۔ شخ نے اسحاق بدرالدین کی طرف متوجہ وکران کے مشکل ماکل کی بابت ان کے ساتھ گفتگو شروع کردی۔ حالان کرانھوں نے شخ سے ان مسائل كاكوئي ذكرندكيا تفايض كالفتكوسان كشفي موئى اوردل مطمئن موكيا البذا سفر بخاراتر کر کے شخ کی صحبت میں رہنا شروع کر دیا۔ اس صحبت کی برکت سے صلاح وتفوى میں نمایاں مقام حاصل ہوگیا۔ بعد میں شخ کی صاحب زادی سے شادی ہوگی اور ان کے خلیفہ بھی بن گئے۔ انھوں نے شخ کے ملفوظات ایک کتاب میں جمع کئے جس کا نام 'اسرارالاولیاء' ہے۔ پھرتوان کا بیرحال ہوگیا کہ خوف خدا کے باعث آئے میں ہمہونت اشک بارر ہا کرتیں۔ اجودھن ہی میں وفات پائی اور وبين كي قديم معجد مين موفون موع " دكرامات الاولياء "مرتب مولا نا نظام الدين احمد صاحب زادہ محمد صالح صدیقی اور دوسری کتابوں میں تفصیل کے ساتھان کی حيات وفدمات يرروشي والى كى بيد ين المائل المائل

حاكم باميان: اسد

یایک دیماتی هخف تھ، جوہامیان کے ظمرال تھے۔"اسد"کے معنی فاری زبان میں دشیر" کے ہوئے ہیں۔ انھوں نے خلیفہ منصور عباس کے دور میں مزاحم بن بسطام کے ہاتھ پراسلام قبول کیا۔ان کاقدر نے تفصیلی تذکرہ" جرف شین" کے تحت آرہا ہے۔

اسلم بن سندهی

اسلم بن سندهی سے ابوالحن علی بن حسن سیازی نے روایت کی ہے۔ سمعانی نے ''کتاب الانساب'' میں بخارا کے مضافات میں واقع''سیازہ''نامی بستی کے تذکر ہے دیل میں لکھا ہے کہ ابوالحن علی بن حسن سیازی نے مستب بن اسحاق اوراسلم بن سندهی سے حدیث بیان کی ہے۔

اسلم بن سندهی متقدین محدثین میں شار ہوتے ہیں۔ان کی بابت مجھے مزید سیجھ معلوم نہ ہوسکا۔(تامنی)

اسلامي ديبلي

سندھ کی قدیم ترین فاری تاریخ '' نی نامہ' میں فدکور ہے کہ مولانا اسلام اصلا '' کے باشند ہے ہے۔ انھوں نے محد بن قاسم ثقفی کے ہاتھوں اسلام قبول کیا اور سے کے دین وارمسلمان سے۔ محد بن قاسم نے انہی کوسندھ کے راجہ '' کے باس ابنا قاصد بنا کر بھیجا تھا۔ انھوں نے سفارت کا فریضہ بہ خوبی انہام ویا۔ اسلام اورمسلمانوں کی نہایت عمدہ ترجمانی کی اور داہر سے اسلام کی محاس کی بابت بڑی مدلل گفتگوگی۔

بیمندھ کے پہلے ایسے تحض ہیں جنہوں نے سندھ میں اسلام قبول کیا۔ بیدواقعہ پہلی صدی جری کی آخری دہائی کے شروع کا ہے۔ (قاض)

اساعيل لا موري

" تذکره علمائے ہند "میں بہت وقع اور بلندالفاظ میں ان کا تعارف کرایا گیا ہے۔ امام جلیل، محدث، مقسر مولانا اساعیل لا ہوری، سرز مین ہند میں دعات

وسلفین اسلام میں ہے ایک تھے۔ ان کی وعظ ونصیحت کی مجلسوں میں بہت سے
کا فروں مشرکوں نے ان کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا۔ بیراعاظم محدثین اور اکابر
مفسرین میں شار ہوتے تھے۔ یہ پہلے وہ خص میں جولا ہور میں حدیث ونسیر لے کر
سے ان کی وفات لا ہور ہی میں ۱۲۸ ھیں ہوئی۔

اساعيل بن سندهي بغدادي

تاری بغداد کے اندر خطیب کھے ہیں کہ ابوابراہیم اساعیل بن سندھی خلال نے سلم بن ابراہیم ور اق سے صدیت بیان کی اور بشر بن عارث سے بھی روایت کی ہے۔ ان سے محد بن خلد نے روایت کی۔ مزید کھتے ہیں کہ مجھے ذہیر نے بتایا، ان سے عبیداللہ بن عثمان بن کچی نے بیان کیا ان سے محد بن خلد نے ان کا کہنا ہے کہ مجھ سے اساعیل بن سندھی ابوابراہیم خلال نے بیان کیا کہ میں نے بشر بن عارث میں ایک حدیث کی بابت معلوم کیا تو انھوں نے فرمایا خداسے ڈرو! اگرتم بی حدیث دنیا کی خاطر جیاہ دنیا کی خاطر حیاہ دنیا کی خاطر حیاہ دنیا کی خاطر حیاہ درے تو تم بہلے ہی اسے من می ہو۔

اساعیل بن سندھی بغیرادی کے شیوخ اور تلافدہ کے سنین وفات سے اندازہ موتا ہے کہ بیتیسری صدی جمری کے متھے۔ (تاضی)

اساعيل ملتاني، زامد

شخ اساعیل ملتانی کا شار، زاہد وعابد نقراء میں تھا۔ مشہور وعاش سسی اور پون کی قبر پران کی زیارت کے لیے تشریف لائے۔ اونٹ کوراستے ہی میں چھوڑ دیا اور بیدل چل کرقبر تک آئے۔ انھوں نے قتم کھارکھی تھی کہ جب تک ان دونوں کود کھے نہ لیں مجے تی میں جھے کھا کیں گے نہ بیس مجے۔ ای طرح جب تین دن کود کھے نہ لیں مجے تب تک نہ جھے کھا کیں گے نہ بیس مجے۔ ای طرح جب تین دن

گذر گئے تو قبر سے ایک بڑھیا نکلی اس کے ہاتھ میں چند چیا تیاں اور تھوڑا سا پانی بھی تھا۔ اس نے ان سے کھانے اور پانی پینے کے لیے کہا تو انھوں نے کہا کہ میں اس وقت تک نہ کھا وُل کا نہ پول گا جب تک کہ سسی اور پنون کود کھے نہ لول۔ اس پر بڑھیانے کہا میں بی تو ''بھوں۔

''سی'' بہ معنی چاندایک عورت تھی اور پنون ایک مردکا نام تھا۔ یہ دونوں
''برہمن آباد'' کے راجا: دلوارائے کے زمانے کے شے تحفۃ الکوام کے مصنف نے ان کے معاشقے کی داستان کھی ہے اور یہ بھی تحریر کیا ہے کہ ان کی وفات کے بعد بھی درویش اور فقیرانھیں دیکھا کرتے تھے۔معصوم بھکری اور قاضی مرتضی سورتھی ساکن'' کتیانہ'' نے نہایت عمدہ اسلوب سے یہ داستان منظوم شکل میں کھی ہے۔ مگرعشق ومحبت کے دوسرے واقعات کی طرح ہی اس واقعہ کی بابت بھی مبالغہ آمیزی کی گئی ہے۔تا ہم اس سے فاہر ہوتا ہے کہشتے اساعیل ملتانی بڑے عابدوزاہد آمیزی کی گئی ہے۔تا ہم اس سے فاہر ہوتا ہے کہشتے اساعیل ملتانی بڑے عابدوزاہد انسان تھے۔یہ ماتویں صدی ہجری سے پہلے کے ہیں۔(تافی)

اساعیل بن علی ، الوری سندهی

حضرت مولا ناعبدالحی سنی لکھنوی "نزهة النحواطر" بین ساتوی صدی ایجری کے علاء کے تذکرے کے ضمن بین ان کی بابت لکھتے ہیں کہ قاضی اساعیل بن علی بن محر بن موسی بن یعقوب تقفی سندھی، فقیہ خطیب اور شہر الور، سندھ کے قاضی سخے ۔ قضا اور خطابت کا یہ منصب انھیں آباء واجداد سے ورثے میں ملاتھا۔ بیالم اور علوم ادب و حکمت کے ماہر تھے، ان کی پیشانی سے بزرگ کے انوار شیکتے تھے علی بن علوم ادب و حکمت کے ماہر تھے، ان کی پیشانی سے بزرگ کے انوار شیکتے تھے علی بن حامد کوئی سندھی نے "تاریخ سندھ" میں ان کا تذکرہ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ شہر الور" میں میری ان سے ملاقات ہوئی۔ ان کے پاس سندھ کی تاریخ مسلمانوں کے سندھ یہ حملے اور ان کی فتو حات سے متعلق کئی جھے عربی زبان میں رکھے ہوئے تھے، سندھ یہ حملے اور ان کی فتو حات سے متعلق کئی جھے عربی زبان میں رکھے ہوئے تھے، سندھ یہ حملے اور ان کی فتو حات سے متعلق کئی جھے عربی زبان میں رکھے ہوئے تھے،

جنس ان کے آباداجداد نے لکھا تھا۔ یہ اجزاءان سے لے کر میں نے فاری میں ان کا ترجمہ کیا۔ 'تحفہ المکورام ' میں ان کی بابت لکھاہے کہ قاضی اساعیل بن علی بن محمہ بن موی بن یعقوب بن طائی بن محمہ بن شیبان بن عثان تعفی ک اولا دمیں سے ہیں، جنہیں محمہ بن قاسم نے ''الور' () میں رہنے کے لیے تھا مامود کیا اور دہاں کی تضاءادر خطابت کی ذمہداری بھی ان کے سپر دکی ۔ پھر نسلاً بعد نسل ان کی اولا دمیں یہ دونوں منصب چلے آرہے ہیں۔ قاضی اساعیل بن علی بہت نیک اور صالح متع نے یہ بیت نیک اور صالح متع نے یہ بیت نیک اور علی بن علی بہت نیک اور علی بن علی بہت نیک اور علی بن علی بن علی بہت نیک اور علی بن بن میں میں بن علی بن علی بن علی بن بن میں میں بن بن بن میں میں بن میں ب

اساعیل بن عیسی بن قرن سندهی

اساعیل بن عیسی بن فرج سندهی مولی علی بن یقطین، چول کرسنده کے رہے رہوئی۔
رہنے والے تھے،اس لیے ان کی اولا دواحفاد بھی سندهی کے لقب سے مشہور ہوئی۔
ان میں سے اساعیل کو اتنی شہرت علی جو نا قابل بیان ہے جیسا کہ ابان بن محمد سندھی کو فی کے نذکر سے میں گزر چکا ہے۔

اساعيل بن محدين رجاء سندهي

حضرت مولانا محمد طاہر صاحب پٹنی نے اپنی کتاب "المعنی" میں "باب السندی" کے تحت کھاہے کہ محمد بین رجاء سندھی مشہور محدث ہیں۔ پھران کے لڑکے اساعیل کا تذکرہ کیا ہے لیکن اس کے علاوہ اور کوئی بات مجھے ان کی بابت نیل سکی۔

⁽۱) الور: موجوده زمائے میں اے "اروڑه" كہاجاتا ہے، جو ياكتان مي واقع ہے، ع واستوى -

الح بن بيبار سندهي

بيابوعطاء سندهي مشهور شاعر بين ان كاتذكرة" كنيتون" كيمن مي كياجات كا

ا ندی ہندی

ابن النديم في "الفهرست" بين ان كاتذكره ان علمائي مند كوبل مين كيا ہے، جن كى طب ونجوم سے متعلق كما بين ابن النديم تك پہنچ سكيں۔

حاكم مالديب: أيم كلمنجا

"تحفۃ الادیب" میں ان کی بابت لکھاہے کہ" سلطان ایم کلمنجا" ہرہ کیا دائع نامی خاتون کے لڑے ہیں، باپ کی طرف سے بھی ان کا نسب ہے مگر باپ کی طرف سے ان بادشاہوں کا نسب ذکر نہ کیے جانے سے لگتا ہے کہ ان کے والد حکمر ال خاندان کے نہ سے ۔ ایم کلمنجا تخت سلطنت پر ۲۲۲ ھ سے ۲۲۲ ھ تک دوسال فائز رہا۔ اہل مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب" مری اوسور مہاردھن" ہے۔





باب

باجبر مندي

ابن النديم في "الفهرست" بين ان كتابون كا تذكره كرت بوك جوك جوك وكورسوارى بشمشيرزنى، آلات جنگ اوراس معنعلق دنيا كى اقوام كى تدابيركى بابت كهى بين كها مي كه باجر بندى كى كتاب تكوارون كى خصوصيات، صفات بابت كهى كي بين كها مي موضوع برب وي اين اور رموز وعلامات كے موضوع برب مدى

باجر بندی کی بابت جمعے اور کسی طرح کی معلومات ند ہو کیل ۔ بندوستانی تلواریں قدیم زمانے بی میں اپنی اور جنگی مضبوطی، عمر گی، خوب صورتی، ضرب کاری اور دیگر خصوصیات میں شہور تھیں ۔ اہل عرب بندوستانی ساخت کی تلوار کو "المھند" اور" الھندی کے ناموں سے جانا کرتے تھے۔ صاحب تذکرہ باجر بندی کی کتاب بندوستانی ساخت کی تلواروں کی انواع واقسام اور صفات وضوصیات سے متعلق تھی۔ (قاضی)

باذر وغوغيا، مندى رومى

وزیر جمال الدین قفطی "اخبار العلماء باخبار الحکماء" میں لکھتے ہیں کہ "اوروغوغیا" روی جملی ہیں ایک کتاب استخواج "المداه" ہے۔ یہ کتاب استخواج المداه" ہے۔ یہ کتاب بین ابواب شرکل ہاور ہر باب میں دومقالے ہیں۔

یکی بن خالد برکی نے مندوستان سے جن اطباء اور دانش ورول کو بغداد باوایا

تھا، انہی میں بازیگر ہندی بھی تھے۔ بیدوسری صدی جری کے تھے۔ (تاض)

با کھر ہندی

ابن النديم نے ''الفھر ست'' كے اندران كا تذكرہ ان علمائے ہند كے ذيل ميں كيا ہے، جن كى علم نجوم وطب پر كتابيں ابن نديم تك پہنچ سكيں۔

بختیار بن عبدالله، فصاد مندی مروزی

علامہ سمعانی "کتاب الانساب" میں لکھتے ہیں کہ ابو گھر بختیار بن عبداللہ ہندی فصاد میرے والدر حمۃ اللہ علیہ کے آزاد کردہ غلام ہتے۔ ان کے ساتھ عراق وجاز کا سفر کیا اوران سے بہت کی احادیث کا ساع بھی کیا ہے۔ بینہایت نیک اور صالح غلام ہتے۔ انھوں نے بغداد میں ابو گھر جعفر بن احمد الحسن سر آن، ابوالفضل محمد صالح غلام ہتے۔ انھوں نے بغداد میں ابو گھر جعفر بن احمد الحسن میں عبدالیام بن احمد انصاری اور ابوالحسین مبارک بن عبدالیجار طیوری سے، ہمدان میں ابوائق محمد بن حداد میں ابو گھر عبدالرحمٰن بن احمد بن حسن دونی سے اور اصفہان میں ابوائق محمد بن حداد اور ان کے طبقے کے دوسرے محد ثین سے حدیث کا ساع کیا۔ ابوائق سے چندایک اور ان کے طبقے کے دوسرے محد ثین سے حدیث کا ساع کیا۔ ابوائق سے چندایک بی احادیث کا ساع انھیں حاصل ہے۔ ان کی وفات "مرو" میں اس مے میں ہوئی۔

بختيار بن عبداللدالزامد مندى بوجي

علامہ سمعانی ''الأنساب'' میں مزید فرماتے ہیں کہ ابوالحن بختیار بن عبداللہ صوفی زادہ، قاضی محمد بن اساعیل یعقو بی کے آزاد کردہ غلام''بوشنج'' کے رہنے والے نیک سیرت صالح عالم تھے۔ اپنے آقا قاضی یعقوب کے ہمراہ عراق حجاز ادراہواز کے بعض علاقوں کا سفر کیا۔ بغداد میں ابونصر محمد ابوالفوارس طراد بن علی زینبی اور ابومحمد رزاق اللہ بن عبدالوم اب شمیمی ہے، بھرہ میں ابوعل بن احمد بن علی

تستری، حافظ ابوالقاسم عبد الملک بن علی بن خلف بن شعبه اور ابولیعلی اجمد بن محد بن محد

"بوشک" فراسان کا ایک نهایت زر فیز اور قدیم شهر تفاید به برات مسات فرسخ کی مسافت پرواقع تفایاس شهری جانب نسبت کرت بوی فوشنی اور بوشنی دونون طرح مین کھا جا تا ہے۔ (تاض)

بشربن داؤدبن يزيدبن حاتم كورنرسنده

ان کے والد داؤ دبن بزید بن حاتم گورزسندھ بن کرسندھ آ ہے۔ والد کی وفات کے بعد بشر کوسندھ کا گورز بنادیا گیا۔جیسا کہ بلا ذری نے لکھا ہے کہ علاقہ سندھ کی صورت حال ٹھیک رہی تا آل کہ مامون رشید کے دور خلافت میں بشر بن داؤدکواس کا گوزنا مزد کیا گیا۔ بشر نے سرکشی اور خالفت کی راہ اختیار کی تو مامون نے عسان بن عباد کو جوسواد کو فد کے رہنے والے تھے، بشر کی سرکو بی کے لیے سندھ روانہ کیا۔ جب عسان سندھ پہنچا تو بشرامان کے کراس کے یاس آگیا اور وہ بشر کو لے کر میں اسلام بغداد چلا گیا۔

مقرر کیا گیا۔ بظاہر ایسامعلوم ہوتا ہے کہ بشر کی پیدائش سندھ میں ہوئی اورائے والد مقرر کیا گیا۔ بظاہر ایسامعلوم ہوتا ہے کہ بشر کی پیدائش سندھ میں ہوئی اورائے والد داود کی گورنری میں پلا بر ہاور جوان ہوا۔ بعد میں ہندھ کا گورنر بھی بنادیا گیا۔ اس نے سندھ میں اپن خود مختاری قائم کرنی چاہی، گراس میں کامیاب نہ ہوسکا۔ (قانی)

طبيب مندى ببله

جَاحَظَ فِي "البَيْانَ والتبيين "مَنْ لَكُمَّا كُمَّ الوالا شعَثْ مَعْمَر في مجهد

بنایا کہ میں نے اس زمانے میں جب کی برکی نے منکہ، بازیگر، قلمرقل وغیرہ اطبائے ہندکو بخدا دبلوایا تھا، بہلہ ہندی سے یو چھا کہ اہل ہند کے نزد یک بلاغت کے کہتے ہیں؟ توبہلہ نے جواب دیا کہاس کی بابت مارے یہاں ایک تحریری · صحیفہ ہے۔لیکن میں اس کا ترجمہاحیمی طرح نہیں کرسکتا اور نہ ہی بلاغت وفصاحت ہے میراتعلق ہے، لہٰذااس صحیفے کی خصوصیات سمجھنے اور اس کے لطیف معانی کے اختصار کرنے میں آپ میراساتھ دیں۔ ابواشعث کابیان ہے کہ میں نے اس ترجمہ شدہ صحیفے کودیکھا تو اس میں لکھا ہوا تھا کہ بلاغت کی ابتداء آکہ بلاغت کا یکجا ہونا ہے۔ اس سے مرادیہ ہے کہ خطیب نڈریے باک ہو، اس کے اعضاء وجوارح پر سكون مول، ادهرادهركم ديكها مو،الفاظ بهتر استعال كرمّا مو، سربراه قوم عن عام آدی کے انداز کی بات نہ کرے، نہ ہی بادشاہوں سے بازاری قتم کی ، ہر طبقے کے سلسلے میں تصرف اور ردوبدل کی اس کے اندرصلاحیت ہو،مفہوم نہ تو انتہائی بیجیدہ بنادے نہ الفاظ کی بہت تنقیح کرے، نہ ہالکل صاف اور سید ھے الفاظ کرے اور نہ بی بہت زیادہ تراش خراش سے کام لے۔ وہ ایبانہ کرے تا کہ اس کا سامناکسی صاحب علم عکیم یا فلسفی سے نہ ہواور ایسے مخص سے فضول بات اورمشترک الفاظ حذف کردینے کا عادی ہو۔ نیز اس نے فن گفتگو به حیثیت فن اور میالغه غور کیا ہو محض · اعتراض تجس اور مزه لينے سے لينہيں۔

اس عظیم طبیب کے حالات زندگی کی بابت مزید کوئی بات معلوم نہ ہو تکی۔ یہ دوسری صندی ہجری سے تعلق رکھتا ہے۔ آیندہ صفحات میں اس کے صاحب زادے: صالح اور یوتے جسن کاذکر آرہا ہے (تاضی)

بيرطن مهندي يمني

مافظ ابن جمرية "الاصابة في تمييز الصحابة"كي اندران لوكول

کے تذکرے کے ذیل میں، جنسی حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا زمانہ تو ملا، گر ملاقات کے شرف سے بہرہ ور نہ ہو سکے، خواہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی حیات میں ہی ایمان کے آئے ہوں یا بعد میں، بیرطن ہندی کی بابت لکھا ہے کہ بیہ عالم تھے، بادشاہان فارس کے زمانے میں تھے۔ بھنگ کی گھاس کا ان کا ایک مشہور واقعہ بھی بادشاہان فارس کے زمانے میں جضوں نے اس ملک میں اس گھاس کوروائے ذیا ، گراس کی بابت ان کی شہرت'' یمن' میں ہوگی۔ بعد میں انھوں نے اسلام قبول کرایا۔ کی بابت ان کی شہرت'' یمن' میں ہوگی۔ بعد میں انھوں نے اسلام قبول کرایا۔ جعفر بن محمد شیرازی نے ''کتاب السوانح ''کے اندرائے استاذشیخ جس بن می موال کے ساتھا ہے۔ جعفر بن محمد شیرازی کے حوالے سے کھا ہے۔ جعفر بن محمد شیرازی کے حوالے سے کھا ہے۔ میں بارگ کی ابتدائی دور میں مسلمان میں سے جنے لوگ بھی ابتدائی دور میں مسلمان میں سے مطابق اہل بہند میں سے جنے لوگ بھی ابتدائی دور میں مسلمان میں ہوئے وال سے مطابق اہل بہند میں سے جنے لوگ بھی ابتدائی دور میں مسلمان میں یہ کے وال میں میں برطن بہند میں جن درمالیت، سین بادہ قبر بی بی برطن بہند میں میں درمالیت، سین بادہ قبر بین فرائی میں برطن بہند میں برطن بہند میں میں برطن بہند میں میں برطن بہند میں برطن بہند میں میں برطن بہند میں برطابق اہل بہند میں برطابق اہل بہند میں میں برطن بہند کی میں میں برطابق اہل بہند میں برطابق اس میں برطابق المیں برط

میرے مل کے مطابق آبال ہند میں سے جینے لوگ جی ابتدائی دور میں مسلمان ہوئے ، ان سب میں بیرطن ہندی عہدرسالت سے زیادہ قریب بین نیز ریا ہے ہیا ہندوستانی ہیں جنہوں نے اسلام قبول کیا۔ بیرطن ہندی کے علاوہ کئی کوریشرف اولیت حاصل نہیں ہے۔ (۱) (قاض)

⁽۱) برطن مندى كم معلق حافظ ويى في مران الاعتدال عن شديد تقيدى في اور آب "دجال من الدجاجلة" ترارديا ب (ع:ر: بستوى)

باب:ت

تاج إلدين ديلوي

جفرت مولانا غیرالمی حنی لکھنوی "نزهة المحواطر" کے اندر ساتویں صدی ہجری کی شخصیات کے تذکرے کے ذیل میں لکھتے ہیں کہ شخ فاضل تاج
د ہلوی دبیر معروف بدریزہ کوسلطان مش الدین کے عہد میں خطوط ورسائل کا دیوان مقرر کیا گیا۔ بیعالم فاضل بہترین شاعراور ملکے کھلکے جسم کے تھے، اس وجہ سے ان کا لقب "دیرین "دیوائی کا لقب" دیرین "دیوائی کا ایسان مقرر کیا گیا۔ بیعالم فاضل بہترین شاعراور ملکے کھلکے جسم کے تھے، اس وجہ سے ان

ملكيسنده: تاري بنت دودابن بحومر بن سومره

تخفۃ الکرام اور دوسری کتب تاریخ میں فدکور ہے کہ مستکھار بن بھونکر' اپی والدہ کی وفات کے وقت چھوٹا اور کم س تھا؛ اس لیے اس کی بہن تاری بنت دودا نے حکومت سندھ کی زمام کار ۲ کے ہے آس پاس اپنے ہاتھوں میں کی اور جب سنکھار بالغ اور ہوشیار ہو گیا تب بھائی کے تن میں حکومت سے دست بردار ہوگئی۔

تقى الدين بن محموداودهي

"نزهة المحواطر" كاندراكها كرش فاضل تقى الدين بن محمودانهونوى اودهى عالم اورصوفى تقرد حضرت نظام الدين اولياء بدايونى بميشدان كاذكر فيرى كرت تقدران كا قرضلع "رائع بريل" كايك كاول" انهونه" ميل بهرس وواؤد بن محمود كے فقى بھائى تھے۔

هندى طبيب توقشتل

ابن النديم نے "الفهرست" كاندر علم طب برعربى زبان ميں كھى گئ مندوستانى كتابول كے من ميں "وقشل" كا ايك كتاب كا بھى تذكره كيا ہا وراكھا ہدوستانى كتاب ميں سوامراض اور سودوا كيل بيں ۔ نيز اكھا ہے كہ وقشتل مندى كى ايك دوسرى كتاب ميں سوامراض اور سودوا كيل بيں ۔ نيز اكھا ہے كہ وقشتل مندى كى ايك دوسرى كتاب بھى ہے جس كا نام "دختاب التوهم فى الامواض والعلل" ہے جب كه "كشف المطنون" ميں ان كا نام توشيل كے بجائے نوشتل بالنون والقاء ہے۔ اس ميں بھى تقريح ہے كہ نوشتل مندى كى كتاب ميں سويماريوں اور سودواؤں كاذكر ہے۔

**



The second secon

باب:ح

مندى طبيب: جاراكا

''فتی الهند وقصة باکستان''نامی کتاب کے مؤلف کا بیان ہے کہ منقول ہے کہ چارا کا اورسسروتا کاعلم طب میں مقام اور مرتبہ تھا۔ علم طب سے متعلق ان کی کتابیں ہیں۔ آٹھویں صدی ہجری کے اواخر میں عربی زبان میں منتقل کی گئیں، جبیا کہان دونوں کی جانب اشارہ کرتے ہوئے ابو بکردازی نے لکھاہے کہ مطب كے سلسلے ميں يددونوں اتھار أى اورسند مانے جاتے تھے ابن نديم نے ايسے بندره ہندوستانی صنفین کے نام ذکر کئے ہیں، جن کی کتابوں کا''الفھر ست'' کی تھنیف کے وقت تک عربی زبان میں ترجمہ ہوچکا تھا۔ مگراب ان ترجموں کا کہیں کوئی وجود نہیں ہے، سوائے ایک چھوٹے رسالے کے جس میں زہر سے متعلق بحث کی گئ ہے۔اس رسالے کا ایک نسخہ برلین کی لائبریری میں موجود ہے۔اس کے اصل نسخ كا ترجمه، مؤلف كے پیش لفظ كے مطابق ابتداء ابوجاتم بلخی نے ٢٠٠ ه میں خالد بر كی کی درخواست پرفاری زبان میں کیا۔اس کے بعد ۱۱ صیس عباس بن سعید جو ہر فيعر في زبان ميس ترجمه كيار حاجى خليفه في "كشف الطنون" ميس ان دونول ترجموں کی جانب اشارہ کیا ہے۔اس رسالے کا چھوٹے سائز کانسخ صرف چوراس صفحات میشمل ہے۔اس میں کئی مقالے درج ہیں۔ پہلے مقالے میں مقدمہ وکف ہے،جس میں صنف نے لکھا ہے کہ مہلک زہروں سے مختلفتم کی مرکب دوا کیں اور مجون کی دریافت اطباء و حکماء نے بادشاہوں، راجاؤں اور نوجوانوں کی توت مردانگی کمزور میشنے سے بچانے کے لیے کیا اور مصنف کے نزویک ان مہلک

زہروں سے بادشاہوں کے علاوہ کی افرخص کا علاج کرنا درست نہیں ہے۔ دوسرے مقالے میں زہروں کے عوارض اوراثرات سے بحث کی گئی ہے۔ جب کہ تیسرے مقالے کے اندر مہلک زہر بنانے کے مختلف طریقوں کا تعارف کرایا گیا ہے۔ ان میں سے ایک طریقے کی بابت مصنف نے کھا ہے کہ ایک ازد ہا پکڑ کراسے تا نے کی سری برتن میں ڈال دیا جا تا ہے۔ پھر یہ برتن گائے کے گو بر کے ڈھیر کے ینچے گاڑ دیا جا تا ہے اور کچھ دنوں کے بعد جب از دہے کا جسم پھول بھٹ جا تا ہے، اس گاڑ دیا جا تا ہے اور خمیر سابن جا تا ہے تو باقی ما ندہ خمیر لے کر دھوپ میں رکھ دیتے ہیں یہاں تک کہوہ خشک ہوجائے۔ جب وہ اس طرح ہوجا تا ہے کہا گرکوئی اس کی معمولی مقد ارکھا لے تو یقین طور پرموت کا شکار ہوجائے ، اسے بہ تھا ظت روک لیا جا تا ہے اور مرکبات تیار کئے جاتے ہیں۔ آئری فصل زہر کے طریقوں پر مشتمل ہے اور اس میں مصنف نے ایسے علاج کا تعارف کرایا ہے جے کوئی بھی انسان مشتمل ہے اور اس میں مصنف نے ایسے علاج کا تعارف کرایا ہے جے کوئی بھی انسان اگر استعال کر لے تو اسے زہروں کے خلاف مہارت ہوجائے گ

جبهر مندي نجوي

جن علمائے ہندی طب ونجوم سے متعلق کتابیں ابن الندیم تک پہنچ سکیں انہی میں ایک جھر ہندی بھی ہے 'الفھر ست' میں ان کا بھی تذکرہ ہے۔

نجوی وطبیب: مندی جباری

یہ بھی ان ہندوستانی اطباء میں شامل ہیں جن کی طب و نجوم پر کتا ہیں '' ابن الندیم'' تک پہنچیں اور''الفھر ست'' کے اندران کا تذکرہ کیا گیا۔

جعفر بن خطاب قصداري سندهي بخي

قصدار کا ذکرکرتے ہوئے علامہ سمعانی نے "الانساب" میں لکھا ہے کہ ابو

محرجعفر بن خطاب قصداری زابدوعا بداور نقیه تھے۔ بلخ بین سکونت اختیاری، رہنے والے "قصدار" کے تھے۔ انھوں نے ابوالففنل عبدالعمد بن محمد بن نصیر عاصمی سے ساع حدیث کیا ہے اور ان سے حافظ ابوالفتوح عبدالغافرین ابن الحسین بن علی کا شغری نے روایت کی ہے۔

فقیہ جعفر بن خطاب قصداری ان متقد مین علماء ومحدثین میں سے ہیں جن کی و فات پانچویں صدی ہجری سے پہلے ہوگئی۔(قاض)

جعفر بن محد سرند بي مهندي

علامه ابن الجزری مخاید النهاید فی طبقات القراء "ش لکھتے ہیں کہ ابو القاسم جعفر بن محد سرند ہی نے امام قنبل کی عرضاً قراءت کی روایت کی ہے اور ان سے ابو بکر محد بن محد بن عمان طرازی نے روایت کی ۔

قاری جعفر سرند پی تیسری صدی ججری کے بیں۔اس کی دلیل بیہ ہے کہان کے استاذاور جاز کے شخ القراء ابوعمر حجہ بن عبدالرحمٰن مخز وی مکی معروف بر وقنبل' کی ولا دت ۱۹۵ ھیں ہوئی اور وفات ۱۹۱ ھیں جب کہ جعفر بن محمر سرند پی کے تلمیذ طراز بغدادی کی وفات ۱۸۵ ھیں ہوئی ہے، ان وفیات سے سرند پی کے دور کا یقین ہوتا ہے۔ (قاض)

حاكم ملتان جلم بن شيبان باطني

مشہور سیاح''البیرونی''کے مطابق جلم بن شیبان ایبا سب سے پہلا اساعیلی یا قرمطی ہے جس نے ''ملتان' پر قبضہ کر کے حکومت بنائی۔

حاکم مکران: جمال بن محد بن ہارون (در اس کے برا در ان مؤرخ بلاذری' فتوح البلدان' میں لکھتے ہیں پھر جاج بن یوسف نے "مجاعہ" کے بعد محمد بن ہارون بن ذراع نمری کو گورنر بنایا تو اس نے اپنے عہد گورنری میں جاج کی خدمت میں جزیرہ یا قوت کے حکمر ال کو بھیجا۔

تحفۃ الکوام کے مصنف رقم طراز ہیں کہ جاج بن یوسف تفقی نے محد بن الرون کو' مران' بھیجا تا کہ وہ جا کر ہندوستان اور سندھ کا نظم ونسق سنجا لے اور علاقیوں کی نئے کئی کرے، جنہوں نے پورے علاقے میں بدامنی پھیلا رکھی تھی اور نواحی علاقوں پر قابض بھی ہوگئے تھے۔ چنانچے محد بن ارون نے جنگ کرے مران اور اس کے نواحی علاقوں پر قبضہ کرلیا۔ جب محد بن قاسم اپنے اشکر کے ساتھ اور اس کے نواحی علاقوں پر قبضہ کرلیا۔ جب محد بن قاسم اپنے اشکر کے ساتھ میں مران' پنچے تو جاج کے تھم بر محد بن بارون کو باوجود بیاری کے مران میں متعین کردیا اور جب محد بن قاسم اول میں متعین کردیا اور جب محد بن قاسم ''بارمن بیل،' پنچے تو محد بن ہارون کا انتقال ہوگیا اور وہیں کردیا اور جب محد بن ہارون کی سات بیویاں تھیں ، جن کے بچاس اولا دہوئی ، ان لاکوں اور ان کی مات بیویاں تھیں ، جن کے بچاس اولا دہوئی ، ان لاکوں اور ان کی مائ حسب ذیل ہیں:

ا عیسیٰ ۲ - میران ۲۳ - جاز ۲۳ - تھک ۵ - رستم ۲ - جلال اوّل ان کی مال کا نام

د حمیراء 'تھا۔ ۸ - فرید ۹ - جمال ۱۰ - رادہ ۱۱ - بہلول ۱۲ - شہاب ۱۳ - نظام ۱۳
جلال ٹانی ۱۵ - مرید ان کی مال حمیری تھی۔ ۱۹ - رودین ۱۷ - موی ۱۸ - نوتی

۱۹ - نوح ۲۰ - مندہ ۲۱ - رضی الدین - مال کا نام حریم - ۲۲ - جلال ٹالٹ - مال کا

نام عاکشہ ۲۳ - آدم ۲۲ - کمال ۲۵ - احمد ۲۲ - حماد ۱۳۷ - سعید ۱۸۸ - مسعود - مال

مدی ۲۹ - شیر ۲۰۰ - کو ۱۵ - بلند ۲۲ - کمال ۲۵ سام ورالذین ۳۳ - حسن ۳۵ - حسین،

مدی ۲۹ - شیر ۲۰۰ - ابراہیم - مال کا نام فاطمہ - ۱۳۸ - عالم ۱۳۹ - علی ۲۰۸ - تیرکش

۱۲ - بہادر ۲۲ - نتیج زن ۲۲ - مبارک ۲۲ - ترک ۵۲ - طلح ۲۲ - عربی ۱۵۲ - شیراز

۱۲ - بہادر ۲۲ - تنیج زن ۲۲ - مبارک ۲۲ - ترک ۵۲ - طلح ۲۲ - عربی ۱۲ - شیراز

۱۲ - بہادر ۲۲ - تنیج زن ۲۲ - مبارک ۲۲ - ترک ۵۲ - طلح ۲۲ - عربی ۱۲ - شیراز

جب محمد بن ہارون کا انقال ہوا اس وقت مکران اور اس کے اطراف وا کناف کے علاقے اس کے قضے میں تھے،علافیوں کی شورش بھی ٹھنڈی پڑگئ تھی۔

لیکن اس کی دفات کے بعد یہ پوراعلاقہ دوحصوں میں بٹ گیا۔ ایک جسے پر اس کے فرزند جمال الدین کی اولا دقابض ہوگئ اور دوسرے جھے پر جمال الدین کے دوسرے بھائی اور ان کی اولا د۔ پچھ دنوں کے بعد ان میں جھاڑا ہوا اور دوسرے بھائی اس سرزمین کے تمام علاقوں میں بھیل گئے۔ جب کہ جمال الدین کی اولا د فکست کھانے کے بعد سندھ چھوڑ کر ' بچھ' کی طرف جلی گئے۔ سندھ میں اس خاندان کے بعد سندھ جھوڑ کر ' بچھ' کی طرف جلی گئے۔ سندھ میں اس خاندان کے بین سال میں بیائے جاتے ہیں۔

جاف اور بلوج اس محمد بن بارون مرانی کنسل سے بیں۔

جائدادربلوچ کے محد بن ہارون کی نسل سے ہونے کا مطلب ہیہ کہ ان کی ماؤں کا تعلق ان دونوں قبائل سے تھا اور باپ محد بن ہارون مکرانی نمری ہے۔ ان لوگوں نے بعد میں ان دونوں قبیلوں میں اپنے ماموں کے گھروں سے شادیاں کیس اور پھران کی نسلیں جلیں غرض کہ جائداور بلوچ کے محمد بن ہارون مکرانی کی نسل اور پھران کی نسلیس جلیں غرض کہ جائداور بلوچ کے محمد بن ہارون مکرانی کی نسل سے ہونے کا مطلب یہی ہے کہ یہ باپ کی طرف سے تو عربی ہیں اور ماں کی طرف سے ہندوستانی۔ (قاضی)

جمال الدين اوشي سندهي

شخ جمال الدین اوشی 'او چھ'کے اکابر صلحاء اور بزرگان دین مین سے تھے۔ انہی کا قول ہے کہ تصوف وسلوک کا ایک قدم، زمین پر چلنے کے ایک ہزار قدم سے بدر جہا بہتر ہے۔ بیشخ مسعود گئج شکر کے ہم عصر تھے۔ کرا مات اولیاء میں ان کا ایک مشہور واقعہ مذکور ہے۔

خطيب جمال الدين بإنسوى

شخ جمال الدين بانسوى تقوى اوردين دارى كے ساتھ تمام علوم وفنون بالخصوص فقه ميں نماياں منھے، امام ابو حنفية كى نسل سے متھے۔ شخ فريد الدين مسعود كنج كے اجله خلفاء میں ہیں اوران کے منظورِ نظر نھے۔ان کی مجبت میں شیخ مسعود ۱۲ ارسال تک "ہانی" میں قیام پذیر رہے اور انھیں بجائے جمال کے" جمالنا" کے لفظ سے ماد کما كرتے شخصہ كہا جاتا ہے كہ يشخ جمال الدين دہلي گئے تو حضرت نظام الدين اولياء نے ان کا کچھالیا استقبال نہیں کیا جیسا کہ اہل علم وصل کا عام طور بروہ نہایت احترام ہے استقبال کیا کرتے تھے۔اس کی وجہ سے شیخ جمال الدین کے دل میں بڑاا حساس ہواا در حضرت نظام الدین اولیاء سے اس کی بابت دریافت کیا تو انھوں نے جواب دیا كەاب تك ہم الگ الگ تھے ايك دوسرے سے كوئى رابطہ نەتھا، اس ليے ہرايك ير . دوسرے کا احر ام واکرام کرنا واجب تھا۔لیکن جب بید ہارے درمیان کی دوری ختم ہوگئاتو ہم ایک ہی شخص بن گئے اور ظاہر ہے کہ کوئی بھی انسان خودا پنااحتر ام ہیں کرتا۔ ایک دفعہ کا ذکر ہے کہ حضرت نظام الدین اولیاء کی خدمت میں ایک شخص حاضر ہوا تو حضرت نے اس سے شیخ جمال الدین کے بارے میں معلوم کیا اور کہا كهمار ، جمال كاكيا حال حيال ب؟ الله في تاياكة بي في جدامون كي بعد وہ ایسے متقشف بن گئے کہ ندریاضت دمجاہرہ سے ایک لمحہ کے لیے غافل ہوتے ہیں اور نہ ہی کسی دن روز ہے کا ناغہ ہوتا ہے۔ بیہ جواب س کر حضرت نظام الدین اولياء كوخوشى مولى اورفر مايا الحمد الله

شاه سنده: چنیر سومره

چنیر سندھ کے سومرہ خاندان کے بادشاہوں میں تھا۔ لیلی اور کوٹرو کے ساتھ اس کا قصہ سندھ میں مشہور ہے اور سندھی زبان میں اس پرنظم بھی کہی گئی ہے۔ بیظم ادر کی بیک لاری نے فارس میں کھی تھی۔ (تحذہ الکرام)

جودر مندي

جن علماء وحكمائ مندى طب ونجوم سے متعلق تصانیف كا ابن النديم كوعلم بوا،

ان میں ایک جودر مندی بھی ہیں۔

ابن الی اصبیعہ نے "عیون الأنباء" میں لکھاہے کہ جودر ہندوستان کے اطباء اور وائش وروں میں سے ایک ہا کمال حکیم اور دائش ور، اپنے عہد میں نمایاں اور متاز تھا۔ طب پراس کی بڑی گری نظر تھی اور علوم طب و حکمت پراس کی بہت کی کتابیں ہیں۔ من جملہ ان سکا بوں کے "محتاب الموالیه" بھی ہے جس کا عربی زبان میں ترجمہ ہوچکا ہے۔

شاه الور كا بها أنى : حجهو ثاامراني

صاحب "محفة المكرام" نے لکھا ہے کہ "الور" (ارور) پاکتان كى تبائى وربادى كے بعد، مہارا جالور دلوارائے" بہانبرا" معروف برجمن آباد ميں سكونت پذير ہوگيا۔ اس كا ايک جھوٹا بھائى تھا جس كا نام جھوٹا امرانى تھا جھوٹا امرانى تھا جھوٹا امرانى تھا جھوٹا امرانى تھا جھوٹا امرانى، بجين تى سے فد بہ اسلام كوزيز ركھا تھا چنال چدوہ شہر سے بجرت كرگيا، قرآن حفظ كيا ،اسلام كونا يز ركھا تھا چنال جدوہ شہر سے بجرت كرگيا، قرآن حفظ كيا ،اسلام كونا يز ركھا تھا جنالى جدوہ شہر سے بجرت كرگيا، قرآن حفظ كيا ،اسلام كونا يز ركام كا علم عاصل كيا اور بہت سچا پكامسلمان بن گيا۔ جب يہ "برجمن آباد" بہنچا تو شہروالول نے شادى كرنے كے ليے كہا مگروہ تيار نہ ہوا كى رشتہ وار نے طز آاس سے كہا كہ شايديد "ترك" يعنى مسلمان كعبہ جاكرہ بي كى مربر آوردہ عربی كی دول" جوٹا اس سے كہا كہ شايديد "ترك" يعنى مسلمان كعبہ جاكرہ بي كى امرانى" جي كرنے كے اداد ہے مكمرمہ بنجے گيا۔

ایک دن ایک عورت پرنظر پڑی جو کسی او نجی جگہ بیٹھ کر تلاوت کر ہی تھی۔
چناں چہ یہ قرآن سننے کے لیے کھڑا ہو گیا۔عورت نے کہا اے آدمی! تم یہاں کیوں
کھڑے ہو؟ اس نے جواب دیا قرآن سننے کی خاطر۔ نیز کہا کہ اگرتم مجھے تجوید کے
ساتھ قرآن پڑھنا سکھا دوتو میں تمہارا غلام ہوجاؤں گا۔ بیس کر عورت ہوئی کہ میری
استاذ فلاں شخص کی لڑکی ہے اگرتم لڑکیوں کا سالباس پہن کرآؤتو میں تمھیں اس کے
پاس لے چلوں گی۔ یہ عورت علم نجوم میں بڑی مہارت رکھی تھی۔ ایک روزاس کے پاس

ایک عورت اپن او کی کے لیے اس سے طالع اور قسمت معلوم کرنے آئی۔ اس وقت درجیونا" وہیں موجود تھے۔ اس نے جب اس عورت کو جواب دیا تو جیوئے نے اس سے کہا آپ لوگوں کے نفیب اور طالع جانتی ہیں مگرآپ کواپنی قسمت کے بارے میں بھی پچھ معلوم ہے؟ اس نے کہا کہم نے بہت اچھالیا دولایا۔ اب تک جھے اس طرح کی بات کا خیال بھی نہیں آیا تھا۔ پھر اس نے اپنے نفییب کی بابت غور کیا اور کینے گی کہ میں دسندھ" سے تعلق رکھنے والے کسی شخص کی بہو بوں گی۔ چھوٹا بولا و کیھئے کہ ایسا کب بوگا اور کیسے ہوگا ، بولی جلدہی ہوگا۔ چھوٹا نے کہا دیکھووہ شخص کون ہے؟ تو اس نے غور کرنے کے بعد کہا قطعی طور پروہ شخص تم ہو۔ تم ایسا کروک میر سے ابنی کو کی اس ناح کی بات کا تذکرہ بیغام بھیج دو کیوں کہ میں تمہاری قسمت میں ہوں۔ جب چھوٹا نے اس بات کا تذکرہ اس عورت کے والدین سے کیا تو انھوں نے اس سے ابنی لوکی کی شادی کردی۔

ایک عرصے کے بعد چھوٹا اپنی ہوی ''فاطمہ'' کے ساتھ مکہ کرمہ سے وطن والی ہوا۔ جب دلوارائے کوان کا قصہ معلوم ہوا تو حسب عادت'' فاطمہ'' کے تیک بھی اس کے دل میں خواہش پیدا ہوئی اور اسے حاصل کرنے کی کوشش کرنے لگا۔ مگر بھائی چھوٹا اس بات سے انکار کرتا رہا۔ ایک روز'' چھوٹا' اپنے گھر سے باہر گیا تو دلوارائے فاطمہ کود کھنے کی خاطر اس کے گھر پر چلا گیا۔ ابھی وہ گھر میں ہی تھا کہ بچھے ہے'' چھوٹا' آگیا۔ اس سے پہلے وہ دیکھ ہی چکا تھا کہ دلوارائے نے اس کی بیچھے ہے'' چھوٹا' آگیا۔ اس سے پہلے وہ دیکھ ہی چکا تھا کہ دلوارائے نے اس کی بیچھے سے '' چھوٹا' آگیا۔ اس سے پہلے وہ دیکھ ہی چکا تھا کہ دلوارائے نے اس کی بیچھے سے '' جھوٹا' آگیا۔ اس سے پہلے وہ دیکھ ہی چکا تھا کہ دلوارائے نے اس کی بیچھے سے '' کھوٹا کر کہا کہ بادشاہ کی بربختی اور برپائی کے باعث برشہر ویران اور تاہ ویر با دہونے والا ہے۔ چناں چہ تیں درات کے اندر پوراشہرز میں میں دھنس گیا۔

تیں درات کے اندر پوراشہرز میں میں دھنس گیا۔

about the first and the same

was a transfer of the second

یاب: ح

حبابهسندهيه

حبابہ سندھیہ، یزید بن عمرو بن ہمیرہ و فزاری کی والدہ ہیں۔ مورخ ابن قتیبہ المعاد ف" کے اندر عمرو بن ہمیرہ و فزاری کے تذکر سے میں لکھتے ہیں کہ یہ یزید بن عبد الملک کے عہد میں چھ سال تک عراق عرب اور عراق عجم کے گور فرر سے۔ اس کے بعد ابن قتیبہ نے لکھا ہے کہ حبابہ یزید بن عبد الملک کی با ندی تھی ، حصے ولایت عراقین کے عہد میں قید کیا گیا تھا۔ یہ اسے ''ابی'' کہہ کر پچارتی تھی۔ یزید بن عبد الملک کی وفات ''شام'' میں ہوئی۔ بعد میں عمرو کے تین لڑ کے ہوئے یزید بن عبد الملک کی وفات ''شام'' میں ہوئی۔ بعد میں عمرو کے تین لڑ کے ہوئے یزید بن عبد الملک کی وفات ''شام'' میں ہوئی۔ بعد میں عمرو کے تین لڑ کے ہوئے یزید بنوں کا پانچ سال تک والی رہا۔ بینہایت یا کیزہ سیرت شخص تھا۔ ہم ماہ اپنچ مال تک والی رہا۔ بینہایت یا کیزہ سیرت شخص تھا۔ ہم ماہ اپنے بیاں آنے والے کو پانچ لا کھ در ہم تھیم کرتا ، رمضان میں ہر شب لوگوں کو کھا نا کھلاتا ، پھر لوگوں کی دس ضرور تیں پوری کرتا تھا۔ بیشکل وصورت کا برواحسین اور بارعب انسان تھا۔ اس کی مال سندھ کی رہنے والی تھی۔

ابن قتیبہ نے عمر وبن بزید کی مال کو جوسندھی بتایا ہے تو بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ اس سے مرادیمی حبابہ ہے جو بزید بن عبد الملک کی باندی تھی۔ واضح رہے کہ سندھ کی باندیاں بچوں کی د کھے رکھے، ان کی تربیت اور حسن خدمت کے اندوعر بوں میں کافی مشہور تھیں۔ یہی وجہ تھی کہ عرب اپنے بچوں کی پرورش، مگہ داشت اور د کھے بھال کے لیے سندھ کی عورتوں کوزیا دہ پبند کرتے تھے۔ (تاض)

حبيش بن سندهي بغدادي

خطیب بغدادی نے میں اورا ام احمرین خیاد "میں اکھا ہے کہ میش بن سندی قطیمی فی میں اللہ بن محرجیتی اورا ام احمرین خیال سے حدیث بیان کی ہے اوران سے محمد بن مخلا نے روایت کی ۔ قلام دابن الجوزی نے حضرت امام احمد بن خبروں نے میں ان کے شیوخ واصحاب میں حبیث بن سندھی کا بھی تذکرہ کیا ہے جنہوں نے امام موصوف سے می الاطلاق حدیث بیان کی ہے۔

حام الدين المتاني المن والمد المان ا

'نو هذه المحواطر '' كاندران كانعارف ال طرح كيا كيا هي المحروف حمام الدين ملتاني علم وضل اورسلوک ومعرفت كي حوالے سے مشہور ومعروف رجال ميں سے بيں۔ انھوں في سلوک وتصوف شخ صدرالدين محد بن ذكريا ملتاني سے حاصل كيا۔ بعد مين 'بدايوں' جا كرا باد ہو گئے اور وابين انقال كيا۔ انھوں نے وفات سے بہلے ايک مبارک خواب و يكھا كه حضورا كرم صلى الله عليه و ملم شهر بدايوں سے بابرايک تالاب سے وضوفر مارہ بيل المحد الله على تو وور كرائ جگه گئے ، چنان چرائيں اى جگه الله والد انھوں نے وصيت فرمائی چنان چرائيں اى جگه وسے فرمائی محد الله والله الله والله الله والله على الله على الله

عاكم باميان جسن الدار المائية الدار المائية الدارة الدائدة

مَدِ الْمِيانَ عَلَيْ الْمَانَ عَلَيْهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللّلَّ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّلَّا اللَّهُ ال

أكنده صفحات من آئے گا۔

حسن بن ابوالحسن بدا بونی

"نزهة المحواطر" كاندر ساتوس صدى اجرى كاشخصيات كذيل مين ان كى بابت لكها ب كري خصال حسن بن ابوالحن معروف به "سن تاب" رسى بنتے والا اصحاب علم فضل اور ارباب سلوك ومعرفت ميں سے متھے۔ انھول نے قاضى حسام الدين ملتانی دفين بدايوں سے بيڑھا۔ نيز قاضی حميد الدين محد بن عطاء نا گورى سے بھی اكتاب علم كيا۔ شخ نا گورى كی صحبت ميں عرصے تک رہے اور درجہ كمال تک بہنچ گئے۔ ان كے فيقى بھائى بدر الدين ابو بكر نے ان سے علم حاصل كيا۔ رسى بث كر ابنا كر بسركرتے متھے۔ وفات اور تدفين دونوں بدايوں ميں ہوئى

حسن بن حامد ديبلي بغدادي

خطیب بغدادی نے اپن تاریخ میں کھاہے کہ سن بن حامد بن سن بن حامد بن مامد بن خاصد بن حاصد بن حاصد بن حصر بن علی من محمد بن علی بن محمد بن سعید موصلی سے سنا، مجھ سے ان کی روایت سے محمد بن علی صوری نے حدیث بیان کی کہ وہ صدوق، صاحب تروت تا جر تھے۔ بغداد کی ' زعفر انی'' گلی میں جومحلاء' خان ابن حامد' ہے وہ انہی کی جانب منسوب ہے۔ خطیب نے مزید لکھاہے کہ ہم سے صوری نے، ان سے حسن بن حامد بن مسلم علی خری نے، ان سے عبداللہ بن سلمہ کے میں سنا وہ کہتے ہیں کہ ہم سے عبداللہ بن الوحان میں مان کے یہاں محمولی ہی امان نظر آیا، وہ حد بنے بیان کی ان کے والد نے اور و تے رہتے ۔ وہ کہتے ہیں کہ ہم سے عبدالعزیز بن ابوحان میں کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے سے بیان کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے بیان کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے میں کہ میں میں کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے میان کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے بیان کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے نے بیان کیا ان کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور انھوں نے حضر ت ابو ہر ہر ہو گئے کیا کہ میں کہ میں میں کہ میں کیا کہ کو کیا کہ کو کیا گئی کے والد نے ابوس عیر مقبری سے اور کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کو کیا کہ کو کو کہ کہ کیا کہ کیا

روایت کی کہ انھوں نے بیان کیا کہ حضور اکرم سے آتھ کا ارشاد ہے 'مَنْ عَمَّرَه اللّهُ سِیِّنْ سَنَةً فَقَدْ اَعَدَرُ إليه في العمر ''کہ اللّٰدِ تعالی نے جس محض کوساتھ سال عمر دے دی تو عمر کی بابت اس نے اپنا پوراحق حاصل کرلیا۔

صوری نے مجھ سے کہا کہ یہ حدیث حافظ عبدالغی بن سعید نے ایک شخص کی روایت سے بیان کی جس نے ہمارے شخ ابو حالا سے روایت کی ۔ وہ کہتے ہیں کہ ابن حالا نے بتایا کہ انھوں نے دیاج ، ابو بگر محمد بن حسن نقاش اور ابولی طوماری سے ابن حالا نے بتایا کہ انھوں نے دیاج ، ابو بگر محمد بن حسن نقاش اور ابولی طوماری سے بہتے بھی نہیں تھا۔ مزید لکھا ہے کہ ہمیں حسن بن علی جو ہری اور علی بن محن تنوخی نے سنایا، ان کا کہنا تھا کہ انھیں خود ہمیں حسن بن حالا نے بیشعر سنایا:

شریت المعالی غیر منتظر بها الله کسادا ولاسوقا یقوم لها آخری ولاآنا من آهل المکاس و کلما الله توفرت الائمان کنت لها اشری در می نے بلندیاں خریدلین ان کی بابت ندکساد بازاری کا انظار کیا اور ندی اس کا کہ کوئی دو مرا بازار کے ۔ ندیش فیکس وصول کنندہ بنوں اور جب بھی قیمتیں گراں ہوتی بی توشی بی ان کا خریدار ہوتا ہوں '۔

خطیب فرماتے ہیں کہ مجھ ہے صوری نے بیان کیا کہ ان سے حسن بن حامد نے بتایا کہ ان سے حسن بن حامد نے بتایا کہ متنبی بغداد آکر ان کامہمان ہوا۔ اس نے ان سے ایک روز کہا اگر میں کئی تا جرکی منقبت سرائی کرتا تو تمہاری کرتا۔

خطیب لکھتے ہیں میرا خیال ہے کہ ان کی وفات مصر میں ابتدائے شوال مدین بروز الوار ہوئی۔

مؤرخ ابن عساكر "التاريخ الكبير" مين فرمات بين حسن بن حامد بن حسن بن حامدة يلى "بغدادى اويب ومشق" آئے اور انھوں نے "ومشق" أور "مصر" دونوں جگہوں تراحاد بيت بيان كيا كا حضرت عمر ن بیان فرمایا "لواتیت براحلتین: راحله شکر و راحله صبر لم آبال آیهما رکبت" کراگرمیرے پاس دوسوار بال لائی جا کی ایک راحلهٔ مروز میرود بال کرداحلهٔ میراتو مجھے کوئی پرواند موگ کر میں ان دونوں میں سے کس پرسواری کردل نیز به روایت حضرت ابو بریرهٔ بیان کیا کرحضور شان کا ارشاد ہے "من عمره الله ستین مستة فقد اعذر إلیه فی العمر" اسے خطیب بغدادی نے روایت کیا ہے۔

مؤرخ ابن الجوزی نے اپنی تاریخ "المنتظم" کے اندر ۱۸۵ میں وفات پانے والے کبارعالماء کے تذکرے کے ضمن میں لکھا ہے کہ ابوجم اویب حسن بن حامد بن حسن بن حامد بن حسن بن حامد بن حمد بن سعید موسلی سے سنا، وہ ایک مالدار تاجر بنے متنبی جب بغداد آیا تھا تو آتھیں کے یہاں تیام کیا تھا، یہی اس کے تمام امور کے گرال اور ذھے دار تھے، اس موقع پر تنبی نے ان سے کہا کہ اگر میں کسی تاجر کی تعریف و توصیف کرتا تو تمہاری کرتا ان سے محدث صوری نے روایت کی ، وہ صدوق شھے۔

آ گے لکھا ہے کہ ہم سے قزاز نے بتایاان سے احمد بن علی بن ثابت نے بیان کیا کہ مجھ سے جو ہری اور تنوخی نے بڑھ کرسنایا ان کا کہنا تھا کہ ہم سے خود حسن بن حامد نے مذکورہ بالاشعر پڑھ کرسنایا۔

حسن بن حامد کی وفات کی بابت خطیب بغدادی اور ابن عساکر کی بات صحت سے زیادہ قریب ہے۔ جب کہ ابن الجوزی کی بات قرین قیاس معلوم ہیں ہوتی۔ (تاض)

حسن بن محرصغانی لا موری بغدادی

"الجواهر المضینه" میں ان کی بابت لکھا ہے کہ ابوالفضائل حسن بن حمد بن حسن بن حمد بن حسن بن اساعیل قرش ،عدوی ،عمری ،الا مام الحقی حضرت عمری نسل سے متھے ۔صغانی ، محمد ، لا ہوری ،متوفی بغداد ، فقید ، محمد شانعوی ،معروف بدر سی ساتھ ۔ یہ ہندوستان کے ایک متھے ۔ کو ہوری لام پر زبر ، واؤ پر سکون ہاء پر زبر کے ساتھ ۔ یہ ہندوستان کے ایک

بڑے شہر 'لا ہور' کی جانب منسوب ہے۔ اسے لہا ور بھی کہا جاتا ہے۔ ان کی پیدائش شہر 'لا ہور' میں بروز جعرات ،ارصفر کے کھھ میں ہوئی اور نشو و نما شہر 'نفرند' میں۔ ان کی بغداد آمد ماہ صفر ۱۹ ھیں ہوئی اور و بیں شب جعہ ۱۹ رشعبان ، معرف نا میں وفات پائی۔ اپنے ہی گھر 'نالحو یہ المطاهری' میں مدفون ہوئے۔ بعدازاں ان کی نعش دوبارہ تدفین کے لیے مکہ کرمہ لے جائی گئی۔ ایسا اس لیے کیا گیا کہ انھوں نے وصیت کر رکھی تھی۔ نیز مکہ کرمہ لے جاکر فن کرنے والے کو بچاس دینارد یے جائے گئی وصیت کی تھی۔ انھوں نے کا الاھیں دیوان عزیزی بچاس دینارد یے جائے گئی میں واپس ہوئے ، پھر بچاس دینار سے جائے گئی واپس ہوئے ، پھر اس سال شعبان میں قاصد بنا کرو ہیں واپس بھیج دیے گئے اور ہندوستان سے اس سال شعبان میں قاصد بنا کرو ہیں واپس بھیج دیے گئے اور ہندوستان سے کا سے میں بغدادوا پس ہوئے۔

انصول نے مکہ مرمہ عدن اور ہندوستان شن ساع صدیث کیا۔ "مجمع البحرین" بارہ جلدوں میں کمی "العباب" تصنیف کی اور اس کی کمیل میں ابھی تنین یا کھوزیا دہ لفظ رہ گئے تھے کہ انقال فرما گئے۔ فن لغت میں "المشوادر" تصنیف فرمائی۔ القلائد السمطیة فی شرح الدریدیة کی شرح کمی۔ نیز "التراکیب، فعال علی وزن حدام وقطام، فعلان علی وزن سیان، کتاب الأفعال، کتاب المفعول، کتاب الأسفار، کتاب العروض، کتاب الأفعال، کتاب المفعول، کتاب الأسفار، کتاب العروض، کتاب السماء الأسد، کتاب السماء الذئب، مشارق الأنوار النبویة، مصباح الدجی، علم صدیث میں الشمس المنیره، شرح بخاری شریف (ایک جلد) در رالسحابة فی وفیات الصحابة، مختصر الو فیاث، کتاب الضعفاء اور کتاب الفرائض تالیف فرمائی۔ بینها بیت نیک عالم تھے۔ صاحب جوابر مضیر سے فرید کلی اے کہ جھے سے حافظ دمیاطی نے بتایا کہ صاحب جوابر مضیر سے فرید کلی اسے کہ جھ سے حافظ دمیاطی نے بتایا کہ صاحب جوابر مضیر سے فرید کلی المی کے جھ سے حافظ دمیاطی نے بتایا کہ صاحب جوابر مضیر سے فرید کلی ایک کا سے حافظ دمیاطی نے بتایا کہ الم

صغانی نے انھیں خود ہی بغداد میں میشعر پڑھ کرسایا:

تسر بلت سربال القناعة والرضا الله صبياً وكانا في الكهولة ديدنى وقد كان ينهاني إلى حف بالرضى الله وبالعفو أن أولى يدا من يدى دنى دني درس نهين من قاعت اوررضا كوابنالباس اور برها بي من طبيعت ثانيه بناليا تها ميه بات مجهد وكررضا اوردر كررضا اوردر كررضا وردر كررسا وردر كروسا وردر كررسا وردر كررسا وردر كروسا وردركر كروسا وردر كروسا وردر كروسا وردر كروسا وردر كروسا وردر كروسا و

كوايخ التهن عقريب كرول"-

ابن رجب طبلی" ذیل طبقات الحنابلة" للقاضي ابویعلی کے اندرموفق الدین ابو محمر عبدالقا ہر بن محمد بن علی فوطی بغدادی کے تذکرے کے تخت لکھتے ہیں کہ میں نے ۸۷ ھ یا ۶۷ بھ میں بخداد کے اندر ابوالعباس اجمد بن علی بن عبدالقاہر بن فوطى سے سنا كه علامه ابوالفضائل حسن بن محد صغاني لغوى كاجب بغداد ميں انتقال ہونے لگا تو انھوں نے وصیت فرمائی کہ انھیں مکہ مکرمہ لے جا کر دفنا دیا جائے۔جب انھیں اٹھا کر لے جایا جانے لگا تو میرے جدمحتر م موفق الدین بن عبدالقا ہر بن فوطی نے اس سلسلے میں فی البدیہ بیشعر کہا۔ انھوں نے علامہ ابوالفصائل سے پڑھا تھا۔ أقول والشمل في ذيل النأى عثرا الله يوم الوداع ودمع العين قد كثرا أبا الفضائل! قد زودتني أسفا ركي أضعاف مازدت قدرى في الورى أثرا قد كنت تودع سمع الدار منتظما الله فخذه من جفن عيني اليوم منتشرا "آج جدائی کے دن جب کہ جاور دوری کے دامن میں لڑ کھڑ اربی ہے اور أنكصين التكبارين مجھے بيكهنا بردر باہ ابوالفطائل! تم في مخلوق ميں جس قدر ميرا مرتبه برهایا،ای ہے کہیں زیاددانسوں میں مبتلا کیاتم نے تو دیوار کے کانوں کوایک یردیا ہواباردے رکھا تھاتو آج میری آنکھوں کے پلکوں ہے بھرا ہوا حاصل کرانو'۔ یہ بات مارے شخ نے ای طرح ہم سے انقطاع کے ساتھ بتائی کیوں کہ انھوں نے اپنے دادا کوئیں دیکھا۔

امام وہی "دول الاسلام" کے اندر ۲۵۰ھ میں رونما ہونے والے اہم

واقعات کے تحت لکھتے ہیں کہ اس سال، صاحب تصانیف کیرہ علامہ رضی الدین سن ہیں ہم ہندی قنعانی کی بغداد میں وفات ہوئی۔ اس وفت ان کی عمر تہ ترسال تھی۔
علامہ این العماد عنملی نے ''المشدر ات ''کے اندر * 10 ہے تحت الکھا ہے کہ اس سال علامہ رضی الدین ابوالفضائل سن بن محمد بن حیدرعدوی عمری ہندی لنوی، مقیم بغداد کا انتقال ہوا۔ ان کی پیدائش کے کہ دھ میں شہر لا ہور میں ہوئی اور نشو ونما غزنہ میں۔ بعد میں بغداد آئے۔ بیغام رسانی کی بابت بار بار ہندو ستان آئے گئے۔ انھوں نے مکہ مرمہ میں ابوالفتو رج بن مصری سے اور بغداد میں سعید بن رفاذ سے ساع کیا۔ عربی زبان دانی ان پرخم تھی، فن لغت میں ان کی کئی اہم کتابیں بھی بی ساع کیا۔ عربی زبان دانی ان پرخم تھی، فن لغت میں ان کی کئی اہم کتابیں بھی وفات ماہ شعبان میں ہوئی اور نعش کہ کہ مرمہ لے جاکر دفن کی گئی۔

"نزهة الحواطر"كاندران كيسليط مين جو يحداكها كيا باسكا خلاصهاس طرح ب

جب یہ بڑے ہوکر س شعور کو پہنچ گئے تو اپنے والد محرم سے حضول علم کیا۔
سلطان قطب الدین ایب نے شہر لا ہور کے منصب قضاء کی پیش کش کی مگر انھوں
نے منظور نہ کی اور غرنہ جا کر تدریس وافادہ میں معروف ہوگئے۔ وہاں سے مکہ مرمہ نیز عدن کے علماء سے حاضر ہوئے اور ایک عرصے تک قیام پذیر رہ کر مکہ مرمہ نیز عدن کے علماء سے حدیث کا ساع کیا۔ فلیفہ ناصر لدین النہ عباس کے عہد میں ۱۱۵ ہے ہیں دوبارہ بغداد گئے فلیفہ نے انھیں بلوایا۔ فلعت سے نواز ااور خط دے کر ۱۱۲ ہ میں سلطان مشمس الدین المش کے پاس ہندوستان بھیجا، جہاں کئی سال مقیم رہے اور ۱۲۲۲ ہے میں ہندوستان سے واپس ہوتے ہوئے جج کیا۔ یمن گئے اس کے بعد بغداد واپس ہندوستان آئے اور وہاں سے ۱۳ ھیں بغدادوا پس لور فائد رضیہ کے بات کی بار پھر مستنصر باللہ عباس کی طرف سے قاصد بن کر سلطانہ رضیہ کے پاس ہندوستان آئے اور وہاں سے ۱۳ ھیں بغدادوا پس لوٹے اور وہاں ہے ۱۳ ھیں بغدادوا پس لوٹے اور وہاں سے ۱۳ ھیں بندوستان آئے اور وہاں سے ۱۳ سے ۱

علامہ دمیاطی فرماتے ہیں کہ ان کے ساتھ ایک نجوی تھا، اس نے ان کی پیدائش کے وقت ہی موت کی ہات بتادی تھی۔ چنا نچے انھیں اس دن کا انظار رہتا تھا آخر کاروہ دن آگیا۔ بیہ ہالکل ٹھیک ٹھاک تھے، ساتھیوں کے لیے کھانا تیار کرایا اور ہم ان سے جدا ہو کر ساحل دریا چلے گئے، وہیں ایک شخص نے جھے ان کی وفات کی خبر دی۔ میں نے کہا ابھی تو ہم چند ساعت پہلے ان کے ساتھ تھے۔ استے ہیں قاصد آیا اور ان کے اچا نک انتقال کی خبر دی۔

مزید فرمات بین کردی بهت نیک سیرت عالم، خاموش طبیعت بفضول گوئی سے دور افقیہ محدث ماہر لفت اور جملے علوم وفنون میں افھیں دست دی تھی۔ مکہ مرمہ عدن اور جملے علوم وفنون میں افھیں دست دی تھی۔ مکہ مرمہ عدن اور کہار علماء کی صحبت سے بہرہ وررہ ہے۔ افھوں نے متعدد کتا بیں تصنیف کیس فن جرح وقعد یل سے بھی اعتباء کیا ان کی تصنیفات چیا دانگ عالم میں بھیل گئیں اور اس وقت کے تمام علماء نے سرنیاز ان کے سامنے تم کیا۔ علامہ سیوطی کھتے ہیں کہ ریم جر فی زبان کے علم بردار شخص تھے۔ ذہبی نے لکھا علامہ سیوطی کھتے ہیں کہ ریم فرماتے ہیں کہ پیلفت نقد اور صدیث میں امام سے کہ لغت دانی ان برختم تھی۔ دمیاطی فرماتے ہیں کہ پیلفت نقد اور صدیث میں امام سختے۔ ان سے شخ شرف الدین دمیاطی، نظام الدین محمود بن عمر ہروی می الدین الوال بقاء صالح بن عبد الله بن جعفر بن علی بن صالح اسدی کو فی معروف بدائن الوال بقاء صالح بن عبد الله بن جعفر بن علی بن صالح اسدی کو فی معروف بدائن الدین محمود بن الوالجی اصدی کو فی معروف بدائن بن ابوالجی اسدی کو فی معروف بدائن الدین محمود بن ابوالجی الدین میں بن ابوالجی اسدی کو فی معروف بدائن بن ابوالجی اسدی بیت سے علاء ومحد ثین نے اکتساب فیض کیا۔

ان كى ايك كتاب كانام مشارق الانوار النبوية فى صحاح الاخبار النبوية " عدال مين انفول فى دو بزار جهيالين احاديث جمع كى بين - برباب اور برنوع ك شروع مين اس مين مذكور احاديث كى تعداد ذكركردى عدادراك كى بابت بدالفاظ كه بين: "هذا كتاب أرتضيه وأستضى بضيائه والعمل بمقتضاه لخز انة المستنصرين الظاهرين الناصرين المستضى العباسى

الحمد لله محى الرحم ومجرى القلم الخ" مزيدتكما ٢ كـ جب مين "مصباح الدجى اور الشمس المنيرة"كى تالف سے فارغ مواتوان ميں نے این دوسری دو کتابون: النجم و الشهاب کی احادیث بھی شامل کردیں، تا کہ بیتے احادیث کی جامع ہوجا تیں۔آ گے لکھا ہے کہ یہ کتاب فیما بنی وبین الله صحت ورضا كى بابت جحت ہے۔ اس میں مختلف حروف كے ذريعے دواوين حديث كى جانب اشارہ کیا گیاہے۔مثلاً خاء سے مجھے بخاری میم سے مجھے مسلم اور قاف سے ان دونوں کی جانب اشارہ کیا گیا ہے۔ اس کتاب کی ترتیب نہایت عمرہ ہے، کل بارہ ابواب ہیں۔ بہلے باب میں دوفصلیں ہیں: بہلی فصل کے اندران احادیث کوذکر کیا ہے جن کے شروع میں "دمن" موصولہ یا شرطیہ ہے اور دوسری میں الی احادیث سے اعتناء ہےجن کا آغاز،''من''استفہامیہ سے ہوتا ہے۔دوسراباب ایسی احادیث پرمشمل ہے جن کے شروع میں 'ان' ہے اس باب میں دی فصلیں ہیں۔ تنسر اباب ''لا' کی بابت مجهوتهاباب "اذ"اور"اذا" سے شروع ہونے والی احادیث برمشمل ہے۔ یا نچویں باب میں بھی دوفصلیں ہیں: پہلی فصل حرف" ما" اوراس کی اقسام سے متعلق احادیث کے لیے ہے اور دوسری "یاء" اور اس کے متعلقات کے لیے۔ چھٹے باب میں بار ہ فصول ہیں۔ قد ،لو، بین اور ہکذا دغیرہ الفاظ سے شروع ہونے والی احادیث کے ليے۔ ساتواں باب سترہ فصول پر محیط ہے، جن میں مبتدانیز معرف باللام وغیرہ سے اعتناء ہے۔ آٹھویں باب میں چھفسول ہیں۔نواں باب 'معرد' وغیرہ کے بیان میں۔ دسوال فعل ماضی سے متعلق، گیار ہوال "لام ابتداء" کی بابت اور بار ہوال باب اسائے قدسیہ پر مشمل ہے۔ اس کتاب کی بہت می شرعیں لکھی گئیں ہیں، ان میں ہے گئی ایک کا تذکرہ''حلیی''نے''کشف الظنون''میں بھی کمیا۔ ہے۔

"مصاحب تزكره كى ايك كتاب" مصباح الدجى فى حديث المصطفى " مے حلي نے لكھا ہے كماس ميں حديث كى سنديں مذكور ہيں ۔ حديث ميں ايك دوسری کتاب "الشمس المنیرة" بھی ہے۔فن لغت میں بیس جلدول مشمل ایک کتاب "العباب الزاجر" بھی انہی کی تھنیف کردہ ہے۔ علامہ جلی نے ایک کتاب "العباب الزاجر" بھی انہی کی تھنیف کردہ ہے۔ علامہ جلی نے "کشف الظنون" میں لکھا ہے کہ شنخ صغانی بھی اس کتاب کو کممل نہ کرسکے۔میم کی شختی تک پہنچ کر" بکم" کے مادہ کی بابت لکھ ہی رہے سے کہ وفات ہوگئی۔اس وجہ سے یہ شعر کہا گیا:

چلی نے لکھا ہے کہ ''العباب الزاجو'' کی ترتیب جوہری کی ''الصحاح'' کی تر تیب کے مطابق ہے۔ علامہ تاج الدین بن مکتوم ابومحر بن عبدالقا در قیسی حنی منون ١٥٥٥ هف العباب الزاجر" اور" كتاب الحكم" وونول كو يكا كرديا ب-علم لفت يران كي دومري كتابيل بيه بين: مجمع البحرين، النوادر في اللغة والتراكيب، أسماء الفارة، أسماء الأسد، أسماء الذئب، نير بخاري شریف کی ایک شرح بھی لکھی۔ علاوہ ازیں دررالسحابة فی وفیات الصحابة، العروض، شرح أبيات المفصل، بغية الصديان، كتاب الافتعال، شرح القلادة السمطية في توشيح الدريدية، كتاب الفرائض، بھی ان کی تصانیف ہیں۔ دو چیو نے جیو نے رسالے بھی لکھے، جن میں موضوع احادیث کا اعاظه کیا گیا۔ ان دونول کے بارے میں حضرت مولانا عبدالحی کمھنوی ن "الفوائد البهية في تراجم الحنفية" ميل كهام كرانهول في ان ميل يهم الیں احادیث بھی شامل کردیں جوموضوع نہیں ہیں،اسی بناء پراٹھیں ابن الجوزی اور صاحب "سفر السعادة" جيے متدد ائمہ جرح وتعديل ميں شاركياجاتا ہے۔

علامة فاوى نے "فتح المغیث بشرح الفیة الحدیث " میں اکھا ہے کہ مغانی نے ان دونوں رسالول کے اندر "الشهاب" للقضاعی والنجم" للاقلیتی وغیرہ مثلاً اربعین الإبن و دعان، الوصیة لعلی بن أبی طالب، خطیة الوداع، ابوالد نیا افتح ، نسطوری میں مالم، دینار اور سمعان کی احادیث ذکر کی ہیں نیز ان میں بعض صحیح حسن اور ایس الم دیث بھی نقل کی ہیں، جن میں مملی ساضعف ہے۔

قاضى صاحب فرمات بين كدامام صغانى لا بهورى كا موضوع احاديث پر تاليف كرده رساله في محمد ابوالمحاس قاوقي كى كتاب "اللؤلؤ المرصوع فيما لا أصل له أوباصله موضوع "كآخرش جهيا بهوائه، جوجهول سائز كارصفحات پر شمل ہے۔ اس كى ابتداء ان الفاظ سے كى گئ ہے: الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام الا كملان الا تمان على سيدنا محمد وعلى آله وصحبه وسلم. امام موصوف كى مندرج كتابين، درج ذيل كت فانوں مين موجود بين:

"العباب الزاجر" كا پہلاحمہ مصرے مكتبہ خداديد ميں ہے۔ال ك

پار حصر تركى كے مكتبہ" آيا صوفيا" كے اندر جيں جب كه"التكملة والذيل
والصلة" كا ايك با اعراب قلمي ننخ چي جلدول شخمل" "مكتبہ خداديد " ميں ہے۔ يه
نخدان كى زندگى جي ١٣٣٠ ه ميں لكھا گيا ہے، اس كے حاشے بران كتابول ك
نام درج جيں جن سے انھوں نے اس كتاب كى تاليف ميں مدد كى "درد
السحابة" كا ايك ننخ، حروف جي كى ترتيب پرلكھا ہوا" مكتبہ خداديد " ميں ہے۔
پرچھوٹے سائز كے چونسے صفات بر شمل ہے۔ "مجمع البحوين" كا بھى ايك
نخمكتبہ فدكور ميں ہے۔ اس كى باره ميں سے دوجلد يں مكتبہ فداميں جيں۔ ان كى
كل صفحات ١٥٠٠ رہيں۔ اس كے مقد ہے ميں يہ بات فدكور ہے كہ يہ كتاب
التاج فى اللغة، الصحاح العربية للجو هرى اور كتاب التكملة و الذيل

والصلة كوجامع ب- بر ماده كا ماخذ ومصدر بهى حرف "صاد" ك ذرايد اگر "صحاح" ماخد بويا" سار" كا ماخد ومصدر بهى حرف "صحاح" ماخد بويا" ب- "كتاب الاصداد" برلين كى لا بريرى مين موجود ب- (بحواله: تاريخ آداب اللغة العربية)

حسن بن صالح بن ببله مندى بغدادى

ابن الى اصبعہ فى "عيون الأنباء فى طبقات الأطباء"كا ندران كا مذكره كيا ہے۔ ان كورادا: صالح بن بهله كاذكر آينده صفحات سے آرہا ہے۔

حسن بن على بن حسن داورى سندهى

مقام ''داور'' کے تذکرے میں جموی نے لکھا ہے کہ ابوالمعالی حسن بن علی بن حسن داوری کی ایک کتاب ''منہاج العابدین' ہے۔ یہ اپنے مسلک کے بڑے عالم اور نہایت فصح وبلغ زبان کے ما لک تھے۔ ان کا ایک عمدہ شعری دیوان بھی تھا، جسے کی نے چرالیا اور امام غزالی کی جانب منسوب کردیا۔ چوں کہ امام غزالی بہت شہرت یا فتہ تھے۔ اس لیے ان کے نام سے یہ دیوان بھی خوب عام ہوا جب کہ حقیقت یہ ہے کہ شعر ویخن سے متعلق امام موصوف کی کوئی بھی کتاب نہیں ہے۔ یہی مسب سے بڑی دلیل ہے کہ بید دیوان کی اور کا ہے اور مصنف میر عبداللہ بن کرام سب سے بڑی دلیل ہے کہ بید دیوان کی اور کا ہے اور مصنف میر عبداللہ بن کرام کے حوالے سے جو بات منقول ہے تو اس میں اس کا نام حذف کر دیا گیا ہے، تاکہ ان کی کتابوں کی تلاش و تحقیق کرنے والے پر بیدام ظاہر نہ ہوسکے۔ شخ داور کی کا والی کی اور کی کتابوں کی تلاش و تحقیق کرنے والے پر بیدام ظاہر نہ ہوسکے۔ شخ داور کی کا والی بیت المقدی میں میں ہوئی جیسا کے علامہ سلفی نے لکھا ہے۔

حسن بن محرسندهی کوفی

برحضرت ابان بن محرسندهی کوفی کے حقیقی بھائی ہیں، جن کا تذکرہ پہلے گزر

چکا ہے وہیں ملاحظہ کیا جائے۔

حسين بن محربن ابومعشر فيح سندهي بغدا دي

خطیب تاریخ بغداد میں رقم طرازی کا ابو بکر حسین بن محمد بن ابو معشر فی نے ایپ والد، محمد بن ربید اور وکیج بن جراح سے حدیث کی روایت کی اور ان سے محمد بن احر حکیمی، اساعیل بن محمد صفار، علی بن اسحاق ما درانی اور ابو ممر السما لک نے روایت حدیث کی ۔

خطیب بغدادی فرماتے ہیں کہ ہمیں ابراہیم بن مخلد بن جعفر نے خبردی، ان سے محمد بن اجمد بن ابراہیم کی اور ان سے ابو بکر حسین بن محمد بن ابومعشر نے بیان کیا، وہ کہتے ہیں کہ ہم سے امام وکیج نے ہشام دستوائی کی روایت سے ، انھول نے حضرت حسن سے اور انھول نے حضرت قیس بن نے حضرت قیادہ سے ، انھول نے حضرت حسن سے اور انھول نے حضرت قیس بن عیاد کی روایت سے بتایا کہ انھول نے فرمایا:

"كان أصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم يكرهون رفع الصوت عند الجنائز وعند القتال وعند الذكر".

"حفرات صحابہ کرام رضی اللہ عنہم جنازے کے وقت، جنگ اور ذکر خداوندی کے وقت آواز بلند کرنے کونا گوار سیجھتے تھے"۔

آگے لکھتے ہیں کہ ہم سے قاضی ابوعبداللہ صمیری اور محد بن عمران مرزبانی نے بیان کیا، ان سے عبدالباقی بن قانع نے بتایا کہ امام وکیج بن جراح کے شاگرد: ابن ابو معشر ضعیف سے نیز فر ماتے ہیں کہ ہم سے محد بن عبدالواحد نے اوران سے محد بن عبدالواحد نے اوران سے محد بن عباس نے بیان کیا اور فر مایا کہ انھوں نے ابن المنا دکے سامنے بڑھا اور میں سن رہا تھا، انھوں نے کہا کہ معشری کا حضرت ابومعشر مدنی کی نسل سے تعلق ہے۔ یہ شارع باب خراسان میں قیام کرتے تھے۔ انھوں نے امام وکیج سے روایت حدیث شارع باب خراسان میں قیام کرتے تھے۔ انھوں نے امام وکیج سے روایت حدیث

کی، گر تفتیبی تھے، اس وجہ سے لوگوں نے ان سے روایت لینا ترک کر دیا۔ ان کی اور ابوعون بروری کی وفات ایک ہی دن ہوئی۔خطیب بغدادی فرماتے ہیں کہ ابوعون کی وفات بروز پیر، ۹ ررجب ۲۷۵ ھیں ہوئی۔

حسين بن محد بن اسدد يبلي وهي

علامه ابن عساكر "التاريخ الكبير" مين فرمات بين كرابوالقاسم حسين بن مجر بن اسر ديبلى في حفرت ابويعلى موصلى وغيره محدثين سے "دمشن" مين روايت حديث كي اوران سے حضرت جابر شك انبي كي سند سے بيحديث بيان كى كر حضرت جابر بن عبدالله رضى الله عند فرمايا "بايع النبي صلى الله عليه وسلم مدبرا" أنهول في حضوراكرم صلى الله عليه كي ابن عساكر فرمات بين كريد حديث فريا الله عليه كي ابن عساكر فرمات بين كريد حديث فريب مي ہے ماحب تذكره : حسين بن محرف" دمشن" ميں ميس مديد يش ميں دوايت حديث كي -

شاه مران حسين بن معدان

قاضی صاحب لکھتے ہیں کہ شاہ طران جسین بن معدان کی بابت مجھاس کے سوا کے معلوم نہ ہوسکا کہ وہ یانچویں صدی ہجری میں تھا اور نہایت عظیم الشان بادشاہ تھا۔ نیز یہ کہ صری طبیب نے فالج کی بابت اس کے کہنے پراس موضوع پرایک کتاب کھی۔

شاه مند: حليشه بن دام

بلاذرى نے "فتوح البلدان" كاندر فتح سنده كے بيان ميں لكھا ہے كہ پھر خلیفہ سلیمان بن عبد الملک کی وفات ہوگئی اور اس کے بعد حضرت عمر بن عبد العزیز خلیفہ بے۔انھوں نے دوسر علکوں کے بادشاہوں کے نام خطوط کھے، جن کے ذریعے اٹھیں قبول اسلام اور طاعت وفر ماں برداری کی دعوت دی تھی۔ ساتھ ہی ہے وضاحت بھی کردی تھی کہ انھیں علی حالہ بادشاہ برقر اررکھا جائے گا۔ ان کوبھی وہی حقوق حاصل ہوں گے جو دوسرے مسلمانوں کو حاصل ہیں۔ ان جملہ بادشاہوں کو اس سے بہلے ہی حضرت عمر بن عبدالعزیز کی سیرت و خصیت کی بابت معلومات ہو چکی تھیں۔اس کے نتیج میں ' حلیثہ'' سمیت بعض دوسرے بادشا ہوں نے اسلام قبول كر كي بول جيسے نام بھي ركھ ليے۔اس وقت حضرت عمر بن عبدالعزيز كى طرف ہے ہندوستان کے مفتوحہ علاقوں کے گورنر عمروبن مسلم با ہلی تھے۔اس نے ہندوستان کے کچے دوسر معلاقوں برحملہ کر کے ان کوفتح کرلیا۔ بعد میں عمر دین میر وفزاری کی طرف سے جنید بن عبدالرحن مری کو حدود سندھ کا عامل مقرر کیا گیا۔ پھر ہشام بن عبدالملك نے بھی اے اس علاقے كا كورنر بنايا۔ جب خالد بن عبداللتقسرى عراق آئے تو ہشام نے جنید کو خط لکھ کراسے خط و کتابت جاری رکھنے کا جم دیا۔جنید "ديل" أكر ماحل" مهران" ير فروكش موكيا _ محر حليث في درياعبور كرنے سے روک دیا اور قاصد بھیج کریہ کہلوایا کہ میں مسلمان ہوچکا ہوں اور مجھے میرے ملک کا حکراں ایک نیک مخص عمر بن عبدالعزیزنے برقرار دکھا ہے جب کہ تمہارے تین مجھے اطمینان نہیں ہے۔ بالآخراس نے جنید کے اور جنید نے اس کے یاس رہن رکھا۔ بعد میں دونوں نے ایک دوسرے کا رہن واپس کردیا اور حلیثہ مرتد ہوکر آمادہ پیار موكيا، بعض لوكون كاخيال م كم حلية مرتد نه مواقعا بلكه جنيد اى نے اس يرزيادتى كى

جس کی وجہ سے وہ مندوستان آیا، بہت سار الشکر فراہم کیا، کشتیاں لیں اور آمادہ جنگ ہوا۔ بید کھے کرج بید بھی کشتیاں لے کرمقا بلے کوچل پڑا اور مشرق نالے پر دونوں کی ٹر بھیٹر ہوئی۔ حلیثہ گرفتار ہوگیا اس کی کشتی زمین سے لگ گئی جہاں اسے تل کر دیا گیا۔ اس کا دوسر ابھائی صعصہ بن داہر بھاگ کرعراق جانا چاہاتھا تا کہ جنید کی برعہدی کی شکایت کرے، مگر جنید نے اس کی ہرطرح دل بنتگی کی تا آس کہ اس نے جنید کے ہاتھ میں ابناہا تھ دے دیا۔ اس کے فور آبعد ہی جنید نے اسے تل کرادیا۔

دوسرے بادشاہوں کی طرح راجہ داہر کے دونوں لڑکوں: حلیثہ اور صعصہ کے مسلمان ہونے ہیں کوئی شک نہیں ہے۔ علامہ بلافری نے حلیثہ کی بابت دوبارہ کفرا فقیار کرنے اور برسر پیکارہونے کی جوبات کھی ہے وہ مشکوک ہے۔ بلکہ لگتا ہے کہ جنید کی جنایت وزیادتی اور عہدشکی نے اسے جنگ پرآ مادہ کیا۔ قابل ذکر ہے کہ ان تمام حکمرانوں نے بلافری کی تصریح کے مطابق پہلی صدی ہجری کے افتتام پر حضرت عمر بن عبدالعزیز آ کے دور خلافت میں اسلام قبول کیا۔ اس امرک تا سیداس سے بھی ہوتی ہے کہ ابن عبدر بداندلی نے دور فاد میں اسلام قبول کیا۔ اس امرک تا سیداس سے بھی ہوتی ہے کہ ابن عبدر بداندلی نے دونہ مندوستان کے راجہ نے حضرت عمر بن عبدالعزیز کے یاس ایک خطر بھیجا تھا جس کا مضمون یہ تھا:

"دراجاوک کے داجہ کی طرف سے جوخود بھی ہزار داجاوک کے داجہ کا فرزند ہے اور جس کے تکاح میں بھی ہزار داجاوک کے داجہ کی صاحب زادی ہے جس کے پاس ایک ہزار ہاتھیاں ہیں جو ایس دودریاوک کا مالک ہے، جوعود، آلو، اخروث اور کا فوراگاتی ہیں اور جس کی خوشبو بارہ میل کی مسافت ہے جسوس کر لی جاتی ہے، شاہ عرب کے نام، جو کسی چیز کو خدا نثر یک نہیں جھتا، اما بعد ایس نے آپ کی خدمت میں ہدیہ بھیجا ہے۔ وہ ہدینہیں بلکہ تجیہ اور خط ہے۔ میری خواہش ہے کہ آپ میرے یہاں کسی ایسے خفس کو وہ ہدینہیں بلکہ تجیہ اور خط ہے۔ میری خواہش ہے کہ آپ میرے یہاں کسی ایسے خفس کو بھیج دیں کی تعلیم دے اور مذہب اسلام سمجھا سکے۔ والسلام"۔

پھر حضرت عمر بن عبدالعزیز کے دورخلافت میں "سندھ" سے مراسلات و
ہدایات اور مضامین آتے رہتے تھے اور دوسرے مسلم علاقوں کی طرح سندھ میں بھی
خلافت اسلام کے احکام نافذ تھے۔ چنال چہشہورسیاح ابن بطوط اپنے سفرنا ہے میں
کاھتا ہے کہ شہر "سیوستان" میں میر کی ملاقات وہاں کے شہور خطیب دواعظ معروف به
"شیبانی" سے ہوئی، انھوں نے مجھے اپنے جداعلی کے نام حضرت عمر بن عبدالعزیز کا
خط دکھایا، جس میں انھیں اس شہر کی "خطابت" کا منصب دیا گیا تھا اوراس وقت سے
خط دکھایا، جس میں انھیں اس شہر کی "خطابت" کا منصب دیا گیا تھا اوراس وقت سے
اب تک (۲۳۲ کھی) ہے عہدہ اس خاندان میں نسلا بعدنسل چلا آرہا ہے۔ اس تحریرکا
مضمون بیتھا: بیوہ بات ہے جس کا حکم فلاں کو بندہ خدا امیر المونین عمر بن عبدالعزیز
نے دیا، تاریخ تحریر ۹۹ متھی۔ امیر حضرت عمر بن عبدالعزیز ہی کے قلم سے لکھا ہوا تھا
العجمد الله و حدہ الخ جیسا کہ خطیب نہ کورشیانی نے مجھے بتایا۔ (ابن بطوط)

حمزه منصوري

مسعودی نے "مووج الذهب" میں تکھاہے کہ میں ملک "منصورہ" کے اندر مسعودی نے بعد داخل ہوا۔ اس وقت وہاں کا بادشاہ ابوالمنذ رغروبین عبداللہ تھا۔ میں نے "منصورہ" میں ابوالمنذ رکے وزیر" رباح" اس کے دونوں شاہ زادوں جمداورعلی، ایک عرب میں سے ایک بینی "مخزہ" کو بھی دیکھا۔ ایک عرب میں سے ایک بینی "مخزہ" کو بھی دیکھا۔ اندازہ ہے کہ "مخزہ" ان عربول کی نسل سے ہوں، جو زمانہ قدیم سے اندازہ ہے کہ "مخزہ کی ولادت اورنشو ونماوی ہوئی ہو۔ (قاضی)

سلطان التاركين : حميد الدين بن احد سوالي ، نا گوري

ان كى بابت "نزهة النحواطر" بين مولانا عبدالحى حسى في في المحاب كه بير سلطان التاركين كو لقب سے مشہور ومعروف ستے۔ قطب الدين ايك كے فتح

د بلی کے بعد، سب سے پہلے دارالسلطنت د بلی میں انھیں کا تولد ہوا۔ بیال القدر اورعشرة مبشره میں شامل صحالی حضرت سعید بن زید کی نسل سے تھے۔ شریعت وطریقت کے امام شیح معین الدین حس مجری سے اجازت حاصل کی اور ایک عرصے تک ان کی صحبت میں رہے۔ شیخ سنجری نے ان کے زہدو قناعت اور آسائش حیات سے حددرجہ بے نیازی کے پیش نظر انھیں''سلطان المارکین''کالقب دیا۔ فقرومسكنت، زبدوتناعت اور انابت الى الله مين نهايت ممتاز تھے۔ رياست دونا گپور' کے ایک گاؤں ''سوالی'' میں ان کی ایک ایک ایک خص میں کاشت كركے اپنااورا بے اہل وعیال كاگز ربسركرتے تھے۔ان كى متعدد كتابيں اور تلا مذہ ومريدين كے نام بہت سے مكاتيب ہيں۔ مشائخ چشتيد ميں تصنيف و تاليف كرنے والي يها فخص تحدان كي تعنيف كرده كتابول مين "أصول الطريقة" زياده مشہور ہے۔ ۲۹ رائے الثانی ۲۷ ھیں وفات پائی اور نا گپور میں دفن کئے گئے۔ علامہ "مجی" نے اپنی کتاب "خوالاصة الأثر في أعيان القرن الثاني عشر "كاندريخ تاج الدين بن ذكريا مندى كے تذكرے ميں لكھا ہے كه يہ خواجه معین الدین چشتی کے ملم ہے'' نا گپور' تصوف وطریقت لے کرآئے، جہاں ایک خلوت گاہ میں بیٹھ کر چشتیہ سلسلے کے مطابق ذکرواذ کار میں مشغول رہنے لگے، بھی مجھی شیخ حمیدالدین نا گوری کے مزار پر حاضر ہوکر طریقت کے آ داب سکھتے ، جس ے اٹھیں بہت کچھ مقام ومرتبہ حاصل ہوا۔

والى ملتان: شيخ حميد باطنى

شخ حمید باطنی والی ملتان، سلطان الپتگین اور سبتگین کے ہم عصر تھے۔ ان کا او کا: نشر بن حمید نے انہی سالوں ۱۵۱ ھتا ۳۹۰ ھیں اپنے باپ کے تخت حکومت پر قبضہ کرلیا۔ ابوالفتوح داؤد بن نصر بن حمید ۱۰۶ ھے کے آس باس کا ہے اور محمود غرنوی کا معاصر ہے۔ شیخ حمید باطنی فرقۂ اساعلیہ کے بڑے اور نہایت اہم عالم، واعی وسلغ ہے، اس کا اندازہ، انھیں 'شیخ'' کا لقب دیے جانے ہے ہوتا ہے؛ اس لیے کہ اساعیلی فرقے میں اسی شخص کو''شیخ'' کہا جاتا ہے جونہایت اہم اور بڑے علم وضل کا مالک ہو جیسا کہ علامہ سید سلیمان ندوی کی کتاب ''عرب وہند کے تعلقات' سے معلوم ہوتا ہے۔

شاه سنده: حميد سومره

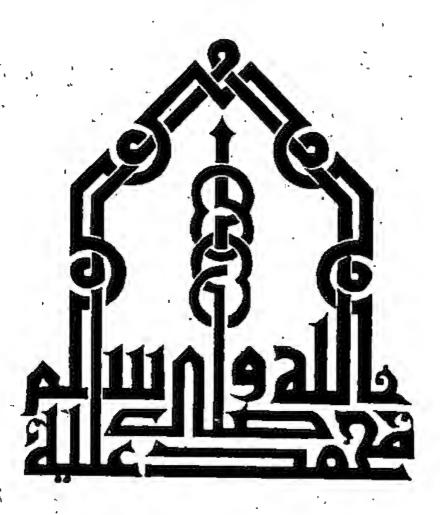
حمید، سومرہ خاندان کافرداورسندھ کا حکم دال تھا۔ لیکن تاریخ میں اس کا عہد حکر انی متعین طور پر معلوم نہیں کہ آیا ہے عمر سومرہ سے پہلے تھا یا بعد میں؟ بعض اہل تحقیق علماء کی رائے ہے کہ بیسومرہ خاندان کا آخری حکم ال تھا۔ اس رائے کے مطابق اس کا دور بالیقین عمر سومرہ کے بعد ہے، اس کے عہد حکومت کی دل چسپ داستان ملک گوجر کی شاہ زادی ''مول'' کا واقعہ ہے، جس کی تفصیل سندھی زبان میں منظوم شکل میں موجود ہے اور ملامقیم نے فاری میں اس کو قلم کی شکل میں کھا ہے۔

حيران سندهيه

مورخ ابن تتیبہ نے "المعادف" میں کھاہے کہ زید بن کی بن حسین کی کئیت،
ابوالحن اور مال سندھی تھی۔ انھوں نے ہشام بن عبد الملک کے عہد خلافت میں ۱۲۱ھ میں خروج کیا۔ ہشام نے ان کی سرکوئی کے لیے یوسف بن عمرعباسی مری کو بھیجا آئھیں میں سے ایک شخص نے آئھیں تیرسے ہلاک کر دیا بعد میں سولی پرچڑ ھائے گئے۔
میں سے ایک شخص نے آئھیں تیرسے ہلاک کر دیا بعد میں سولی پرچڑ ھائے گئے۔
اس سے پہلے ابن تتیبہ نے لکھا ہے کہ جہاں تک علی بن حسین اصغر کا تعلق ہے تو حسین کی ان کے علاوہ کسی سے نسل نہ چلی ۔ پھران کی اولا دکوشار کراتے ہوئے لکھا ہے کہ عمر اور زید ' حیدان' نامی ام ولدسے پیدا ہوئے ، اس طرح زید بن علی کی بہی

سندهی ماں ہوں۔ نیز لکھا ہے کہ حضرت علی رضی اللہ عنہ نے اپنی ایک باندی کو آزاد

کر کے اس سے شادی کرلی۔ اس پرعبدالملک نے عاردلانے کے لیے انھیں ایک خط لکھا۔ جس کے جواب میں حضرت علی نے بی آیت لکھی 'لقد کان لکم فی رسول اللہ اسو ہ حسنہ''بعد میں لکھا کہ حضورا کرم صلی اللہ علیہ وہلم نے بھی صفیہ بنت می کو آزاد کر کے ان سے شادی کی تھی۔ اس طرح زید بن حارثہ کو آزاد کر کے ان سے شادی کی تھی۔ اس طرح زید بن حارثہ کو آزاد کر کے ان کے کہ یہ آزاد کر وہ باندی جس سے حضرت علی رضی اللہ عنہ خیال ہے کہ بیمین ممکن ہے کہ یہ آزاد کر وہ باندی جس سے حضرت علی رضی اللہ عنہ نے شادی کی ، زید بن علی کی مال حیدان سندھیہ ہی ہو۔ (تاضی)



باب: خ

خاطف مندى ،افرنجي

ابن ندیم نے ان کا تذکرہ علم کیمیاء پر کلام کرنے والے فلاسفہ میں کیا ہے۔ ان کا نام خاطف ہندی افرنجی لکھا ہے اور ان سے پہلے نیز بعد میں چند دوسرے فلاسفہ کا بھی ذکر کیا ہے۔

خاطف ہندی دوسری صدی ہجری کے تھے۔ افرنجی کی نسبت سے ظاہر ہوتا ہے کہ علم کیمیاء حاصل کرنے کے لیے انھوں نے ''فرانس'' کاسفر کیا اور وہاں ایک عرصے تک مقیم رہے۔ (قاض)

خلف بن سالم سندهى بغدادي

خطیب نے "تاریخ بغداد" میں ان کے بارے میں کھاہے کہ مولی المہالبدابو محد خلف بن سالم مخری سندھی تھے۔ انھوں نے ابو بکر بن عیاش، پیٹم بن بشیر، یجی بن علیہ ، سعد بن ابراہیم بن سعد، ان کے بھائی: یعقوب بن ابراہیم، معن بن عیسی، ابونعیم فضل بن دکین، محمد بن جعفر غندر، بر بد بن بارون، وہب بن جربراور عبدالرزاق بن ہم مے دوایت کی۔ ان سے اساعیل بن ابو حارث، حاتم بن لیث ، یعقوب بن میں ہم میں باوضی مطوعی، حسن بن علی شیبہ، احمد بن ابوضی مطوعی، حسن بن علی معمری اور احمد بن حسن بن عبدالرجار صوفی نے دوایت حدیث کی۔

مزیدلکھاہے کہ ہم سے احربن ابوجعفر، ان سے محربن عدی بن زجر بھری نے، ان سے ابوعبید محربن علی آجری نے بیان کیا کہ میں ان سے ابوعبید محربن علی آجری نے بیان کیا کہ میں

نے خلف بن سالم سے بانج احادیث بین جھیں احمد بن عنبل سے بھی سنا مگروہ خلف بن سالم سے روایت محمد بن عباس بن فرات بیان کیا کہ انھوں نے فرمایا کہ مجھ سے حسن بن بوسف صیر فی نے بتایا، ان سے خلال نے اور ان سے علی بن بہل بن مغیرہ بزار نے بتایا کہ میں نے خود احمد بن عنبل سے سنا، ان سے خلف بن سالم کی بابت معلوم کیا گیاتو فرمایا کہ ان کی صدافت پرشبہیں کیا جاسکتا۔

نیزلکھاہے کہ ہم سے برقانی نے ، ان سے ابواحمدسین بن علی تمیں نے ، ان ہے ابوعوانہ لیفقوب بن اسحاق اسفرا کینی نے اور ان سے ابو بکر مروزی نے بیان کیا۔ ابوبكر كہتے ہیں كہ میں نے امام احد بن عنبل سے خلف مخرى كى بابت سوال كيا تو انھوں نے جواب دیا کہ محدثین نے ان کی احادیث کی متابعت کی وجہسے ان برطعن کیا ہے لیکن میری رائے ہے کہ وہ صدوق ہیں۔ نیز فرمایا کہ انصاری کے ساتھ ایک بات میں شریک ہونے کے باوجود مجھے ان کے کذب کاعلم نہیں ہے۔ ان سے ایک ناببندیدہ بات منقول ہے۔ جب وہ کس کے لیے کسی چیز کا تھم دیتے تواسے خود خریدلیا كرتے ميرى دائے ہے كدوہ الدادكيا كرتے تھے۔ كہتے ہيں كہ تعاون كرنااس كام. سے بہتر ہے۔ بعد میں امام موصوف نے فرمایا کہ میرے علم کے مطابق وہ قناعت پنداور پاک دامن تھے۔ نیزرقم طراز ہیں کہم سے عباس کے تلمیذعلی بن حسین نے، ان سے عبدالرحمٰن بن عمر خلال نے ،ان سے محد بن عمر فارس نے ،ان سے بكر بن مهل نے اوران سے عبدالخالق بن منصور نے بتایا ان کا کہنا تھا کہ میں نے بیچی بن معین ے خلف مخری کے متعلق یو چھاتو فر مایا صدوق ہیں۔اس پر میں نے ان سے عرض کیا ابوزكريا! وه تو حضرات صحلبه كرام كي برائيال بيان كرتے ہيں۔ فرمايا وه أنفيس جمع كيا كرتے تھے، مرجهاں تك بيان كرنے كاتعلق ہے قبيان بيس كرتے تھے۔

رسے سے حسین بن علی صیری نے ، ان سے علی بن حسن رازی نے ، ان سے محمد بن حسین زعفرانی نے اور ان سے احمد بن زہیر نے بیان کیا کہ میں نے بیجیٰ بن بن حسین زعفرانی نے اور ان سے احمد بن زہیر نے بیان کیا کہ میں نے بیجیٰ بن حسین سے سناوہ فرمار ہے تھے کہ بے چارے خلف بن سالم کے سلسلے میں کوئی جرح نہیں اگروہ بے وقوف نہ ہوتے۔ احمد بن زہیر کا بیان ہے کہ ان سے ایک السے خص نے بتایا جس نے ابو محلم کو بی فرماتے ہوئے سنا کہ ہمارے بھائی خلف بن سالم کی بابت کوئی بھی سالم نہیں ہے۔

از ہری نے ہم ہے، ان سے عبدالرحلٰ بن عمر نے، ان سے محد بن احمد بن شیبہ نے ، ان سے ان کے دادانے اور ان سے خلف بن سالم نے جوکہ ثقتہ سے بتایا کہ یعقوب بن شیبہ کہتے ہیں کہ میر سے دادانے مسدداور حمیدی کا بھی تذکرہ کیا اور فرمایا کہ خلف بن سالم ان دونوں سے زیادہ "اشبت" سے۔

مجھ سے محمد بن یوسف نیسا پوری نے ، ان سے نصیف بن عبداللہ نے ، ان سے عبداللہ نے ، ان سے عبدالکر یم بن ابوعبدالرحمٰن نسائی نے بیان کیا کہ مجھ سے میر سے والد نے بتایا کہ ابو محمد خلف بن سالم بغدادی ، مخرمی '' تفہ'' ہیں ۔

مجھ سے ابن الفضل نے ، ان سے دیکے بن احمد نے ، ان سے احمد بن علی ابار نے ، ان سے احمد بن علی ابار نے ، ان سے احمد بن ابوجعفر نے اور ان سے حمد بن مظفر نے بتایا کہ عبداللہ بن حمد بغوی نے مزید کہا بغوی نے مزید کہا بغوی نے مزید کہا کہ وفات ماہ رمضان کے اواخر میں ہوئی۔ نیز فر مایا کہ میں نے انھیں دیکھا بھی اور ان سے ساع حدیث بھی کیا ہے۔

مجھ سے ابوالحسین محر بن عبدالرحن بن عثان تمیں نے دمشق میں بیان کیا ، انھوں نے قاضی ابو بکر میا نجی نے بیان کیا کہ مجھ سے صوفی احمد بن عبدالجبار نے فر مایا کہ خلف بن سالم کی وفات انہتر سال کی عمر میں بروز اتو ار ۲۲ رمضان ۲۳۱ ھ میں ہوئی۔ محصد سے محمد بن احمد بن احمد بن اسحاق بن وہب بندار نے اور ان سے احمد بن اسحاق بن وہب بندار نے اور ان سے ابو غالب علی بن احمد بن ناحر بن نصر نے بتایا کہ خلف بن سالم کی وفات نے اور ان سے ابو غالب علی بن احمد بن نصر نے بتایا کہ خلف بن سالم کی وفات کے اور ان سے ابو غالب علی بن احمد بن نصر سے بتایا کہ خلف بن سالم کی وفات کے اور ان سے ابو غالب علی بن احمد بن نصر سے بتایا کہ خلف بن سالم کی وفات کے اور ان میں ہوئی مرضح بات بہلی ہے۔

مجھ سے حسن بن ابو بکرنے بتایا کہ محد بن ابراہیم جوری نے ''شیراز' سے انھیں خط لکھا کہ ان سے احمد بن بونس خصی نے انھیں خط لکھا کہ ان سے احمد بن بونس خصی نے اور ان سے ابوحسان زیادی نے بیان کیا کہ خلف بن سالم کی وفات ستر سال کی عمر میں ہوئی۔

ا مام ذہبی نے 'تذکر ہ الحفاظ'' میں لکھا ہے کہ جافظ حدیث مجود قرآن ابوج سندھی خلف بن سالم مولی آل مہلب، بغداد کے سربرا وردہ تفاظ حدیث میں سخے۔ یہ بیٹم ، ابو بکر بن عیاش، عبدالرزاق اور طبقہ سے روایت حدیث کرتے ہیں اور ان سے احمد بن خیشہ جسن بن علی معمری ، ابوالقاسم بغوی اور دوسرے حفزات نے روایت کی ، انہی سے روایت کرنے والے ایکٹی کے حوالے سے امام نسائی نے خرت کی ہے کہ انتقال ۲۳۱ ھیں ہوا اور بیغریب احادیث کی ہیروی کرتے ہے۔

علامه مروزی فرمات بین که میں نے ابوعبداللہ سے ان کی بابت بوجھاتو فرمایا کہ مجھے ان کے جھوٹ بولنے کاعلم بیس ۔ ان احادیث کی انتاع کی وجہ سے محدثین نے ان برطعن کیا ہے۔ بی بن معین کا قول ہے کہ وہ صدوق ہیں۔ یعقوب بن شیبہ نے ان برطعن کیا ہے۔ بی بن معین کا قول ہے کہ وہ صدوق ہیں۔ یعقوب بن شیبہ نے "د" ثقه" بتا یا اور فرمایا کہ مسدد اور حمید کی دونوں سے کہیں زیادہ شبت ہیں۔ بس کہتا ہوں کہا جد بن حسن صوفی کا بیان ہے کہ ان کی وفات رس مضان اسلاھ کو ہوئی۔

مزیدلکھاہے کہ ہم سے حافظ عبدالمؤذن نے، ان سے بھی بربوگ نے، ان سے عمروبن مہدی نے، ان سے خلف بن مالم نے، ان سے خلف بن مالم نے، ان سے حجہ بن احجہ بن احجہ بن احجہ بن جویر یہ نے اوران سے بھی بن سعید نے اپنے بچا سے دوایت کرتے ہوئے بیان کیا کہ جس روز حضرت عمار بن یا سرک شہاوت ہوئی، اچا نک ایک مجم وجم گھوڑ سے پرسوارایک بھاری بھرکم آدی نے دونوں صفوں کے درمیان سے دردناک آواز سے تین باریہ منادی کی کہ بندگان خدا! جنت کی طرف چلو۔ پھر کہا جنت تکواروں کے سایہ میں ہے۔ جب لوگوں نے دیکھا تو وہ

عمار بن یاسر تھے۔ یہ آواز لگانے کے چند ہی کمے بعدوہ شہیر ہو گئے۔

خلف بن محرد يبلي بغدا دي

خطیب "تاریخ بغداد" میں لکھتے ہیں کہ خلف بن محم موازینی دیبلی نزیل بغداد
نے علی بن دوی دیبلی سے روایت کی اوران سے ابوالحن بن جندی نے روایت کی۔

آگر قم طراز ہیں کہ مجھ سے ابولفر احمد بن محمد بن احمد الوتار نے، ان سے احمد بن عمران نے، ان سے ان کے دوست خلف بن محمد دیبلی موازینی نے، ان سے علی بن موی دیبلی نے "دیبل" میں، ان سے داؤو بن صغیر نے، ان سے احمد بن محمد تقی نے ان سے علی بن عمر حربی نے، ان سے داؤو بن صغیر نے، ان سے احمد بن محمد الله بن عبد الله بن محمد اور بن صغیر نے، اوران سے ابوعبد الرحمٰن شامی النوانے بروایت حضورا کرم سے الله بالله "آسان دالوں کی گفتگولاحول ولاقو ق الا بالله "آسان دالوں کی گفتگولاحول ولاقو ق الا بالله "آسان دالوں کی گفتگولاحول ولاقو ق الا بالله ہے۔

سمعانی نے "کتاب الأنساب" عبر کی سے حدیث کا ساع کیا اور ان نے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا اور ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا اور ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا اور ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا در ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا در ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا در ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا در ان سے ابوالحن بن محدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کا ساع کیا در ان بن جندی نے دوایت حدیث کی ۔

خلف بن محد دیبلی چوتھی صدی ہجر سے تعلق رکھتے ہیں۔خطیب بغدادی اور علامہ سمعانی کی تحریروں سے اندازہ ہوتا ہے کہ محد ثین سندھ سے، سندھ میں روایت حدیث کا سلسلہ چوتھی صدی ہجری میں شروع ہوا ہے۔ (تاضی)

خمارقنذهاربير

ابوالفرج اصبهانی "دستاب الأغالی" میں فرماتے ہیں کہ مجھ سے عبداللہ بن رہی ہے اللہ میں رہیے نے بیان کیا۔ وہ بن رہیے رہیے نے بیان کیا۔ وہ

کہتی ہیں کہ مجھ سے میرے والد کی باندی "خمار" نے بیان کیا۔ بیہ باندی" گندھارا" کی رہنے والی تھی ، جسے میرے والد محترم نے آل یجی بن معافہ سے دولا کھ درہم میں بجین میں ہی خرید لیا تھا۔ بیدرج ذیل اشعار ابراہیم موصلی ہی کے لب و البجے اور ترنم کے ساتھ پڑھتی تھی:

اذا سرها أمر وفیه مساء تی الله قضیت له فیما ترید غلی نفسی ومامر یوم ارتجی فیه راحة الله فاذکره الا بکیت علی أمسی "بیبات کی بات سے نوشی ہوتی حالال کیمری اس میں برائی ہوتی، تب بھی میں اس کی خاطر پوری کردیتا جودہ جھسے چاہتی۔ کوئی دن ایسانہیں گزرا جس میں جھے راحت کی نوائش ہوئی ہو بھر میں اے یادکرتا گراپ کل پردوتا"۔ جس میں جھے راحت کی نوائش ہوئی ہو بھر میں اے یادکرتا گراپ کل پردوتا"۔ بیشعر ابوحفص شطر نی کا اور ترنم ابراہیم نقیل کا ہے، با ندی کا بیان ہے کہ ایک روز میں یہ اشعار گارہی تھی اور "ابن جامع" نے سن لیا۔ اس نے جھسے پوچھاتم نے کس سے حاصل کیا، میں نے اسے بتایا تو اس نے اسے دہرانے کے لیے کہا، میں نے کئی مرتبہ اسے بڑھا اور ابن جامع اس سے لطف اندوز ہوتا رہا یہاں تک کہ میں یہ بھے گئی کہ شعر نے اسے محور کردیا ہے۔ اس کے بعد جب بھی بھی وہ میر سے میں یہ بھے گئی کہ شعر نے اسے محور کردیا ہے۔ اس کے بعد جب بھی بھی وہ میر سے میں یہ بھے گئی کہ شعر نے اسے محور کردیا ہے۔ اس کے بعد جب بھی بھی وہ میر سے میں آتا تو کہتا یکی !اس آواز میں ذراشعر سنادو۔

قاضی صاحب لکھتے ہیں کہ فدکورۃ الصدر تفصیل سے زیادہ مجھے '' خمار'' کی بابت کچھ معلوم نہ ہوسکا، کندھاریہ'' گندھارا'' (گجرات) کی طرف نسبت ہے، یہ ایک چھوٹی موٹی بندرگاہ تھی، جے عمرو بن حمل نے فتح کیا اور وہاں کا مندرمنہدم کرکےاس کی جگہ ایک مسجد بنوائی۔

گندھارا کے متعلق احدامین نے ' دھنی الاسلام' میں لکھا ہے کہ عموماً گندھارا سے ہندوستانی غلام باندی منگوائے جاتے تھے اور ' اعانی' میں فدکور ہے کہ جنید بن عبدالرحمٰن مر ی نے خالد بن عبدالرحمٰن مر ی نے خالد بن عبدالرحمٰن مر ی نے خالد بن عبدالرحمٰن مر کی نے باس ہندوستان کے پچھ گور سے قیدی

بھیج، وہ انھیں اس طرح ہمبہ کرنے لگا جیسے وہ قریش کا کوئی فرداور معز زلوگوں میں سے ہو۔ آخر میں ایک حسین وجمیل لڑکی نیج گئی، جسے اس نے اپنے پاس رکھ لیا۔ اس لڑکی کے بدن پراس کے دیار کے دوفراک تھے، خالد بن عبداللّٰد نے ابوجم سے کہا اس لڑک کی بابت جمھارے پاس بچھ نفذ ہے کہ تم ابھی اسے بھی لے سکو؟ اس نے جواب دیا خدا تہمیں صلاح بخشے، ہاں ہے اور اپنامشہور دجزیہ قصیدہ پڑھا جس کا مطلع نہ تھا:

"أعلقت خوداً من بنات الزط" كياتم في ايك زوطى لركى كے كلے ميں تم في خودائكادى ہے۔

والده محمر بن حنفيه: خوله سندهيه

مشہور سوائے نگار ابن سعد "الطبقات الکبری" میں لکھتے ہیں کہ محدالا کبر بن علی بن ابوطالب کی مال خولہ بن جعفر بن قیس بن سلمہ بن نقلبہ بن بر بوع بن نقلبہ بن الدول بن حنفید النج کہا جاتا ہے کہا ان کی مال جنگ بمامہ کے قید بول میں آئی تھیں جو حفرت علی کے حصے میں گئیں اور عبداللہ بن حنن کا بیان ہے کہ محمد بن حنفید کی مال کو حفرت الله بنت ابو بکر صدیق نے عطا کیا تھا۔ حضرت اساء بنت ابو بکر سے حوالے سے بیان کیا جاتا ہے ان کہنا ہے کہ میں نے محمد بن حنفید کی مال کو حفرت اساء بنت دیکھا ہے۔ وہ سیاہ رنگ اور سندھ کی رہنے والی تھیں۔ یہ بی حنیفہ کی با بدی تھیں بنی دفیقی بنی حنیفہ کی با بدی تھیں بنی حنیفہ کی با بدی تھیں بنی حضرت خالد بن ولید نے بجائے ان حنفید سے تعلق نہیں رکھتی تھیں۔ بلکہ ان سے حضرت خالد بن ولید نے بجائے ان کے ان غلام با ندیوں کے وض صلح کی تھی۔ ابن خلکان نے اپنی تاریخ میں لکھا ہے کہ بیسیاہ رنگ۔ سندھی اور بنی حنیفہ کی با ندی تھیں۔

والى سنده: خيراسومره

بیسومرہ خاندان کا ایک فردتھا۔ دادسومرہ کے بعدسندھ کے پچھ علاقوں میں حکمراں رہا۔ (تخة الکرام)۔

باب: و

دا وُ دبن محمد بن ابومعشر سندهی بغدا دی

خطیب بغدادی "تاریخ بغداد" میں لکھتے ہیں کہ ابوسلیمان داؤد بن محمد بن ابومعشر نجید بن محمد بن ابومعشر " کتاب ابومعشر نجید بن عبدالرحمٰن نے اپنے والد سے بہ روایت ابومعشر " کتاب المعفاذی " کی روایت کی اور ان سے اس کی روایت، امام وکیج بن جراح کے شاگرداور حسین بن محمد بن ابومعشر کے بھائی: قاضی احمد بن کامل نے کی ۔ ساحب شاگرداور حسین بن محمد بن ابومعشر کے بھائی: قاضی احمد بن کامل نے کی ۔ ساحب تذکرہ تیسری صدی ہجری کے تھے۔ (تاضی)

والى ملتان: دا وُ دبن نصر بن حميد ابوالفتوح باطنی

جنگ ملتان کا تذکرہ کرتے ہوئے '' تاریخ بیمیٰ ' میں تحریر ہے کہ یمین المدولہ، امین المملہ ابوالقاسم محمود بن ناصرالدین ابومنصور بکتگین غرنوی کو، والی ملتان ابوالفتو ح باطنی کی بددین، بداعتقادی، کفروالحادادراہل ملتان کواس کی دعوت و تبلیغ کرنے کا جب علم ہوا تو اس کی غیرت دینی جوش میں آگئ اور وائی ملتان کے پھیلائے ہوئے غربی واعتقادی شرکا قصہ تمام کرنے کی اس نے ٹھان کی ۔ اس سلسلے میں اس نے خداوند تعالی سے استخارہ کرنے کے بعد جنگ کے ساز وسامان تیار کرنے، لشکر جمع کرنے اور گھوڑ نے فراہم کرنے کا اعلان کر دیا۔ باضا بطرفو ج کے علاوہ مسلمانوں کی ایک بوی تعداد بھی رضا کا رانہ طور پر جذبہ جہاداور شوق شہادت میں مجمود غرنوی بد باطن وائی ملتان کی سرکو بی میں محمود غرنوی کے میاتھ "ماتی کی سرکو بی میں محمود غرنوی کی میاتھ "ماتی کی سرکو بی میں خاطرفوج اور رضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور رضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور رضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور رضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور رضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور رضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور روضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور روضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سرزنش کی خاطرفوج اور روضا کا روں کے ایک جم غفیر کے ساتھ "ملتان ' کے لیے اور سوئی میں میانہ کی ساتھ شمانوں کیا گور سے ساتھ "ملتان ' کور سے ساتھ شمانوں کے ایک میانہ کی ساتھ شمانوں کور سے ساتھ شمانوں کیور کیا ہوں کی سرور کیا گور سے ساتھ شمانوں کی سرور کور سے سرور کیا گور سے ساتھ شمانوں کیور کیا گور کیا گور کیا گور کیا ہوں کیور کیا گور کیا گور کیا گور کیا کور کیا گور کیا گ

روانه بهوا، اس وقت دریاؤں میں طغیانی شاب برتھی''سیون'' اور اس کی معاون ندیوں کوعبور کرنا دشوار گزار مرحلہ تھا، اس لیے محمود غزنوی نے ہندوستان کے مہاراجہ: اندر بال سے درخواست کی کہ "ملتان" کے لیے وہ اینے زیر قبضہ علاقوں سے راہداری فراہم کردے۔ مگراس نے ایبا کرنے سے میسرمنع کرکے آدماہ پیکار ہوگیا۔ بیصورت حال دیکھی تومحود غزنوی نے یہی بہتر سمجھا کہ پہلے اندر پال سے ہی نمٹ لیاجائے، اس کی طاقت ختم کردی جائے اور اس کی فوج منتشر کردی جائے۔اس طرح دوجنگوں کا ثواب اور مال غنیمت حاصل ہوجائے گا۔ چنانچہ بھر يورهمله كرك "اندريال" كالشكركوتهد تيغ كرديا، مال واسباب لوث ليے اور قلعوں وغیرہ کونذراتش کرکے، مصیبت درمصیبت میں مبتلا کردیا۔راہ فراہ اختیار کرنے پر مجبور كرديا اورآنا فانأاس كابورا ملك اس طرح برآساني طے كرليا جيسے تاجر "حضرت موت "شهركو مط كر ليتے ہيں۔اس طرح قبل كرتے مال واسباب ير قبضه كرتے ، ہر رائے سے تعاقب کرتے اور ہرعلاتے سے بے دخل کرتے ہوئے" اندریال" کو نواحي دکشميز' تک دڪليل ديا۔

جب ابوالفتوح باطنی والی ملتان کو'' اندر پال' کی اس درگت کا حال معلوم ہوا، جب کہ وہ نہایت طافت ور، کثیر الافواج اور نا قابل تنجیر طافت کا مالک تھا تو اس نے حالات کی سنگین کا اندازہ کرکے بیدیقین کرلیا کہ بلند وبالا پہاڑوں کی اونچی اونچی چوٹیاں، معمولی پہاڑیوں کے ذریعے فتح نہیں کی جاسکتیں اور باز کے منھے دانہ گدھ جیسے پرندوں کی مدد سے چھینا نہیں جاسکتا، اس لیے بہ عجلت تمام اپنا سارا مال واسباب ہاتھیوں پر لا دکر ملتان کو محمود غرنوی کے رحم وکرم پر چھوڑ' 'مرندیپ'' کی طرف بھاگ کھڑا ہوا۔

جب محمود غزنوی برنصرت ایز دی ، دین اسلام میں نت نی خرافات پیدا کرنے والے اور اس کی بنیاد کمزور کرنے کی سازش کرنے والے والی ملتان کی سرکو بی کے

ارادے سے شہر میں داخل ہوا تو دیکھا کہ اہل شہر صلالت و گراہی کی تاریکی میں بھٹک رہے ہیں اور تمر دوسر شی پرآ مادہ ہیں۔ ''یویدو ن ان یطفئوا نور الله ویابی الله الله الا ان یتم نورہ ولو کوہ المکافرون ''ید کھ کرسلطان مجودغز نوی نے ان سرکشوں کے قبل کا تھم جاری کردیا اور بہزور طاقت ''مان' فتح کرلیا۔ تمام بدعقیدہ باشندگان شہر پر بیضروری قراردے دیا کہ بیس بیس ہزار درہم اداکریں مجمود غزنوی کی اس فتح اور اساعیلی باطنی فتنے کی سرکولی کی خبر ہندوسندھ کی حدود سے تجاوز کراور سمندروں کا طول وعرض پارکر کے ''معر'' تک پہنے گی۔ جہاں اس کی قدر ومنزلت اور مقام ومر ہے گااس قدر تذکرہ رہا کہ اتنا ''سکندر ذوالقر نین' کے بارے میں بھی منقول نہیں ہے۔ سندھ کے دوسر سے ملاقوں اور اس جیسی دوسری ریاستوں برجمود غزنوی کی سرزنش اور سرکو بی کے خوف سے لرزہ طاری ہوگیا، کفروالحادی آ ندھی تھم گئی۔ اور سرکشی و گراہی اینے انجام کو بہنچ گئی۔

زیر تذکرہ والی ملتان کا نام ''داؤر'' کنیت ابوالفتوح یا ابوالفتح بھی اس کے ایک اور کا بھی تھا جس کا نام داؤ داصغرتھا۔ (قاضی)

داؤ داصغر: فرزندداؤ دا كبر باطني ملتاني

ندکورۃ الصدروالی ملتان کا بیاڑ کا تھا۔سلطان محمودغز نوی کے فرزند نیک ارجمند سلطان مسعودغز نوی نے اسے گرفتار کرلیا تھا۔لیکن بعد میں جب اس نے باطنی اور اساعیلی عقائد سے تو بہ کرلی تو رہا کر دیا۔

فرمال روائے سندھ: دا دسومرہ

داداور بھٹو، دود ہسومرہ کی سل سے تھے جب سنکھاری بیوی کے بھائیوں نے شہرطور و تہری پر قبضہ کرلیا اور خاندان سومرہ کے ایک شخص ' دودہ' نے اس سے جنگ

کی تو دا داور بھٹونکل بھا گے اور اپنی خود مختاری کا اعلان کر دیا۔ بہت سارے لوگوں کو جمع کر کے'' داد'' سندھ کے بعض نو احی علا توں پر قابض ہو گیا۔ (تحنة انکرام)

دابر مندي

علامہ ابن ندیم نے ''الفھر ست'' میں '' داہر ہندی' کا تذکرہ ان علائے ہند کے من میں کیا ہے جن کی طب ونجوم سے متعلق کتابیں ابن ندیم تک پہنچے سکیں۔

دانائے ہند: ہندی خراسانی

زكريا بن محر قزوين نے اپني كتاب "عجائب المخلوقات وغرائب الموجودات"كاندبعض لوكول كى عجيب وغريب اور بنظير فطرى خصوصيات کے ذیل میں لکھا ہے کہ اس طرح کی بات وہ بھی ہے، جس کے متعلق بیان کیا جاتا ہے کہ ''شاہ محمہ بن تکش'' کے دور میں ایک فلاسفی ہندوستان سے خراسان آیا اور مسلمان ہوگیا۔ اسے" دانائے ہند" کے نام سے یادکیاجا تا ہے۔ جس مخص کی بھی خواہش ہوتو وہ اس کی قسمت اور طالع نکال دیتا ہے۔ وہاں کے لوگوں نے بارش کی پیشین گوئی کی بابت بھی اس کا تجربه کیا تو اس میں بھی اس کی بات درست نگل ۔ اس كابدكہنا تھا كەاسے ايك حساب معلوم ہے، جس كى مددسے وہ لوگوں كے طالع نكالما ہے۔ شدہ شدہ یہ بات بادشاہ تک پہنجی تواس نے بلوا کر یو جھا کہتم لوگوں کے طالع کے سوابھی کچھے بتا سکتے ہو؟ اس نے جواب دیا ہاں۔ اس پر بادشاہ نے کہاا چھا ہے بتاؤ كرة ج رات كياخواب ديكها؟ اس في تقور ي دير تك سوين اور حساب لگانے كے بعد کہا کہ رات آپ نے بیخواب دیکھا کہ آپ ایک ستی پرسوار ہیں آپ کے ہاتھ میں تلوار ہے۔ چناں چہ بادشاہ نے اس کی تقیدیت کی ۔ مگرساتھ ہی ہے تھی کہا کہ میں اتنی بات براطمینان نہیں کرسکتا، کیوں کہدریائے "جیحون" کے کناب میرامحل

ہے اور عام طور پر کشتی میں بیٹھ کر دریا کی سیر کرتا ہوں۔ جب کہ تلوار بہی بھی اپنے آپ سے الگ نہیں کرتا ، الہذا ممکن ہے کہ تم نے اندازے سے یہ بات کہدوی ہو۔ آپ سے الگ نہیں کرتا ، الہذا ممکن ہے کہ تم نے اندازے سے یہ بات کہدوی ہو۔ جب دوبارہ امتحان لیا اور اس میں بھی اس نے بالکل صحیح بات بتا دی تو با دشاہ نے اسے اپنا ہم نشین بنالیا اور ہر معالمے میں اس سے مددلیا کرتا تھا۔

علامہ قزوین نے اسلطے میں بعض لوگوں کا تذکرہ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ہندوستان میں پچھا لیے لوگ ہیں کہ جب انھیں کی چیز سے دل چینی ہوجاتی ہو تمام انسانوں سے الگ تھلگ ہوکر ساری توجہ ای چیز پرمرکوز کردیے ہیں۔ نیج بارے چیز ان کے حسب منشاء ہوجاتی ہے۔ اسی قبیل سے وہ بات بھی ہے جس کے بارے میں کہاجا تا ہے کہ محود غزنوی نے جب ہندوستان پر عملہ کیا تو وہاں کے ایک الیے شہر کا علم ہوا جس کی بابت بیضور کیا جارہ تھا کہ جو بھی اس کا رخ کرتا ہے بھار ہوجا تا ہے۔ محمود غزنوی نے اس کی بابت لوگوں سے معلوم کیا تو انھوں نے بتایا کہ ہندوستان میں پھلوگ اس کی بابت لوگوں سے معلوم کیا تو انھوں نے بتایا کہ ہندوستان میں پھلوگ اس پر اپنی توجہ ڈالتے ہیں تو اس کی توجہ کے مطابق بیاری کی توجہ کے مطابق بیاری کی گیڑ کہتی ہے۔ یہ من کر محمود غزنوی کے ایک رفیق سفر نے بیہ مشورہ دیا کہ ڈھول اور برائے ہوئے سے ساکھ کے ایک رفیق سفر نے بیہ مشورہ دیا کہ ڈھول اور برائے ہوئے سے ساکھ کے ایک رفیق سفر نے بیہ مشورہ دیا کہ ڈھول اور برائے ہوئے سے ساکھ کے ایک رفیق سفر نے بیہ مشورہ دیا کہ ڈھول اور برائے ہوئے سے ساکھ کیا تو بیاری کا خاتمہ ہوگیا اور شہر محفوظ ہوگیا۔ (قاضی)

د مک به شری

ابن ندیم نے ''الفھر ست' کے اندر قصے کہانیوں پر مشمل اہل ہندی کتابوں کے تذکرے کے ذیل میں کھا ہے کہ دیک ہندی کی کتاب مردوعورت سے متعلق ہے۔

فر مال روائے سندھ: دودابن بھونگرسومرہ

. دودا، اپنے باپ بھونکر کے بعد سندھ کے تحت سلطنت کا مالک بنااور "نفر بور"

فنح كركےات إنى مملكت ميں شامل كرليا۔ (بحوالة تفة الكرام)

سلطان مالديب دني كلمنجا

اس نے ۵۸۸ھ ہے ۵۹۵ھ تک کل عرسال حکومت کی ۔اس کالقب اہل مالدیپ کی زبان میں "مری فنادیت مہاردن" تھا۔

سلطان مالديب : دهي منجا

یہ ۵۹۵ھ میں مالدیپ کا بادشاہ بنا اور ۱۰ تک پورے پندرہ سال حکومت کی۔مالدیپ کی زبان میں اس کالقب "سری دعمّا ابارن مہاردن "مقا۔

ويبلى

دیبلی کی نبیت سے بہت سے علماء، محد ثین، مجودین، مشاک اور راویان حدیث مشہور ہیں۔ مشہور قاری ابن الجزری ''غایة النهایة فی طبقات القواء ''کاندر' دال' کی ختی کے من میں انساب والقاب پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ احمد بن محمد ب

علاوہ ازیں ''ستاب مشتبہ النسبہ'' میں رقم طرازیں کہ بہر حال'' دیہی''
تواس سے مراد محد بن ابراہیم دیبلی ہیں، جنہوں نے ابوعبداللہ مخزومی سے روایت ک
ہے اور حسین بن حسن مروزی، عبدالحمید بن میں والدابراہیم بن محد دیبلی سے جنھوں
نے موسی بن ہارون اور محد بن علی صائع سے روایت خدیر کیان کی ہے۔

باب: ز

ذ وبان زابلستانی مندی

ابن خلدون نے اپنی مشہور تاریخی کتاب کے مقدمے میں لکھا ہے کہ "جراس" كابيان ب كرشاه" زابلة ان" نے مامون رشيد كے ياس اين ملك كے مشہور دانش در: ذوبان کوازراہ ہدیہ بھیجا۔ اس طبیب نے ''امین رشید کے ساتھ جنگ میں مامون' کے لیے بہت مفید کام کئے اور''طاہر'' کے سر پر قیادت کی دستار یا ندھی۔ مامون اس کی حکمت و دانائی سے بے حدمتاثر ہوااور ایک روز اپنی سلطنت کی مدت کی بابت اس سے معلوم کیا تو اس نے کہا کہتمھارے بعد ،سلطنت تمھاری اولا دہے ختم : دجائے گی۔ مگرامین کی اولا دمیں رہے گی۔ نیز مید کہ ۵ ھیں'' دیلمی'' اہل عجم کا حکومت پرغلبہ وجائے گا۔ کیچھ دنوں تک یہی صورت حال رہے گا۔ پھر ان کی حالت خبتہ خراب ہوکر شال مشرق سے "ترک" ممودار ہوں گے اور شام، فرات اسیمون نیز روم کے مالک بن جائیں کے جب تک مرضی خدارے گ صورت حال یوں ہی رہے گی۔ بین کر مامون نے اس سے یو چھا کہ بیہ باتیں شمصیں کہاں سے معلوم ہو کیں؟ جواب دیا حکماء کی کتابوں سے نیز شطر نج کے موجد راجہ صصہ بن داہر کے فرامین ہے۔ ابن خلدون فرماتے ہیں کہ' دیلموں کے بعد جن ' ترکوں'' کے ظہور کی بات'' ذوبان' نے کہی تھی، اس سے مراد' 'سلحو تی'' تھے، جن کی حکومت کا ساتویں صدی ججری کے اوائل میں خاتمہ ہوا۔ ذوبان ہندی دوسری صدی ججری کے تھے۔ (تاضی)

影影影

باني:ر

رابعه بنت كعب قز داربيه

رابعہ بنت کعب قز داریہ، فارس زبان کی مشہور ومعروف شاعرہ تھی۔ اس کا تذکرہ ابن حوال نے کیا ہے۔ یہ چوتھی صدی ہجری کی تھی۔

راجه مل بن سومرشخ باطنی سندهی

راجہ بل بن سوم، سندھ میں باطنی فرقے کا بلند پا پی عالم وشخ تھا۔ دروزیوں کے امام نے ۱۲۳ ھیں اہالیان ملتان وہندوستان کے نام بالعموم اورراجہ بل کے نام بالحضوص ایک خطاکھا، جس میں اسے اور اس کے اعوان وانصار کو اہل تو حید کے درمیان اپنے اساعیلی باطنی فرقے کی دعوت عام کرنے اور داؤ داصغر بن ابوالفقو حکودین خالص (باطنی غیرب) کی دعوت دینے کی ترغیب وتح کیک گئ تھی۔ قابل ور کودین خالص (باطنی غیرب) کی دعوت دینے کی ترغیب وتح کیک گئ تھی۔ قابل فرکر ہے کہ اس سے پہلے سلطان محمود غزنوی اور اس کے لا کے سلطان مسعود غزنوی اور اس کے لا کے سلطان مسعود غزنوی اور اس کے لا کے سلطان مسعود غزنوی فرک نے میعلاقے ان سے چھین لیے تھے۔

''دروز'' اساعیلی غیرب کا ایک فرقہ ہے جسے حاکم بامر اللہ فاطمی نے مصر اور شام میں ایجاد کیا۔ اس فرقے کے مانے والے اب بھی شام کے اطراف میں واقع ''دروز'' کے پہاڑی علاقوں میں پائے جاتے ہیں۔ یہ مورکی تصویر بنا کر ابلیس کی پوچا کرتے ہیں اور ان کا حاکم ان میں کا برنا عالم ہوتا ہے۔ ای فرقے کے لوگوں نے چند سالوں پہلے حکومت شام کے خلاف بعناوت کی تھی۔ (نافی)

راجا مندى محدث

قاضی صاحب فرماتے ہیں کہ راجا ہندی محدث کی بابت مجھے کچھ بھی معلوم نہ ہوسکا۔ ہاں بعض رسائل وجرا کدمیں ان کا نام اس طرح دیکھا ہے۔ جہاں تک راج بن زاؤ دبن عیسی ہندی احمر آبادی کی کا تعلق ہے تو وہ نویں صدی ہجری کے تھے جیسا کہ علامہ سخادی نے ''المضوء اللامع'' میں ذکر کیا ہے۔

راحة الهندي

جن علمائے ہند کی تصانیف طب ونجوم کی بابت علامہ ابن الندیم تک پہنچیں، انھیں میں ان کا بھی نام ذکر کیا ہے۔

دانتے ہندی

عربی زبان میں موجودعلائے ہندگی طب پرتھنیفات کے ذیل میں ابن الندیم نے لکھاہے کہ دائے ہندی کی کتاب سانپوں کی اقسام اوران کے زہروں سے متعلق ہے۔

حاکم سندھ: دائے

قاضی صاحب فرماتے ہیں کہ میں نے ''یعقو کی 'کے حوالے سے ایک قابل اعتماد کتاب میں پڑھا، اس میں لکھا ہے کہ جب''مہدی'' کوخلافت ملی تو اس نے ہندوستان کے راجاؤں مہاراجاؤں کو دعوت اسلام میشمنل خطوط لکھے۔ بیسب لوگ پہلے سے ہی خلافت اسلامیہ کے زیر تگیں سے ۔ چنال چہان میں سے بندرہ راجاؤں نے اسلام قبول کرلیا، جن میں سندھ کا راجا ''رائے'' اور ہندوستان کا مہاراجہ ''مہراج'' بھی تھے۔ یہ' پوری' فاندان سے تعلق رکھتا تھا، جوغالبًا بیٹا ور کے آس

یاس آبادتھا۔ بیسب کے سب دوسری صدی جمری کے تھے۔

رباح منصوري

یمنصورہ کے حاکم ابوالمنذ رغمرو بن عبداللہ ہباری کا وزیرتھا۔ ۱۳۰۰ھ کے بعد ''مسعودی'' کی اس سے ملاقات ہوئی ہے۔

رتن بن عبدالله بهندي

مافظ ابن جرود الاصابة في تمييز الصحابة" مي لكه بين كرتن بن عبدالله مندى ثم بترندى يامزندى بعض لوگ "رتن" كى جگه "رطن" بالطاء بن ساموك بن جكدر يو كہتے ہيں۔ ايك قابل اعتاد مخص كے ہاتھ سے لكھا ہوا يوں ہى ميں نے د يكها_ بعض جكه محكند ريؤ عين داوى جكه قاف ككها بيعنى جنكدريق بعض لوگ رتن بن نفر بن كريال اور بعض دوسر برتن بن سندن بن مندى نام بتات بيل-بير ایک عمر دراز مخف تھا، جس کے حالات بقول اس کے عرصة دراز تک مخفی رہے۔ پھر چھٹی صدی ہجری کے اوائل میں بیمنظر عام پرآیا اور صحابیت کا دعوی کیا۔اس سے اس کے دونو لڑکوں جمحوداورعبداللہ نے ، نیزموسی بن محلی بن بندار دستری،حسن بن محمد حسین خراسانی، کمال شیرازی، اساعیل عار فی، ابوالفضل عثان بن ابوبکر بن سعید اربلی، داوُد بن اسعد بن حامد قفال مخروری، سیعلی بن محمرخراسانی ہروی، معمرابو بکر مقدى، مامسېركندى اورابومروان عبدالله بن بشرمغربي نے روايت كى مگرابومروان کو براہ راست، زتن ہندی سے ساع حاصل نہیں ہوا۔ان کا بیان ہے کہ میری ملاقات معمرے ہوئی تو انھوں نے رتن ہندی کے وہی اوصاف وحالات بتائے ، جودوسرے لوگوں نے بیان کیے۔ مگر حضرات صحابہ کرام یا متقد مین کے تراجم کی کتابوں میں ' رتن مندی"کا تذکره کمین میں ملام امام وہی نے "تجرید اسماء الصحابة" میں

اس کا تذکرہ اس طرح کیا ہے کہ رتن ہندی ایک عمر دراز تحض تھا، جومشرق میں ۱۰۰ھ کے بعد رونما ہوا اور صحابیت کا دعوی کیا۔ جا ہلوں نے اس سے ساع کیا۔ اس کا کوئی وجود نہیں تھا، بلکہ کچھ دروغ بافوں نے اس کا فام گھڑ لیا تھا۔ میں نے تو از راہ استجاب اس کا ذکر کیا ہے، جیسا کہ ابوموی نے ''مر باتک ہندی'' کا ذکر کیا ہے بلکہ بیتو ابلیس لعین تھا، جس نے کہا کہ اس نے حضور علی تھے کو دیکھا اور آپ بیل کے احادیث سنیں اور اس سے بھی زیادہ جرت کی بات تو یہ کھی کہ وہ نہ صرف صحائی رسول ہے، بلکہ علی الاطلاق تمام صحابہ سے افعال بھی۔

علامہ ذہبی نے ہی 'میز ان الاعتدال' کے اندراس کی بابت کھا ہے کہ دن ما ہوں تھا؟ لاریب وہ دجال وشاطر شخص تھا۔ ہندی کی بابت کے معلوم بھی ہے کہ وہ کون تھا؟ لاریب وہ دجال وشاطر شخص تھا۔ ۱۰۰ ھے کے بعد ظاہر ہوا اور صحابیت کا دعوی کر بیٹھا، حالال کہ صحابہ جھوٹ نہیں ہولتے اور یہ تو اللہ اور اس کے دسول کی بابت نہایت جری تھا۔ اس پرایک دسالہ بھی لکھا گیا۔ بعض لوگوں کا خیال ہے کہ اس کی وفات ۱۳۳۳ ھیں ہوئی۔ بیخودتو جھوٹا کذاب تھا ہیں، مگر لوگوں نے بھی اس کی بابت بہت ی جھوٹی با تیں مشہور کرر کھی ہیں۔

مافظ این جرعسقلانی نے "الاصابة" کے اندرتن بهندی کے حالات اوراس کی مرویات تفصیل کے ساتھ کھی ہیں، نیز علامہ طاہر پٹنی نے بھی "ند کو ق الموضوعات میں اس کا تذکرہ کیا ہے۔ اس لیا آب میں آو کوئی شک وشبہیں کہ "رتن بهندی" نامی ایک شخص گزرا ہے۔ نیز اس میں بھی شبہ ہیں کہ وہ جھوٹا اور کذاب تھا۔ بترندی یا مرندی "بھنڈہ کی طرف منسوب ہے۔ «بوشر تی بنجاب کے شہر، بھنڈہ کی طرف منسوب ہے۔

رجاء بن سندهی نیسابوری

امام این الی حاتم رازی "کتاب الجوح و التعدیل" میں فرماتے ہیں کہ ابو محرب ابو محرب ابو مکر ماتے ہیں کہ ابو محرب ابو مکر

بن عیاش، حفص، سکی بن بمان، ابو خالدا حمر بن وہب اور حمز ہ بن حارث بن عمیر سے روایت کی۔ ابو حاتم رازی کہتے ہیں کہ عبد الرحمٰن نے بیان کیا کہ عیں نے اپنے والد سے ان کے متعلق یہ کہتے ہوئے سنا کہ عیں نے ابراہیم بن موی اور ابوجعفر جمال کود یکھا کہ وہ رجاء بن سندھی کے پاس آگران سے احادیث قلم بند کرتے۔ مزید فرماتے ہیں کہ عبد الرحمٰن نے یہ بھی بتایا کہ رجاء بن سندھی کی بابت ان کے والد سے معلوم کیا گیا تو فرمایا کہ وہ صدوق ہیں۔

حافظ مہی نے "تاریخ جرجان" میں لکھاہے کے رجاء بن سندھی نے عفان بن سار سے روایت کی اور ان سے این کے صاحب زادے محمد بن رجاء نے۔

خطیب بغدادی نے صاحب تذکرہ کے صاحب زادے: ابوعبداللہ محمد بن رجاء سندھی کے حالات قلم بند کرتے ہوئے خودان سے بی نقل کرنے والوں کے حوالوں سے حوالوں سے حافظ ابوعبداللہ محمد بن یعقوب کا بیقول ذکر کیا ہے کہ دجاء بن سندھی، ان کے لڑکے ابوعبداللہ اور بوتے ابو بکر نتیوں تقہ اور ثبت ہیں۔ دجاء سندھی تیسری صدی جمری کے تھے۔ (تاضی)

رشيق مندى خراساني

رشیق ہندی، والی خراسان: نوح بن نفر بن احمد بن اساعیل بن احمد کے حاجب ودربان اور محافظ تھے۔ علامہ مقدی اپنی کتاب ''احسن المتقاسیم'' کے اندر خراسان کے تذکر سے بیس قم طراز ہیں کہ اس پور سے علا تے کاسب سے پہلے حکمرال ۱۸۲۵ میں اساعیل بن احمد ہوا۔ بعد میں یہ بخارا چلا گیا اور خلیفہ مقتصد باللہ عباسی نے کرمان اور جرجان کواس میں شامل کردیا اور ۱۹۹ میں خلیفہ ملفی باللہ عباسی نے ''درے'' اور درہ خلوان تک کے تمام بہاڑی علاقوں کو بھی اس میں ضم عباسی نے ''درے'' اور درہ خلوان تک کے تمام بہاڑی علاقوں کو بھی اس میں ضم کردیا۔ اساعیل بن احمد کی جب وفات ہوئی تو لوگوں نے اسے ''الماضی'' کا لقب

دیا۔ اس کے بعداس کالڑکا: احریخت نشین ہوا جے ''فربر' میں قبل کردیا گیا تو لوگوں
نے اسے 'الشہید'' کے لقب سے یاد کیا۔ پھر اس کالڑکا نفر حکمراں ہوا۔ اس کا حاجب ابوجعفر ذوغوا اور سپیمالار ''حمویہ' اور اولا ابوالفضل بن یعقوب نیسا پوری، پھرابوالفضل بلعمی اور اس کے بعد ابوعبد اللہ جیہائی اس کے وزیر ہوئے۔ اس کا جب انتقال ہواتو ''السعید'' کا خطاب دیا گیا۔ اس کے بعد اس کالڑکا نوح تخت حکومت پرجلوہ افروز ہوااس کا حاجب رشیق ہندی تھا۔

نوح بن نفر سامانی کی حکومت اساس سے سیس میں میں اور اس بورے عرصے میں رشیق مندی ہی اس کا حاجب رہا۔ (تاض)

روسامندسير

جن علمائے ہندی تھنیفات عربی زبان میں پائی جاتی تھیں، ان میں اس کا تذکرہ کرتے ہوئے علامہ ابن ندیم نے لکھائے کہ روسا ہندیہ کی تھنیف عورتوں کے علاج ومعالیج سے متعلق ہے۔

"کشف الطنون" میں اس کا نام"روشی مذکورہ اور لکھا ہے کہ روشی ہند ریک کتاب خواتین کے علاج ومعالجہ پر شتمل ہے۔ (قاضی)



باب:ز

زكريا بن محمد بهاء الدين ملتاني

ان کانام ونسب اس طرح ہے: شخ امام بہاء الدین ابو محد ذکریا بن شخ وجہد الدین بن محد بن شخ کمال الدین علی قریشی اسدی ملتانی ۔ ابوالقاسم فرشتہ نے دورہ الدین من مسلب بن اسد بن اسد بن اسد بن اسد بن مطلب بن اسد بن اسد بن معلوب بن اسد بن اسد بن معبد العزی بن قصی کی اولا دمیں ہے ہیں۔ مہیار نے اسلام قبول کرلیا تھا اور ان کے تین مالی دمد، عمر اور عقبل غزوہ بدر میں بہ حالت و کفر مارے گئے۔

قاضی صاحب لکھے ہیں کہ مہیار ہن اسود کے بجائے سی نام بہاءالدین بان کے اسود ہے۔ والیان منصورہ انہی کی سل سے تعلق رکھتے ہے۔ بہاءالدین باتانی کے دادا: کمال الدین علی مکہ مرمہ سے خوارزم اورخوارزم سے ملتان آ کروہیں سکونت پذیر بہو گئے اوران کے والد: وجیہ الدین شحہ ملتان سے کوچ کرکے ' حصار کوٹ کروز' محار کوٹ کروز' محار کوٹ کروز کر یا بن محمہ کی مصر کے اور اس کے والدت ہوئی۔ بہیں صاحب تذکرہ زکر یا بن محمہ کی مصر کے الدین مرمل کی عربیں قراءت سبعہ کے ساتھ قرآن کریے کا حفظ انھوں نے کھمل جب بارہ سال کی عربیں قراءت سبعہ کے ساتھ قرآن کریے کا حفظ انھوں نے کھمل کیا تو ان کے والد کی وفات ہوگی۔ اس کے بعد انھوں نے کسب فیض اور محصیل علم کی خاطر مما لک اسلامیہ کے اسفار کیے۔ یہاں تک کہ علوم طاہر اور علوم باطن دونوں کے جامع بن گئے اوراج تباد کے مرب جا تک بہتی گئے ۔ اس وقت ان کی عمر پندرہ سال کی محمر سے تک بہتی گئے ۔ اس وقت ان کی عمر پندرہ سال کی محمر سے الدین فرشنہ' کا لقب دیا۔ پائے سال تک مکمر مدے شخ وقت اور مشہور ومعروف محدث سے صدیت کا محمر میں رہے اور مکہ مکر مدیرے شخ وقت اور مشہور ومعروف محدث سے صدیت کا محمد میں رہے اور مکہ مکر مدیرے شخ وقت اور مشہور ومعروف محدث سے صدیت کا محمد میں رہے اور مکہ محمد سے شخ وقت اور مشہور ومعروف محدث سے صدیت کا

سان کیا۔ پھر بغدادتشریف لے گئاورش شہاب الدین سہروردی کی محبت اختیار کرلی۔ شج سہروردی نے جب آخیس دیکھا تو خوش آمدید کہہ کراستقبال کیا اور فرمایا بہاء الدین الب سے بارہ سال پہلے حضور بھی نے جھے یہ بشارت دی تھی کہ تمصارے پاس بہاء الدین ملتانی آئیں گئو تم آخیس خرقۂ خلافت وے دینا۔ لو اب اس سعادت کا وقت آپہنچا اور صرف سات دن بعد ہی آخیس خرقۂ خلافت سے سرفراز کردیا۔ شخ سہروردی کے بچھم یدین و تلا غمرہ کو یہ دیکھ کر بڑی غیرت آئی اور دل دل دی میں کہنے گئے کہ ہم تو برسوں سے صحبت میں رہ رہ ہیں مگر اس ہندی دل دل دی میں کہنے گئے کہ ہم تو برسوں سے صحبت میں رہ رہ ہیں مگر اس ہندی کو ایک ہفتہ میں جو سعادت بل گئی، وہ ہمیں اب تک نصیب نہ ہوئی۔ شخ سہروردی کو ایک ہفتہ میں جو سعادت بل گئی، وہ ہمیں اب تک نصیب نہ ہوئی۔ شخ سہروردی کو ایک ہفتہ میں جو سعادت بل گئی، وہ ہمیں اب تک نصیب نہ ہوئی۔ شخ سہروردی کے بھانپ کے اور فرمایا کرتم لوگوں کی لکڑی تو گیلی اور بھیگی ہوئی سے، لہذا اس میں آگ کے ایک کیونک میں آگ نے بگڑ لیا۔

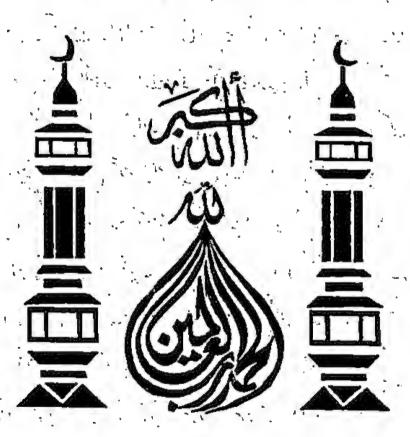
شیح بہاءالدین کے یہاں بہت بڑی مقدادیں ہدایا اور نذرانے آتے رہے تھے، جفیں آپ فقراء وساکین پرخرج کرویا کرتے۔ایک دفعہ ملتان ہیں شدید قط پڑا اور والی ملتان کواناج کی شخت ضرورت پڑی۔اس نے شخصا حب سے غلہ ما نگاتو آپ نے اناج کا ایک بڑا ڈھیرعنایت فرما دیا۔ جب والی کملتان کے آدمی اناج لینے گئے تو انھیں ڈھیر کے نیچ سونے سے بھرے ہوئے سات پیالے ملے۔ وہ انھیں گئے تو انھیں ڈھیر کے نیچ سونے سے بھرے ہوئے سات پیالے ملے۔ وہ انھیں اس کی بھی لے کر چلے گئے۔ حب حاکم ملتان نے دیکھا تو شیخ کی خدمت میں اس کی اطلاع بھی ان ورمعلوم کیا کہ ان کا کیا کیا جائے؟ اس پر آپ نے فرمایا کہ مجھے معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہمہ کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہمہ کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہمہ کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہمہ کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہمہ کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہمہ کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے نیچ دنیا بھی ہے۔ہم نے جو کھی دہاں تھا سارا ہم کردیا اور معلوم تھا کہ ڈھیر کے ایک دی ایک دیا ہوں تھی ہی ہے۔

سے بہاء الدین زکریا ملتانی نہایت قانع، صابر وشاکر اور الله تعالی کے ان

بندوں میں سے تھے، جن کی زندگی ارشاد خداوندی "یا ایھا الناس کلوا من الطیبات و اعملوا صالحاً" کی ملی تفیر ہوتی ہے۔

ان کی وفات ۱۹۲۱ھ یا ۱۹۲۱ھ میں ہوئی۔ ان کے تلافدہ ومریدین میں شخ فخر الدین عراقی، کنز الرموز، زادالمسافرین اور نزمة الارواح کے مصنف بشخ امیر حسین وغیرہ بیں ان کی سل میں دین ودیا نت، تفوی وطہارت کے ساتھ سیاست وحکومت بھی رہی۔ ان کے حالات زندگی بہت کی کتابوں میں تفصیل کے ساتھ مذکور ہیں۔





باب: س

حاكم مالابار:سامري

ينتخ زين الدين بن عبدالعزيز بن زين الدين بن على بن احرمعرى مالا باري ا في كتاب "تحفة المجاهدين في بعض أخبار البرتگالين "من حسك تالیف سے ٩٩٣ه میں فارغ موئے ، مالابار کے اندر اسلام کی آمدیر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ کچھ یہودی اور عیسائی اینے اہل وعیال سمیت مہاراجہ "ملیبار" كى جائے تيام قصبه "كدنكلور" -كرن گنور-آئے اور مهاراجه سے زمينيں باغات اور ر مائش کے لیے مکانات کی درخواست کی ۔اس کی طرف سے عطا کیے جانے کے بعدیدلوگ ای قصبے میں بس گئے۔اس کے کئی سال بعدایک سن رسیدہ مسلمان کے بمراه چندغريب مسلمان ، حضرت آدم على نبينا وعليه الصلوة والسلام ك قدم مبارك كى زیارت کے ارادے سے اس شہر میں پنتے۔ جب مہاراجہ کوان مسلمانوں کی آمد کی خبر ہوئی تو اٹھیں بلوایا، خاطر مدارات کی اور ان کے حالات معلوم کیے۔ س رسیدہ متخص نے حضور اکرم علاقائے کے حالات، مذہب اسلام اور مجز وشق القمر کی بابت اسے بتایا۔ اللہ تعالی نے اس کے دل میں حضور اکرم عظیظ کی صدافت ونبوت کی بات دُال دى، چنال چەدەايمان لے آيا اوراس كادل حضورا كرم عليه كامحبت سے كبريز ہوگیا۔اس نے س رسیدہ بزرگ سے کہا کہ قدم مبارک کی زیارت سے فارغ ہوکر ا بیغے رفقاء سمیت یہاں آئیں، میں بھی آپ لوگوں کے ساتھ نکل چلوں گا۔ نیز اس نے بیربات اہل مالا بارکوبتائے سے تی کے ساتھ منع کردیا۔ اس کے بعد بیمسلمان ''سیلون'' گئے اور قدم مبارک کی زیارت کرکے''کرن گنور'' واپس آئے۔اس

بزرگ خض سے مہاراج نے کہا کہ بغیر کسی کواطلاع دیے سفر کے لیے کسی کشتی کا انظام کریں۔ کرن گنور کی بندرگاہ پرتا جروں اور دوسر بے لوگوں کی بہت کی کشتیاں اور جہاز ہرونت موجود رہا کرتے تھے۔ بڑے میاں نے ایک جہاز والے سے بات کی کہ میں اور چند دوسر نقیر تمہارے جہاز سے سفر کرنا چاہتے ہیں۔ جہاز کا مالک اس پر تیار ہو گیا۔ سفر کا وقت جب قریب آگیا تو مہاراجہ نے اپن خاند اور وزیروں سب کوسات روز تک اپنے پائ آنے سے منع کردیا۔ حکومت مالا بارک واشخت ہر شہر کے نظم ونت کے لیے کسی نہ کسی کونا مزد کر دیا اور سب کے نام سرحدوں کی مرحد میں داخل نہ ہو۔ تعیین کی بابت تفصیلی خط کھے، تا کہ کوئی دوسر سے کی سرحد میں داخل نہ ہو۔

یہ واقعہ مالایار کے مندوؤں میں بھی بہت مشہور ہے۔ بیرمہاراجہ پورے مالا باركا حاكم تقاراس كى سرحد جنوب مين "راس كمارى" اورشال مين "كانكركوث" تک تھی۔ان انظامات سے فارغ ہوکررات کے وقت ان مسلمانوں کے ہمراہ کشتی میں سوار ہوکر پنڈرانی پہنچا۔ وہاں ایک دن اور ایک رات قیام کرنے کے بعد" دھرم پٹن" کے لیےروانہ ہوا۔ وہاں تین دن قیام کے بعد براہ سمندر دھر" بہنچا۔ یہاں ایک عرصے تک مقیم رہا۔ پھرمسلمانوں کی ایک جماعت کے ساتھ' مالا ہار'' کاسفرکیا، تاكدومان اسلام كي نشروا شاعت اورمساجد كي تعمير كي جائے -اسى ا شاء مين مهاراجه شدید بیاری میں مبتلا ہوگیا۔اس لیےاس نے اسے ہمراہ مسلمانوں:حضرت شرف ین ما لک، ان کے رضاعی بھائی: حضرت ما لک بن دینار اور بھتیجے: ما لک بن حبیب کووصیت کی کہاس کے انتقال کے بعدوہ مندوستان کاسفر ملتوی نہ کریں۔اس پران حضرات نے مہاراجہ سے کہا کہ میں نہ تو اس کا شہرمعلوم ، نہ ہی حدود ریاست ، ہم نے تو آپ کی رفاقت کے سبب سفر کا ارادہ کیا تھا۔ یہ سن کرمہاراجہ نے مجھد مرتک غور وفكر كيا _ پھر مالا بارى زبان ميں ايك تحرير لكھ كران كے حوالے كى ۔اس تحرير ميں ا پنا آقامتی شهر، اعزه واقرباء، نیز مالا بار کے مختلف شهروں اور علاقوں کے حکمرانوں

کے نام کھے اور ان مسلمانوں سے کہا کہ کرن گنور، در پٹن، بنڈرانی، یا کویم میں سے کسی ایک شہر میں فروکش ہوں۔ نیز بیا تاکید کردی کہ میری بیاری اور وفات کی صورت میں موت کی خبر اہل مالا ہار سے نہ بتا کیں۔ اس کے بعد اس کی وفات ہوگئے۔ رحمۃ اللہ واسعۃ۔

اس کے کئی سال بعد شرف بن ما لک دینار، ما لک بن حبیب اس کی زوجہ قمریہ نیز کھاورمسلمانوں نے اپنے اہل وعیال اور دوسر معتقدین کوساتھ لے کر مالا بارکا سفر کیا ' دکرن گنور' پہنچ کر قیام کیا اور مذکورہ مہاراجہ کی تحریر وہاں کے موجودہ حکمراں کو دی۔ تاہم اس کے انقال کی خرفی ہی رکھی۔ موجودہ راجہ نے جب خط پڑھاتو متوفی مهاراجه کی تحریر کے بموجب انھیں زمینیں اور باغات الاث کردیے۔ بیلوگ بہاں قیام پذیر ہو گئے اور ایک معجد تعمیر کی۔ مالک بن دینار بھی میبی بس گئے۔لیکن ان کے تجیتیج: ما لک بن حبیب نے مسجد تغییر کرنے کی خاطر'' مالا ربار'' میں سکونت اختیار کی۔ يهال سے روانہ ہوكر مالك بن حبيب مع بيوى بيخ " كوم" آئے اور وہال ايك مسجد تغییر کی۔ پھر'د کولم''ہی میں اپنی اہلیہ کو چھوڑ کر''ہیلی مارادی'' آ گئے اور وہاں بھی مسجد بنائی۔ بعد ازاں'' باکنور' جاکر ایک مجد تعمیر کی۔اس کے بعد ''متگلور' واپس آکر يہاں بھى ايك مسجد بنائى۔ يہاں سے روانہ ہوكر "بيلى مارادى" آئے جہاں تين ماه تك قيام كيا۔ يہاں سے "چرپٹانوم" كئے اور ايك مسجد بنائی _ پھر" درم پٹن" جاكر ایک معجد بنائی۔ وہاں سے "نینڈرانی" آئے اور وہاں بھی ایک معجد تقبیر کی۔ پھر '' حالیام'' بہنچ اور ایک مجد تغیر کی اور یہاں یانج ماہ تک مقیم رہے۔ یہاں سے نکل کر اسيع عم محترم: حضرت ما لك بن دينارك بإس آئے - پھران تمام مساجد كاسفركيااور ان سب میں نمازیں اداکرتے ہوئے" کرن گنور" کے لیے واپس آئے۔اس کے بعد ما لک بن دینار اور ما لک بن حبیب اینے ساتھیوں تلامذہ اور غلاموں کے ہمراہ '' کولم'' آئے۔جہاں مالک بن دیناراوران کے کچھ تلامذہ کو چھوڑ کریاتی سارے

لوگ آباد ہوگئے۔ ان حضرات نے ''فھر'' کاسفر کیا اور متوفی مہاراجہ کی قبر پر بنے ہوئے تبے کی زیارت کی ۔ یہاں سے روانہ ہوکر حضرت مالک بن دیناز ''خراسان'' گئے اور و ہیں ان کا انتقال ہوا۔ اپنے پچھاڑکوں کو'' کوم'' ہی میں چھوڑ کر مالک بن حبیب اپنی بیوی کے ہمراہ ''کرن گنوز' واپس آئے۔ جہال ان کی اور ان کی اہلیہ دونوں نے وفات یائی۔ یہے مالا بار میں اسلام کی اولین آمدکا واقعہ۔

تاہم اسلام کی اولین آمدگی تاریخ کاہمیں علم نہیں ہے۔ گرظن غالب ہے کہ بیددوسری صدی ہجری کے بعد کا واقعہ ہے۔ اوراہل مالا بار میں جو بات مشہور ہے کہ مہارا چہ مذکور نے حضورا کرم سے تھے کہ مہارک میں ہی جا ند ہے دوگئر ہے ہونے کو دیکھ کراسلام قبول کرلیا، اس نے مکہ مکرمہ کا سفر کیا، حضورا کرم سے تھے ہے مہاتھ ''مالا باز' کے لیے روانہ شرف ملا قات بھی حاصل کیا اور پھر مذکورہ جماعت کے ساتھ ''مالا باز' کے لیے روانہ ہوا اور راستے میں وفات ہوئی، تو ان میں سے کوئی بھی بات درست نہیں ہے۔

دوسری صدی ججری میں یہ شہور ہے کہ مہاراجہ ندکورہ کی قبر 'ظفار' میں ہے نہ کہ' دھر' میں ہے۔ اس اطراف کے نہ کہ' دھر' میں۔ اس کی قبر بہت مشہوراور متبرک جھی جاتی ہے۔ اس اطراف کے لوگ اس مہاراجہ کا نام' سامری' بتاتے ہیں۔ جہاں تک اس مہاراجہ کے غائب ہوجانے کی خبر کا تعلق ہے تو یہ تمام باشندگان مالا بار میں مشہور ہے، خواہ وہ مسلمان ہوں یا غیر مسلم ۔ البتہ غیر مسلم وں کا یہ بھی خیال ہے کہ اسے آسمان پر اٹھالیا گیا ہے۔ اس وجہ سے انھیں اس کے دوبارہ آمدگی امید ہے۔ نیز اس سبب سے بدلوگ' کرن گور' میں ایک جگہ خصے اور پانی فراہم کیا کرتے اور ایک متعین شب میں اس کے نزول کی آس لگائے رہتے ہیں۔ مالا باریوں میں یہ بھی مشہور ہے کہ جب سفر کا وقت تو بیارا جہ نے حکومت سب کو تقسیم کردی' سامری' جس نے سب سے قبیلا' کالی کئی' میں بندرگاہ بنوائی، چوں کہ وہ اس وقت موجود نہ تھا؛ اس لیے اسے کہی شہر کی حکومت تفویض نہ کی۔ جب وہ آیا تو اسے ایک تلوار دی اور کہا کہ یہ تلوار

مارواور ما لک بنو۔ اس نے ایبائی کیا اور پھے رسے بعد" کالی کٹ" کا ما لک بن گیا۔ کالی کٹ میں مسلمانوں نے سکونت اختیار کی، اہل تجارت وصنعت، مختلف علاقوں ہے آکر بیے، تجارت کو بڑا فروغ ملا نیتجاً "کالی کٹ" بہت بڑا شہر بن گیا۔ مسلم اور غیر مسلم ہر طبقے اور فد ہب سے تعلق رکھنے والے افرادر ہائش پذیر سے اور ریاست مالا بار کے مختلف شہرول اور علاقوں کے راجاؤں میں سامری سب سے بڑا اور مضبوط راجہ بن گیا۔ ریاست کے تمام راجگان غیر مسلم سے کوئی کمزوراورکوئی طاقت ورگر حلقہ ہے گوئی کمزوراورکوئی حام المام مہاراجہ فدکور کی اپنی سرحد سے تجاوز نہ کرنے کے تاکیدی تھم، اس کے لیے اس کی دعاء، حضورا کرم سلی اللہ علیہ وسلم اور فد ہب اسلام کی برکت کے سنب طاقت ور راجہ این کے دوراجہ پر نہ تو جملہ کرتا اور نہ بہ زور طاقت اس کے علاقے پرقابض ہوتا۔

ان راجگان میں ہے کی کی صومت صرف ایک فرت کے تک اور کسی کی اس سے کھے ذیادہ تک تھی۔ کسی کے بہاں دوسوء

تین سو تا ایک بزرار، کسی کے پاس پانچ بزاراور دی بزارہ ہے کہ کہ براراد ایک اس سے بھی کچھ زیادہ تعداد میں فوج ہوتی ہے۔ اسی طرح کچھ علاقے ایسے بیں، جہاں دویا تین یا اس سے نیمی کچھ زیادہ تعداد میں فوج ہوتی ہے۔ اسی طرح کچھ علاقے ایسے بیں، جہاں دویا تین یا اس سے زیادہ دراج مشتر کہ طور پر حکومت کرد ہے ہیں۔ حالال کہ قوت و دورکت اور لشکر کے اعتبار سے ان میں تفاوت بھی ہے۔ ان میں جنگ وجدال بھی ہوتا ہے، مگر اشتر اک علی عالہ باتی رہتا ہے۔ ان تمام راجگان میں سب سے زیادہ فوج ''تر ڈو' راجا کے پاس ہے، جو کولم، راس کماری اوران کے ماہیں شرق علاقوں کا حاکم ہے۔ ان علاقوں کا حاکم ہے۔ ان علاقوں کا حاکم ہے۔ ان علاقوں میں بہت رجواڑے ہیں مثلاً کول تری، رائے ہیں، ماردی، چرپٹن، کور، ارکا ہے اورڈ رپٹن وغیرہ گر سب سے زیادہ رعب داب کا ماک اور اس سے زیادہ شہور دراجا' سامری' ہے۔ جس کی وجد ین اسلام کی برکت، مسلم اوراج، تمام مسلمانوں بالخصوص پردیسی مسلمانوں کا اعزاز واکرام کیا خیاتا ہے۔ مگر افواج، تمام مسلمانوں بالخصوص پردیسی مسلمانوں کا اعزاز واکرام کیا خیاتا ہے۔ مگر افواج، تمام مسلمانوں بالخصوص پردیسی مسلمانوں کا اعزاز واکرام کیا خیاتا ہے۔ مگر

ہندووں کاخیال ہے کہ بیسب کھائی مہاراجہ کی عطا کردہ مکوارکا کرشمہہ۔ان کے بقول وہ مکوار' سامری' کے پاس اب تک موجود ہے، جس کا وہ بہت اجر ام کرتا اور جب وہ کی جنگ یا بوے جمع میں جاتا ہے۔ جب وہ کی جنگ یا بوے جمع میں جاتا ہے۔

راجاسامری این اعزہ واقرباء کے علاوہ کی دوسر سے داجات جنگ کا ارادہ کرتا ہے تو وہ راجا مجبوراً روپ پیسے اور اپنا زیرا نظام پھی علاقہ سامری کو دے دیتا ہے۔ لیکن اگر وہ ایبا نہ کرے تو قدرت کے باوجود سامری اس کے علاقے پر زبردی قبضہ بین کرتا، خواہ کتنا عرصہ نہ ہوجائے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ اہل مالا بار این قدیم رسومات وعادات کی شاذونا در بی خلاف ورزی کرنے پر آمادہ ہوتے ایس کی راجا سامری کے علاوہ باتی تمام راجگان، اگر ان کا بس چاتا ہے تو قبل میں رکھتے ہیں۔ وغارت کری اور تباہی و بربادی ہی سے دل چھی رکھتے ہیں۔

علام معری مزید فرمات بین کنترف بن ما لک، ما لک بن دیناداور ما لک بن دیناداور ما لک بن حیب و غیره فذکورة الصدر صفرات الابار الابار الدی معجدی تغییر کیس، مالا بار میس اسلام کی اشاعت بوئی، ابل مالا بار وفته رفته اسلام قبول کرنے گئے، بہت سے علاقول کے تجارت پیشہ افراد نے یہاں کا رخ کیا، مالا بار کے دوسر پیشہ مثلا: کالی کٹ، بلین کوٹ، ٹراوکوٹ، کنور، پوٹائی، پریور نکاؤ، چالیام کا مضافاتی قصیہ: پرونور، پنڈرانی کوٹ، ٹراوکوٹ، کنور، پوٹائی، پریور نکاؤ، چالیام کا مضافاتی قصیہ: پرونور، پنڈرانی کوٹ، ٹراوکوٹ، ٹراوکوٹ، ٹراوکوٹ، ٹرکوڈی، علاوہ ازیں کنوراکارڈ، ٹراکور، نیلی، ڈرپٹن کے جنوب میں دوپٹن، نادورام اور کرن گنور کے جنوب میں کوچینڈ بت، دیلیرم اور دوسر بندرگائی شہروں میں خوب روئی ہوگئ، ان کی آبادی میں اضاف ہوا۔ چوں کہ ان علاقوں کے حکم رال باوجوداس کے کہوہ خود بھی غیر سلموں پر شتمل ہے، مسلمانوں کے ساتھ کی مقتم کی ظلم وزیادتی نہیں کرتے، اس لیے مسلمان تا جربھی آباد ہوئے اور ان شہروں کی مسلمان تا جربھی آباد ہوئے اور ان شہروں کی میں اضافہ کیا۔ حالان کہ مسلمان محکمی روئی میں اضافہ کیا۔ حالان کہ مسلمان محکم میں اور کل آبادی کا دی فیصد بھی نہیں

جیں۔ قدیم زمانے سے بی مالابار کی سب سے بڑی اور مشہور بندرگاہ ''کائی کٹ' رہی ہے۔ لیکن جب سے فرنگی بہاں آئے اور اہل ''کائی کٹ' کے سفر واسفار پر پابندی لگادی، اس وقت سے ویران اور غیر آباد ہوگئی ہے۔ پوری ریاست مالابار میں ایک بھی مسلمان امیر اور حاکم نہیں ہے۔ بلکہ سارے کے سارے داجا غیر مسلم ہیں۔ جونظم وضبط کے ساتھ حکومت کرتے ہیں۔ جب کسی مسلمان سے کسی قابل تاوان جونظم وضبط کے ساتھ حکومت کرتے ہیں۔ جب کسی مسلمان سے کسی قابل تاوان حرکت کاصد ور ہوجا تا ہے تو اس پر مالی تاوان عائد کرتے ہیں۔

الحاصل ان حکام کی نظر میں مسلمانوں کی کافی عزت داختر ام ہے۔ مسلمانوں کو جعداورعیدین کی نمازیں ادا کرنے کی پوری آزادی ہے، قاضی اور مؤذن یہی حکام رکھتے ہیں اور مسلمانوں کے مابین اسلامی شریعت کے احکام کے نفاذ میں بھی تعاون كرتے ہیں۔ ليكن جمعہ كوچھٹى كرنے كى اجازت نہيں ہے۔ اگر كوئى مسلمان چھٹى كرتا ہے تو تقريباً ہرشہر ميں اس كے اوپر مالى جرماندلگايا جاتا ہے۔ اور جب كسى مسلمان سے قابل گردن زدنی کوئی حرکت سرزد ہوتی ہے توسر برآ وردہ مسلمانوں کی اجازت سےاسے تل کردیا جاتا ہے،اس کی لاش مسلمانوں کے حوالے کردی جاتی ہے، جے دول دیتے ، نماز جنازہ پڑھتے اور مسلمانوں کے قبرستان میں دفن کردیتے ہیں۔جب سی غیرمسلم سے اس طرح کی حرکت ظہور میں آتی ہے،اسے قل کر کے سولی بدانکا دیا جاتا ہے اور اس کی لاش جھوڑ دی جاتی ہے۔ کتے اور بھیریے کھا لیتے ہیں۔ تجارت یا قابل تاوان حرکت کے ارتکاب بران سے دسوال حصہ وصول کیا جاتا ہے۔ یہاں کے حکام کا شنکاروں اور باغ مالکان سے خواہ کھیت اور باغ کتنے زیادہ کیوں نہ ہوں، کسی طرح کا فیکس نہیں لیتے اور بغیر اجازت مسلمانوں کے گھروں میں داخل بھی نہیں ہوتے ہیں۔ جب بغاوت کا صدور ہوتا ہے تو ان پر مظالم ڈھا کرفل کرنے کے بجائے ،مسلمانوں کو مکلّف کرتے ہیں کہ باغی کواپنے ورمیان سے نکال ذیں۔ اگر ایسانہ کریں تو ان کا بائیکاٹ کریں اور حقہ پانی بند کر

دیں، اگر باشندگان مالا بار میں سے کوئی اسلام قبول کر ہے تواس کو تکلیف دینے کے بجائے دیگر تمام مسلمانوں کی طرح اس کا احترام کرتے ہیں، خواہ وہ محض بالکل حقیر اور ذلیل طبقے سے کیوں نقعلق رکھتا ہو، مسلمان تا جرپہلے ذمانے میں نومسلم محض کے قیام وطعام کا اپنے طور پر بہندو بست رکھتے تھے۔

قاضی صاحب لکھتے ہیں کہ 'سامری' کسی ایک شخص کا نام نہیں، بلکہ قدیم شاہی خاندان' جیانگر' سے تعلق رکھنے والے حکمرانوں کا لقب تھا۔ بیخا ندان جنوبی ہندوستان کے بیش تر علاقوں کا حاکم تھا اور اس کے ماتحت بہت سے جھوٹے جھوٹے حاکم مختلف علاقوں کے راجا ہوا کرتے تھے۔

ز برگفتگوجا كم مالا بارسامرى كے زمانے كى بابت مورخين ميں اختلاف ہے۔ محدین قاسم فرشته کی رائے ہے کہ اس نے عبد نبوی میں ہی اسلام قبول کیا اور ملک عرب كاسفر بھى كيا۔ اس عرصے ميں مسلمان "مالا بار" آكروبال آباد ہوئے۔ مكر شيخ زین الدین معبری کی رائے میں اس نے دوہری صدی ججری میں اسلام قبول کیا۔ "انڈین لائبریری آف لندن" میں عربی زبان میں منطوم دورسا کے موجود ہیں، جن میں اس حکر ال کے قبول اسلام اور مالا بار میں مسلمانوں کی آمد کا حال بیان کمیا گیا ہے۔ایک رسالے اس اس حاسم کانام "شکروتی فرماض" اوردوسرے میں "شکروتی خرمال ' فدكور ہے۔ شكروتى ، چكروتى جمعنى بادشاه كامعرب ہے اور فرماض يا فرمان " بیرو مال" کی تعریب ہے مستشرقین کے خیال عین اس حاکم کا نام" راجیرومن بیرو مال 'تھا۔ چیروس اس حامم کے خاندان کوکہا جاتا تھا۔ بعض مستشرقین کی رائے میں بیرها کم حضورا کرم عظیم کے زمانے کا ہے۔ مگرجد پدروایات اور تحقیقات کی روسے اس کا دوردوسری صدی جری کے آخر میں ہے۔ کھواہل تحقیق علائے مستشرقین کا كبنا ہےكة ييرومال "٢٥ راكست ٨٢٥ء مطابق ١٠ حكومالا باركے ساحل سے رواند ہوا اور ۸۲۷ء مطابق ۲۱۲ ه میں ساحل عرب بہنجا۔ اس کی وفات ۸۳۱ء مطابق

۲۱۲ ه بین ہوئی۔ اس قول کے مطابق " پیرومال" دوسری صدی جمری کے شروع کا ہے اوراس کے رفقائے سفر ۲۲۸ مطابق ۲۱۹ ه بین مالا بار کے اطراف بین پہنچے۔
گرمسلمانان مالا بار بین ہے بات مشہور ہے کہ اس حاکم کی قبر پر "عبدالرحمٰن السامری" کی ماہوا ہے اور ہے کہ وہ مالا بار ۲۱۲ ه بین ہوا جیسا کہ سیر شمس الدین قادری نے " تاریخ مالا بار" بین کھا ہے۔ لیکن میر ے نزدیک زیادہ صحیح بات ہے کہ حاکم مالا بار سامری کا دور دوسری صدی ججری کے آس باس کا صحیح بات ہے کہ حاکم مالا بار سامری کا دور دوسری صدی ججری کے آس باس کا سے، جیسا کہ علامہ معبری نے " متحقۃ المجاہدین" میں کھا ہے۔ (قاضی)

سامور ببندي

کشف الظنون میں ان کی بابت صرف اتنا لکھا ہے کہ "کتاب الحافی" سامور ہندی کی تھنیف ہے۔

سرباتك مندى

حافظ این جرنے ''الاصابة '' میں لکھا ہے کہ''مربا تک' ہندوستان کا حکراں تھا۔ ابوموی نے کی بن کی نیساپوری کے بلیذ: میسر بن احمد اسفرا کینی کے طریق ہے ''ذیل'' میں روایت بیان کی ہے کہ ہم سے تکی بن احمد بروی نے بتایا کہ میں نے اسحاق بن ابراہیم طوی سے بہر ہم سال سنا۔ انھوں نے کہا کہ میں نے شاہ ہندوستان: سربا تک کو'' قنوج'' میں دیکھا تو اس سے پوچھا کہ تمہاری عمر کتنی ہا کہ حضورا کرم صلی اللہ علیہ ہے؟ اس نے بتایا سات سو پجیس سال۔ اس نے یہ بھی کہا کہ حضورا کرم صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت حذیف، حضرت اسامہ اور حضرت صہیب گومیر سے پاس دعوت اسلام کے لیے بھیجا تھا، چنال چہ میں نے اسلام قبول کرلیا۔

اسلام کے لیے بھیجا تھا، چنال چہ میں نے اسلام قبول کرلیا۔

مگرامام ذہمی نے ' تجرید اسماء الصحابة'' میں صراحت سے لکھا ہے

کداس کی بید بات تو صری جھوٹ ہے اور ابن اثیر بن مندہ کو اپنی کتاب میں اس کا نام خارج نہ کرنے پرمعذور قرار دیا ہے۔ ابوحاتم احمد بن محمد بن حامد بلوی کا بیان ہے کہ ان سے عمر بن احمد بن محمد بن فرحان صوفی عبدالله بن حسین نے ، ان سے حافظ بالویہ بن بکر بن ابرا ہیم بن محمد بن فرحان صوفی نے بتایا کہ میں نے ابوسعید مظفر بن اسد حنی مطبب سے سنا۔ انھوں نے فرمایا کہ میں نے سنا کہ میں اور دوسری مرتب میں نے دومرتبہ نی اکرم میں کا دیدار کیا ہے:

ایک بار مکہ محرمہ میں اور دوسری مرتب مدینہ منورہ میں۔ آپ میں اس سے زیادہ حسین اور میان نے تھا کہ میں احمد نے بتایا کہ مربا تک ہندی کا انقال بہ تول مظفر بن اسد ، نوسوچور انوے سال کی عمر میں ساسا ہیں ہوا۔

علامہ طاہر مینی نے بھی "تذکوۃ الموضوعات" میں زیادہ عمر پانے والے معیان صحابیت کے ممن میں سربا تک ہندی کا تذکرہ کرتے ہوئے وہی بات لکھی ہے، جو حافظ نے اصابہ میں نقل کی۔ تاہم رتن ہندی اور سربا تک ہندی میں اتن بات تو قدر ہے مشترک ہے کہ اس نام کے لوگ ہندوستان میں ہوئے ہیں اور انھوں نے جھوٹا دعوائے صحابیت کیا۔

سسرو تامندي

سسروتا کا ذکر جارا کا ہندی کے تذکرے میں گزر چکا ہے۔ اس لیے وہیں ویکھاجائے۔(قاض)

سسهمندي

ہندوستان کے مشہور ومعروف شعبدہ بازوں، جادوگروں، اورطلسماتی لوگوں میں اس کا بھی شار کیا ہے اور لکھا ہے کہ سسہ ہندی متقد مین میں سے تھا اور شعبدہ بازی اور

حجاڑ بھونک میں اس کا مسلک وہی تھا، جو دوسرے ہند دستانیوں کا تھا۔ اس نے ایک کتاب بھی لکھی ہے۔ کتاب بھی لکھی ہے۔ کتاب بھی لکھی ہے۔ کتاب بھی لکھی ہے۔

سعد بن عبداللدسرند بي اصبهاني

علامه حوی نے ''معجم البلدان'' میں سرندیپ کا نام''سرندین' وکرکیا ہے اورلکھا ہے کہ بی بن مندہ کا بیان ہے کہ ابوالخیر سعد بن عبداللد سرند وی اصبهان آئے اور عبدالو ہاب کلائی سے حدیث کا الملاء کیا۔ نیزیہ کہ سعد بن عبداللہ سے کی بن احمد سرنجلانی اور ابوالی لیا دوغیرہ نے روایت کی۔

"سرندیپ" کا تذکرہ کرنے کے بعد حموی نے یوں ہی لکھا ہے۔ جب کہ لغت اور جغرافیہ کی کتابوں میں "سرندین" کالفظ موجود نہیں ہے، اس بنا پر غالب گنت اور جغرافیہ کی کتابوں میں "سرندیپ کو" سرندین" اس وجہ سے کھا ہوگا کہ انھیں سعد بن گمان یہ ہے کہ حموی نے سرندین کو کہ کا تب کی غلطی تھی۔ جب کہ حجے بات یہ ہے کہ سعد بن عبداللہ کی نسبت "سرندی بی بیں اور یہ چوتھی صدی اجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تاضی)

سلافهسندهي حضرت زين العابدين كي والده

ابن قتیہ نے 'المعاد ف' میں لکھا ہے کہ حضرت حسین رضی اللہ عنہ کی اسل مرف علی بن حسین اصغر سے ہی چلی ۔ کہتے ہیں کہ ان کی مال کا نام سلافہ یاغز الہ تھا، جو سندھ کی رہنے والی تھیں ۔ جس سے حضرت حسین کی شہادت کے بعدان کے آزاد کردہ غلام: زبید نے شادی کر لی اور ان سے عبداللہ بن زبید پیدا ہوئے ۔ اس طرح عبداللہ علی بن محمد نے عثمان بن طرح عبداللہ علی بن محمد نے عثمان بن عثمان کی روایت سے بیان کیا ہے کہ علی بن حسین نے خود ہی اپنی والدہ کی شادی زبید سے کی ابن خلکان کھتے ہیں کہ ابن قتیہ نے ''المعاد ف' میں نقل کیا ہے زبید سے کی ۔ ابن خلکان کھتے ہیں کہ ابن قتیہ نے ''المعاد ف' میں نقل کیا ہے زبید سے کی ۔ ابن خلکان لکھتے ہیں کہ ابن قتیہ نے ''المعاد ف' میں نقل کیا ہے

کہ حضرت زین العابدین کی والدہ سندھی تھیں ، جن کا نام سلافہ یاغز الہ تھا۔ مشہور ہیہ ہے کہ سلافہ فارس کے آخری شہنشاہ: یز دجرد کی لڑکی تھی۔ (تاضی)

ساق زوطی مندی بصری

علامہ عبدالرحمٰن ابن خلدون نے اپنی مشہور زمانہ تاریخ میں لکھا ہے کہ زط،
اوباش لوگوں کی ایک توم ہے، جس نے بھرہ کے راستے پر قبضہ کر کے لوث ماراور
عارت کری مجائی ۔انھوں نے اپنی ہی قوم کے ایک شخص جمہ بن عثمان کو اپنا حاکم اور
سردار بنالیا تھا۔ بعد میں سرداری کی ذھے داری ''ساق'' نامی شخص نے بھی انجام
دی۔ساق زوطی دوسری صدی ہجری کے قریبی دورکا ہے۔(تامنی)

سندهى خواتيمي بغدادي

علامہ ابن الجوزی نے امام احمد بن طنبل کے مناقب پر لکھی ابنی کتاب
"مناقب الإمام احمد ابن حنبل" میں ان شیوخ و تلافدہ کے ضمن میں جنہوں
نے امام موصوف سے روایت حدیث کی ، سندھی خواتیمی کا بھی ذکر کیا ہے اور ان کا
نام سندھی ابو بکرخواتیمی تحریفر مایا ہے۔

سندهي بن ابوبارون

امام ابوحاتم رازی نے ''کتاب المجوح و المتعدیل '' میں لکھاہے کہ سندھی بن ابو ہارون نے فلال سے روایت کی (شخ کانام ذکر نہیں کیا) اور ان سے مسدو نے روایت کی اور کہا کہ میں نے اپنے والد سے سنا، انھوں نے فرمایا کہ سندھی بن ابو ہارون مجبول ہیں۔ امام ذہبی نے ''میزان الاعتدال " میں تحریر فرمایا کہ سندھی بن ابو ہارون مسدد کے شخ ہیں گر ججول ہیں، پھراس کے معا بعد لکھا ہے کہ سندھی

ین ہارون مسدد کے شیخ ہیں اور مجبول ہیں۔

شایدسندهی بن ابو بارون اورسندل بن بارون ایک بی شخص بیل سیتیسری صدی بجری کے بیں۔(قاض)

سندهى مولى حسين غادم

علامہ طبری " تاریخ طبری " میں رقم طراز ہیں کہ سندھی مولی حسین خادم کے حوالے سے بیان کیا گیا کہ مسلمانوں نے بھی دریا پر ایک بل بنایا اور دومیوں نے بھی ایک بل بنایا۔ تو ہم اہل روم کو اپنے بل سے آنے جانے اور وہ مسلمانوں کو اپنے بل سے آنے جانے اور وہ مسلمانوں کو اپنے بل سے آنے جانے ویت تھے۔ نیز سندھی نے دونوں کے درمیان کی قتم کی مخاصمت اور جنگ سے انکار کیا۔

سندهی مولی حسین خادم کی بابت صرف ای قدر معلومات دستیاب ہوسکیں۔ یہ خلیفہ واثق باللہ کے عہد خلافت میں اس میں بقید حیات ہے۔ جب سلمانوں اور شاہِ روم کے درمیان فدید کی بات طے ہوئی مسلمان اور روی 'لامس' دریا پرشہر' طرطوں' روم کے درمیان فدید کی بات طے ہوئی مسلمان اور روی 'لامس' دریا پرشہر' طرطوں' سے ایک دن کی مسافت پر واقع' دسلوقیہ' میں جمع ہوگئے ہے۔ زیر تذکرہ سندھی خلافت اسلامیہ کے بہت معتمد سے ۔ان کا تعلق تیسری صدی جمری سے ہے۔ (قاضی)

سندهى بن ابان بغدادى

خطیب بغدادی "تاریخ بغداد" میں فرماتے ہیں کہ ابونفر سندھی بن ابان، خلف بن ہشام کے غلام تھے۔ انھوں نے پیچی بن عبدالجمید حمانی سے روایت کی اور ان سے عبدالصمد بن علی طستی نے روایت کی ۔ مزید فرماتے ہیں کہ ہم سے احمد بن علی مختسب نے بتایا کہ ہم نے احمد بن فرج وڑات سے پڑھا۔ انھوں نے ابوعباس احمد بن محمد بن معید کی روایت سے بیان کیا کہ سندھی بن ابان کی وفات بغداد میں اجمد بن معید کی روایت سے بیان کیا کہ سندھی بن ابان کی وفات بغداد میں

ذی الحجہ ۱۸۱ھ میں ہوئی۔ نیز بتایا کہ میں نے انھیں دیکھا کہ وہ ال عمر میں بھی خضاب کا استعمال نہیں کرتے تھے۔

مولی ابوجعفر منصور: سندهی بن شا م

ان کانام محر، والدہ کانام شا کہ تھا۔ یہ ابوجعفر منصور کے آزاد کردہ غلام اور مشہور شاعر کشام محر، والدہ کانام شاکر تھا۔ یہ بہت عقل مندزیرک، سلیقہ مندوشا کستہ، تجربہ کارسیاس اور عباسی خلافت کے اہم اور معتمدلوگوں میں ہتھ۔ان کے نفر اور ابراہیم نام کے دوصا حب زادے تھے۔ 'الانساب' میں علامہ سمعانی نے لکھا ہے کہ سندھی بن شامک سیکورٹی گارڈس کے گرال تھے۔ دوسری جگہ صراحت کی ہے کہ خلیفہ ہارون رشید کے دور میں شمر بغداد کے گرال اور محافظ تھے۔

علامہ ابن الجوزی، اہام احربی عنبل کے اوصاف و کمالات کے ڈیل میں ان کی ابترائی طالب علمی، طلب علم کے لیے اسفار اور دریائے '' د جلہ' کی طغیانی کا ذکر کرتے ہوئے رقم طراز ہیں کہ یہ طغیانی ہارون رشید کے دور خلافت میں ۱۸ اھیس رونما ہوئی۔ د جلہ میں الیی طغیانی اس سے پہلے بھی نہ آئی تھی۔ ہارون رشید کو اپنے اہل خاند اور مال واسباب لے کرکشتیوں میں سوار ہونا پڑ گیا تھا۔ ابوعلی بردانی کا کہنا ہے کہ سندھی بن شا مک جواس وقت والی بغداد ستھ، انھوں نے اس اندیشے سے لوگوں کو دریا عبور کرنے سے منع کر دیا تھا، کہوہ ڈوب نہ جا کیں۔

تاریخ ابن خلکان کے اندرامام کاظم کے تذکرے میں صراحت ہے کہ آخیں پہلے خلیفہ مہدی نے گرفتار کر کے قید خانے میں ڈالا، پھر ہارون رشید نے تا آل کہ جیل میں ہیں ان کی وفات ہوگئی۔ قید دبند کے اس پورے عرصے میں مشہور شاعر کشاجم کے دادا: سندھی بن شا کہ ان کے گرال رہے۔ مورخ ابن قتیبہ نے "عیون الا حبار" میں تکھا ہے کہ فصل مقد مات پر مورخ ابن قتیبہ نے "عیون الا حبار" میں تکھا ہے کہ فصل مقد مات پر

سندهی بن شا بک مالی، جولا ہے اور ملاح سے شم نہ لیتے، بلکہ مدی سے بی شم لے کر اس کی بات کومعتر مانتے ہوئے فیصلہ کیا کرتے اور فرماتے متھے خدایا! میں تجھ سے اونٹ چرانے والے اور بچول کتعلیم دینے والے کی بابت خیر کا طلب گار ہول۔

"تاریخ بغداد" میں خطیب فرماتے ہیں کہ علامہ اصمعی کابیان ہے کہ انھیں ولی عہد شہرادہ محدامین کے یہاں بھیجا گیا۔ جب میں اس کے پاس پہنچا تو اس نے بتایا کہ امیر المونین کی جانب سے فضل بن رہنج نے ایک تخریک ہی ہے، جس میں آپ کو تھم دیا گیا ہے کہ پیغام رسانی کے تین جانوروں پرسامان لادکران کے پاس لے جا کیں۔ امین کے سامنے محد سندھی بن شا مک بھی تھے۔ ان سے امین نے کہا کہ آٹھیں لے جاداور سامان لدوا کر امیر المونین کے پاس روانہ کردو۔ سندھی بن شا مک نے یہ ان میں دائر کردو۔ سندھی بن شا مک نے بیات واری اپنے جانشین و نائب عبد البجار کے حوالے کردی۔ اس نے سامان لدوا کر مجھے داری اپنے جانشین و نائب عبد البجار کے حوالے کردی۔ اس نے سامان لدوا کر مجھے رخصت کردیا۔ جب شہر" رقہ" میں داخل ہواتو فضل بن رہنج کوسامان پہنچا دیا۔ الح

ابوعبداللہ محد بن عبدوس جبیشاری نے "کتاب الو زداء والکتاب" میں اکھا ہے کہ ہارون رشید نے بغداد میں دونوں بلوں کے گرال سندھی بن شا کہ سے کہا کہ آج سے پورے ایک سال بعد تم خفیہ طور پر برا مکہ کے مکانات اور ان کے مال واسباب کو اپنی تحویل میں لے لینا۔ سندھی کا بیان ہے کہ جب ایک سال ہوگیا اور ہارون رشید جعفر برکھی کے ہمراہ" انباز" گیا ہوا تھا تو میں نے نہایت داز داری کے ساتھ برا مکہ کے مال واسباب اور مکانات اس اندیشے سے اپنی تحویل میں لے لے کہ مبادا برا مکہ کے مال واسباب اور مکانات اس اندیشے سے اپنی تحویل میں لے لے کہ مبادا ہارون رشید کی رائے بدل جائے یا اس بات کی اطلاع برا مکہ کو ہوجائے اور مین تل کر دیا ہوا گول سے دن تک میں مغموم رہا۔ جب شام ہوئی تو بل کی مشرقی سمت برات بھر میں شا ان خلال کی مشرقی سمت مرات بھر میں شا ان خلال کی مشرقی سمت مرات بھر میں شا ان خلال کی بینام یا قاصد آئے کی بابت ایک محف کو ذمے داری سونپ خلیفہ کی طرف سے کوئی پینام یا قاصد آئے کی بابت ایک محف کو ذمے داری سونپ دی۔ جب شام عوانی بی خچر پر سوارتھا، اس

کے بنچے ایک بورے میں جعفر برکی کی لاش تھی ،جس کے دوجھے کردیے گئے تھے۔ نیز اس كے ساتھ ہارون رشيد كاميرے نام ايك خط بھی تھا جس ميں لکھا تھا كہ ايك بل ير لاش کے ایک جھے کواور دوسرے پردوسرے جھے کوسولی پراٹکا دیا جائے۔چنال چہیں نے ایسائی کیا۔اس کے ایک سال بعد ہارون رشید مل کے مشرقی سب میں فروکش ہوااورجعفر کی لاش نذرا تش کردی۔ ہارون رشیدائے ہمراہ "مین" سے ایک خون خوار جلاد بھی لے کر آیا تھا۔ ارون رشید نے تمام قیریوں کو پیش کردیا اور جلا دیے حسب الحكم سب كى كردنين تن سے جدا كردين، آخرى مخف اس جلاد كا ہم مرتقا۔ جب اس كى گردن مارنے آگے برصاتو اس نے کہا کہ امیر الموثین سے کہو کہ میرے یاس ایک تقیحت ہے۔سندھی بن شا مک کابیان ہے کہاس برجلا درک گیا اور جو بات اس نے کہی تھی وہ ہمیں بتا دی۔ میں نے اس کے پاس آکر یو چھا وہ تھیجت کیا ہے؟ تواس نے کہا امیر المومنین سے بتادہ کہ میں ''اکفصی'' ہول، لیعنی ابوعبداللہ، متوکل باللہ کاخصوصی گلوکار۔ نیز بیر کہ میں موسیقی بجانے میں سب سے ہوشیار ہوں۔ اس وقت تک موسیقی عراق میں معروف نہ ہوئی تھی۔ سندھی کہتے ہیں کہ میں نے یہ بات ہارون رشید کو بتادی۔ کہتے ہیں کہ بیس کر ہارون نے حکم دیا کہاسے آل نہ کیا جائے بلکہ زندہ رچھوڑ دیا جائے۔ایک روز اسے اپنی مجلس میں بلوایا۔ ہارون شراب نوشی کے ليے بيٹے چکا تھا۔اس نے جو گايا تو ہارون جھوم اٹھا اورائے میں ہزار درہم انعام میں دینے کے علاوہ اپنی مجلس سے مخصوص گلوکاروں میں بھی شامل کرلیا۔

"فرانق" بروائک کا معرب ہے۔ بروائک ال محض کو کہا جاتا تھا جوڈاک
بردار کی دہ نمائی کی خدمت انجام دیتا تھا۔ مسعودی نے "کتاب التنبیه
و الاشراف" میں امین کے تذکرے میں لکھا ہے کہ جب امین امورسلطنت کو
سنجال نہ سکا اور اس میں کمزوری بیدا ہوگئ تو وزارت کی ذمہ داری امین کے دربار
ہی میں منشیوں اور سکریٹر یوں نے انجام دی۔ مثلا اساعیل بن صبیح اور اس پر چند

قریبی مشیر غالب آگے، جن میں عیسی بن نہیک ،سندھی بن شا مک اورسلیمان بن ابوجعفر منصور قابل ذکر ہیں۔(تامنی)

ابوالفرج اصفهانی نے "الا غالی " میں کھا ہے کہ اسحاق کا بیان ہے، ان سے پیشم بن عدی نے بتایا کہ ایک نہایت حسین وجیل حورت مکہ مرمد آئی طواف کرتے ہوئے مربی رہید کی نظر اس پر پڑگئ اور وہ عورت اس کے دل میں گھر کرگئ ۔ چنال چہم نے قریب جاکر گفتگو کرنی چاہی، مگر اس نے مطلق توجہنہ کی ۔ جب دوسری رات ہوئی تو عمراس عورت کو بلاتا رہا بالآخراس میں کا میاب ہوگیا ہورت نے اس سے کہا فہ راستہ جو گیا ہورت نے اس سے کہا فہ راستہ ہوئی تو کے رہوکہ تم حرم میں اور ایام حرمت میں ہو۔ مگروہ اس سے مسلسل بات کئے جارہا تھا حتی کہ عورت کو اندیشہ ہونے لگا کہ کہیں ہے بات مشہور نہ ہوجائے ۔ جب اگلی شب ہوئی تو عورت کو اندیشہ ہونے لگا کہ کہیں ہے بات مشہور نہ ہوجائے ۔ جب اگلی شب ہوئی تو کورت نے ایسے بھائی سے کہا کہ آپ ساتھ لے جاکر مجھے مقامات مقد سہ دکھا دیں ، کیوں کہ میں انھیں بہچانتی نہیں ہوں ۔ چنال چہ ایت بھائی کے ماتھ چل بڑی ۔ جب عربی رہید نے اسے دیکھائو چھیڑھائی کرنی چاہی گرساتھ میں اس کے بھائی کو دیکھ کر ماتھ میں اس کے بھائی کو دیکھ کر ساتھ کر بھائی کی دیکھ کر ساتھ کر دیکھ کر ساتھ کر بھی کر سے بھی کر بھی کر ساتھ کر بھی کر ساتھ کی کر ساتھ کر بھی کر ب

تعد الذئاب على من لا كلاب له الله تنقى صولة المستاسد الحامى د بهر الدئاب على من لا كلاب له الله تنقى صولة المستاسد الحامى

كر ملے ہے ہيں"۔

اسحاق کابیان ہے کہ مجھے سے سندھی مولی ابوجعفر منصور نے بتایا کہ اس نے کہا میری خواہش ہے کہ قریش کی کوئی ایسی نوجوان عورت باقی نہ رہنی جا ہے جسے میہ بات معلوم نہ ہو۔

علامہ طبری اپنی مشہور تاریخ میں لکھتے ہیں کہ اواھ میں ہارون رشید نے سرحدی علاقوں کے تمام گرجا گھر منہدم کردیے جانے کی ہدایت دی اور سندھی بن شا مک کے نام تحریک میں اسے تکم دیا کہ بغداد کے اندر جو بھی ذمی ، لباس اور

سواری میں مسلمانوں کی وضع کی مخالفت کرے اے گرفتار کرلیا جائے۔ تاریخ طری میں مزید لکھائے کہ محرین اساق نے بیان کیا کہ عفرین علیم کوفی نے اس سے بتایا اور ان سے سندھی بن شا مک نے استدھی کا بیان ہے کہ ایک روز میں بیٹے ہوا تھا کرایک خادم ڈاک لے کرمیرے پاس آیا۔ اس نے ایک چھوٹا ساخط میرے حوالے کیا۔اسے کھولاتو معلوم ہوا کہ ہارون رشید کا خط ہے، اس نے أييغ بى قلم ب لكها تقااس كامضمون بيقا: بسم التدالرحن الرحيم بسندهي إتمهاري نكاه جیسے ہی اس خط پر پڑے اگر اس ونت تم بیٹے ہوئے ہوتو کھڑے ہوجا نا اور اگر کھڑے ہوتو بیٹھنانہیں ، بلکسید ھے میرے پاس چلے آنا۔ سندھی کہتے ہیں کہ خط يرضي اي سواري كا جانورمنگوايا اورروانه بوكيا-اس وقت مارون رشيد "عمر" ميل تھا۔عباس بن رہیے نے مجھے بتایا کہ ہارون رشید دریائے فرات پرایک مشتی پرمیرا انظار كرتار بالم جب في كرواهي توجه سے كها عباس! يد ت والے سندهي اوراس كرفقاء مونے جامئيں۔ ميں نے عرض كيا امير المومنين! بالكل سندهى جيسا بى ہے، ات میں تم نمودار ہو گئے اور سندھی کا بیان ہے کہ سواری سے اتر کرمیں کھر اہو گیا۔ رشیدنے میرے میاں بلاوا بھیجا اور میں اس کے باس بھی کرتھوڑی دیر کھڑار ہا۔ پھر اس نے عباس سے کہا جاؤ اور گہو کہ متی پر پڑنے ہوئے پروے مٹاویے جا کیں۔ عباس نے علم کی تعمیل کی ۔ پھر مجھ سے خاطب ہوکر کہا ذرامیرے یاس آؤہ میں قریب كياتو فرمايامعلوم كسمقعدك لييس فتهادك ياس قاصد بهجاتها جيس نے جواب دیانہیں امیر المونین استے لگامیں نے ایک ایسے کام کی خاطر مسی بلوایا ہے کہ اگراس کاعلم میرے کرتے کی گھنڈی کو بھی ہوجا تا تواسے دریائے فرات میں وال ديتا بناؤمير بيسيد مالارول مين سب في دياده معمد كؤن مع مين في الم ہر تمہ کہنے لگا بالکل سیحے بتایا۔ پھر کہاا چھامیرے وزیروں میں سب سے زیادہ قابل اعتاد کون ہے؟ میں نے کہا مسرور کبیر۔ کہا بالکل ٹھیک بتایا۔ اچھاابتم اس وقت

يبال سےروانہ ہوجاؤاور حتی الامكان برق رفتاری سے جاؤاور جب بغداد بھنے جاؤتو اليغ معتدر فقاء كوا كشاكر واور أخير حكم دوكمل تيارر بين - جب آپ مقام "زجل" كوطے كريں تو برمكيوں كے مكانات برجا كرسوائے محد بن خالد كے ہر دروازے بر ایک خفس کو تعینات کر کے، اس سے تا کید کردو کہ نہ کسی کو اندر سے باہر آنے دے اورنہ باہر سے اندر جانے دے، تا آل کہ میرا فرمان نہ بھنے جائے۔ اس وقت تک برا مکہ کواس کی بابت کچھ بھی معلوم نہ تھا۔ سندھی کا بیان ہے کہ گھوڑے دوڑاتے ہوئے میں بعجلت بغداد پہنچا اور اپنے رفقاء کو یک جاکر کے ہارون رشید کے حکم کے مطابق انھیں ہدایت دے دی۔ کھی ای در بعد" ہر شمہ بن امین" ساتھ میں جعفر بن يجيٰ بركى ايك فچر برسوارآ كر بينج _ اس فچر برزين تك نتهى اوراس كى گردن بر مار كے نشانات بڑے ہوئے تھے۔اس نے آتے ہی جھے خليف كا خط ديا، جس ميں مجھے یہ تاکیدی می تھی کہ عفر بن کی کے جسم سے دوجھے کر سے بلوں کے اویرسولی پر لاکادوں۔ چنال چہ میں نے تعمیل حکم کرتے ہوئے اس کے جسم کے دوجھے کرکے بلوں کے او برسولی برائکا دیا۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ جعفراسی وقت سے سولی برائکا رہاتا آل کہ ہارون رشید''خراسان' کے ارادے سے نکلا۔ جب وہال گزرہوا تو میری نگاه جعفر پر بردی۔ جب جانب مشرق سے ہوکر باب خزیمہ بن حازم پر پہنچا تو اس نے دلیدین جشم شاری کوقید خانے سے بلوایا اوراسے جلاد: احمد بن جنید ختلی کو تھم دیا اوراس نے ولید کی گردن تن سے جدا کردی۔ پھرسندھی کی طرف مخاطب ہوکر کہ ت جعفر بن مجی بر می کوجلا کرخا مشر کردیا جانا جا ہیں۔ جب ہارون چلا گیا تو سندھی نے لکڑی اکٹھی کرائی اور جعفر کونڈر آتش کردیا۔

اس کاس وفات مجھے معلوم نہ ہوسکا۔ ہاں اتنا ضرور معلوم ہے کہ سندھی بن شا مک اور اس جیسے دوسرے سندھی ، بنوعباس کے دور میں ایسے ہی ظالم تھے ، جیسے بنوامیہ میں حجاج بن یوسف۔

سندهي بن شاس بقري

امام ابن ابو حاتم رازی در کتاب المجرح و التعدیل " بین کست میں کہ سندھی بن شاس بھری نے عطاء بن ابور بارح اور ابن سیرین سے روایت حدیث کی اور سندھی بن شاس سے موی بن اساعیل اور حوثرہ بن اشرس نے روایت کی ۔ کہتے ہیں کہ میں نے رہ بات اپنے والدمحر م کوفر ماتے ہوئے سن ۔

مین کہ میں نے یہ بات اپنے والدمحر م کوفر ماتے ہوئے سن ۔

مین ہیں کہ میں نشاس دوسری صدی ہجری کے متھ ۔ (قاضی)

سندهى بن صدقه شاعر

علامہ ابن ندیم نے ابن حاجب نعمان کی کتاب سے نقل کرنے ہوئے "
"الفھرست" میں شعراء اور ادباء کے اساء کے ذیل میں ان کی بابت لکھا ہے:
"سندھی بن صدقه شاعر له خمسون ورقة۔

قاضی صاحب فرماتے ہیں کہ اس کا مطلب سے کے سندھی بن صدقہ کے اشعار بچاس ادراق پر لکھے ہوئے تھے۔ ورق سے سلیمانی انداز کا ورق مراد ہے جس میں بین سطریں ہوا کرتی تھیں۔ اس طرح سندھی بن صدقہ کا دیوان تقریباً دو ہزاراشعارکا رہا ہوگا۔

مورخ ابن عساکر نے "التاریخ الکبیر" میں ابونواس من ہائی کے حالات کے ذیل میں تصریح کی ہے کہ سندھی بن صدقہ نے بتایا کہ ہم لوگ معرمیں ایک جھیت پر بیٹھے ہوئے تھے، ہمارے ساتھ ابونواس بھی تھا۔ استے میں کھی دفقاء تصیب شاعر کے اراد سے ہماری جانب بر صفح ابونواس نے دوات تیار کرکے تصیب کی خدمت میں درج ذیل اشعار لکھ کر بھیج:

قد استزرت عصبة فأقبلوا الله وعصبة لم تستزرهم طفلوا

رجوك فى تطفيلك وأملوا ﴿ والملوا حرمة الاتجهل واملهم خيراً فانت الافصل ﴿ وافعل كما كنت قديما تفعل المنهم خيراً فانت الافصل ﴿ وافعل كما كنت قديما تفعل المنافرة من في يحلوكون كوروت دى تو وه حاضر خدمت موئ مركم لحولوك وه بين جن كوتم نے بلایا نبیں وہ بحثیت طفیلی آئے انہیں امید تقی کرتم ان کوفیلی بناؤگاور امید کو جودر جماصل ہائى ہے برخض واقف ہائیس فیر کی امید دلاؤ كون كه تم لوگوں میں بہترین شخص مو، میں وہی كرم اموں جوتم كرتے تھ " مندهی بن صدقہ، شاعر اور ادیب تھ، ان كاتعلق دوسری صدی اجری سے تھا۔ (قاضی)

سندهی بن عبدویی رازی

ابن ابوحاتم رازی دست البحرح و التعدیل" میں لکھتے ہیں کہ سندھی بن عبدو بیرازی کا نام بہل بن عبدالرحمٰن اور بردوایت دیگر بہل بن عبدو بیاور کنیت ابوہیشم کلبی تھی۔ یہ بہدان اور قزوین کے قاضی ہتے۔ انھوں نے ابراہیم بن طہمان ، جریر بن حازم ، عبداللہ معمری ، خالد بن میسرہ ، ابواولیں ، ابومعشر اور عمر بن ابوقیس سے روایت کا اور ان سے ابومسعودا حمد بن فرات نے روایت کرتے ہوئے بیان کیا کہ میس نے اپنے والد بزرگ وارکو یہ کہتے ہوئے سنا کہ میس نے سندھی بن عبدو یہ کود یکھا۔ ان کے سراور والد بزرگ وارکو یہ کہتے ہوئے سنا کہ میس نے سندھی بن عبدو یہ کود یکھا۔ ان کے سراور واژھی پر خضاب لگا ہوا تھا۔ میس نے ان سے کوئی بات کہ می البتہ گفتگو ضرور سن واژھی بر خضاب لگا ہوا تھا۔ میں نے ان سے کوئی بات کہ می البتہ گفتگو ضرور سن مالم طائعی ، عیسی بن عبدالرحمٰن سلمی ، زہیر بن معاویہ ، قاضی شریک ، ابو یکر نہتا ہی اور عمر این ابو تجرعمرو بن رافع ، عبداللہ بن ابوزا کدہ سے بھی روایت کی ۔ ان سے زافر بن سلمان ، ابو تجرعمرو بن رافع ، عبداللہ بن سالم بزار ، بزید کے دونوں لاکوں : ابو تھر اور اساعیل ، تجاج بین جزہ ، ابوعبداللہ طہرانی اور تھر بن عمار نے راویت کی۔

امامرازی نے مزیدلکھا ہے کہ بھے سے عبدالرحمٰن نے بیان کیا ان سے ان کے والد نے ،ان کے والد کا کہنا ہے کہ بیل نے ابوالولید طیالی کوفر ماتے ہوئے سنا کہ شہر "رے" بیل دوآ دمیوں سے زیادہ حدیث کا علم جھے اور کسی بیل نظر شہ آیا۔ ایک قد تمہار سے قاضی رے یکی بن ضریس اور دوسرے چھانگیوں والے سندھی بن عبدوسے معہار سے قاضی رے یکی بن شریس اور دوسرے چھانگیوں والے سندھی بن عبدوسے کہ "دھک" رے کے مضافات بیس ایک بستی کا بابت "معجم البلدان" بیل کھا ہے کہ "دھک" رے کے مضافات بیس ایک بستی کا نام ہے،اس کی جانب بہت سے داویان حدیث منسوب ہیں، انہی بیس علی بن نام ہے،اس کی جانب بہت سے داویان حدیث منسوب ہیں، انہی بیس علی بن ابراہیم دھکی اور سندھی بن عبدوسے دھی ہیں۔ یہ ابواویس، اہل مدینداور اہل عراق سے دوایت کی جیسا کہ سمعانی نے لکھا ہے۔ تروایت کی حقول نے کہا ہے۔ والی کی ایک دوسری مضافاتی بستی کی طرف احمد بن ابراہیم نرمتی رازی کی نسبت ہے۔ انھوں نے کہا ہے کہ اس بستی کی طرف احمد بن ابراہیم نرمتی رازی کی نسبت ہے۔ انھوں نے کہا ہی بی عبدوسے سے کہاں بستی کی طرف احمد بن ابراہیم نرمتی رازی کی نسبت ہے۔ انھوں نے کہاں بن عبدویہ سندھی سے دوایت گی۔

امام ذہبی نے "المشتبه" میں لکھا ہے کہ سندھی بن عبدوریہ ہی اللہ بن عبدور درازی بیں ان کالقب سندھی ہے۔

نیزامام ذہی نے "میزان الاعتدال" میں بھی ان کا تذکرہ کیا ہے، گراس یں ان پر کیری ہے۔

 سندھی کرکے صراحت کی ہے کہ اس میں سندھی منفرد ہیں۔ حافظ موصوف فرماتے ہیں کہ میں کہتا ہوں کہ میں نے امام ذہبی کی تحریر پڑھی ہے کہ بیم شکر فی الحدیث ہیں۔ سندھی بن عبد دیے کبی رازی، تیسری صدی ہجری کے شے۔ (قاض)

سندهی بن علی ورّ اق بغدا دی

علامه ابن نديم "الفهرست" بين لكهة بين كم محص عد ابوالفرج اصفهاني نے بیان کیا، انہوں نے کہا کہ مجھ سے محد بن خلف نے بدروایت وکیے بیان کیا، ان کا بیان ہے کہ میں نے جماد بن اسحاق سے سناوہ کہدرہے تھے کہ ندمیرے والدنے "كتاب الاغانى الكبير" كم لكص اورنه الساديكا الى كى دليل بيهك اس کے بیشتر منسوب اشعار، ان کے ساتھ مذکورہ، نیز اس وقت بیش آنے والے واقعات کے ساتھ جمع کیے گئے ہیں۔ نیزیہ بھی بتایا کہ اکثر مغنیوں کی نسبت بھی غلط ہے۔علاوہ ازیں گلوکاروں اور مغنینوں کا جودیوان تالیف کیا ہے،اس سے مذکورہ بالا كتاب كے بطلان كا اندازہ ہوتا ہے۔ اس كتاب كوتو ميرے والدكى كتابول كى اجرت پرنقل کرنے والےنے والد کی وفات کے بعد مرتب کیا۔ سوائے''رخصت'' کے جو کتاب کا ابتدائی حصہ ہے، اسے تو میرے والدنے مرتب کیا تھا۔ مگراس کے تمام واقعات ہماری روایت سے ہیں۔علامدابن ندیم فرمائے ہیں کہ بیہ بات میں نے ابو بروکیج سے ازراہ حکایت سی تھی۔ لیکن اے اچھی طرح سے یا دکرلیا۔ ہال الفاظ میں کھی بیشی ہوسکتی ہے۔ "جھ "نے مجھے سے بتایا کہ مجھے ایسے قال نولیں ورّاق كاعلم ہے جس نے كتاب الاغانى الكبير مرتبكى -اس كانام سندهى بن على تھا۔اس كى دوكان "طاق الزبل" كے علاقے ميں تھى۔ ياسجاق كے ليے اجرت پر کتاب نقل کیا کرتا تھا۔ اس نے ادراس کے ایک ساتھی نے مل کریے کتاب مرتب ك_ بہلے يركتاب "كتاب الشركة"كنام بمشهورتقى - اس ككل كياره

اجزاء بین، ہرجز کی ابتداء میں جوداقعہ ہے اس نام سے دہ جزمشہور ہے۔ اس کتاب کا پہلا جزء ' رخصت' ہے جو بالیقین اسحاق کی تالیف ہے۔
اس کتاب کی تر تیب اس وقت لیمن تیسری صدی ہجری تک اس طرح منقول ہے:
جزءاول

ولا احمل الحقد القوم عليهم الله وليس رئيس القوم من يحمل الحقدا
"همان كفلاف برانا كين بيس ركفا بول كرقوم كامرداركين بيس ركفا كرتا"جزء سوم

المم بزینب إن الرکب قد رقدوا الله قل العزاء لئن کان الرحیل غدا
"تم زینب سے ملاقات کراد کیوں کہ قافلہ کے لوگ سو بھے ہیں۔ اگر قافلہ
کوچ کرجائے تو تم تعزیت نہ کرسکو گئے۔
جزء جہارم

قفانبك من ذكرى حبيب ومنزل الله بسقط اللوى بين الدخول فحومل "

"اعمر دونول دوستو! ذرائفهروجم النيخ دوست اوراس جگركويادكرك رولين جوجهي دخول اور حوال كردميان ريت كة دوس پرواتع تقى درميان ريت كة دوس پرواتع تقى درميان ديت بخم

اعادل إن الممال غادوراتح في ويبقى من المال الأحاديث والذكر
"اع طامت كرف والع المال و آف اورجاف والاع، بقاء اوردوام تو
شيري گفتگواورعده تذكرول كوحاصل ع"جرشهم

عوجی علینا ربه الهود جا الله ان لم تفعلی تحوجی
"اے مودج کی مالکن! ذراحاری طرف مرکردیکھو، اگرابیان کیا تو دور چلی جاؤگی"۔
جاؤگی"۔
جزیم مقتم

یابیت عاقلہ الذی أتفزل الله حدر العدی وبه الفؤاد مؤكل
"اے عاقلہ كا گھر التجھ سے جدائى كاسبب صرف وشمنوں كا خوف ہے، ورنہ
دل تو تجھ بى سے وابست ہے "۔
جز ہشتم

ھاج الھوی لفؤ اد المھتاج ﷺ فانظر بتوضح باکر الأحداج "دمجوب کے دل میں محبت موجزن ہے، سے سور سے مقام "توضی" میں لدے ہوئے ہوجوں کودیکھو"۔

برءتم

فإنك كالليل الذى هو مدركى ﴿ وإن حلت أن المنتأى عنك واسع " تيرى مثال رات كى جو بلاشه مير عباس آئ كى، اگرتو يمان كرك كرتو محص بهت دور موجائ كن" -

. إذا أذنبت دارها أهلها

: 6397.

"جباس كا كراس كالل فاندك ساته كناه كرك"-

سندھی بن علی وراق بغدادی دوسری صدی ہجری کے تھے اور اسحاق سے جن کے سندھی نقل نویس تھے، مشہور مغنی اسحاق بن ابراہیم موصلی مراد ہیں۔ (قاضی)

سندهى بن يجيل حرشي بغدادي.

سندھی بن کیچیٰ، سندھی بن شا مک کے معاصر بھی متھ اور ابن شا مک کی مانند

عباسی سلطنت کے چیدہ افراد میں بھی شار ہوتے تھے۔ انھیں آمور سلطنت میں بڑی مہارت حاصل تھی۔

ابوالفرج اصنهانی نے 'الاغانی'' میں لکھا ہے کہ 'فرید مولود' کی نشو ونما چاز میں ہوئی ہرآل رہے کے بہاں آگئ، جہاں اس نے ان کے گھروں میں رہ کر غزاور گیت گانا سیھا۔ بعدازاں ' برمک' داپس چلی گئی۔ جب جعفر بن یجی برکی کو قتل کر دیا گیا اور دوسرے برا مکہ پر طرح طرح کے مظالم ڈھائے گئے تو ہو وہاں سے بھاگ نکلی، ہارون رشید نے تلاش بھی کرایا، گریاس کے ہاتھ نہ آئی۔ بعد میں امین کے پاس چلی گئی۔ جب امین بھی قتل کر دیا گیا تو وہاں سے نکل بھا گی اور بیٹم امین کے پاس چلی گئی۔ جب امین بھی قتل کر دیا گیا تو وہاں سے نکل بھا گی اور بیٹم بید بیٹم کا انتقال ہو گیا تو سندھی بن خرشی، صاحب مذکرہ نے شادی کر کی اور انہی بعد بیٹم کا انتقال ہو گیا تو سندھی بن خرشی، صاحب مذکرہ نے شادی کر کی اور انہی کے بہاں اس کی وفات ہو گئی۔

نزدیک پہنا تو سندھی بن کی اور بیٹم بن شعبہ نے منادی کراے اپنے آ دمیوں کو جنگ کے لیے اکٹھا کیا۔ای اثناء میں ہیٹم بن شعبہ نے گھوڑوں کے ذمے دارافسر کو تھم دیا کہ ایک گھوڑے کی زین کس دی جائے۔ جنال چدافسرایک گھوڑ ااس کے پاس لے آیا۔ بیٹم نے گھوڑے پرنگاہ ڈالی اور کئی باراس کو چوما۔ افسرنے بیٹم کے چرے پر تغیر اور خوف کے آثار دیکھے تو عرض کیا اگر آپ کا ارادہ بھاگ نکلنے کا ہے تو اس محور برنكل جائيں۔اس ليے كه مقابله طاہر سے ہے، وہ مضبوط وتو إنا بھى ہے۔ ین كريشم بنس بردااور كينےلگا كهوه تيزرفار گھوڑالاؤ۔ اس ليے كهمقابله طاہرے ہے اور اس کے مقابلے میں بھاگ نکلنا کوئی شرم کی بات نہیں ہے۔ چنال چہسندھی ین میلی اور بیثم بن شعبه دونول نے دواسط" کوخیر باد که کرراه فرارافتیاری - طاہر جب "واسط" مين داخل بواتواسانديشهوا كربين يدونون" فحم الصلح" بيل پہنچ کر قلعہ بند نہ ہوجا ئیں ، اس لیے محد بن طالوت کوفورا روانہ کیا اور حکم دیا کہ ان دونوں سے بہلے 'فحم الصلح'' بہنے کر، انھیں اس میں داخل ہونے سے بازر کھو۔ ای کے ساتھ اپنے ایک سیدسالار: احمد بن مہلب کوجانب کوفدرواند کیا، جہال اس وفت محدامين كى طرف سے عباس بن موى مادى كورنر تقار جدب عباس كواحد بن مهلب کے کوفہ آنے کی اطلاع ملی تو امین کی بیعت ختم کر کے طاہر کے پاس پیغام بھیجا کہوہ مامون کی اطاعت وفرمال برداری اور بیعت قبول کرتا ہے۔ القصدطا برے گھوڑے دریائے نیل کے دہائے برفروش ہوئے اوروہ واسط اور کوفد کے درمیان تمام علاقوں یرقایض ہوگیا۔ای طرح امین کی طرف سے بھرہ کے گورنر بمنصور بن مہدی نے بھی طاہر کے پاس اس کی اطاعت قبول کرنے کا پیغام بھیجا۔طاہریہاں سے دخصت ہو کر " طریانا" بہنچا اور وہاں دوروز تک قیام پذیررہا۔ لیکن جب " طریانا" فوج کے مطلب کا نظرنہ آیا تو بل بنانے اور خندق کھودنے کا حکم دیا اور وہیں سے عاملوں کے نام گورنری کے ہدایت نامے جاری کئے۔

تمام واقعات ۲۹۲ هيل پيش آئے۔ (قاض)

" تاریخ طبری" ہی کے اندر بیدا قعمی ندکورہے کہ حسن بن مہل کی طرف سے عبدالله بن سعيد حرشي واسط اوراس كے اطراف كا والى تھا۔ ایک دفعہ واسط" كے نزد يك بى، ابوالسرايا ك فوج عبدالله كى مُدبِهِ بِمُراكِنُه كَي مُدبِهِ بِمُراكِي بِمِن مِين عبدالله كوشكست ہوئی اوروہ بغدادوالیں لوٹ گیا، جب کہاس کے بہت سے آدمی مارے گئے اور بہت ے قید ہوئے۔ جب حسن بن مہل نے دیکھا کہ ابوالسر ایا اور اس کالشکر جس کسی سے بھی صف آراء ہوتے ہیں، اسے فلست دیے بنانہیں رہتے اور بیرکہ حس شہر کا بھی وہ رخ کرتے ہیں اسے فتح کر لیتے ہیں، پھرحسن بن مہل نے محسوس کیا کہ اس کا کوئی بھی سیسالارابیانہیں ہے جو جنگ جیت سکے تو وہ مجور ہوکر "ہر تھ،" کے یاس چلا گیا۔ حسن بن بہل جس وقت ہر شمہ کے یاس پہنجا، اس وقت وہ مامون کی جانب سے عراق کا گورنرتھا۔ لیکن ولایت عراق کی تمام تر ذھے داری، حسن بن مہل کے سپر د كردى اورسن سے ناراض ہوكر خراسان كے ارادے سے نكل كھرا ہوا۔ جب وہ "حلوان" پہنچاتو حسن نے اس کے پاس سندھی اور صاحب مصلی صالح کو بھیجا کہ اس سے درخواست کریں کہ ابوالسرایا سے جنگ کی خاطر بغدادوا ہی لوٹ آئے ۔ مگراس نے ایا کرنے سے انکار کردیا اور قاصدنے اس کے انکارے حس کو مطلع کردیا۔ اس کے بعدسندھی نے نرمی اور ملاطفت کے ساتھ اس کے پاس کھ خطوط بھیج اور ہر ثمہ اس کی بات مان کر ۱۹۹ صیل بغدادوالیس آگیااورکوف جانے کی تیاری کی۔

کتاب بذکور میں ریجی تحریر ہے کہ ۲۰۲ھ میں اہل بغداد نے ابراہیم بن مہدی کے ہا تھ برخلافت کی بیعت کی اور اسے ''مبارک''کے نام سے پکارا جانے لگا۔اس کے پیچھے سندھی اور صاحب مصلی صالح کی گوشش کا دفر ماتھی ۔ نصیر الوصیف اور تمام غلام بھی اس میں شریک رہے۔ کیوں کہ بہی لوگ سر براہ اور سید سالا رہتے۔ یہ قدم انھوں نے مامون عباس کے اس فیصلے کے خلاف غصہ میں اٹھایا، جواس نے قدم انھوں نے مامون عباس کے اس فیصلے کے خلاف غصہ میں اٹھایا، جواس نے

عبای خاندان سے خلافت کونکال کر دوسرے خاندان میں لے جانے کی بابت کیا تھا۔ علاوہ ازیں پہلوگ مامون کے طرز حکومت اور اپنے آباء واجداد کے روایت سیاہ لباس چھوڑ کرسبزرنگ کالباس پہننے پر بھی اس سے شخت ناراض تھے۔

اس کے علاوہ بھی سندھی بن کیجی حرش کے حالات وواقعات ملتے ہیں، جن سے ان کی حکمت ودانائی اور امور جہاں بانی میں مہارت کا اندازہ ہوتا ہے۔ یہ تیسری صدی ہجری کے تھے۔ (تاننی)

سنكهارين بهونكرين سومره: حاكم سنده

والدکی وفات کے وقت، سنکھار کم سن تھا۔ اس لیے اس کی ہمشیرہ'' تاری'' سندھ کی حکمراں بنی۔ جب بیر بڑا ہو گیا تو سندھ کا با دشاہ بنااور'' کچھ'' کوفتح کیا۔ نیز ''فائک نی'' تک کے تمام علاقوں کا با دشاہ بن گیا۔ (تخنة الكرام)

شاه سنده : سوم ه اول

تحفۃ الکوام میں ندکور ہے کہ خاندان سومرہ کے لوگ سلطان محمود غرنوی

کے صاحب زادے: سلطان عبدالرشید کے دور حکومت میں یک جا ہوئے اور
چوں کہ عبدالرشید کم عقل اور کسی قدر خبطی تھا، اس لیے انھوں نے ۱۳۲۱ ھے ہے آس
پاس خاندان سومرہ ہی کے ایک شخص: سومرہ کونواحی '' تہری'' کا والی بنالیا۔ سومرہ
نے ان اطراف ونواحی پرقابض ہوکر خود مختاری کا اعلان کردیا، بحسن وخوبی امور
سلطنت کی انجام دہی کے چھ دنوں بعد' صاد'' کی لڑک سے شادی کرلی اور اپنے
علاقے کا مطلق العنان حکر ال بن گیا۔ اس عورت سے اس کا ایک لڑکا بھونکر جو
اس کا ولی عہد بھی ہوا، بیدا ہوا۔ سومرہ کی وفات ۲۲۱ ھیں سولہ برس تک حکومت
کرنے کے بعد ہوئی۔

سهل بن عبدالرحن سندهي رازي المالية الم

امام رازی دستی بی عبدویدازی سیمشهوراورکنیت الویشم سید انهول نزییر عبدارجمان، سندهی بی عبدویدازی سیمشهوراورکنیت الویشم سید انهول نے زبیر بین معاوید، قاضی شریک، مندل اور جریرین حازم وغیره سیروایت کی اوران سیمرو بین رافع ، تجابی بین جزه ، ابوعبدالله شهرانی اور محدین عمرو غیره نے روایت کی محدین محاله کابیان ہے کہ میں نے اپنے والد سے سنانھوں نے کہا کہ میں نے ابوالولید سے سناوه فرماز ہے کہ میں نے ابوالولید سے سناوه فرماز کی فرمات بین سندهی سے زیاده حدیث کاعلم رکھنے والد سے مرازی فرمات بین کرماز می اور جوانگیوں والے بین سندهی سے عبدالرجمان نے بیان کیا کہ رکھنے والد سے بہل بن عبدالرجمان و بیان کیا کہ میں کے والد سے بہل بن عبدالرجمان و بیل درمی کیا بیت معلوم کیا گیا تو فرمایا کروہ شیخ ہیں ہے معلوم کیا گیا تو فرمایا کروہ شیخ ہیں ہے میں کھا تے کہ بہل بن عبدالرجمان و بیل (دھی) میں موروی رمعاوی کیا گیا تو فرمایا کروہ شیخ ہیں۔ میں کھا تے کہ بہل بن عبدالرجمان و بیل (دھی) میں موروی (معاوی کیا گیا تو فرمایا کروہ شیخ ہیں۔ فرمیر بین موروی (معاوی کیا گیا تو فرمایا کروہ شیخ ہیں۔ فرمیر بین موروی (معاوی کیا گیا تو فرمایا کروہ شیخ ہیں ابور ہیں میں میں کھا تھی اور این ابواویس فرمیر بین موروی (معاوی کیا کیا تھی میں کیا تھیں کوری کیا در این ابواویس فرمیر بین موروی (معاوی کیا کیا کیا کہ میں کیا کیا کہ میں کیا کیا کیا کیا کیا کیا کہ کیا کیا کہ کیا کیا کیا کیا کیا کہ کیا کیا کیا کیا کہ کیا کیا کہ کیا کیا کیا کیا کیا کیا کیا کیا کہ کیا کیا کیا کہ کیا کیا کہ کیا کیا کہ کیا کیا کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کیا کیا کہ کیا کیا کہ کیا کہ

علامیمعانی نے 'الانساب ' میں لکھائے کہ ہمل بن عبدالر من و این ابوادیں رہیں مندل بن علی اور ابن ابوادیں رہیں مندل بن علی اور ابن ابوادیس و غیرہ سے روایت کرتے ہیں۔ نیما سے حدیث میں شار کیے جائے تھے۔ نیز ہمدان اور قروین دونوں کے اور قروین دونوں کے اور قروین دونوں کے قاضی ہے۔ ان سے عمرو بن رافع ، محمد بن حماد تبرانی ، حجائے بن رجاء ، محمد بن حماد تبرانی ، حجائے بن رجاء ، محمد بن عمار اور ایک کے علاوہ ایک جماعت نے روایت کی ہے۔ ا

 مقدرات کی بات ہے۔امام طبرانی فرماتے ہیں کہ بیردوایت ابن عون سے عبداللہ بن العلا کے علاوہ کسی اور نے بیان نہیں کی۔

سندھی بن عبدویہ، مہل بن عبدویہ اور مہل بن عبدالرحمٰن یہ نتیوں ایک ہی شخص: سندھی بن عبدویہ ہے ہی شخص: سندھی بن عبدویہ کے ہی نام ہیں ، اگر چہا لگ الگ ناموں سے ان کے حالات مستقل لکھے گئے ہیں۔(قاضی)

سهيل بن ذكوان، ابوسندهي مكى واسطى

"كتاب الجرح والتعديل" مين ان كى بابت مذكور ب كرسميل بن ذكوان مكى ابوسندهى نے حضرت عائشه صدیقه اور حضرت زبیر بن العوام سے روایت کی اوران سے بیٹم ، مروان بن معاویہ اور برزید بن بارون نے روایت کی ۔امام ابن ابوحاتم رازی لکھتے ہیں کہ یہ بات میں نے اسنے والدمحتر م سے می نیز فر ماتے ہیں كرہم سے عبد الرحمٰن نے ،ان سے على بن حسن مسنجانى نے بيان كيا ،ان كا كہنا ہے كميس نے ابراہيم بن عبدالله بروى سے سنا۔ وہ كہدر ہے ستھ كم سبيل بن ذكوان "واسط" میں تھے اور میرا خیال ہے کہ اصلاً کی ہیں اور پیچھوٹے تھے۔ امام ذہبی نے "میزان الاعتدال" میں تفریح کی ہے کہ ابوسندھی سہیل بن ذکوان نے حضرت عائشت روایت کی اوراس کا خیال تھا کہ حضرت عائشہ کا رنگ سیاہ تھا۔ امام یجی بن معین نے اس کو کذاب قرار دیا ہے اور دوسرے کئی علائے محدثین نے متروک الحدیث بتایا ہے۔ یہ ''واسط'' کے رہنے والے تھے۔ ابن ایوب کے اضافے میں بیٹم، بلکہ بزیر بن ہارون نے ان کا ساتھ دیا ہے۔ ہم سے بیٹم نے بیان کیا اور انھیں سہیل بن ذکوان نے بتایا کہ ایک عورت نے حضرت عبداللہ بن زبیر سے اپنے شوہر کے خلاف ظلم وزیا دتی کی شکایت کی اور کہا کہ اس کا شوہر نہ تو ایا م حیض میں ہم بستری ہے رکتا ہے اور نہ ہی دوہرے دنوں میں ۔ حضرت عبدالله

بن ذہر ان شوہر سے کہا چارمر تبددن میں اور چارمر تبدرات میں ہم بستری کرسکتے ہو۔ اس پر شوہر نے عرض کیا کہ اسٹے سے میرا کام نہیں چل سکتا اور آپ مجھے ایک ایسے کام سے روک رہے ہیں جے اللہ تعالی نے طال قرار دیا ہے۔ تب حضرت ابن زبیر شنے فرمایا کہ تم اسراف کے مرتکب ہوگے۔ حضرت عباد بن عوام فرماتے ہیں کہ میں نے ہیل بن ذکوان سے بوچھا کہ کیا تم نے حضرت عائشہ کود یکھا ہے؟ میں کہ میں نے کہا بتاؤ کس رنگ کی تھیں؟ کہنے لگا گندی رنگ کی عباد فرماتے ہیں کہ ہم سہیل پر دروغ گوئی کا الزام لگاتے تھے۔ اس لیے کہ حضرت عائشہ کا رنگ سفید مائل برسر فی تھا۔ امام نسائی لکھتے ہیں کہ سہیل بن ذکوان کا کہنا عائشہ کا رنگ میں ہوئی۔

حاكم نيبابوري نے "معرفة علوم الحديث" ميں اليے لوگول انكے يذكرے ميں جن كے اسے نام اور والد كے نام ايك طرح كے موتے ہيں، چر محدثین کے ایک ہی طبقے کے وہ راوی بھی ہوتے ہیں، جس کے سبب ان میں تمیز کرنا مشکل ہوجا تا ہے، اس ذیل میں کھا ہے کہ میل بن ذکوان اور سمیل بن ذکوان۔ سلے سہیل سے مراد بسہیل بن ابوصالح سان ہیں۔ ابوصالح کا نام ذکوان ہے۔ سہیل کے نام سے بی مشہور ہیں اور انہی کی صدیث سے بخاری میں مروی ہے۔ان کی بيش تر روايتن اين والدس بي - إليته كسى روايت من انهول في اي اور اسية والدك درميان المام الميش وتعقاع بن حكيم اورسيامولي ابوبكربن عبدالرحن كا نام بھی ذکر کیا ہے۔ جب کے دوسرے سہیل بن ذکوان کی ہیں، ان کی کنیت ابوسندھی ہے۔ یزید بن مارون کا بیان ہے کہ ہم سے ابوعمرو سہیل بن ذکوان کی نے بتایا، بیہ مارے شہر 'واسط علی رہتے تھے۔ ایر یدنے آن سے بدروایت مفرت عاکشہ اور حفرت عبداللدين زبير روايت كى بيت إن سي بيتم اورمروان بن معاوية في بعي روایت کی ہے۔ ابوسندھی مہیل بن ذکوان کی ، بہلی صدی بجری کے تھے۔ (قاض)

سيبوبي بن اساعيل قز داري كي

علامه سمعانی "الانساب" بین فرمات بین که ابودا و رسیبوید بن اساعیل بن داو د واحدی قرداری مکه مکرمه بی میں رہتے سے اور د بین درس حدیث بھی دیا۔ انھوں نے ابوالقاسم علی بن محمد بن عبدالله بن یکی بن طاہر حیین، ابوالفتح رجاء بن عبدالواحد اصبهانی اور حافظ ابوالحسین یکی ابرا بیم بن یکی بن عبدالله حقاک وغیرہ سے روایت کی اور ان سے ابوالفتیان حافظ عمر بن ابوالحسن روای سے روایت کی۔ اس کی وفات ۲۲ ھے بہلے یا بحد میں ہوئی۔

سيابوقه ديبلي

موی نے "معجم البلدان" مین لکھائے کہ "مونسہ" شرر "فعیمین" سے "موسل" کے راستے میں ایک مزل پرواقع ایک بستی کانام ہے۔ یہاں ایک سرائے ہے جے ایک تا جرسیا بوقہ دیبلی نے ایئے خرج پر ۱۱۵ ھیں بنوایا تھا۔

سيروك مندي

"کشف الطنون" میں صراحت ہے کہ سیروک ہندی کی کتاب کا ہندوستانی زبان سے فاری میں ترجمہ کیا گیا۔ بعد میں عبداللد بن علی نے اسے فاری سے واری میں ترجمہ کیا گیا۔ بعد میں عبداللد بن علی نے اسے فاری سے عربی میں نقل کیا۔ اس کتاب کا تذکرہ" عیون الانباء" میں بھی ہے۔

سیف الملوک اوراس کے دونوں لڑکے: رہزاور چھند

ان كى بابت 'تحفة الكرام' كى عبارت كاخلاصه حسب ذيل ہے: الور كاج راجه: دلوارائے نہايت ظالم اور بدكر دار شخص تھا۔ اس كى عادت تھى

کہ جب بھی ہندوستان سے کوئی تاجر پامسافر الور کے علاقے میں آتا تو اس کی آدھی دولت فیکس کے نام پر لےلیا کرتا تھا۔ ایک دفعہ ایسا ہوا کہ ایک شریف اور معزز فخص "سيف الملوك" في كاراد عصتا جرول كالباس يمن كرجلا - جب الور بہنیا تو دلوارائے کوئیس ادا کیا۔ سیف الملوک کے ہم راہ اس کی بیوی" بدیع الجمال" بھی تھی، جوسن وجمال میں اسم باسمی تھی۔ بیالور کے ناس سے بہنے والى ندى "ران" كراسة سي سفركرد باتفا جب داواراك في "بديع الجمال" مے حسن وجمال کے بارے میں ساتو حسب عادت اس کی نبیت خراب ہوگئ اور فیکس كے سلسلے ميں سيف الملوك كورفاركراليا۔ سيف الملوك نے اس سے كہا كرا ب مجھے تین دن کی مہلت دیں تا کہ میں آپ کے حسب منشافیکس ادا کرسکوں۔اس کے بعدسیف الملوک نے گر گرا کر بارگاہ ایزدی میں دلوارے کے لیے بددعا کا۔ چناں چہ خواب میں سیف الملوك نے ديكھا كراسے سنگ تراشوں كوكشتى بنانے سے لیے ایک موٹی رقم دیے جانے کے لیے کہا جارہا ہے، جس پرسوار ہوکروہ اور اس کی اہلیہ یہاں سے باہرتکل جائیں۔ چنال جداس نے ایسانی کیا اور الور سے نکل کر مكه مرمه بننج كي اور فريضه في سيم فراز موت وايسى مين سيف الملوك جب '' ڈیرہ غازی خان''اور' سیت پور'' پہنچا تو وہیں تیام پذیر ہو گیا۔ یہیں بدلیج الجمال ے اس کے دواڑ کے: رہداور چھتہ پیدا ہوئے۔ سیف الملوک اوراس کے دونوں الوكوں كى قبريں وہاں اب بھى موجود ہيں اور ربته كا قلعداى لۇكے كى جانب منسوب ہے۔ دلوارائے کے زمانے میں اس تلعے کا برا رعب ود بربرتھا۔ اس کے آثار ونقوش بارہویں صدی جری تک باقی رے۔اس واقع کے بعد "الور" میں ایسا عذاب نازل ہواجس کی وجہ سے بوراشہرت وبالا ہوکر ہمواراور چنیل میدان بن گیا۔

باب:سش

مندوستانی طبیب:شاناق

"الفہرست" میں شاناق کا تذکرہ ان کتابوں کے مصنفین کے ذیل میں کیا گیاہے جو مختلف اقوام کی گھوڑ سواری، ہتھیارزنی، ہتھیارسازی کے موضوع پر ککھی گئی ہیں اور لکھا ہے کہ شاناق ہندی کی کتاب جنگی تدبیر، کس طرح کے لوگوں کا بادشاہ کے لیے انتخاب کرنا بہتر ہوگا، گنگن ، کھانے پینے اور ذہر سے متعلق کی بادشاہ کے لیے انتخاب کرنا بہتر ہوگا، گنگن ، کھانے پینے اور ذہر سے متعلق

جب کہ "کتاب السموم" میں پانچ مقالے ہیں۔ اسے" منکہ ہندی "نے سنسکرت سے
"کوری زبان میں منتقل کیا۔ فاری سے اس کے ترجے کی ذمہ داری" ابوحاتم بلخی"
کوری گئتی، جس نے بچی بن فالد بن برکی کے لیے ترجمہ کیا۔ بعد میں مامون
رشید کے تھم پراس کے آزاد کردہ فلام : علی بن عباس بن احمد بن جوہری نے اس کا
عربی میں ترجمہ کیا۔ علی بن عباس ہی ہے کتاب مامون کو پڑھ کرسنایا بھی کرتا تھا۔

کشف الطنون میں مزید لکھا ہے کہ شاناق ہندی کی کتاب "منتحل المجوھر" ہے۔ یہ کتاب شاناق نے اپنے عہد کے ایک ہندوستانی راجا" ابن قمانص ہندی" کے لیے تالیف کھی۔علاوہ ازیں شاناق کی ایک اور کتاب بھی ہے جسکانام" کتاب البیطر " ہے۔

ابن الى اصبعه في "عيون الانباء" مين لكهام كه مندوستان كمشهوراطباء مين الساء "مين المين ال

علوم وفنون اورعلم وحكمت ميں دسترس حاصل تھی۔ علم نجوم ميں ماہر تھا۔ شيريں گفتگواور راجگان ہندوستان کے يہاں صاحب حيثيت تھا۔ اس کی تحرير کا ایک اقتباس اس کی تحرير کا ایک اقتباس اس کی تحرير کا ایک اقتباس اس کی تحای کا ب

حاكم وقت! زمانے كى لغزشول سے بجوء افتر اردوران اور غلبرايام كى محبت سے دوررہو اوراجھی طرح جان لوکہ اعمال جزاء ہیں اس لیے زمانے کے انجام سے ڈرنا چاہیے۔ کیوں کرونت بہت دھوکہ باز ہوتا ہے،اس لیےاس سے مخاطر ہو۔مقدرات کا تعلق غیب سے ہے، لہذا ان کے لیے تیار رہو۔ زمانہ بدلتا رہتا ہے، لہذا اس سے احتياط ركھو_ زماتے كا اقترار كمينكى ہے اس ليے اس سے ڈرو _اس كى سطوت وجروت، زود شوکت ہے، اس لیے آئے مطمئن متر ہو۔ اور یا در کھوکہ جس مخص نے زندگی میں گناہوں کی بیار یوں سے اپنفس کاعلاج نہیں کیا تواس جہان میں شفاء نامکن ہے، جہاں دوائی نبیں۔اورجس نے اپنے حواس کوذلیل کیا اور انھیں پیشگی خیر کے لیے غلام بنالیا تواس نے اپنافضل و کمال اور شرافت ظاہر کردی۔ جس نے اپنے ایک نفس پر قابو ندر کھا، وہ اسنے بانچ حواس بر بھی کنٹرول نہیں رکھسکتا۔ اور جب حواس کے حقیر اور کم ہونے کے باوجودان پر کنٹرول نہیں رکھ سکاتواس کے لیے معاونین کوکنٹرول کرنامشکل موگا، جب كروه تعداد مين زياده اور سخت دل موت بين _ لېذاسلطنت كے طول وعرض ميں پھيلي ہوئي رعيت بركنٹرول كيوں كرد كھ سكے گا۔

شاناق کی ایک کا اب "کتاب السموم" ہے۔ اس میں پانچ مقالے ہیں اس کا ترجمہ شکرت سے فاری میں "منکہ ہندی" نے کیا۔ یکی بن فالد بن برک کے یہاں فاری سے عربی میں شقل کرنے پر ابوحاتم بلخی امور سے انھوں نے اسے عربی میں شقل کرنے پر ابوحاتم بلخی امور سے انھوں نے اسے عربی میں شقل کیا۔ بعد میں مامون کوشید کے لیے اس کے غلام: عباس بن سعید جو ہری نے جو پڑھ کر مامون کو سنایا بھی کڑتے تھے، کتاب البیطرہ علم نجوم پر ایک کتاب اور مستحل المجو ھو کا عربی میں ترجمہ کیا۔ منتحل الجو ہرشاناتی نے اپنے

زمانے کے ایک حکمراں (ابن قمانص ہندی) کے لیے تالیف کی تھی۔ شرف الدین دیبال بوری

شخشرف الدین دیپال پوری، مولانا بدرالدین اسحاق دہلوی اجود هی کے تلامذہ میں سے ایک مرتبہ بادشاہ نے انھیں گرفآر کر کے جیل میں ڈال دیا۔ اس کی اطلاع جب مولانا اجودهی کو موئی تو وہ اجودهن کے گورز قاضی صدرالدین کے پاس گئے اور شخ شرف الدین کی بایت گفتگو کے ان کی گفتگو سے قاضی صدرالدین کے مامنے شخشرف شرف الدین کی بایت گفتگو کے ان کی گفتگو سے قاضی صدرالدین کے مامند میں کی بدنی عیاں ہوگئی۔ یہ قصہ تفصیل کے ماتھ الدین کی بے گناہی اور ان کے حاسدین کی بدنی عیاں ہوگئی۔ یہ قصہ تفصیل کے ماتھ درج شرف الدین دیپال پوری ماتویں صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تامن) حکیم شرف الدین دیپال پوری ماتویں صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تامن) حکیم شرف الدین دیپال پوری ماتویں صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تامن)

ابن ابواصيعہ نے اپنى كتاب 'عيون الانباء فى طبقات الاطباء'' ميں ان كاتذكرہ كيا ہے۔

حكيم ششر ذهندي

"کشف الطنون" میں ان کے متعلق لکھا ہے کہ مشتر ذہندی کی علم طب میں ایک کتاب ہے۔ اس میں امراض کی علم مثیر ان کی دوائیں اوران کی تا خیر ذکر میں ایک کتاب دس مقالات میں تمل ہے۔ یکی بن خالد برکمی نے عربی میں اس کا ترجمہ وتشریح کرنے کا تکم دیا تھا۔

شعيب بن محدد يبلي مصري

علامه سمعانی فی الانساب "میں لکھاہے کہ ابوالقاسم شعیب بن محمد بن احمد بن احمد بن احمد بن احمد بن احمد بن بریغ بن سوارد یہلی (معروف برابن ابوقطعان دیملی)مصرات اور وہال درس

حدیث دیا۔ ابوسعید بن بونس نے بتایا کہ میں نے شعیب بن محمد سے احادیث لکھیں۔ ان کی بابت مجھے اس سے زیادہ معلومات نہل سکیس۔ (قاضی)

شير باميان اول

مشہورمورخ علامہ لیقوبی نے "کتاب البلدان" میں "بامیان" کی بابت تقری کی ہے کہ بامیان پہاڑی پرآبادا کی شہرے۔ اس شہرکا ایک سرداداور چودھری تھا، جس کا نام برزبان فاری "شیر" تھا۔ اس نے خلیفہ مصور کے ذمانے میں مزام بن بسطام کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا اور ان کار کے حجمہ بن مزام سے ابنی لڑکی کی شادی بھی کردی۔ اس کی کنیت ابور بھی۔ جب فضل بن بچی خراسان آیا تواس نے شیر بامیان کے ایک لڑک حسن کو "فوز" ایک وفد کے ساتھ بھیجا۔ حسن نے چند سید سالاروں کے ساتھ ل کراے فتح کرایا۔ اس کے بعد فضل بن بچی نے حسن کو بامیان کا حاکم بنادیا جس نے اس کا نام اپنے دادا کے نام پر "شیر بامیان کو میں نے تبول اسلام کے بعد شیر بامیان کا نام "اسد" ہوگیا اور شیر بامیان لقب ہوگیا۔ بیدوسری صدی ہجری کا تھا۔ (قامی)

شيرياميان ثاني

ال سے مرادس بن اسد ہے۔ یہ کھی اپنے آباء واجدادی مانند "شیر ہامیان" سے مشہور ہے جیسا کہ شیر ہامیان اول کے حالات کے تحت علامہ یعقوبی فی تحریر سے اندازہ ہوتا ہے۔ وہ کھتے ہیں کہ ہارون رشید نے ۲ کا ہ میں جب فضل بن کچی بن بر مک کو "خراسان" کا گورز بنایا اس وقت ابراہیم بن جرکل کی زیر قیادت ایک لشکر" کابل شاہ" کی طرف روانہ کیا۔ نیز طخار ستان اور دہا تاین کی ریاستوں کے بھی والیان وامراء کواس کے ساتھ جانے کو کہا۔ ان میں حاکم ہامیان حسن شیر بھی تھا۔ یہ شکر کابل شاہ کی جانب روانہ ہواراور غوروند کا بہاڑی درہ سرار حود سدل استان اور شاہ بہار کو فتح کرلیا۔ شاہ بہار میں بی بت تھاجس کی یہوگی اور تے تھے۔ اس بت کو منہدم کر کے نذر آتش کردیا گیا۔

باب ص

حاكم سنده: صا د

صادایک خص کانام تھا، جس نے سندھ کے بچھ علاقوں پر غلبہ حاصل کر کے دہاں کی زمینوں پر قبضہ کرلبااور خود مختار حاکم بن بیٹا تھا۔اس نے اپنی لڑکی کارشتہ حاکم سندھ: سومرہ اول سے کیا تھا۔اس عورت سے سومرہ کا ایک لڑکا بھونکر بن سومرہ بیدا ہوا۔ صادیا نجویں صدی ہجری کے دوسر بے نصف سے تعلق رکھتا ہے۔ بیدا ہوا۔ صادیا نجویں صدی ہجری کے دوسر بے نصف سے تعلق رکھتا ہے۔
"صاد" کانام" تحقۃ الکرام" میں بار ہا آیا ہے۔علامہ سیرسلیمان ندوی نے انگریزی ماخذ سے قبل کرتے ہوئے اس کانام" سعد" بتایا ہے۔ لیکن اس میں شبہ ہے۔ (تانی)

صالح بن ببله مندى بغدادي

وزیر جمال الدین قفطی نے "اخبار العلماء باخبار الحکماء" میں تحریر کیا ہے کہ صالح بن بہلہ ہندی، حاذق طبیب تھے۔ ہارون رشید کے دور میں ان کا تذکرہ ملتا ہے۔ یہ ہندوستانی طریقہ علاج کے ماہرادر شخیص میں اپنے بیش روہندی طبیبوں ہے کہیں بہتر تھے۔ ان کا ایک عجیب وغریب واقعہ ہے۔

ہوایہ کہ ایک روز ہارون رشید کے سامنے دستر خوان بچھایا گیا تواس نے حسب عادت جرئیل بن بختیشوع کو کھانے کے لیے بلوایا۔ گر جرئیل نہ ملے جس پر ہارون رشیدا سے نعن طعن کر بی رہاتھا کہ جرئیل آگیا۔ ہارون رشیدا سے نعن طعن کر بی رہاتھا کہ جرئیل آگیا۔ خلیفہ نے بوجھا کہاں تھا؟ اور یہ کہتے ہی اسے برا بھلا کہنا شروع کر دیا۔ اس براس فلا کہنا شروع کر دیا۔ اس براس نے کہا اگر خلیفہ وقت اپنے جیازاد بھائی ابراہیم بن صالح کے تم میں رونے لگیس اور

جھے برا بھلا کہنا جھوڑ دیں تو زیادہ بہتر بات ہوگی۔ بین کر ہارون رشیدنے اس سے ابراہیم بن صالح کی خیریت پوچھی تو اس نے بتایا کہ میں اسے چھوڑ کر چلا تھا، اس وفت اس کی بس سانس آجار ہی تھی اوروہ آخری ساعت نماز عشاء کے وقت گذارر ہا تھا۔ بیسنتے ہی ہارون وشید سخت پریشان ہو گیا اور دستر خوان اٹھائے جانے کا حکم دے كر زارو قطاررونے لگا۔ ميمنظرد مكھ كرجعفر بن يحيٰ بركى نے كہاامير المؤمنين! جبرئيل كاطريقة علاج روى طرزكا ہے جب كه صالح بن بهله مندى اہل مند كے طريقے ير علاج كرتا ہے اور اس كاطب وعلاج ميں وہى مقام ہے جو جرائيل كا الل روم كے مضامین کے علم میں ہے۔اگرامیرالمؤمنین مناسب خیال فرمائیں تو صالح بن بہلہ کو بلوالين اورابراميم بن صالح كويسي دين كهم ال سےسارى بات سمحمين - بارون رشیدنے ایا ہی کیا اورجعفر برکی کو حکم دیا کہ صالح کو بلاکر لائے ،ابراہیم کواس کے یاس بھیج دیا جائے اور جب وہ ابراہیم کے پاس سے لوٹے لگے تو میرے پاس لایا جائے۔جعفر بر کی نے ملم کا تعمل کی اور صالح بن بہلہ نے ابراہیم کے باس جا کراس کود یکھا،رگ ٹول، پھرجعفر برکی کے پاس گیا۔جعفرنے خلیفہ کواطلاع دی کہ صالح آ مجے ہیں، خلیفہ نے صالح کواپنے پاس اندر جھیخے کا حکم دیا۔

چناں چہوہ اندر گیا اور عرض کیا امیر المونین! آپ امام السلمین ہیں ہوتم کے فیصلوں کا آپ کو پورا اختیار ہے اور آپ جوبھی فیصلہ فرمادیں کوئی حاکم اسے ختم نہیں کرسکا۔ میں اپنے خلاف آپ کو نیزتمام حاضرین کو گواہ بنا کر کہتا ہوں کہ اگر ابراہیم بن صالح کا آج رات بااس بھاری میں انتقال ہوجائے تو صالح بن بہلہ کی تمام تر جائیدا دراہ خدا میں وقف ہے، اس کا ہرجانور جہاد کے لیے آزاد ہے، اس کے تمام مال واسباب، غربا اور مساکین پرصدقہ ہیں اور اس کی ہرعورت کو تین طلاق۔ اس پر ہارون نے کہا صالح! تم غیب کی بات پرتسم کھاتے ہو، صالح نے جواب دیا امیر المونین! ایسانہیں ہے۔ کیوں کہ غیب تواسے کہتے ہیں جس کی کوئی جواب دیا امیر المونین! ایسانہیں ہے۔ کیوں کہ غیب تواسے کہتے ہیں جس کی کوئی

ولیل ہو، نداس کی بابت سی معظم، جب کہ میں نے جو کھے بھی کہا ہے وہ تھوس دلائل اورواضح علم کی روشی میں کہا ہے۔صالح بن بہلہ کی بات س کر ہارون کا رنج وغم دور ہواا در کھانا تناول کیا۔ نبیز پیش کی گئی، جے اس نے نوش کیا۔ جب نماز عشاء كاوتت مواتو بغدادآنے والے نامه بردارنے ، اسے ابراہیم بن صالح كى وفات كى خبرسنائی۔ ہارون نے ''اناللہ واناالیہ راجعون'' پیڑھااور جعفر بر کی کوسب وشتم کرنے لگا كراس نے صالح بن ببلد كى نشان دہى كيوں كى تقى اور اسى كے ساتھ تمام ہندوستانیوں اور ان کے طب وعلاج کی بابت بھی سخت سست با نیں کیس اور کہنے لگا افسوس کہ جیازاد بھائی تو موت کے تلخ مھونٹ سے اور میں نبیزنوش کرنے مین مصروف ہوں۔بعدازاں ایک رطل نبیذ منگوا کراس میں پانی اور نمک ڈالا اوراے ینے اور قے کرنے لگا تا آل کہاس کے پید میں جو کھی کھانا یانی تھا،سبنکل گیا علی العباح ہی ابراہیم کے گھر پہنچا۔ خدام نے خلیفہ کو ایک ایسے کرے میں بھایا جس میں کرسیاں مندیں اور قالین بچھے ہوئے تھے۔ ہارون رشیدا بنی تلوار ك سهارے كھرا ہوگيا اور كہنے لگا دوستوں كى مصيبت كے وقت سے بالكل مناسب نہیں کہ میں ایک سے زیادہ بستر پر بیٹھول۔ چنال چداس وقت سے بنوعباس کے یہاں پیطریقدرائے ہوگیا۔صالح بن بہلہ، بارون رشید کے سامنے کھرا ہوا۔ سمی نے بھی کوئی بات ندکی تا آل کردھونی کی خوشبوتیز ہوگئ۔ اس وقت صالح نے جیخ كركهاامير المومنين! خداك واسطيآب ميرى بيوي كے طلاق كا فيصله نه فرمائيں كه اس سے ایسا شخص شادی کر لے بس کے لیے وہ حلال نہیں ہے۔ خدارا آپ مجھے اسيندردولت سے نه نكاليل كيول كرميں حانث نہيں ہوا۔ خدارااسينے جيازاد بھائى کوزندہ دفن نہ کریں۔خدا کی مم کھا کر کہتا ہوں اس کا انتقال نہیں ہوا ہے۔ آپ مجھاس کے پاس جاکراہے دیکھنے کی اجازت دیں۔ جب صالح نے یہ بات کی بار جے چے کر کہی توہارون رشیدنے ابراہیم کے پاس جانے کی اسے اجازت دے دی۔ اس وقت سب لوگول نے تکبیر کی آوازی اور صالح بن بہلہ بھی جب ابراہیم کے پاس سے واپس ہوا تو نعرہ تکبیر کہدر ہاتھا۔ پھراس نے کہاا میر المونین! آپ تشریف کے سے چلیں، میں آپ کوا یک جیرت انگیزیات دکھاؤں گا۔

چناں چہ ہارون رشیدا ہے چندخواص کے ہمراہ ابراہیم کے کمرے میں گیا۔
صالح نے ایک سوئی نکائی اورا سے ابراہیم کے بائیں ہاتھ کے انگوشھے کے ناخن اور
گوشت کے درمیان چبھادی تو ابراہیم نے اپناہا تھ کھینچا اور پھرجیم پرز کھ دیا۔ اس پر
صالح نے کہا امیر المونین ! کیامیت کو درد کا احساس ہوتا ہے ؟ نیزع ض کیا کہا گر میں
نے ابراہیم کا کفن میں رہتے ہوئے علاج کیا اور اسے افاقہ ہوگیا تو مجھے اندیشہ ہوجائے ابراہیم کا کفن میں رہتے ہوئے علاج کیا اور اسے افاقہ ہوگیا تو مجھے اندیشہ ہوجائے۔ اس کے خوشبو سے اس کا قلب پھٹ نہ جائے او راس کی واقعی دفات
ہوجائے۔ اس لیے آپ تھم دیں کہ کفن اتاراجائے ، شل خانے میں لے جا کر نہلا یا
جائے، تاکہ حنوط کی خوشبو بالکل زائل ہوجائے۔ پھر اس طرح کے کیڑے ابراہیم کو
جائے، تاکہ حنوط کی خوشبو بالکل زائل ہوجائے ۔ پھر اس طرح کے کیڑے ابراہیم کو
جائے۔ نیز اس قیم کے بستر پر سلادیا جائے جس پر وہ بیٹھا اور سویا کرتا تھا۔ تب
میں آپ کی موجودگی میں علاج کروں گا اور ابراہیم فوراہی بات کرنے گئے گا۔
میں آپ کی موجودگی میں علاج کروں گا اور ابراہیم فوراہی بات کرنے گئے گا۔

ابوسلمہ کا کہنا ہے کہ ہارون رشید نے مجھے بید ذہ داری سونی کہ صالح نے جسے کہا ہے، ویبائی کیا جائے اور میں نے ویبائی کیا۔ ابوسلمہ کہتے ہیں کہ پھر ہارون رشید، ان کے ساتھ میں اور مسروراس جگہ گئے، جہاں ابراہیم کولٹایا گیا تھا۔ صالح بن بہلہ نے اسٹاک سے دھونکی منگوائی اور اسے ابراہیم کی ناک میں بھونکا۔ ابراہیم دی مناک سے دھونکی منگوائی اور اسے ابراہیم کی ناک میں بھونکا۔ ابراہیم دی مناک سے بالکل ساکت و جامد رہا۔ پھراس کے جسم میں حرکت بیدا ہوئی چھینک آئی، وہ اٹھ بیٹھا، ہارون رشید سے با تیں کرنے لگا اور اس کے ہاتھ چوے ہارون رشید سے با تیں کرنے لگا اور اس کے ہاتھ چوے ہارون رشید سے با تیں کرنے لگا اور اس کے ہاتھ چوے ہارون میں بھی نہری نیز آگئی کا براہیم نے بتایا کہ اسے ایسی گہری نیز آگئی کا کہ ایک کا گھی کہ ایسی نیز ندگی میں بھی نہ آئی تھی۔ مگر اس نے خواب میں دیکھا کہ ایک کا

اس پر حملہ کررہا ہے جب میں نے اپنا دایاں ہاتھ ہٹایا تو اس نے با کمیں ہاتھ کے انگو سے کوکا نے لیا، جس سے میری نیندکھل گئی۔ابراہیم کو کتے کے ڈسنے کا اب بھی احساس تھا اور اس نے ہارون رشید کو وہی انگو تھا دکھایا جس میں صابح بن بہلہ نے سوئی چھوئی تھی۔ اس کے بعد ابراہیم برسوں زندہ رہا۔ خلیفہ مہدی کی الوکی عباسیہ سے شادی کی، مصروفل طین کا گورنر بنا اور مصر میں وفات ہوئی اور وہیں تدفین بھی۔ سے شادی کی، مصروفل طین کا گورنر بنا اور مصر میں وفات ہوئی اور وہیں تدفین بھی۔ ابن ابواصیعہ نے بھی ' عیون الانباء' میں صابح بن بہلہ ہندی بغدادی کا تذکرہ پہلے گزر چکا ہے۔

ما كم اجودهن: قاضى صدر الدين

یہ مولانا بدرالدین اسحاق دہلوی اور ملک شرف الدین دیبال بوری کے معاصر ہے۔ ملک شرف الدین کی بابت ان میں اور مولانا دہلوی میں اس وقت بحث تکرار بھی ہوئی تھی جب شرف الدین دیبال بوری اجود هنی کوگرفتار کیا گیا تھا۔ اس مکالے سے اس بات کا اندازہ ہوتا ہے کہ قاضی موصوف بڑے یائے کے عالم ہے۔ یہ ساتویں صدی ججری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تخة الکرام)

والى سندھ: صمه

صمه کنده کے آزاد کرده غلام تھے۔انھوں نے ۲۵۵ھ کے آس پاس سندھ پر قبضہ کرلیا تھا۔ ان کے والد گورنر سندھ: داؤد بن بزید بن عاتم کے ہمراہ خلیفہ منصور کے عہد خلافت میں سندھ آئے تھے۔علامہ بلاذری نے ''فقوح البلدان'' میں لکھا ہے کہ امیر المومنین منصور نے بشام بن عمر نقلبی کوسندھ کا گورنر نامزد کیا تو اس نے غیر مفتو حی علاقے بھی فتح کر لیے اور چند چھوٹی چھوٹی کشتوں کے ساتھ عمرو بن جمل کور' بار بد' (بھاڑ بھوت) کی جانب روانہ کیا نیز ہندوستان کے ایک اور علاقے کی

طرف بھیجا۔ چناں چہاس نے کشمیرکوفتح کیا، جہاں بہت سے قیدی اور غلام ہاتھ گئے، اسی طرح ملتان کوبھی فتح کیا۔ قدائیل میں عرب قابض تھے، انھیں وہاں سے بے دخل کیا۔ اس کے بعد سندھ کا گورز حفص بن عثمان ہزار مرد، پھر داؤد بن پزید بن حاتم نامز د کئے گئے۔ داؤد بن پزید کے ہمراہ صمہ کے دالد بھی تھے جواس وقت قابض ہے بیکندہ کا غلام تھا۔ ریاست سندھ کی صورت حال بالکل ٹھیک ٹھاک رہی تا بیاں تک کہ مامون رشید کے دور میں بشر بن داؤدکواس کا دائی مقرر کردیا گیا، جس نے خلافت سے بیناوت کردی۔

حوی نے "معجم البلدان" میں تقری کی ہے کہ "معجب کہا مہ کے اسکانا مے ۔ ابوزیاد کا بیان ہے کہ بمامہ کے کنوال قشر کو شعبعب کہا جاتا ہے۔ یہ کوال قشر کو شعبعب کہا جاتا ہے۔ یہ کنوال صمہ بن عبداللہ بن مسلمہ بن قشر کا بنوایا ہوا ہے۔ "کتاب نفر" میں فرکور ہے کہ شعبعب نقر بیوم کے پیچے" حاکل" میں ایک کنوے کا نام ہے۔ صمہ بن عبداللہ قشری نے سندھ میں رہتے ہوئے یہا شعار کے:

ياصاحبى اطال الله رشدكما ﴿ عوّجا على صدورالأبغل السنن ثم ارفعا الطرف هل تبدو لنا ظعن ﴿ بحائل ياعناء النفس من ظعن أحبب بهن لو أن الدار جامعة ﴿ وبالبلاد التي يسكن من وطن طوالع الخيل من تبراك مصعدة ﴿ كما تتابع قيدام من السنن ياليت شعرى والاقدار غالبة ﴿ والعين تذرف أحيانا من الحزن هل أجعلن يدى للحد مرفقة ﴿ على شعبعب بين الحوض والعطن والعطن والعطن على شعبعب بين الحوض والعطن والعطن والعلم والعلم

پھراپی نظریں اٹھاؤ کیا مقام حاکل میں ہودج کے اندرسوارعور تیں نظر آرہی ہیں۔ ہیں۔انفس کی مشقت کس نے کوچ کیا۔

اگروہ ایک گھر میں سب جمع ہوں تو ان سے اور ان کے ملک اوروطن سے بھی

محیت کرو۔

وہ گھوڑے پر سوار کشتی کے اسکے حصہ کی طرح '' تبراک' سے جلی آرہی ہیں۔ کاش میں اس حقیقت کو مجھ لیتا لیکن تقدیر سب پر غالب ہوتی ہے اور آنکھ بسااو قات غم کے مارے آنسو بہاتی ہے۔

کیا ہیں حوض اور وطن کے درمیان مقام شعبعب پر اپنا ہاتھ رخسار کے ساتھ ئے رکھوں؟"

اس سے بین طاہر ہوتا کہ حاکم سندھ مولی کندہ: صمہ، شعبعب کنوال بنوانے والے: صمہ بن عبراللد بن ہمیر ہ بن قشیر ہی ہے۔ بلکہ ہم نے محض اس وجہ سے کہ نام دونوں کا کیسال ہے اور دونوں سندھ میں رہتے تھے، بیعبارت نقل کردی۔ تاہم ممکن ہے کہ دونوں ایک ہی ہوں ،اس لیے کہنا می کیسانیت، سندھ پرغلبداور شعبعب کنواں ان سب سے بہی معلوم ہوتا ہے۔ (قامی)

صکہ ہندی

علامہ ابن ندیم تک جن علاء کی طب ونجوم کے موضوع پر کتابیں پہنچیں ان میں صکہ مندی کا بھی نام' الفھر ست' میں فرکور ہے۔

صنحل مهندي

ابن ندیم نے ان کا تذکرہ بھی علائے ہندی شمن میں کیا اور لکھا ہے کہان کی دیگر کتابوں میں ایک کتاب 'اسوار المسائل' ہے۔ ابن ابواصیعہ 'عیون الانباء' میں لکھتے ہیں کہ' صخیل' کا شاران ہندوستانی علاء وفضلاء میں ہوتا ہے، جضیں طب ونجوم میں مہارت حاصل تھی۔ ان کی ایک کتاب 'المو الید الکبیر' مصنی طب ونجوم میں مہارت حاصل تھی۔ ان کی ایک کتاب 'المو الید الکبیر' ہندی کے بعد ہندوستان میں ایک بوری جماعت بیدا ہوئی جن کی طب

ونجوم وغيره يرمعروف ومشهورتصنيفات بين مثلًا با كهر، راجه، صكه، داهر، انكو، زنكل، جہر ، اندی اور جاری ، پیسب کے سب مصنف اور ہندوستان کے اطباء و حکماء میں شارہوتے تھے علم نجوم کی بابت انھوں نے اصول وضوالط بھی مقرر کئے، اہل مند ان کی تصنیفات سے بہت شغل رکھتے۔ان کی انباع کرتے اور انھیں ایک دوسرے تک بہنچاتے ہیں۔ ان میں سے بہت ی کتابوں کاعربی میں بھی ترجمہ ہوا۔ میں نے خود امام رازی کو دیکھا کہ انھوں نے کئی ایک علمائے مندکی کتابوں مثلاً شرک الہندى كى كتاب سے اپنى كتاب "المحاوى" ميں جا بجانقل كيا ہے۔ اس كتاب كو عبدالله بن على نے فارس سے عربی میں منتقل کیا۔ اس لیے کہ پہلے فارس میں اس کا ترجمه ہواتھا۔ نیز 'مسرد' کی کتاب سے بھی نقل کیا ہے، جس میں دس مقالے ہیں اور امراض کی علامات، ان کی دوا کیں اور علاج بتایا گیا ہے۔ بیچیٰ بن خالد برکی نے اس کتاب کاعربی میں ترجمہ کیے جانے کا حکم دیا تھا۔ اس طرح "بدان" کی کتاب ہے بھی نقل کیا ہے۔جس میں جارسوعلامتیں اور جارسو دوا کیں غذکور ہیں ،مگر طریقه علاج درج نہیں ہے۔علاوہ ازیں "سندھمشان" اوراس کی شرح" صدرة التحج" اورایک ایس کتاب بھی ہے جس میں گرم، بادی اور دواول کی تا ثیر وطاقت کی بابت اہل منداوراہل روم کے اختلاف سے بحث کی گئے ہے، نیزاس میں سال کی تفصیل بھی درج ہے۔ ایک کتاب میں شراب کے دس ناموں کی تشریح ہے نيز"اسائكر"كى كتاب"الجامع"اور"علاجات الحبالي"ابل مندكى يي-ہندوستانی جڑی بوٹیوں پرایک مخضری کتاب ہے۔ ''نوشل'' کی کتاب میں ایک سو یمار بول اور ایک ہی سو دواؤں کا تذکرہ ہے۔خواتین کے علاج کی بابت" روشی ہندی کی ایک کتاب ہے۔ نیز "کتاب السکر" بھی ہے۔ رائے ہندی کی کتاب میں سانپوں کی اقسام اور ان کے زہروں سے بحث ہے اور ابوقبیل مندی کی ایک كتاب عجس كانام "كتاب التوهم في الامراض والعلل" ب-

باب:ع

عباس بن سندهی

انھوں نے داؤد بن شعب اور ابو الوليد طيالى سے روايت كى۔ ان سے علامہ عقبلى اور اسامہ بن على بن عليك نے روايت كى۔ امام ذہبى نے "ميزان الاعتدال" ميں يكي بن عباد مدنى كے حالات ميں لكھا ہے كہ عقبلى كابيان ہے كہ ہم سے ابراہيم بن محمد اورعباس بن سندھى نے بيان كيا۔ ان دونوں كا كہنا ہے كہ ہم سے داؤد بن شرب نے اور ان سے يكي بن عباد نے بروايت ابن جرت وعطاحفرت داؤد بن شبب نے اور ان سے يكي بن عباد نے بروايت ابن جرت وعطاحفرت عبداللہ بن عباس سے بيان كيا "ان رسول الله علي امر مناديا فنادى ان صدقة الفطر صاع من تمر اوصاع من شعير اونصف صاع من بوء وان الولد للفراش وللعاهر الحجر "كر حضور اكرم علي نے ايك محض كوكھم ديا تو اس نے يكاركر كہا كہ صدقة فطرايك صاع مجوديا ايك صاع جويا نفف صاع ديا تو اس نے يكاركر كہا كہ صدقة فطرايك صاع مجوديا ايك صاع جويا نفف صاع گيہوں ہے اور يہ كركھا كہ صدقة فطرايك صاع مجوديا ايك صاع جويا نفف صاع گيہوں ہے اور يہ كركم كاشو ہر (بستر والے) كا ہوگا اور ذا فى كوست ساركيا جائے گا۔ گيہوں ہے اور يہ كركھا سے خطر بن سلام نے بھى روايت كيا ہے)۔ (اس حدیث کو يکی بن عباس سے خطر بن سلام نے بھى روايت كيا ہے)۔ (اس حدیث کو يکی بن عباس سے خطر بن سلام نے بھى روايت كيا ہے)۔

امام ابن عبرالبر نے ''جامع بیان العلم'' میں ''باب المحیو عن العلم'' کے تخت کہ مم بہر حال اللہ تعالی کی جانب لے کر جائے گا، تصریح کی ہے کہ ہم سے احمد بن عبداللہ نے ، ان سے سلمہ بن قاسم نے ، ان سے اسامہ بن علی بن سعید معروف بدابن علیک نے ، ان سے عبال بن سندھی نے بیان کیا کہ میں نے ابوالولید طیالس سے سناوہ فر مار ہے تھے کہ میں ابن عیبنہ سے ساٹھ سال قبل سناوہ کہ ساوہ فر مار ہے تھے کہ میں ابن عیبنہ سے ساٹھ سال قبل سناوہ کہ بنایا ، ابوالولید طیالس سے حدیث غیر اللہ کے لیے حاصل کی تو ہمار اانجام اللہ نے کیا بنایا ،

وہتم لوگ د مکھدے ہو۔

عبدبن حميد بن نفر كسى سندهى

حموی نے "معجم البلدان" میں لکھا ہے کہ "کس" کاف کے کسرے اور
سین کی تشد پر کے ساتھ سمر قند کے قریب ایک شہرکانام ہے۔ ابن ما کولا فرماتے ہیں
کہ اہل عراق "کس" کاف کے ذیر کے ساتھ اور دوسرے لوگ کاف کے ذیر کے
ساتھ پڑھتے ہیں۔ بعض حفرات نے ترمیم کرے" کش" کھا ہے، جو سی خہیں
ماتھ پڑھتے ہیں۔ بعض حفرات نے ترمیم کرے" کش" کھا ہے، جو سی خہیں
ہے۔ "کس" ایک شہرتھا، جس کی شہر پناہ بھی تھی۔ اس کے علاوہ ایک دوسر اشہرتھا جو
اس شہر پناہ سے متصل تھا۔ شہر پناہ کے اندر جو حصہ تھا وہ اب عمارتوں سمیت خراب
میں تبدیل ہو چکا ہے۔ لیکن شہر پناہ کے باہر جو حصہ تھا وہ اب بھی آباد ہے۔ کس نام کا
ایک مشہور شہر ہندوستان میں بھی ہے، اس کا ذکر مغازی میں آبا ہے، ہندوستان ہی
کے شہرکس (کیھ) کی جانب مند کے مصنف اور معروف امام حدیث : عبد بن حمید
ین نفر ، جن کا نام عبد الحمید ہے منسوب ہیں۔ انھوں نے یزید بن ہارون اور شخ
عبد الرزاق وغیرہ سے روایت کی اور ان سے امام مسلم اور امام تر مذی نے روایت
کی ۔ ۲۲۹ ھیں ان کی وفات ہوئی۔ (نقر ح البلدان)

"" کی بابت جموی نے جو پچھ بھی تحریر کیا، اس کے یہال نقل کرنے کی وجہ بیے بھی تحریر کیا، اس کے یہال نقل کرنے کی وجہ بیے بھی کہ جموی وجہ بیے کہ اس کے بارے میں لوگوں کا اختلاف ہے، نیز اس وجہ ہے بھی کہ جموی نے تصریح کی ہے کہ عبد بن حمید کسی مہندوستان کے مشہور شہر کس ۔ پچھ۔ کے رہنے والے تھے۔ (تاضی)

ان کی بابت علامہ ذہبی نے 'تذکر ہ المحفاظ'' میں لکھاہے کہ امام حافظ ابو محرکسی عبد بن حمید بن نفر، مند کبیر اور تغییر وغیر ہ کے مصنف ہیں اور ان کا نام عبد الحمید ہے انھوں نے عہد شاب کے اندر ۱۰۰ ہیں طلب حدیث کے لیے اسفار کے اور یزید بن ہارون، محمد بن بشرعبدی، علی بن عاصم، ابوفد یک، حسین بن علی جعفی ، ابواسامہ، عبدالرزاق اوران کے طبقے کے دیگر محدثین سے روایت کی۔ ان سے امام مسلم، امام ترفدی، عمر بن بجیر، بربن مرزبان، ابراہیم بن خریم شاسی اور دوسرے بہت سے لوگوں نے روایت حدیث کی ہے۔ امام بخاری نے سیح بخاری میں 'دلائل النبو ق' میں ان سے تعلیقاً روایت کی اوران کا نام عبدالحمید لکھا ہے۔ میں قات ایک حدیث میں سے۔ ان کی مسند کبیر کا انتخاب ہمارے اور ہمارے بچوں سے لیے بہت عظیم ہے۔ ان کی مسند کبیر کا انتخاب ہمارے اور ہمارے بچوں کے لیے بہت عظیم ہے۔ ان کی وفات ۲۲۹ ھیں ہوئی۔

حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوگ نے 'بستان المحدثین ' بیل ان ک بابت کھا ہے کہ عبدین حید کی اولین مند، مندابو برصدین ہے۔ ہم سے بزید بن ہارون نے بیان کیا، ان سے ابراہیم بن فالد نے بروایت قیس بن ابو حازم، مورت ابو برصدین بیان کیا کہ حفرت ابو برصدین نے فرمایا کہ تم لوگ ارشاد باری ' یا ایھاللڈین آمنوا علیکم انفسکم لایضلکم من ضل اذا اهتدیتم ' کی تلاوت کرتے ہو میں نے ساحضورا کرم سلی اللہ علیہ وسلم فرمارہ سے ' ن الناس اذار اوا المطالم فلم یا خدوا علی یدیھا او شك ان یعمهم الله بعقاب ' جب لوگ فالم کودیکھیں پھر بھی اس کے ہاتھ نہ پھڑیں تو قریب ہے کہ اللہ تعالی ان سب پرعذاب نازل فرمادیں۔ مندابو برکو' المسند الکبیر' کہ اللہ تعالی ان سب پرعذاب نازل فرمادیں۔ مندابو برکو' المسند الکبیر' عبدی کہاجا تا ہے۔ اس کی تلخیص' المسند المصغیر' ہے۔ عبدین جمید کی قیر ملک عرب میں بہت مشہوراور متناول ہے۔ ان کی دوسری تقنیفات بھی ہیں۔ علامہ چلی نے ''کشف المطنون'' میں ان کی نبست ''کسی'' کی جگہ یہ علامہ چلی نے ''کشف المظنون'' میں ان کی نبست ''کسی' کی جگہ یہ علامہ چلی نے ''کشف المطنون'' میں ان کی نبست ''کسی' کی جگہ یہ

در کیشی " ذکر کی ہے۔(۱) (تاضی)

⁽۱) نوث: کشف الطنون کا جوننداحقر کے سامنے ہے، اس میں نیز "هدیة العادفین" کے نام سے اساعیل پاٹا بندادی نے، اس کا جو تکملہ لکھا ہے، دونوں میں نسبت "کیش" نہیں بلکہ کسی" ہے۔ ملاحظہ ہو کشف ۱۲۷۹/۲ در تکملہ کشف، ا/ ۲۳۷۔ (ع.ربستوی)

عبيدبن باب سندهى بقرى

مسعودی نے "مروج الذهب" بین لکھا ہے کہ ان کے والد کا بل کے رہے میں لکھا ہے کہ ان کے والد کا بل کے رہے والے تقے اور آل عرادہ بن میں شامل تھے اور آل عرادہ بن مربوع بن مالک کے غلام تھے۔

عبداللدبن جعفر منصوري

علامہ سمعانی نے "الانساب" میں لکھا ہے کہ ابو محد عبد اللہ بن جعفر بن مرہ منصوری مجود ستھ، رنگ سیاہ تھا انھول نے حسن بن مکرم اور ان کے ہم عصر علمائے صدیث سے سماع حدیث کیا اور ان سے امام حاکم نے بھی روایت کی ہے۔

عبدالله ملتاني

عبدالله حاكم ملتان ابوالفتح داؤد اكبر باطنى ملتانى كا نواسه تقارال ملتان نے اسے اپنا حاكمراں بنانا جا ہا تھا جیسا كہ علامہ سيدسليمان ندویؓ نے تصرت كى ہے۔

عبداللدبن رتن مندي

حافظ ابن جر ن الاصابة "كاندر" رتن مندى "كے حالات ميں عبدالله كا بھى ذكركيا كر اس نے اپنے باب رتن كى خرافات نقل كى بيں۔

عبدالله بن عبدالرحل مالا بارى سندهى ، وشقى

ملیارکا تذکرہ کرتے ہوئے حموی نے "معجم البلدان" میں لکھا ہے کہ میں نے "" تاریخ دمشق" میں بڑھا کہ عبداللہ بن عبدالرجمن ملیاری معروف بہ

سندھی نے دمشق کے ساحلی شہر 'صیداء' کے زیرانظام شہر ' عذبون' بین احمد بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبداللہ بن عبدالرحمٰن سے ابوعبداللہ صوری نے روایت کی۔

عبداللدبن عربن عبدالعزيز بهاري عاكم سنده

عبدالله بن غربن عبدالعزيز بن منذر بن زبير بن عبدالرحل بن هبار بن اسود قبیله قرایش کی شاخ بن اسد ہے تعلق رکھتے تھے۔ بیاسینے والد: عمر بن عبدالعزیز کی وفات کے بعد • ۲۷ ھے آس پاس سریر آرائے حکومت سندھ ہوئے۔ شہر 'بانیہ'' سے فتقل ہوکر"منصورہ" میں سکونت اختیاری ۔اس کی وجہ بیہ ہوئی کہ گورنرسندھ عمر ین حفص ہزار مرد کے ہمراہ، ابوصمہ مولی ابوکندہ و کام میں سندھ آیا اور اس نے منصورہ پر قبضہ کرلیا۔ بعد میں عبداللہ بن عمر نے اسے منصورہ سے بے وخل کر کے وہاں مستقل طور پرسکونٹ کرلی۔ ۱۷۵ میں سندھ کے ایک غیرمسلم راجہ: مہروق بن رائک نے عبداللہ بن عمر کے ماس قاصد بھیجا کہوہ ند بب اسلام کی بابت آگاہ كرے۔اس كى اس درخواست برعبداللدنے ايك عراقی عالم كواس کے ياس جيجا۔ بيراقى عالم منصوره بى ميس ملي بوصے اور جوان موئے اور كئ ايك زبانوں سے واقف تھے۔ان کے حالات تفصیل کے ساتھ اس کتاب میں مہروق بن را تک کے حالات میں مذکور ہیں۔ عبداللہ بن عمر ہی کے عہد حکومت میں • ۴۸ ھ میں " دیبل" میں شدید زلزلہ آیا۔ منصورہ پراس نے تقریباً تمیں سال تک حکومت کی اس کے عہد حكومت ميس ٢٨١ ه مين قاضي محمد بن ابوالشوارب بغداد سے آئے اور منصورہ كے قاضی بنائے گئے۔ بینہایت ذی علم، صاحب نضل و کمال عالم سے منصورہ تشریف آوری کے چھ ماہ بعد ہی شوال ۲۸۳ ھیں منصورہ طیں ان کی وفات ہوگئ۔ مسعودی کے بیان کے مطابق ان کی اولا دمنصورہ ہی میں قیام پذیررہی۔

عبدالله بن محرداوري سندهي

مقام ' داور' کی بابت حموی نے لکھا ہے کہ اس کی طرف شیخ عبداللہ بن محمد داور کی بابت حمول نے لکھا ہے کہ اس کی طرف شیخ عبداللہ بن داوری منسوب ہیں۔انھوں نے ابو بکر حسین بن علی بن احمد بن محمد بن عبدالملک بن زیا ت سے ساع حدیث کیا۔

عبداللد بن مبارك مروزي مندي

ان کے والد: مبارک "مرو" کے ایک صاحب تروت شخص کے غلام تھے۔ یہ
ہندی نزاد تھے۔اس کے باغ کی دیکھر کھ ہوئی صدق دلی، اخلاص اور دیا نت داری
کے ساتھ کی۔اس سے خوش ہوکراس مال وارآ دمی نے ان سے اپنی لڑکی کا نکاح
کردیا، جس نے صاحب تذکرہ عبداللہ بن مبارک ہندی مروزی پیدا ہوئے۔ یہ
اپنے دور کے سب سے زیادہ با کمال، عبادت گزار بہادراور فاکق فقیہ تھے۔فقہاء،
عبام ین اور زبادان پر فخر کرتے تھے۔ یہ سب بچھان کے والد کی حسن نیت اور
دیا نت وامانت کی برکت کا نتیجہ تھا۔ ان کا تذکرہ ان کے والد کے حالات کے حمن
میں آیندہ صفحات میں کیا جائے گا۔

حاكم اوجه عبدالحميد بن جعفر بن محمد

عبدالحمید بن جعفر بن محمد بن عمر بن حضرت علی بن ابوطالب رضی الله عنه،
سنده کے شہر 'او چھ' کے حاکم تھے۔ان کے والد جعفر کولوگ ' مؤید من السماء' کے
لقب سے یا دکر تے تھے۔ان کے والد ' ملتان' آنے والے پہلے عرب شخص ہیں۔
انھوں نے ملتان میں سکونت بھی اختیار کی اور ان کے پیچاس صاحب زاد ہے
ہوئے، جو ہندوستان، کرمان اور فارس کے مختلف اطراف میں پھیل گئے۔ انہی

میں سے ایک اڑکے کا نام عبدالحمید تھا جو''او چھ'' کا حاکم ہوااور عرصہ درازتک حکومت کی عبدالحمید ذی علم اور بڑابا کمال شخص تھا۔ (تحفة الکرام)

عبدالرجيم بن حمادسندهي بصرى

المام ذہبی نے "میزان الاعتدال" میں لکھائے کرعبدالرحیم بن حمادتقفی نے امام اعمش اور دوسر بلوگوں سے روایت کی ہے۔ بیسندھی سے مشہور تھے اور بھرہ میں سکونت اختیار کی تھی۔ علامہ عقیلی نے بتایا کہ مجھ سے میرے دادا ہنے فرمایا کہ مارے بہال سندھ سے ایک بوے عالم آئے جوامام اعمش اور عمرو بن عبید کی روایت سے حدیث بیان کرتے تھے۔ نیز بتایا کہم سے میرے دادانے بیان کیا،ان سے عبدالرجیم بن حماد نے اور ان سے امام طعنی حصرت عبداللد بن عباس کی روایت ہے امام اعمش نے بیان کیا کہ ایک شخص نے کہا اے خداکے نبی!اس نے کہاتم خدا ے نی نہیں ہو بلکہ میں ابلد کا نی ہوں۔ نیز اس طریق سے عصی علقم عن ابن عباس، امام اعمش نے بیان کیا کہ حضرت ابن عباس نے فرمایا"أن النبی علیہ مر بامرأة زمنة لا تقدر أن تمتنع ممن أرآدها وراها عظيمة البطن فقال لها ممن؟ فذكرت رجالًا اضعف منها فجيئ به فاعترف، فقال خذوا اثاكيل مائة فاضربوه بها مرة واحدة "حضور اكرم عليه كا گزر ايك اليي عورت کے باس سے ہوا جو کسی بعنی بدنیت شخص کورو کنے پرقادر ندمتی۔ آپ سے اللہ ا د یکھا کہاس کا پید بردھا ہوا ہے (امیدے ہے) فرمایا کس شخص سے ہوا؟عورت نے اپنے سے بھی کمزور مرد کا نام لیا، چنال چال شخص کولایا عمیا تو اس نے اقرار کیا تب آب سن النظام الما سوشاخيس كريكبار كى ان ساس كومارو

اس طرح عبدالرحيم بن حماد سندهى نے بدروایت زمرى، اعمش سے "حدیث سفینه" بھی روایت کی ۔ گربدروایت امام اعمش ان احادیث کی کوئی اصل نہیں ہے۔

علاوہ ازیں صاحب تذکرہ نے دوسری سند ہے" حدیث ہمز النبی" روایت کی ہے۔ بیدد سری سند جید، مرسل ہے۔

امام ذہبی فرماتے ہیں کہ عبد الرحیم بن جماد واہیات سم کے عالم تھے، محد تین امام ذہبی فرماتے ہیں کہ عبد الرحیم بن جماد واہیات سم کے عالم تھے، محد تین نے ان کی بابت کوئی گفتگونہیں کی ہے، جوایک جبرت انگیزیات ہے۔ ان کی روایت سے حدیث 'معاجم ابن جمیع ''میں بسند عالی مذکور ہے۔ عبد الرحیم بن جماد سندھی بھری، دومری صدی ہجری کے دہنے والے تھے۔ (قائن)

عبرالصمد بن عبدالرحلن لا مورى

سمعانی نے "الانساب" میں اکھا ہے کہ ابواقتے عبدالصمد بن عبدالرحلٰ العدی الموری، سمرقد میں رہتے تھے۔ان کی وفات لا ہور میں ۲۹سم صمیں ہوئی۔

عبدالعزيز بن حميد الدين سوالي نا گوري

"کورامات الاولیاء" میں مذکور ہے کہ عبدالعزیز بن حضرت شیخ تھید بن احمد بن محمد بن ابراہیم بن محمد بن سعید سوالی ٹا گوری نہایت نیک اور متی شھے۔ جوال سالی ہی میں وفات ہوگئی ہے۔ جس کا پس منظریہ ہے کہ کس ساع میں ایک قوال کہ درہاتھا جان بدہ جان بدہ جان دوء جان دو جان دو۔ یہ سنتے ہی جیخ نکلی ، وجد طاری ہوگیا اور کہنے جان بدہ جان دوء جان دو جان دے دی ، میں نے جان دے دی۔ ادر یہ کہتے ہیں۔ میں منظری سے برداز کرئی۔ یہ ساتویں صدی ہجری سے تعلق درکھتے ہیں۔ ہوئے روح تفس عضری سے برداز کرئی۔ یہ ساتویں صدی ہجری سے تعلق درکھتے ہیں۔

امام اوزاعي عبدالرحمن بن عمر وسندهي

امام ذہبی نے 'تذکرہ الحفاظ ''میں ان کی بابت لکھا ہے کہ اوز ای حافظ ۔ حدیث شیخ الاسلام ابوعبد الرحمٰن بن عمر بن محمد دمشق میں ۸۸ھ میں بیدا ہوئے۔ انھوں نے حضرت عطاء بن ابور ہاج، قاسم بن نخیم ، شداد بن ابو کما، رہید بن بزید،
امام زہری، محمد بن ابراہیم بھی ، پیلی بن ابوکشر اور ان کے علاوہ بہت سے تابعین
سے روایت حدیث کی۔ مشہور تابعی امام محمد بن سیرین کومرض الموت میں و یکھا۔
بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ ان سے ساع حدیث بھی کیا۔

امام اوزای سے امام شعبہ، ابن المبارک، ولید بن مسلم، مقل بن زیاد، یکی بن حزه، یکی قطان، ابوعاصم، ابومغیره، محد بن یوسف فریا بی اور دیگر بہت سے محد ثین نے حدایث کا ساع کیا۔ اخیر عمر میں 'بیروت' میں سکونت اختیار کرلی تھی۔ وہیں ان کی وفات ہوئی۔ یہ اصلاً سندھ کے قید یوں سے تعلق رکھتے تھے۔

ابوزرعدد شق لکھتے ہیں کہ امام اوزاعی کا پیشہ خطوط تو لیں اور کتابت تھا۔ ان کے خطوط اب تک منقول ہیں۔ فقہ پران کی وست رس اضافی اور مشزاد خصوصیت تھی۔ ولید بن مرشد فرماتے ہیں کہ امام اوزاعی کی والا دت 'بعلبك '' ہیں ہوئی اور پرورش بیسی کی حالت ہیں ماں کی گود میں ہوئی۔ گرافھوں نے خود اپنے آپ کوجس طرح کی تعلیم وتہذیب سے سنوارا، بادشاہ کا ہے کوائی اولا دکے لیے الیی تعلیم وتر بیت کانظم کر سکتے ہیں۔ ہیں نے بھی ان سے کوئی ذا کد لفظ نہ سنا، گرسامین کو محسوس ہوتا کہ ہاں اس کی ضرورت تھی، نہ بی تہ تہ ہو کے پایا۔ جب وہ یوم آخرت کا ذکر کرتے تو تمام حاضرین مجلس رونے لگتے۔ ایوب بن سوید کا بیان ہے کہ امام اوزاعی ایک وفد کے ساتھ ''کہام'' گئے تو ان سے بحی بن ابوکشر نے فرمایا ہے گئے تمام ''بھر وہ' پلے جاؤ کہ ساتھ ''کہام'' گئے تو ان سے بھی بن ابوکشر نے فرمایا ہے گئے۔ امام اوزاعی کہتے ہیں کہ میں نے فررابھرہ کی راہ لی، لیکن جب وہ ان پہنچا تو حضرت حسن بھری کی وفات ہو چکی تھی اور فررابھرہ کی راہ لی، لیکن جب وہ ان پہنچا تو حضرت حسن بھری کی وفات ہو چکی تھی اور امام ابن سیرین مرض الموت میں شے اور میں نے ان کی عیادت کی۔

مثل بن زیاد کابیان ہے کہ امام اوز اعی نے ستر ہزار مسائل کا جواب دیا۔ اساعیل بن عیاش کہتے ہیں کہ میں نے ۱۹۰ ھیں تمام لوگوں کو یہ کہتے ہوئے

سا كداس وقت امام اوزاع امت مسلمه كے واحد عالم ہیں۔ جب كہ حزین قرماتے ہیں کہ امام اوز اعی اینے دور میں سب سے افضل اور منصب خلافت کے لائق تھے۔ ابواسحاق فزاری کابیان ہے کہ اگراس وقت کے لیے مجھے انتخاب کاحق دیاجائے تو میں امت مسلمہ کے لیے امام اوزاع کا انتخاب کروں گا۔ بشرین منذر فرماتے ہیں كريس نے امام اوزاع كوديكھا كثرت خشوع وضوع كےسبب لگ رما تھا كدوه نابینا ہو گئے ہیں۔ولید بن مرحد فرمایا کرتے تھے کہ میں نے امام اوز ای سے زیادہ، اجتهاد كرنے والاكسى كوندد بكھا۔امام ابومسير فرماتے بيں كدامام اوزاعي رات نماز، تلاوت قرآن اور گریدوز اری میں بسر کیا کرتے تھے۔ولید بن مردد نے میکی بیان كياكهيس في سناامام اوزاع فرمار بي تفي كم الله تعالى كوكسي قوم كي ساتھ برائي منظور ہوتی ہے تو بحث و تکرار کا دروازہ کھول دیتے اور عمل سے محروم کردیتے ہیں۔ عمرو بن ابوسلمہ کا بیان ہے کہ میں نے امام اوز اعی سے سنا انھوں نے فرمایا کہ میں نے خواب میں ویکھا کہ دوفرشتے مجھے لے کراللدرب العزت کی خدمت میں مھے اور بارگاہ ایزدی میں مجھے کھڑا کردیا۔اللہ تعالی نے فرمایا تم بی میرے بندے: عبدالرحن ہو، نیکی کا حكم دیتے اور برائی سےرو كتے ہو؟ ميں نے عرض كيا بروردگار! تيرى عزت كي مي بى بول _ پھر جھے زمين بروايس لوفاديا كيا۔

محرین کیرمصیصی فرماتے ہیں کہ بیل نے سناامام اوزائ فرمار ہے تھے کہ ہم لوگ نیز بہت بڑی تعداد میں حضرات تا بعین کرام بید کہا کرتے تھے کہ اللہ تعالی اپنے عرش کے اوپر ہیں اور ہم ایمان رکھتے ہیں اللہ تعالی کی ان صفات پرجن کا احادیث میں ذکر آیا ہے۔ تھم کا بیان ہے کہ امام اوازائی اپنے دور کے بالعموم اور اہل شام کے بالحضوص امام تھے۔ولید بن مرشد کا بیان ہے کہ امام اوزائی کی پیدائش ' بعلب ' میں اور نشو ونما '' بقاع'' کے مضافات میں واقع' ' کرک' نامی گاؤں میں ہوئی۔ پھران کی والدہ انہیں لے کر' ہیروت' آگئیں۔

نیز کہتے ہیں کہ میں نے سناامام اوزاعی نے فرمایا کہ اسلاف کے آثار واقوال کو لازم پکڑے رہنا،خواہ لوگ تہہیں مستر دکردیں اورعصر حاضر کے لوگوں کے خیالات اختیارمت کرنا، اگر چهانہیں چکنی چیڑی باتوں ہے آراستہ و پیراستہ کرکے پیش کریں ۔ کیوں کہ بات ظاہر ہوکر رہے گی اورتم ہی صراط متنقیم پر ہوگے۔ عامر بن بیاف کابیان ہے کہ امام اوز ائی نے فرمایا جب حضور اکرم علایق کی کوئی صدیث تم كو پنج تواس كے سوادوسرى بات مركز مت كهنا، اس ليے كه آب طابق الله تعالى كى جانب سے پیغام بربنا كر بھيج كئے تھے۔ امام اوزاعى كے حوالے سے ابواسحاق فزاری نے بتایا کہ امام موصوف فرمایا کرتے تھے کہ حضرات صحابہ کرام اور تابعین یا نج چیزوں پر کممل طور سے قائم تھے۔ا۔ جماعت مسلمین کی حمایت ۲-اتباع سنت .. رسول ٢- مسجدون كوآبا در كهنايم - تلاوت قرآن ٥- جهاد في سبيل الله - ابن سابور کا بیان ہے کہ امام اوز ای نے فرمایا کہ جو محص علماء کی نادر اور شاذ باتوں کو اختیار کرے وہ اسلام سے خارج ہوگیا۔امام موصوف کے حوالے سے بیر بات بھی بیان کی جاتی ہے کہ جس نے بھی کوئی بدعت ایجادی ، اسے درع وتقوی سے محروم كردياجاتا ہے۔وليد بن مر ثدنے كہا كہ امام اوز اعى فرمايا كرتے تھے كہ ہلاكت ہو ان کے لیے جوعلم فقہ، عبادت کے سواکسی اور غرض سے حاصل کرتے ہیں اور جوشبہ کی بنیاد پرمحر مات کوحلال سمجھتے ہیں۔

قاضی صاحب فرماتے ہیں کہ امام ذہبی نے تفصیل سے امام اوزائی کے فضائل ومنا قب کا تذکرہ کیا ہے۔ مگر چوں کہ امام موصوف کی شخصیت کی تعارف کی مختاج نہیں اوران کے منا قب بہت مشہور ہیں ؛ اس لیے ہیں نے منا قب کے تفصیلی تذکر ہے کونقل کرنا ضروری نہیں سمجھا۔ امام ذہبی نے لکھا ہے کہ 'خلاصة تھذیب الکھال '' میں فدکور ہے کہ امام ابوزرعہ نے فرمایا کہ امام اوزائی اصلاً سندھ سے گرفتار شدہ قیدیوں میں سے تھے۔ ان کے اصلی وطن کی بابت ان اقوال کے علاوہ گرفتار شدہ قیدیوں میں سے تھے۔ ان کے اصلی وطن کی بابت ان اقوال کے علاوہ

دوسرے متعدد علمائے تاریخ وانساب کے اقوال ہیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ امام اوز اعی سندھی الاصل نہ تھے۔

ایک عرصه درازتک شام اوراندلس کے مسلمان امام اوزاعی کے مسلک کے بیروکارر ہے، بعد میں ان کے جانے والے اور مانے والے فقہ کی اور کی خوانے والے اور مانے والے فقہ کی اختلافی مسائل براکھی گئی کتابوں میں ان کی آراء ملتی ہیں۔ان کی وفات بہتر سال کی عمر میں کا دختلافی مسائل براکھی گئی کتابوں میں ان کی آراء ملتی ہیں۔ان کی وفات بہتر سال کی عمر میں کے اور میں ہوئی۔

علم حدیث میں امام موصوف نے گی ایک مجموع تالیف کے، جن میں صحح احادیث، حضرات صحابہ کے قاراور تابعین نیز اپ شیورخ کے اقوال جمع کیے اور اپ نقبی مسلک کے مطابق ان سے شرقی احکام کا استباط کیا۔ ان کی اس طرح کی تالیف کا ایک قلمی نسخه مراکش کی" جامع القر وہین" کے کتب خانے میں موجود ہے۔ تالیف کا ایک قلمی نسخه مراکش کی" جامع القر وہین" کے کتب خانے میں موجود ہے۔ اس کے سواکتاب بذاکا دوسر انسحہ کمی جگہ بھی موجود نہیں ہے۔ یہ نسخه باریک قلم سے لکھا ہوا، ایک ضحیم جلد مرشم لل ہے۔ اگر عام خط میں لکھا جائے تو چار ضحیم جلدوں میں آئے گا۔ یہ بات جمہوریہ لبنان کے سکریٹری فتوی: علامہ محموع بی عبدون میں آئے گا۔ یہ بات جمہوریہ لبنان کے سکریٹری فتوی: علامہ محموع بی عزوزی نے اپنی کتاب "الحسن اور کتاب المسائل بھی ہیں اوزاعی کی علم فقیہ میں دو کتابیں: کتاب السن اور کتاب المسائل بھی ہیں حیا کہ این ندیم نے "الفہرست" میں لکھا ہے۔

عبدالرحمان بن سندهي

انھوں نے ابوضاک عراک بن خالد بن برید بن صالح بن بیج مری دشقی سے علم حاصل کیا ۔ جبیا کہ حافظ ابن ججر ؓ نے ''تھذیب التھذیب '' میں عراک بن خالد دشقی کے تذکر ہے میں تصریح کی ہے۔ عبدالرحمٰن بن سندھی دوسری صدی بجری کے شے۔ (تاض)

عثان سندهى بغدادي

علامه ابن الجوزى في "المستظم" بين قاضى ابوالعباس احد بن عمر بن سرت كح حالات كضمن مين آن كا تذكره كيا به اورابوعبدالله محد بن عبيد فقيه تك ابن سند سع بيان كيا كه انهول في كها مين في عثان سندهى سه سنا ، وه فرمار به شه كه مجه سع ابوعباس بن سرق في البيغ مرض الموت مين بيان كيا كه گزشته شب مين فواب و يكها كه كوئى مجه سه كهدر بالمه كه يالله رب العزت بين تم سه خاطب بين و ابوعباس في بتايا كه مين في "به ذا اجبتم المهو سلين؟" سنا، تو مير دل مين ابوعباس في بتايا كه مين في كه بين كه يعروى بات من ، تب مجه خيال آيا كه شايد جواب مين بجه اور بهي مطلوب به البذا مين في عرض كيا ايمان اور تقد يق سع مين البذا مين في مين الموسلين بالله والتحديق سع مين مين مين مين الموسلين بين المين المين الموسلين المين المين الموسلين المين الم

شیخ عثمان سندھی چوتھی صدی ہجری کے تھے اور اس صدی کے ابتدائی دس سالوں میں بہ قید حیات تھے۔ ندکورہ بالا واقعہ سے ظاہر ہوتا ہے کہ ان کا شار بڑے علماء وصلحاء میں ہوتا تھا۔ (قاض)

على بن احمد بن محمد ديبلي

علامہ بی اور بیلی بن احمہ بن المعناد الشافعیة الکبری "میں لکھتے ہیں کہ کی بن احمہ بن محمد زیبلی (دیبلی)" ادب القضاء " کے مصنف ہیں۔ میں نے کتاب ہذا کے ایک نیت ابواسحاق دیمی ، جب کہ دوسر سے پر ابوالحس محمر میں اس کی حقیقت حال کی بابت مذیذ ب میں جب الارما۔ اوگوں کی زبانوں پرعموماً ان کی نسبت میں شبہ ہے اور ان کی دیبلی " ہے محمر سیجھوں اس نسبت میں شبہ ہے اور ان کی دیبلی " ہے محمر سیجھوں اس نسبت میں شبہ ہے اور ان کی

رائے میں یہ ' دیبلی'' ہے۔ چناں چاس کا اندازہ اس سے بھی ہوتا ہے کہ میں نے کتاب مذکور کے ایک نیخ میں یہ لکھا ہوا دیکھا کہ یہ ' سبط المقری' ہیں۔ المقری سے مرادلوگوں کے نزد کی مقری شام: البوعبداللہ دیبلی (دیبلی) اوراحمہ بن محررازی ہوتے ہیں اور یہ دونوں ہی تیسری صدی ہجری کے آس پان کے ہیں۔ لیکن صاحب تذکرہ علی بن احمد عالبًا ان میں سے پہلے یعنی البوعبداللہ کے بوتے ہیں اور میراخیال ہے کہ صاحب تذکرہ کا تعلق بھی اسی صدی سے قعا۔ کیوں کہ انھوں نے اور میراخیال ہے کہ صاحب تذکرہ کا تعلق بھی اسی صدی سے قعا۔ کیوں کہ انھوں نے 'ادب القصاء'' میں امام اصم کے بعض تلا فدہ سے روایت کی ہے۔ چناں چہ مند امام شافعی سے بروایت ابوالحن عن ابن ہارون بن بندار جو بنی ، عن ابن عباس المام شافعی سے بروایت ابوالحن عن ابن ہارون بن بندار جو بنی ، عن ابن عباس دبیلی (دیبلی) اور دوسر ہے لوگوں سے بھی احادیث منقول ہیں۔ دبیلی (دیبلی) اور دوسر ہے لوگوں سے بھی احادیث منقول ہیں۔

یمی وہ کتاب ہے، جس سے ابن رفعہ نے یہ بات نقل کی ہے کہ جلس قضاء میں موکل اپنے وکیل کے ساتھ کھڑا ہوگا۔ میں نے خود بھی یہ بات اس کتاب میں دیکھی ہے جس کے الفاظ میہ ہیں:

"وإن كان أحد الخصمين وكبل وكيلا يتكلم عنه وحضر مجلس القاضى، فيجب أن يكون الوكيل والموكل والخصم يجلسون بين يديه، ولايجوز أن يجلس الموكل بجنب القاضى ويقول وكيلى جالس مع خصمى"

"اورا گرفریقین میں ہے ایک کسی کواپناویل (نمایندہ) بنادے کہ وہ اس کی طرف ہے گفتگو کرے اور وہ قاضی کی مجلس میں موجود ہوتو ضروری ہے کہ وکیل، موکل اور دوسرا فریق قاضی کے سامنے بیٹھیں۔ یہ جائز نہیں ہے کہ موکل تو قاضی کے سامنے بیٹھیں۔ یہ جائز نہیں ہے کہ موکل تو قاضی کے پہلومیں بیٹھے اور یہ کے کہ میر اوکیل فریق مخاطب کے ساتھ بیٹھا ہوا ہے"۔

اس کے بعد مصنف نے امام شعبی تک اپنی سندسے بیر وایت ذکر کی ہے کہ

حضرت عمر بن خطاب اسينے دورخلافت مين اور حضرت الي ابن كعب رضى الله عنه اپنا ایک معاملہ قاضی کے پاس لے کر گئے۔ تو قاضی نے ایبافیصلہ بیان کیا جوان کے مطلب سے لیے داضح ندتھا، مگروہ فیصلہ دونوں کے حق میں برابر کا تھا اور برابری کی بنیاد بر ہونا بھی ضروری تھا۔ بینہایت عمدہ نقہ ہے، جس کےخلاف مذہب میں کوئی بات معروف نہیں ہے اور والدصاحب نے بھی اسے منظوری وے دی۔صاحب كتاب" ادب القضاء" نے اس كاترجمه بيكيا ہے كمموكل محكوم له يامحكوم عليه ہوگاءاس سے سم لی جائے گی اوراس سے حق بھی لیاجائے گا۔ میں (علامہ بھی) کہتا ہوں کہاس سے قریب سے بات ہے کہ فریقین میں سے ایک کم حیثیت لوگوں میں ہے ہو، جن کی عادت قاضی کے سامنے بیٹھنے کے بجائے ، کھڑے رہنے کی ہو۔اس کی بابت حکام کامعمول میرما ہے کہ جب سی رئیس کبیر اور معزز آ دی کے ساتھ وہ معاملہ کے کرقاضی کے پاس آئے تواسے بھی رئیس کے ساتھ بیٹھاتے ہیں۔اس کی بابت بیربات کهی جاستی ہے کہ بہی بہتر بات ہے۔ کیوں کہ جب شریعت کی نظر میں دونوں برابر ہیں تو حاکم کی مجلس میں بھی دونوں برابر ہونے چاہئیں اور لوگوں کا پیکہنا كهاس ميں نقصان بيہ كما گرمقدمه نه ہوتا توان كے درميان مساوات نه ہوتی نيز یہ جی کہا جاسکتا ہے، بلکہ کہا جانا جا ہے بھی کہ ایس صورت میں بے حیثیت فخص کے ساتھ رئیس کوبھی کھڑا ہی رکھا جانا طے ہے، اس لیے کہ کم درجے والے آ دمی کے ساتھ باحیثیت شخص کوبھی بٹھا نا در حقیقت اس رئیس کے ساتھ تو ہین ہوتی ہے۔الاب کہ بوں کہا جائے کہ کھڑا ہونا اصلاً بدعت ہے تو بیفرض ہوا۔ دور کیس آ دمیوں کی بابت، ایک حاکم سے دور اور دوسر المجلس ریاست میں اور اس طرح کیا جائے تاہم میری طبیعت میں محکوم کو بٹھانے کے وقت تکدر ہوتا ہے اور اس کا میلان رئیس وحاکم کو کھڑار کھنے یا ماتحت کی مجلس کی جانب ہے۔ اس بابت غور کرنا جاہیے، کیوں کہ مجھے نہ توعقل سے اور نہ ہی نقل سے کوئی ایسی بات سمجھ میں آئی، جس سے پیاسے کو

تسلى دى جاسك - (طبقات الثانعية)

شنخ زبیلی (دیبلی) نے مزید لکھا ہے کہ اگر قائنی کے یاس کوئی عورت آئے اوراس کاولی،قصری مسافت کے برقدر دور ہواور وہ کسی متعین شخص سے اپنی شادی کیے جانے کی اجازت دیے دیے اور وہ تخص منظور بھی کرلے تو اس تخص کواس کاحق حاصل ہے۔ اس سے کفوکی بابت بھی معلوم نہ کیا جائے گا کیوں کہ بیت عورت کا تھاجو پہلے ہی اس سے شادی پر تیار ہو چکی ہے۔ اگر اس کا ولی آجائے اور اب تک شوہرنے ہم بستری نہ کی ہو تو ولی کوفنخ نکاح کاحق ہوگا۔ مصنف نےمشہورمسکلے کے مطابق لکھاہے کہ قاضی نے اگرفسق کا ارتکاب کیا، پھراس نے توبہ کرلی تو بغیر تجدیدولایت کے، سابقہ حالت برلوٹ جائے گا۔اس سےمعلوم ہوا کہ بیرحالت خاص ہے اس کے ساتھ جب دوسرے کو ولایت قضاء نہ دی گئی ہو،جس کے سبب اس کی ولایت قضاء ختم ہوجائے ۔ بیرسب سے اچھی بات ہے اوراس میں اختلاف کی گنجائش بھی نہرہے گی، مگر جب کہ دوسرے کوولایت حاصل نہ ہو، جیسا کہ علاء کا مقصد گفتگو ہے، اگر چہ انھوں نے اس کی وضاحت نہیں گی۔ صاحب تذکرہ زیلی (دیبلی) فرماتے ہیں کہ اگر لوگوں کو قاضی کے فتق کاعلم ہوتو اس کے فیصلے باطل وفاسد ہوں گے اور بہمشکل ہی درست ہوں گے۔ تا ہم بیر فی نفسہ گناہ ہے۔ مصنف نے ایک دوسری شکل بھی نقل کی ہے کہ اگراس نے " ' ٹرید' سے شراب بنا کر اسے بی لی ، تو اس بر حد شرب خمر واجب نہ ہوگی۔ جب کہ ' رافعی' وغیرہ میں وجوب حد کی بات کھی گئی ہے۔ اور صراحت ہے کہ اصل اختلاف اس بات میں ہے کہ نابالغ بجے اور مجنون کا عمران جنایات میں جن میں دیت واجب ہوتی ہے،عمرشار ہوگایا خطاء؟اں وجہسےاگر میدونوں کوئی چیز تلف کردیں توان پرتاوان واجب ہوتا ہے، یہ بات اختلاف سے خارج نہیں ہے۔ میں (سکی) کہتا ہوں کہ یہ اختلاف کہان دونوں کا عمد خطاہے، صرف ان جنایات کے ساتھ خاص نہیں ہے جن میں دیت

لازم ہوتی ہے۔ اس لیے کہ فقہاء نے اسے اس شکل میں بھی جاری کیا ہے جب
نابالغ بچہ یا مجنون حالت احرام میں خوشبواستعال کرلیں، سلاہوا کیڑا بہن لیں،
جماع کرلیں، حلق کرالیں، قصر کرالیں یاعمدا کسی شکار کوئل کردیں۔ جب کہ ہم سے
ہمتے ہیں کہ ان صورتوں میں عمر اور سہو کے احکام الگ الگ ہیں حال آل کہ ان
میں ہے کہ ان حورتوں میں دیت کی تنجائش نہیں ہے۔ لہذا معلوم ہوا کہ اختلاف اس
میں ہے کہ ان دونوں کا عمر، عمر سمجھا جائے گا اور ساس شکل کو بھی عام ہوگا، جس میں
عمر اور خطامیں تکم مختلف ہے۔ نہ کہ شنخ زبیلی کی ذکر کر دہ بات کی وجہ ہے، ان دونوں
کے مال میں سے تلف کر دہ اشیاء کا صان دینا واجب ہوگا۔

شخ علی بن احد دیبلی، تیسری صدی ہجری کے تھے۔ بیدنہ وزیبلی تھے نہ ہی دبیلی، بلکہ بید دیبلی تھے۔ ان کے جدمحتر م قاری الوعبداللہ محمد بن عبداللہ ''دیبل'' کے رہنے والے تھے۔ چنال چہ ''کشف الظنون'' میں امام شافعیؒ کے فد ہب کے مطابق ''دوب قاضی'' کے موضوع پر تالیف کردہ کتابوں کے بیان میں تصریح ہے کہ اس موضوع پر ابوالحس علی بن احمد بن محمد ''ربیلی'' نے بھی کتاب کھی ہے، سبی نے ''راء'' کے ساتھ ہی ذکر کیا ہے، مگر جیسا کہ واضح ہے کہ بیکوئی نسبت نہیں ہے، بلکہ غلط ہے۔ کے ساتھ ہی ذکر کیا ہے، مگر جیسا کہ واضح ہے کہ بیکوئی نسبت نہیں ہے، بلکہ غلط ہے۔ علی بن اسماعیل شیعی سندھی

علامہ شی نے "معرفة علم الرجال" میں لکھاہے کہ نصر بن صباح نے فرمایا کیلی میں اساعیل سندھی ہیں، جن کالقب اساعیل سندھی ہے۔ بن اساعیل سندھی ہے۔

على بن بنان بن سندهى عاقو ني بغدا دي

خطیب نے "تاریخ بغداد" میں لکھا ہے کہ کی بن بنان بن سندھی عاقولی نے ابواشعث علی اور یعقوب دور قی سے حدیث کا ساع کیا اور عاقولی سے محمد بن ابراہیم بن نیطر عاقولی نے روایت کی نیز لکھا ہے کہ مجھ سے علامہ از ہری نے ، ان سے بن نیطر عاقولی نے روایت کی نیز لکھا ہے کہ مجھ سے علامہ از ہری نے ، ان سے

قاضی محد ابراہیم بن حمد ان نے ، ان سے علی بن بنان سندھی عاقولی نے ، ان سے ابواشعث احمد بن مقدام نے ، ان سے زہیر بن علاء نے ، ان سے ثابت بنائی نے ، عمر بن ابوسلمہ سے بردوایت حضرت امسلم قبیان کیا کہ ا

"قال رسول الله على إذا أصابت أحدكم مصيبة، فليقل :إنّا لله وإنّا الله وإنّا الله وإنّا الله وإنّا الله وإنّا الله وإنّا منها "الله واجعون، اللهم احتسب مصيبتي فأجرني فيها، وأبدلني بها خيراً منها " ومصور على إن اللهم احتسب مصيبتي فأجرني من سي كوكوكي بريثاني آياتو ومصور على الله والما الله والما الله والله الله والله الله والله وال

حفرت امسلم کی جب میرے شوہرابوسلم کی جان کی کا وقت آیا تو افھوں نے دعا کی خدایا! میرے بیچھے میرے الل کو بہتر جانشین عطافر ما۔ جب ان کا انقال ہو گیا تو میں نے بیدعا کی خدایا! تو میری مصیبت کود کھے اور مجھے اس پر اجرعطا فرما اور جب میں 'ابدلنی بھا حیوا'' پڑھنا چاہتی تو بیسوچتی کہ بھلا ابوسلمہ سے فرما اور جب میں 'ابدلنی بھا حیوا'' پڑھنا چاہتی تو بیسوچتی کہ بھلا ابوسلمہ سے بہتر کون ہوسکتا ہے۔ میری بہی کیفیت رہی بالاً خرمیں نے بیدعا پڑھ ہی دی۔ جب ان کی عدت ختم ہوگئی تو حضرت صدیق اکبر نے مجھے بیغام نکاح دیا، مگر اسے والیس کر دیا۔ پھر حضرت عمر نے بیغام بھی اوٹا دیا، بعد از ال حضورا کرم ہے تھے ہوئی کے مقدم کیا۔

علی بن بنان سندهی تیسری صدی ہجری یا اس کے قریبی دور کے ہیں۔ عاقولی اور دیر عاقولی ، دریائے دجلہ کے ساحل پر بغداد سے بندرہ فرسخ کی مسافت پر ، مدائن کسری اور نعمانیہ کے درمیان واقع مقام' دریالعاقول' کی طرف منسوب ہے۔ (قاضی)

على بن عبدالله سندهى بغدادي

" تاریخ بغداد" میں ابو بر تمیم محد بن عیسی بن عبدالکریم بن مبیش بن طباح

بن طرطوی کے حالات میں تحریر ہے کہ یہ ۲ کم ہے میں بغداد آئے اور علی بن عبداللہ سندھی ہے ' طرطوں' کے فضائل دمنا قب میں علی بہت ی با نیس روایت کیں۔
علی بن سندھی بانچویں صدی ہجری کے ہیں اور ندکورہ بات کے علاوہ ان کی بابت مجھے کی طرح کی مزید معلومات نہ ہو سکیں ۔ ان کے پاس انھیں کا یا ان کے کسی استاذ کا مرتب کردہ طرطوں کے منا قب پرایک مجموعہ تھا۔ (تاضی)

على بن ابومنذ رغمر بن عبدالله بهباري، حاكم منصوره

ان کا ذکر مسعودی نے ''مروج الذهب'' میں کیا ہے اور اس نے انھیں ، ۔ مرید کے ابتدائی دس سالوں کے اندر منصورہ میں دیکھا بھی ہے۔ مزید تفصیل ان کے والد عمر بن عبداللہ ہباری کے تذکر ہے میں آر ہی ہے۔

على بن عمر وبن حكم لا هوري

سمعانی نے "الانساب" بیں لکھا ہے کہ ابوالحن علی بن عمرو بن عکم لوہوری (لاہوری) عالم، ادیب، شاعر تھے، ان کی یا دداشت بہت اچھی تھی اور ان کے الفاظ برے شیریں ہواکرتے تھے۔ انھوں نے حافظ ابوعلی مظفر بن یاس بن سعید سعیدی سے ساع کیا اور ان کی روایت سے ہارے لیے حافظ ابوالفضل محمد بن ناظر سلامی بغدادی نے روایت کی۔

علی بن عمرولا ہوری چھٹی صدی ہجری کے تھے۔ (قاض)

على بن محرسندهي كوفي

یہ مورخ ابان بن محد سندھی کو فی کے حقیق بھائی اور علی بن سندھی کے نام سے مشہور تھے۔مزید تفصیل نے لیے ملاحظہ ہوا بان بن محد سندھی کا تذکرہ۔

علی بن موسی دیبلی بغدا دی

خطیب نے ''تاریخ بغداد'' میں خلف بن محد 'وازی کی دیبلی کے حالات کے تخت لکھا ہے کہ یہ بغداد آئے جہال علی بن موسی دیبلی سے حدیث کی روایت کی ۔ نیز تخریر فر مایا کہ خلف بن محدد یبلی نے بیان کیا کہ ہم سے علی بن موسی دیبلی نے ''دیبل ' میں بیان کیا ۔ الخ۔

صاحب تذکرہ :علی بن موسی دیبلی چوشی صدی ہجری کے ہتھے۔احقر کوان کے مزید حالات دست یاب نہ ہوسکے۔(قاضی)

سلطان مالديب على

''تحفة الأديب ''ميں مذكورہ ہے كہ تاریخ ميں علی كے والد كی بابت کھے مذكورہ ہے كہ تاریخ ميں علی كے والد كی بابت کھے مذكورہ ہيں۔ ہاں اتنی بات ضرور مشہور ہے كہ علی كی ماں كا نام'' ركھريا ماواكلع '' تھا علی مدكورہ ہيں۔ ہاں اتنی بات ضرور ہے تھے سال تخت سلطنت پر مشمكن رہا۔ اہل مالد يب كى زبان ميں اس كالقب' مرى بون ابارن مہارون 'تھا۔

سلطان مالديب على كلمنجا

عمر بن اسحاق واشي لا موري

"نزهة المحو اطر" مين ان كى ما بت لكها ب كرش امام ابوج فقرعمر بن اسحاق

واشی لا ہوری اپنے دور کے مشہور عالم اور نہایت عمدہ شاعر تھے۔ ان کی نظم کے چند اشعار درج ذیل ہیں:

دوش درسودائے دلبر بودہ ام اللہ خشک ورخ تر بودہ ام درخمار عبہر مخور او اللہ دیدہ باز ازغم چوں عبہر بودہ ام وزنم چشم وتف دل ہر زبال اللہ گوئی اندر آب وآذر بودہ ام ہم چوں بحری کان زآب وخون اشک اللہ پر درد پرزگوہر بودہ ام عمرابن اسحاق لا ہوری چھٹی صدی ہجری کے عالم تھے۔ (قاض)

حاكم منصوره: عمر بن عبد العزيز بن منذر بهارى

ان کا نام ونسب سے عمر بن عبدالعزیز بن منذر بن زبیر بن عبدالرحمٰن بن ہمبار بن اسود۔ان کا تعلق قبیلہ قریش کے فائدان بنواسد سے تھا۔ان کے جدامجد بہار بن اسود نے • ۸ھ میں اسلام قبول کیا۔منذر بن زبیر کی اولا دمین سے کوئی تھم بن عوانہ کلبی کے ساتھ سندھ آیا اور منصورہ کے قریب چانب جنوب میں واقع ''بانیہ' میں سکونت اختیار کی۔ سے خاندان پہلے نو اموی حکومت کے ساتھ رہا۔ گر بعد میں میں سکونت اختیار کی۔ سے خاندان پہلے نو اموی حکومت کے ساتھ رہا۔ گر بعد میں عباسی خلافت کا وفادار بن گیا۔ جب عمر بن عبدالعزیز بن منذر کو ۴۲۰ ھ میں وائی سندھ بنایا گیا تو اس نے وہاں خود مختار حکومت قائم کرئی ، تا ہم اس حد تک خلافت بغداد کا مطبح رہا کہ خطبہ خلیفہ عباسی ہی کے نام کا پڑھتا تھا۔

بہ ظاہر معلوم ہوتا ہے کہ اس کی وفات ہ کا ھے پہلے ہوئی ہے، اس لیے کہ اس کا اور کاعبد الند بن عمر ، ہ کا ھے کے بعد سندھ کا تھم رال ہوا ہے۔ عمر بن عبد العزیز نے پہلے تو منصورہ کے تخت حکومت پر قبضہ کیا اور اس کے پچھ عرصہ بعد پورے سندھ پر قابض ہو کر قبکس وخراج نافذ کر دیا۔ تا ہم خطبہ عباسی خلیفہ کے نام کا ہی ویتا رہا۔ اس مناسبت سے سندھ کو خلافت عباسیہ کے مانخت سمجھا جا تا تھا۔ عمر بن عبد العزیز کا

دارانحكومت تومنصوره تهامگراس كا قيام" بانية ميس رجنا تها-

علامہ احمد بن یعقوب بن جعفر یعقو بی نے "تاریخ یعقو بی" میں لکھا ہے کہ جب سندھ پر ایتاخ کے عالی عنیہ بن اسحاق کو" ایتاخ" کے مارے جانے کی خبر ملی تو وہ عراق چلا گیا اور خلیفہ متوکل باللہ عباس نے اس کی جگہ ہارون بن ابو خالد کوسندھ کا عالم مقرر کر دیا جس کی ۱۲۳ ھیں وفات ہوگئی عمر بن عبد العزیز سامی جس کی نسبت سامہ بن لوی کی جانب ہے اور جوماتان کا حاکم تھا، نے لکھا کہ اگر اسے اس شہر کا گور نر نامز دکر دیا جائے اور وہاں قیام کر بے تو اس پر کنٹرول کر لے گا۔ متوکل باللہ نے اس کی بیدرخواست منظور کرلی اور متوکل کے دور خلافت میں وہاں مقیم رہا۔

سامہ بن لوی بن غالب کی جانب جس مخص کی نسبت ہے، اس سے مراد: حاکم ملتان مدید بن اسد ہے، نہ کہ حاکم منصورہ: عمر بن عبدالعزیز بہاری۔ (قاضی)

ابن حقل بغدادی نے اپی مشہور جغرافیہ کی کتاب 'صورة الارض' کے اندرشہر منصورہ کے بارے میں کھاہے کہ یہاں کے باشندے مسلمان اور حاکم قبیلہ قریش سے تعلق رکھنے والے ہبارین اسود کے خاندان کا ایک شخص ہے۔ منصورہ پراس کے آباء واجداد نے قبضہ کیا اور استے اجھا نداز میں حکومت کی کہوام ان کے دل دادہ ہو گئے اور دوسروں پر انھیں ترجے دیے تھے۔ مرفط ہے جمعہ خلفائے عباس کے نام کائی پڑھا جاتا ہے۔

اصطحری کابیان ہے کہ 'بانیہ' ایک جھوٹا سا قصبہ ہے، جہال منصورہ پر قابض حکمرانوں کے جدامجد عمر بن عبدالعزیز بہاری قریش رہائش پذیرر ہے۔ (السائک رائمائل) علامہ بلا ذری لکھتے ہیں کہ زاریوں اور یمانیوں کے درمیان عصبیت کی آگ مخرک اکھی تو عمران بن موسی بن یجی بن خالد بر کی نے جے معتصم باللہ عباس نے مرحدی علاقوں کا گورنر بنایا تھا، یمانیوں کی حمایت کی ۔ اس پر عمر بن عبدالعزیز ہباری نے اس کا رخ کیا اور قل کردیا۔ عمر بن عبدالعزیز بہاری کے دادا: حکم بن عوانہ کلبی کے ہم راہ سندھ آئے تھے۔

عمر بن عبدالله بهاري: حاكم منصوره

مسعودی نے "مروج الذهب" بی تحریر کیا ہے کہ میں "منصورہ" • ۳۰ سے بعد آیا۔ اس وفت منصورہ کا حاکم ابومنذر عمر بن عبد اللہ تھا۔منصورہ میں، میں نے اس کے وزیر: اباح اور دونو لاکون: محمداورعلی سادات عرب سے تعلق رکھنے والے ایک تخف نیز''حمزہ'' کے نام سے مشہور ایک عرب امیر کودیکھا۔ یہاں حضرب علی بن ابو طالب ، عمر بن علی اور محد بن علی کی اولا دیسے تعلق رکھنے والے بہت بڑی تعداد میں آباد ہیں۔ حاکم منصورہ اور قاضی ابوالشوارب کے آل اولا دمیں عزیز داری، اچھے مراسم اور خاندانی رشته داریاں ہیں۔اس لیے کہ والیان منصورہ جن میں ہے اس وقت کا حاکم بھی ہے ہبار بن اسود کی اولا دے تعلق رکھتے ہیں اور بنوعمر بن عبدالعزیز قرشی سے مشہور ہیں ۔عمر بن عبدالعزیز سے اموی خلیفہ داشد حصرت عمر بن عبدالعزیز مراز ہیں ہیں۔ قاضی ابوالشوارب کی آل اولا د کاتعلق ایسے گھرانے سے ہے جس میں ایک عرصہ سے امارت دریاست رہی ہے۔ چنال چہ حضرت عمّاب بن اسٰیدرضی اللّٰدعنہ کوخود حضورا کرم صلی التدعلیہ وسلم نے مکہ مکرمہ کا والی مقرر کیا اور آل ابوالشوارب کے جدامجد: حضرت خالد بن اسيد كوبھى ۔ اس خاندان كے اولين مخض كا نام، جے خلا فت عياسيه مين قضاء كا منصب عطاكيا كيا، حسن بن محمد بن عبد الملك بن قاضي ابوالشوارب تقا_ أنهيس شهر "سُرّ من رأى" كا قاضى القصناة :حضرت جعفر بن عبدالواحد بن سلیمان بن علی نے بنایا تھا اور بیمتوکل بالله عماسی کے زمانے میں اور ا س کے بعد بھی اسی منصب پر فائز رہے۔ یہ نقیہ، سخی ،شریف اورانسانیت نواز تھے۔ ان کی و فات ۲۶۱ ھیں ہونگ _

قاضی ابوالشوارب کی نسل میں ایک عرصہ دراز تک منصب قضا رہا۔ انہی میں محمد بن ابوالشوارب بھی ہیں، جو پہلے بغداد کے قاضی رہے اور پھر ۲۸۳ھ میں منصورہ

کے قاضی ہوئے۔ مورخ ابن اثیر 'تاریخ الکاهل'' ٹین ۱۸۳ھ میں بیش آمدہ اہم واقعات کے ذیل میں لکھتے ہیں کہ اس سال، ماہ شوال میں قاضی محمد بن ابوالشوارب کی وفات ہوئی۔ بیشہمنصورہ کے چھماہ تک قاضی رہے۔ ان کا خاندان منصورہ ہی میں رہا۔ اس خاندان کی رہ بی شہرت اور عزت تھی اور اس کا شارسر بر آوردہ اور معزز خاندانوں میں ہوتا تھا۔ (قاضی)

مسعودی نے لکھا ہے کہ مفورہ کے تحت کل تین لاکھ بستیاں تھیں۔ بیسب ہری بھری، درخت بہ کر ت اور ان کی عمارتیں ایک دوسر سے ملی ہوئی تھیں۔ سندھ کی ایک قوم''میدو'' اور سندھ کی سرحدی بہتیوں کے باشندوں میں بڑی لڑائیاں ہوا کرتی ہیں۔ ملتان بھی سندھ کا سرحدی شہر ہے۔ منصورہ کا نام خلافت بنوامیہ کے نام دوور نر منصور بن جمہور کے نام پررکھا گیا ہے۔ حاکم منصورہ کے پال اس ہاتی ہاتھیوں میں جنگ ہاتھیوں کا ایک دستہ ہے۔ ہر ہاتھی کے آس پاس، جیسا کہ بھی سے بتایا گیا یا بی سوجاتے ہیں۔ حاکم منصورہ کے دو بھاری بھر کم ہاتھی میں بنے دیکھے۔ جوسندھ وہ ہند ہوجاتے ہیں۔ حاکم منصورہ کے دو بھاری بھر کم ہاتھی میں بنے دیکھے۔ جوسندھ وہ ہند کے حکم را نوں کے یہاں اپنی بکڑ، دفاع اور دیٹمن کے کشکر کے دستوں پر حملہ کرنے میں مشہور ہیں۔ ان میں سے ایک کا نام' منفر قلس'' اور دوسر سے کا' حمیدرہ'' ہے۔ میں منفر قلس نامی ہاتھی کے بہت سے جرت انگیز واقعات اور قابل تحریف اعمال اس منفر قلس نامی ہاتھی کے بہت سے جرت انگیز واقعات اور قابل تحریف اعمال اس منفر قلس نامی ہاتھی کے بہت سے جرت انگیز واقعات اور قابل تحریف اعمال اس منفر قلس نامی ہاتھی کے بہت سے جرت انگیز واقعات اور قابل تحریف اعمال اس منفر قلس نامی ہاتھی کے بہت سے جرت انگیز واقعات اور قابل تحریف اعمال اس

ایک واقعہ ہے کہ اس کا بیل بان مرگیا تو اس نے کی روز تک نہ بچھ کھایا اور نہ ہے کہ اسان کرتا ہے۔

بچھ بیا اور اس طرح سے روتا اور اظہار مائم کرتا رہا، جیسے کوئی غم زدہ انسان کرتا ہے۔
اس کی آنکھوں سے مسلسل آنسو بہتے رہے۔ دوسر اواقعہ یہ بیان کیا جاتا ہے کہ ایک روز یہ ایپ باتھی ایس کے بیچھے اور دوسرے تمام اس باتھی میدرہ کے بیچھے اور دوسرے تمام اس باتھی حیدرہ کے بیچھے چل زہے تھے۔ چلتے چلتے والے دمنفر قلس' منصورہ کی ایک تنگ

سرک پر بہنی گیا۔ ای سرک پرایک عورت بھی چل رہی تھی۔ جب اچا نک اس کی نظر
ہاتھیوں پر بڑی تو وہ دہشت زدہ ہوکر پشت کے بل زمین پر لیٹ گی اور نے راستے میں
ہی اس کے پوشیدہ اجز ائے بدن کھل گئے۔ بیصورت حال' منفرقلس' نے دیکھی تو
دوسرے ہاتھیوں کی جانب اپنا دایاں پہلوکر کے سرک کے بیچوں نے کھڑ اہوگیا، تا کہ
انھیں اس عورت تک جانے سے روکے اور اپنے سونڈ سے عورت کو اٹھنے کا اشارہ
کرنے لگا، ساتھ ہی اس کے کپڑے سمیٹ کر اس کے جسم کے کھلے ہوئے حصوں کو
چھیا دیا۔ اس طرح وہ اس وقت تک کر رہا جب تک وہ عورت راستے سے ہٹ نہ گی۔
جسیا دیا۔ اس طرح وہ اس وقت تک کر رہا جب تک وہ عورت راستے سے ہٹ نہ گی۔
جسیا دیا۔ اس طرح وہ اس وقت تک کر رہا جب تک وہ عورت راستے سے ہٹ نہ گئی۔
جسیا دیا۔ اس طرح وہ اس وقت تک کر رہا جب تک وہ عورت راستے سے ہٹ نہ گئی۔
جسیا دیا۔ اس طرح وہ اس وقت تک کر رہا جب تک وہ عورت راستے ہے ہیں۔

اصطری نے اپنی کتاب 'المسالك و الممالك 'عین منفورہ کی بابت کھا ہے کہ باشندگان منفورہ ، سب کے سب مسلمان اور حاکم ایک قریش شخص ہے۔ کہاجا تا ہے کہ وہ ہبار بن اسود کی سل سے ہے۔ اس شہر پراس کے آباء واجداد نے قبضہ کیا تھا۔ گرخطبہ عباسی فلیفہ کے نام کا ہی ہوتا ہے۔ نیز لکھا ہے کہ یہاں اشیاء کی قبضہ کیا تھا۔ گرخطبہ عباسی فلیفہ کے نام کا ہی ہوتا ہے۔ ان کے سکہ ''قاہری'' کا قیشیں بہت کم ہیں ، سرسزی اور شادائی خوب ہے۔ ان کے سکہ ''قاہری'' کا ایک درہم کے یا نچویں جھے کے بقدر ہے۔ یہاں کا ایک اور درہم بھی ہے ایک درہم ، درہم کے یا نچویں جھے کے بقدر ہے۔ یہاں کا ایک اور درہم کے برابر میں کھی لین دین ہوتا ہے۔ یہاں کے ملوک وامراء کا ہاس ، شاہان وراجگان ہندسے ملتا جاتا ہے۔

عمروبن سعيدلا موري

حموی نے "معجم البلدان" میں لکھا ہے کہ عمروبن سعید لہاوری (لا ہوری) حافظ ابوموی مدنی اصفہانی کے شیخ ہیں۔

ما کم سنده :عرسومره

عرسومره سنده کا حاکم رہا۔ اس نے سنده پر پینیت سال تک کاومت کا سنده میں قلعہ عرکوٹ، اسی کے نام سے مشہور ہے۔ ایک عورت '' مارونی'' کے ساتھ اس کے عشق و محبت کی داستان بہت مشہور ہے۔ یہاں تک کہ سندھی زبان کے کئی ایک شعراء نے اس پر نظمیں کھیں اور سیدمجھ طاہر نسبائی تنوی نے فارسی زبان میں نظم کھی۔ اس کے معاشقے کی نظم عوام وخواص، سارے اہل سندھ کی زبان زد میں نظم کھی۔ اس کے معاشقے کی نظم عوام وخواص، سارے اہل سندھ کی زبان زد ہے، جے وہ اب بھی پڑھتے ہیں۔ صاحب تحفۃ الکرام نے بید پوری کی پوری نظم میں۔ شاح کے قدہ الکو ام ''میں نقال کی ہے۔

عمروبن عبيدبن باب سندهی بقری، شخ المعتز له

مسعودی نے "هروج الدهب" شين ۱۲۳ هيل وفات پانے والی شخصيات کے ذيل مين عروبن عبيد ذيل مين عروبن عبيد ان کے دادا" رباب" کا بل، سنده کے دہے والے تھے۔ بن رباب مولی بنوتم ہے۔ ان کے دادا" رباب کا بل، سنده کے دہے والے تھے۔ ان کے دادا" رباب کا بل، سنده کے دہے والے تھے۔ اپنے زمانے ميں معز لد کے امام اور مفتی تھے، ان کی بہت کی تقریریں اور رسائل ہیں۔ عروکے داداکا نام" باب" تھانہ کہ" رباب" مسعودی نے جو تام ذکر کیا ہے وہ جمہور موز عین کے خلاف ہے۔ (تافی)

ابن قتیبہ نے '' محتاب المعاد ف'' میں لکھا ہے کہ اس کا نام عمر و بن عبید بن باب مولی اہل خوارہ بن بر بوع بن مالک ہے اور کنیت ابوع قان ۔ عمر و کے والد: عبید کی بھرہ کے برے اور بدقماش لوگوں کے بہال بہ کشرت آ مدور فت رہتی تھی ۔ بہی وجہ تھی کہ جب لوگ عمر و کو اینے والد کے ساتھ دیکھتے تو کہتے '' خیر الناس ابن شر الناس '' کہ عمر و تو سب سے نیک اور بہتر انسان ہیں مگر سب سے برے انسان م

کو کے ہیں۔ عبید یہ بات من کرتھ دین کرتے ہوئے کہتا کہ ہاں یابراہیم ہے اور ہیں آ ذر ہوں۔ عمر وقد رہے حقا کد کا جامل اور بیلغ تھا۔ یہا ہے چند ساتھیوں سمیت حضرت حن بھریؒ کے حلقہ در سے الگ ہو گیا تھا، اسی وجہ سے اس کا نام معز لدر کھ دیا گیا۔ نیز ابن قتیبہ نے تحریر کیا ہے کہ مجھ سے اسحاق بن ابراہیم بن حبیب بن الشہید نے عمر و بن نفر کے جوالے سے بتایا کہ ایک بارمیرا گزر عمر و بن عبید کے پاس سے ہوا۔ اس نے تقدیر کی بابت کچھ کہا تو میں نے کہا کہ اسی طرح میں میں اس اس اسی اس کے بیال سے ہوا۔ اس نے تقدیر کی بابت کچھ کہا تو میں نے کہا کہ اسی طرح میا کون کون ہیں ؟ میں نے بتایا ابوب، ابن عون، یونس اور تمیمی ۔ یہن کر کہنے لگا یہ سب گذرے، نجس اور مردہ ہیں زندہ نہیں ۔عمر وکا انتقال مکہ کرمہ جاتے ہوئے ہوا اور مکہ کرمہ جاتے ہوئے میا اور مکہ کرمہ جاتے ہوئے میا اور مکہ کرمہ جاتے ہوئے ہوا کیا۔ سلیمان بن علی نے اس کی نماز جنازہ پڑھائی اور خلیفہ ابوج مقام ''مران' میں دفن کیا گیا۔ سلیمان بن علی نے اس کی نماز جنازہ پڑھائی اور خلیفہ ابوج مقرم مصور نے اس کے مرشے میں یہ اشعار کے۔

صلى الإله عليك من متوسد الله قبراً مررت به على مرّان قبراً تضمن مؤمنا متحققاً الله صدق الإله ودان بالفرقان فلو إن هذا الدهر يُبقى صالحاً الله أبقى لناحقاً أبا عثمان

"اے قبرے فیک لگانے والے اللہ تھے پر رحمت نازل کرے میرا گزر مقام مران میں اس قبر کے پاس سے ہوا۔ اس قبر میں وہ موہن کامل ہے جس نے خدا سے سیاتعلق قائم کیا اور وہ فد ہب اپنایا جوئق و باطل میں امتیاز رکھنے والا ہے۔ اگر زمانہ کی نیک شخص کو باتی رکھتا تو بلاشہ ابوعثان کو بقاء اور دوام سے نواز تا"۔

ابن رستہ نے ''الاعلاق النفینسة ''کے اندر''قدریہ' کے بیان میں لکھا ہے کہ عمرہ بن عبید بن باب مولی آل عرادہ بن بربوع بن مالک کی کنیت: ابوعثان محتی ۔ اس کے والد: عبید کی بھرہ کے برقماش لوگوں کے یہاں بہ کثرت آمدورفت

رہتی تھی۔اس کے جب لوگ عمر وکواپنے والد کے ساتھ دیکھتے تو کہتے ' خیر الناس ابن شرالناس ' اور عبیدان کی تقدیق میں کہتا ہاں ہے ابراہیم ہے اور میں آذر۔
ابن قتیبہ اور ابن رستہ کی ان دونوں روایتوں میں الفاظ کی مکسانیت کے باوجود کچھا ختلاف بایاجا تا ہے۔ مثلا ابن قتیبہ نے عرارہ بن پر بوع کھا ہے اور ابن رستہ نے عرادہ بن پر بوع۔ اس طرح ابن قتیبہ نے عبید کی بابت ' یختلف الی رستہ نے عبید کی بابت ' یختلف الی اصحاب الشر' کھا ہے اور ابن رستہ نے ' یحلف الی اصحاب الشر' کھا ہے اور ابن رستہ نے ' یحلف الی اصحاب الشر' کے الفاظ کھے ہیں۔ (قاضی)

"الأغانى" ميں ابوالفرج اصفهانی تحريفرماتے ہيں كہ بھرہ ميں جھ علائے كلام تھے عمرو بن عبيد، واصل بن عطاء، بثاراعمی، صالح بن عبدالقدوس، عبدالكريم بن ابوعوجاء اور تبيلہ از د كا ايك شخص ابواحمہ كہتے ہيں كہ اس سے مراد جرير بن حازم از دكا ايك شخص ابواحمہ كہتے ہيں كہ اس سے مراد جرير بن حازم از دكى ہيں۔ يہ سب جريراز دى كے گھر پراكھا ہوتے اور بحث ومباحثہ كرتے ان ميں سے عمرو اور واصل تو معتزلى ہوگئے، عبدالكريم اور صالح نے صحح اور تحق توب كركى، بثار على كو مكو كى كيفيت ميں مبتلا رہا اور از دى ذہنا فرقد سمنيہ كى طرف ماكل ہوگا۔ ليكن برظا ہر يہلے كى طرح رہا۔

سمنیہ ہندوستان میں مندروں کے سب سے بڑے شہر "سومنات" کی جانب منسوب ہندووں کا ایک فرقہ تھا۔ال فرقے کی وجہ سے اسلام، ال کے عقیدہ خالص اور دوسر سے عقائد کی بابت بڑا فتنہ بر پا ہوا اور شد پدنقصان پہنچا۔ مثلاً فرقه جمیہ کا بانی "جہم بن صفوان" جیسا کہ حافظ این جرز نے "فتح المبادی" میں تصریح کی ہے، دریائے" زابل" کی "تر فرشہ" کے قریب واقعے ایک گزرگاہ کا افر وحا کم تھا۔ ہندوستانی تا جر، بلخ اور سمرقند جاتے ہوئے" نویڈ" کے پاس دریائے" زابل" کو جو رکر نے متھا ورجم بن صفوان ان سے میکس وصول کرتا تھا۔ فرقہ سمدیہ سے تعلق کو جو رکر نے تھا ورجم بن صفوان ان سے میکس وصول کرتا تھا۔ فرقہ سمدیہ سے تعلق کے والے کچھ ہندوستانی تا جروں نے ایک باراس سے گفتگو کی اور کہا کہ تم ایپ

خدا کی بابت کھے بتاؤے جم بن صفوان نہ تو خودعا کم تھا اور نہ ہی اہل علم کی صحبت حاصل تھی ،اس لیے کوئی جواب دیے بغیر گھر میں چلا گیا اور عرصے تک باہر نکلا ہی نہیں۔
امام بخاری نے بھی اپنی کتاب ' افعال العباد' میں تصریح کی ہے کہ فرقہ سمنیہ سے تعلق رکھنے والے کچھ ہندوؤں نے جم بن صفوان سے بحث کی تو اس نے چالیس روز تک نماز ہی نہ پر بھی اور اس کے بعد اللہ تعالی کے بارے میں کہا کہ اللہ تعالی تو بارہ بی ہوا ہے ،اللہ جرچیز میں ہے اور اس سے کوئی بھی چیز خالی نہیں۔

ابن قتیبہ نے 'تاویل مختلف الحدیث' بین الکھاہے کہ جھے سے اسحاق
بن ابراہیم بن حبیب بن الشہید نے بتایا کہ ہم سے قریش بن الس نے بیان کیا کہ
میں نے عمروبن عبید سے سنا وہ کہدرہارتھا کہ قیامت کے روز جب جھے اللہ رب
العزت کے سامنے پیش کیا جائے گا اوروہ جھے سے سوال کرے گا کہ ہم نے کیوں کہا
کہ قاتل جہنی ہے؟ تو میں عرض کروں گا کہ آپ نے ہی تو فرمایا پھر یہ آیت
پڑھی''و من فتل مؤمناً متعمداً فجزاؤہ جھنم خالدافیھا'' قریش بن انس
کہ تا ہی ہے کہ اس پر میں نے اس سے کہا اچھا بتا وا اگر اللہ تعالی تم سے یوں کہیں کہ
میں نے تو یہ فرمایا تھا ''ان اللہ لا یعفر آن یشر ک به ویعفر ما دو ن ذلک لمن
میں نے تو یہ فرمایا تھا ''ان اللہ لا یعفر آن یشر ک به ویعفر ما دو ن ذلک لمن
بیساء'' پھرتم نے کہاں سے بھولیا کہ میں مغفرت کرنے کوئیس جا بتا؟ قریش بن
بیساء'' پھرتم نے کہاں سے بھولیا کہ میں مغفرت کرنے کوئیس جا بتا؟ قریش بن

ابن رجب عنبلی نے 'نشدرات الذهب' میں لکھا ہے کہ ۱۳۲ اویل عابدو زاہد ، معنز لی اور قدری : عمر و بن عبید بھری کی وفات ہوئی۔ بیدسن بھری کا شاگرد رہا۔ پھران کی مخالفت کی اور اپنا الگ حلقہ درس قائم کرلیا ، اس لیے اسے ''معنز لہ' کہا جاتا ہے' 'العبر فی من غبر ''میں فدکور ہے کہ حضرت حسن بھری نے فرمایا کہا جاتا ہے ''العبر فی من غبر ''میں فدکور ہے کہ حضرت حسن بھری نے فرمایا کہا جاتا ہے کہ دور میں نے خواب میں دیکھا کہ عمر و بن عبید سورج کو سجدہ کر دہا ہے۔ ابن الا ہدل کا بیان ہے کہ جب واصل بن عطاء حسن بھری کی مجلس سے الگ ہوایا اسے اللہ ہوایا اسے

بھگادیا گیاتو وہ عروبن عبید کے پاس جلا گیا، لہذاان کو 'معتزلہ' کہا جانے لگا۔اس
کی وفات کہ کرمہ کے راستے پرمقام 'کر ان' میں ہوئی ۔خلیفہ عباسی ابوجعفر منصور
نے اس کا مرشیہ کھھا اور زندگی میں بھی اس کی خدمت کی۔ اس کی بابت لوگوں کے خیالات مختلف ہیں ''مغن' میں ہے کہ عمرو بن عبید، معتزلہ کا امام ہے۔اس نے حضرت حسن بھری سے ہاع حدیث کیا۔محدث ابوب اور یونس نے اسے کذاب حضرت حسن بھری سے ہائ عدیث کیا۔محدث ابوب اور یونس نے اسے کذاب قرار دیا ہے۔ یہ بہت ب باک تھا۔ چنال چراس نے حضرت عبداللہ بن عمر کی بابت کہا کہوہ ''ور بکواس گوئیں۔اس جیاس کے حسارت اور افتراء پردازی کا اندازہ کیا جاسکا ہے۔

علامہ ذہبی نے ''دول الاسلام'' میں لکھاہے کہ شنے المعتز لہ، عابد، قدری: عمروبن عبید بصری کا انتقال ۱۳۲ ھیں یا اس کے بعد ہوا۔

جاحظ نے 'البیان و النبیین " میں اکھا ہے کہ عمر شمری کا بیان ہے کہ عمر و بن عبید گفتگو برقا در نہیں تھا۔ اگر بات کرتا بھی تو دیر تک نہیں کرسکا تھا اور کہتا تھا کہ بات کرنے دوالے میں کوئی فیر نہیں ۔ اگر اس کی بات اپنی نہ ہوا دراگر بات لمبی ہوجائے تو مسلم کو تکلف کا مہار الینا برتا ہے اور اس چیز میں کوئی اچھائی نہیں ، جو تکلف کے ساتھ کی جائے ۔ علامہ شہر ستانی نے ''کتاب الملل و المنحل '' میں لکھا ہے کہ جہاں تک اصول وعقا کم کا تعلق ہے قوعمہ صحابہ کے آخر میں تقدیر کی بابث قبل وقال اور خیر وشرکی نبیت تقدیر کی جانب کرنے سے انکار کی بابت غیلان وشقی ، یونس اسواری اور معبد جن کی بدعت رونما ہوگئ تھی ۔ پھر واصل بن عطاء غزال بھی ان کے انعقش قدم پر چلا۔ یہ حضرت صن بھری کا شاگر دھا اور اس کا شاگر دعمر و بن عبید تھا جس نے تقدیر کے مسائل میں اس سے زیادہ ہرزہ سرائی کی ۔ یہ بوامیہ کے عہد میں شری یہا در میں ورموید تھا پھر منصور کی جانب میلان ہوگیا اور منصور کی اما مت کا فتری صادر کیا۔ ایک روز متصور نے اس کی اتحریف کی تو اس نے کہا لوگوں کے لیے فتری صادر کیا۔ ایک روز متصور نے اس کی اتحریف کی تو اس نے کہا لوگوں کے لیے فتری صادر کیا۔ ایک روز متصور نے اس کی اتحریف کی تو اس نے کہا لوگوں کے لیے فتری صادر کیا۔ ایک روز متصور نے اس کی اتحریف کی تو اس نے کہا لوگوں کے لیے فتری صادر کیا۔ ایک روز متصور نے اس کی اتحریف کی تو اس نے کہا لوگوں کے لیے فتری صادر کیا۔ ایک روز متصور نے اس کی اتحریف کی تو اس نے کہا لوگوں کے لیے

محبت میں نے بھیری ، مگرانھوں نے عمر وکوچھوڑ کر دوسرے کواپٹایا۔

ابو حنفيه دينوري في "الاحبار الطوال" مين لكهام كدار كون كابيان م كهمروبن عبير، خليفه ابوجعفرمنصورك ياس كيا_ابوجعفرنے جباے ديکھا تواس ے صافحہ کیا اور اپنے برابر میں بٹھایا عمرو بن غبیدنے گفتگو کی اور کہاا میرالمونین!اللہ تعالی نے آپ کودنیا پوری کی پوری عنایت کی ہے؛ اس لیے آپ کو جا ہے کہ مجھ حصے کے ذریعے اپنے نفس کواللہ سے خرید لیں۔اور یا در تھیں کہ اللہ تعالی کو بھی وہی ہات پسند ہے جوآب بسند كرتے ہيں۔اللدرب العزت كى جانب سے آب الل كو بسند كرتے ہيں كدوہ عدل وانصاف كامعاملہ فرمائے ، اى طرح اللہ تعالى كوبھى يہى بات يند ٢ كرآب رعايا كے ساتھ عدل وانصاف كا برتاؤ كريں۔ امير المونين! آپ کے دروازے کے باہرظلم وجرکی آگ بھڑک رہی ہے اور باہر نہتو کتاب اللہ پرمل بوربا ہے نہ ہی سنت رسول بر۔ امیر المومنین! الله تعالی نے ارشاد فرمایا "الم تركيف فعل ربك بعاد إرم ذات العماد "اس في يورى سورت يرم كرسالى پھر کہا بخدا! بیرورت ان کے متعلق بھی ہے جوعاد جیساعمل کریں ۔لوگوں کا کہنا ہے كها تناس كرابوجعفررونے لگا۔ بيد مكي كرابن مجالدنے كہا عمرو! اب بس كرو_آپ نے آج امیر المومنین کو بخت تکلیف پہنچائی عمرونے یو چھاامیر المومنین! بیکون شخص ہے؟اس نے بتایا تمہارے بھائی ابن مجالد ہیں۔عمرونے کہاامیر المومنین!ابن مجالد ے بوھر آپ کا کوئی وشمن نہیں ہے۔ کیا پیفیحت کا دروازہ آپ کے اوپر بنداور آپ کواینے ہم دردوخیرخواہ سے روکنا چاہتا ہے؟ حالال کہذرہ برابر بھی پیش آنے والی اچھائی اور برائی کے آپ ہی ذمہدار ہیں۔ علامہدینوری لکھتے ہیں کہ بیس کر ابوجعفرنے اپنی انگوشی عمر و بن عبید کی جانب پھینک دی اور کہا اپنے دروازے کے باہر کامیں نے تمہیں والی وحاکم بنایا ،اب آپ اپنے اصحاب و تلامذہ کو بلا کر انھیں بیہ ذمدداری تقیم کردیں۔اس پرعمرونے کہا کہ میرے اصحاب آپ کے پاس صرف اں وفت آسکتے ہیں جب وہ دیکھ لیں کہ جس طرح آپ نے دیانت کے ساتھ بات کی ساتھ بات کی ساتھ بات کی ساتھ بات کی سے ای طرح عمل بھی کریں۔ یہ کہ کرعمرو بن عبید داپس جلا گیا۔

ابن عبدربداندی نے "العقد الفرید" میں تصریح کی ہے کہ عمرو بن عبید، ابوجعفر منصور کے بیاس آیا۔ اس وقت منصور کالڑ کا: مہدی بھی وہیں تھا۔ ابوجعفر نے عمروے بتایا کہ بیامیر المومنین کے ولی عبداورمیری امیدے،آپاس کے لیے دعا كريں۔اس يرعمرو نے كہا كەميرا خيال ہے كه آپ نے اس سے يك سرچيم يوشى کرکے، تمام معاملات کا اسے ذمے دار بنادیا ہے۔ بین کرابوجعفر کی آنکھیں اشک بار موكيس اوراس نے كہاا بوعثان! آپ مجھے كھھيجت كريں عمروبن كہاا مير المومنين! الله تعالی نے آپ کوساری دنیا کی دولت عطافر مائی ،اس میں سے تھوڑے حصے سے ا بے نفس کوخر میرلیں۔ بیدوولت وسلطنت جوآج آپ کے باس ہے اگرآپ کے پین روکے قبضے میں رہتی تو آپ کو ہر گزنھیب نہ ہوتی ۔اس پر خلیفہ نے کہا ابوعثان! آپ اینے اصحاب کے ذریعے میری مدد کریں۔ عمرونے کہا آپ حق وصدافت کا جھنڈا بلند کریں ،سارے حق پرست آپ کا ساتھ دیں گے۔ یہ کہ کرعمرو دربارے نکل کھڑا ہوا۔اس کے پیچھے ابوجعفرنے درہم ودینارے بھرا ہواتھیلہ بھیجا، مگر اس نے لینے سے انکار کردیا اور پہ کہتے ہوئے آگے براہ گیا:

"كلكم خاتل صيد كلكم يمشى رويدا غير عمروبن عبيد"

و من سے ہرایک شکارکودھوکہ دینے والا ، ہرایک آ ہستہ آ ہستہ والا ہے سوائے میں سے ہرایک شکارکودھوکہ دینے والا ہے سوائے عمر وہن عبید کے ''۔

علامہ ابن عبدر بہ نے مزید کھا ہے کہ واصل بن عطاء نے عمر و بن عبید کو لکھا:

اما بعد! بندے کے قبضے سے نعمت کا چھن جانا اور جلد از جلد سزاوینا، بیاللہ
تعالی کے قبضہ کدرت میں ہے۔ جو بھی ایسا ہوتو گناہ بھر پور کرنے اور بحث و تکرار
لازم پکڑنے سے ہوتا ہے۔ بیب بحث و تکرار، انسان اور اس کے دل کے درمیان حائل

ہوجاتی ہے۔ شمصیں اچھی طرح معلوم ہے کہ شمصیں کس طرح مطعون اور تمہاری جانب کیا ہے منسوب کیا جاتا تھا جب کہم مفرت حسن بن ابوالحن کے پاس رہتے تھے، اس لیے کہ ہم اور حضرت بھری کے تلامذہ ہمارے دیگر ساتھی، جن سے تم واقف ہو،تمھارے مسلک کو بہت براسجھتے تھے۔خدا کی شم اکتنی بڑی جماعت، کیسے معزز اور حافظ مشائخ نے سب سے زیادہ نیک طبیعت،سب سے زیادہ باوقار مجلس کے مالک،سب سے نمایاں زاہد اور راست گوکی اقتداء کی۔ بخدا ان لوگوں کی افتذاء کی جن کا ستارہ جیکا، انھوں نے اپنے اور میرے عہد و بیان اور بخداحسن بھری کے عہد دیان کا پاس کیا۔ کل ان کے ساتھ مجد نبوی کے مشرقی حصے میں ملاقات ہوئی۔اتھوں نے جوآخری حدیث ہم سے بیان کی ،اس میں موت اوراس کی ہولنا کی کا ذکر کرتے ہوئے اپنے او پراظہار انسوں کیا اور اپنے گناہ کا اقرار کیا۔ اس کے بعد داللہ انھوں نے روتے ہوئے دائیں بائیں مرکردیکھا، مجھےاب بھی الیا الگ رہا ہے کہ جیسے میں اپنے چرے سے آنسو کی چھڑی یو نچھتے ہوئے دیکھ رہا ہوں۔اس کے بعد انھوں نے فرمایا تھا خدایا! میں نے اپنی سواری کی زین کس لی ہے اور قبر اور معانی کے فرش گاہ کے سفر کی تیاری شروع کردی ہے۔خدایا!میرے بعدلوگ میری جانب، جو بات منسوب کریں اس پر گرفت نه فر مانا۔ خدایا! تیرے رسول سے جو کچھ بھی مجھ تک پہنچا، میں نے اسے دوسروں تک پہنچا دیا اور تیرے نبی ک احادیث نے جس کی تصدیق کی ،اس کی میں نے تیری کتاب کے تعلق وضاحت کی۔ مجھے عمر و سے اندیشہ ہے کہ وہ اینے رب سے تھلم کھلا شکایت کرے گا۔ واصل نے لکھا مجھے ایسی بہت می باتیں معلوم ہوئیں، جوتم نے قرآن شریف کی تفسیر کے تعلق سے ایے نفس کے کہنے پر کہیں۔ پھر میں نے تیری کتابوں اور تیرے ناقلین کے معانی میں کتر ہیونت اور نصوص میں تفریق تقسیم پرغور کیا تو تمھارے خلاف حسن بقرى كى شكايت كى تحقيق ہوگئ اور يدكتم نے جوبدعت ايجادكى ۔وہ بالكل عيال ہے

اور جو کچھ تم نے کیا ،اس کا گناہ بہت بڑا ہے۔ اس لیے تہ ہیں اپنے اعوان اور انصار
کی کثر ت اور ان کے اثر ورسوخ سے دھو کہ نہ کھانا چاہیے اور نہ اس سے کہ وہ تیری
عظمت واحر ام میں اپنی نگاہیں جھکا لیتے ہیں۔ اس لیے کہ کل روز قیامت بیسارا
غرور وفخر ہوا ہو جائے گا اور ہرنفس کو اس کے کیے کا بدلہ دیا جائے گا۔ تمھارے نام
میں نے یہ خط اس لیے لکھا اور اس لیے یہ جرات کی تاکہ تمھیں، حضرت حسن بھری
گی اس حدیث کی یا دو ہائی کراؤں، جو انھوں نے سب سے آخر میں ہم سے بیان کی
تھی۔ لہذا تم سی ہوئی حدیث کو اچھی طرح محفوظ کر لو فے روزی اور فرض بات زبان
سے کہواور ان احادیث کی غلط تشریح کرنی چھوڑ دواور اللہ تعالی سے ڈرتے رہو۔

عمروبن عبید "فرقہ عمریہ" کا بانی ہے۔ اس کے اور بھی بہت سے واقعات وحالات ہیں۔ علامہ عبدالقادر بغدادی نے "الفرق بین الفرق" میں فرقہ عمریہ کی بابت لکھا ہے کہ بیاوگ عمروبن عبید بن باب کے بیروکار ہیں۔

"شرح مواقف" میں تصری ہے کہ فرقہ عمریہ، عمرو بن عبید کے مائے والوں کو کہا جاتا ہے۔

حاكم سنده عمران بن موسى بن خالد بركي

بلاذری نے 'فتوح البلدان' میں لکھاہے کہ ختان بن عباد کوفہ کے دیہات کار ہے والا تھا۔ مامون رشید نے ۱۹۸ھ میں اسے والی سندھ : بشر بن داؤہ جس نے بعاوت کر کے سرکشی دکھائی تھی ، کی سرکو بی کے لیے روانہ کیا اوراس بعد کے سندھ کا والی موسی بن یجی بن خالد بن بر مک کو بنایا گیا۔ اس نے مشرقی سندھ کے راجہ ' پال' کول کردیا ، حالاں کہ اس نے زندہ چھوڑ دیے جانے کے وض پانچ لا کھ در ہم دینے کی پیش کردیا ، حالاں کہ اس نے غسان بن عباد کے لیے پریشانی کھڑی کردی تھی ، اپنی فوج ، نیز بعض راجگان ہندگی موجودگی میں غستان کے نام خط بھی بھیجا تھا، مگر اس نے فوج ، نیز بعض راجگان ہندگی موجودگی میں غستان کے نام خط بھی بھیجا تھا، مگر اس نے فوج ، نیز بعض راجگان ہندگی موجودگی میں غستان کے نام خط بھی بھیجا تھا، مگر اس نے

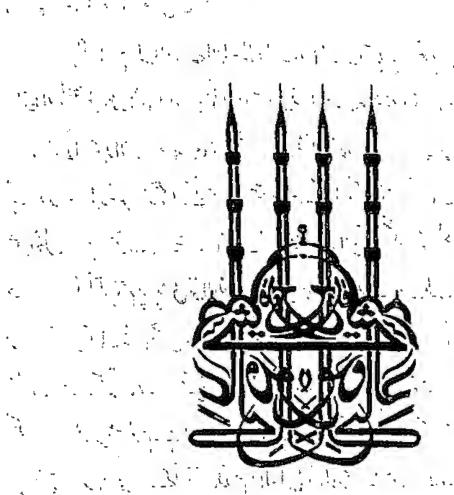
اپ الرکے عمران کو اپنا جائشین نام دکر دیا اور کاتھ میں خلیفہ معتصم باللہ عمائی نے مرحدی علاقوں کی گورزی کی تحریراس کے نام لکھدی۔اس نے ''قیقان' جا کروہاں کے زوطیوں۔جائوں۔ جنگ کی اور فتح یاب ہوا۔ ''المبیضاء'' کے نام سے ایک شہر بسایا اور وہاں اسلامی افواج کو آباد کیا۔ پھر منصورہ آیا، وہاں سے پہاڑی کے اوپر واقع شہر کے سربرآ وردہ افراد کو' قصدار'' بھی دیا۔ پھر''مید' برادری پرحملہ کیا اور ان میں سے شہر کے سربرآ وردہ افراد کو' قصدار'' بھی دیا۔ پھر'' مید' برادری پرحملہ کیا اور ان میں سے مشہور ہے۔ عمر ان نے دریائے ''الور'' پر فوج کشی کی اور وہاں کے ذوط قبیلے کے لوگوں کہ بلایا۔ جب عمر ان نے دریائے ''الور'' پر فوج کشی کی اور وہاں کے ذوط قبیلے کے لوگوں کہ بلایا۔ جب وہ آئے تو اُن کے ہاتھ پر مہر لگوائی اور ان سے برنیدوصول کیا۔ نیز آئیس حکم دیا کہ دہ جب بھی اس کے سامنے آئیں تو ان کے ساتھ ایک کتا ضرور رہنا چاہیے۔ نیجناً ایک جب بھی اس کے سامنے آئیں تو ان کے ساتھ ایک کتا ضرور رہنا چاہیے۔ نیجناً ایک کتا ضرور رہنا چاہیے۔ نیجناً ایک کیا۔ سمندر سے ایک نہر کھد وائی اور اپ بردار ان نروط کو لے کر''مید'' لوگوں پرجملہ کیا۔ سمندر سے ایک نہر کھد وائی اور اپ ''مید'' کے نالے میں گرادیا جس سے نالے کا کیا۔ سمندر سے ایک نہر کھد وائی اور اپ '' مید'' کے نالے میں گرادیا جس سے نالے کا یان کھارا ہوگیا اور ان پر ہلہ بول دیا۔

اس کے بعد مزار یوں اور یمانیوں میں تعصب کی آگ بھڑک آٹھی اور عمران 'یمانیوں'' کی جانب داری کرنے لگا۔اس کی وجہ سے عمر بن عبد العزیز ہمباری نے اس پرفوج کشی کی اور اسے آل کر دیا عمر ہمباری کے دادا جھم بن عوانہ کبی کے ساتھ سندھ آئے تھے۔

عمران بن موی برقی کی پیدائش اور پرورش اس کے والد کے دورا مارت میں سندھ کے اندر ہو کی ۔ بعد میں بیا ایندعباس نے سندھ کے اندر ہو کی ۔ بعد میں بیاب والد کا جانشین بن گیا اور معتصم بالندعباس نے والد کی جگہ اے گورنرسندھ برقر اررکھا۔ (قاضی)

حاكم مكران عيسى بن معدان مهاراج

علامہ اصطحر ی جو ۱۳۳۰ میں سندھ آئے نے ''المسالك و الممالك '' میں مران کے بیان میں لکھا ہے کہ سیلی بن معدان نامی ایک شخص قابض و حکم رال ہے۔ اہل مکران کی زبان میں اسے ''مہاراج'' کہاجاتا ہے اس کا قیام شر' کیز''
میں رہتا ہے، جوآبادی میں ''ملتان' کے نصف کے برابر ہے۔
حموی نے بھی ''معجم البلدان'' میں اصطفر کی کی بہی بات معمولی کا تبدیلی کے ساتھ نقل کی ہے اور لکھا ہے کہ مہم اصلے کے آس بیاس مکران کا حاکم عیسیٰ بن معدان تھا، جسے ان کی زبان میں ''مہراج'' کہاجاتا ہے، اس کا وارالسلطنت ملتان کی نصف آبادی پر شمتل ایک براشہر ہے۔



Sale Short William DE Took

the time of the second

باب:ف

فتخ بن عبرالله سندهي

علامہ سمعانی نے "کتاب الانساب" میں لکھا ہے کہ ابونفر فتح بن عبداللہ سندھی، فقیہ اور بنگلم تھے۔ ابتداء آل حکم کے غلام رہے پھرآ زاد کر دیے گئے۔ فقہ اور علم کلام شیخ ابوعلی محمد بن عبدالوم اب ثقفی سے پڑھا۔ علاوہ ازیں حسن بن سفیان وغیرہ سے بھی روایت کی۔

نیز لکھا ہے کہ ہم سے ابوالعلاء احمد بن گھر بن قضل نے اصبہان میں، ان سے مافظ ابوالفضل محمد بن طاہر بن علی مقدی نے ، ان سے ابو براحمد بن علی ادیب نے ، ان سے مافظ ابوعبد اللہ نے بیان کیا ، انصول نے کہا مجھ سے عبد اللہ بن حسین نے بتایا کہ ایک روز ہم ابونھر سندھی کے ہمراہ تھے، ان کے اردگر دہم لوگ بہ کثرت تے اور کیچڑ میں پڑا ہوا ہے۔ میں چل رہے تھے راستے میں ہم نے نثر یف مکران کو دیکھا کہ کیچڑ میں پڑا ہوا ہے۔ جب اس کی نظر ہم پر بڑی تو ابونھر نے بھی نگاہ اٹھا کرا سے دیکھا۔ اس نے کہا غلام! تو نے نفاق کیا۔ میں جس حال میں ہوں تو خود دیکھ رہا ہے، جب کہ آس شان سے چل رہے ہو کہ تھارے دیا شریف علل رہے ہو کہ تھارے دیا شریف مکران! شمصیں معلوم ہے کہ ایسا کیوں ہے؟ اس کی وجہ ہے کہ میں نے تھا رہے مکران! شمصیں معلوم ہے کہ ایسا کیوں ہے؟ اس کی وجہ ہے کہ میں نے تھا رہے حد امید کی اور تم نے میرے جدا میں کران! شمصیں معلوم ہے کہ ایسا کیوں ہے؟ اس کی وجہ ہے کہ میں نے تمھارے جد امید کران! شمصیں معلوم ہے کہ ایسا کیوں ہے؟ اس کی وجہ ہے کہ میں نے تمھارے جد امید کرونہ کران! شمصیں معلوم ہے کہ ایسا کیوں ہے؟ اس کی وجہ ہے کہ میں نے تمھارے جدا میر امید کرونہ کی اور تم نے میرے جدا میں کران! شمیل کے کہ بین کے تحدا کرونہ کے کہ میں کے تحدا میں کران اس کران اس کران اس کران اس کران اس کی کران اس کران کران کرونہ کے کہ کران کرونہ کے کہ کران کہ کران کران کرونہ کران کی کران کرانے کران کرونہ کران کرونہ کران کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کران کرونہ کران کرونہ کران کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کرونہ کران کرونہ کران کرونہ کرون

مورخ حموی نے "معجم البلدان" میں تصریح کی ہے کہ ابد نفر فتح بن عبراللہ سندھی، فقیہ و مشکلم، آل حسن بن تھم کے غلام تھے بعد میں آزاد ہو گئے۔ فقہ وکلام ابوعلی تفقی سے پڑھی۔

فتح بن عبداللد چوتھی صدی ہجری کے متھے۔ (تانی)

فخرالدين صغيربن عزالدين سندهى

ان کانسب یوں ہے: شخ فخرالدین صغیر بن شخ عزالدین بن شخ فخرالدین با فئ بن شخ الدین با فئ بن شخ الدین عبدالقا در سهر وردی ، سندهی ، وفین ' بالد کندی' (سنده) شخ فخر الدین صغیر کا سنده کے قدیم ترین اور اصحاب سلوک ومعر ونت بزرگول میں شار موتا ہے۔ یہ حضرت مخدوم شخ نوح بن شمة الله بن اسحاق بن شہاب الدین بن سرور کے بانچویں جدا مجد ہیں۔ان کی وفات ۹۹۸ ھیں ہوئی۔ (تھنة الکرام)

فخرالدين ثاني بن ابو بكرسندهي

ان كالممل نام ونسب درج ذمل ہے:

شخ فخرالدین ٹانی بن شخ ابو بکر کتابی بن شخ اساعیل بن شخ عبداللہ بن شخ عبداللہ بن شخ عبداللہ بن شخ اللہ بن بن حضرت عبدالقا درسم ور دی سندھی۔سندھ کے معروف ومشہور بزرگوں میں ان کا شار ہوتا تھا اور یہ شخ نوح بن ہمۃ اللہ کے جھے جد امجد ہیں۔ (تحنة الکرام)

فضل بن سكين سندهي بغدادي

خطیب نے "تاریخ بغداڈ" میں لکھا ہے کہ ابوالعباس قطیعی فضل بن سکین بن کیت معروف بہ سندھی کارنگ سیاہ تھا۔ انھوں نے صالح بن بیان ساحلی اور احد بن محروف سے ساح حدیث کیا اور ان سے محمد بن موی بن حماد بربری، ابو یعلی موسلی، ابراہیم بن عبدالدیخرومی اور محمد بن محمد باغندی نے روایت کی۔

نیز خطیب نے لکھا ہے کہ ہم سے ابوائحس محمد بن عبدالواحد نے ، ان سے عمر بن محمد بن علی ناقد نے ، ان سے ابراہیم بن عبداللہ بن ابوب مخر می نے ، ان سے فضل بن سے قطیعی نے ، ان سے صالح بن بیان نے ، ان سے صالح بن بیان نے ، ان سے صالح بن بیان نے ، ان سے حضر ت عبداللہ بن عبدالرحمٰن نے ، ان سے ان کے والد عبدالرحمٰن نے اور ان سے حضر ت عبداللہ بن مسعود ہے نیان کیا ہے:

"دخلت المسجد ورسول الله على جالس، فسلمت وجلست، فقلت: لاحول ولا قوة الا بالله، فقال لى النبى على: ألا أخبرك بتفسيرها؟ فقلت : بلى يا رسول الله! فقال: لاحول عن معصية الله إلا بعصمة الله، ولا قوة على طاعة الله إلا بعون الله، وضرب منكبى، وقال لى هكذا أخبرنى جبرئيل يا ابن أم معبد".

"میں مبور نبوی میں داخل ہوا۔ اس وقت حضور اکرم علی المستر میں آشریف فرماتے۔ میں مبور میں آشریف فرماتے۔ میں سلام کر کے بیٹھ گیا اور لاحول ولاقو ۃ الا باللہ نرد ھا۔ آپ نے جھے سے فرمایا کیا میں مصین اس کا مطلب نہ بتا دول؟ میں نے عرض کیا کیوں نہیں اللہ کے رسول! تو فرمایا کوئی قدرت نہیں معصیت سے نیجنے کی ، محراللہ کی حفاظت سے اور اللہ کی طاقت نہیں محراللہ کی مدوسے۔ پھر آپ یہ بھی ای طاقت نہیں محراللہ کی مدوسے۔ پھر آپ یہ بھی ای طرح بتایا ہے '۔ وست اقدس مارا اور فرمایا ام معبد کالا کے اجرئیل نے جھے ای طرح بتایا ہے'۔

مزیدلکھا ہے کہ ہم نے بروایت محد بن عباس جو ہری سے پڑھا کہ ابن عباس نے کہا کہ ہم سے محد بن قاسم کو بھی نے ، ان سے ابرا ہیم بن عبداللہ بن جنید نے بیان کیا کہ میں نے سنا جب ابوالعباس نصل بن سحیت کا تذکرہ لوگوں نے بیجی بن معین کے سامنے کیا تو انھوں نے فرمایا یہ کذاب ہے ، اس نے عبدالرزاق سے بچھ بھی نہیں سنا۔ جب تلا غذہ نے یہ کہا کہ وہ حدیث بیان کرتا ہے ، تو فرمایا اللہ کی لعنت ہو ہرا سے خص پرخواہ برا ہویا مجھوٹا ، جواس سے حدیث بیان کرتا ہے ، تو فرمایا اللہ کی لعنت ہو ہرا سے خص پرخواہ برا ہویا مجھوٹا ، جواس سے حدیث بیان کرتا ہے ، تو فرمایا اللہ کی لعنت ہو ہرا ہے۔

حاكم سندان فضل بن مابان

علامہ بلا ذری نے لکھا ہے کہ مجھ سے منصور بن حاتم نے بیان کیا کہ فضل بن ماہان، بنوسامہ کا غلام تھا۔اس نے "سندان" فتح کر کے اس پر قبضہ کرلیا اور مامون رشید کی خدمت میں ہاتھی بھیجا اور اس سے خط و کتابت کی ۔ نیز سندان میں ابنی تعمیر کردہ جامع مسجد میں اس کے لیے دعاء کرائی۔

زیادہ قرین قیاس بات سے کفشل بن ماہان، بنوسامہ بن لوی بن غالب کا علام تھا، اس لیے کہ ملتان میں انہی کی حکومت تھی۔ حاکم ملتان ابولہما ب منبہ بن اسر قرشی بھی انہی میں سے تھا۔ فضل بن ماہان نے ملتان کے سی حاکم کوسندان بھیجا تھا، جس نے اسے فتح کیا، اس پر قابض ہوکر خود مختار حکمراں بن بیٹھا۔ تفصیل اس کے بیٹوں: ماہان اور محمد کے تذکر سے میں آر ہی ہے۔

فضل الله بن محمد بوقا في سندهي

ابوالمکارم فضل الله بن محمہ بوقانی سندی کا تذکرہ امام ذہبی نے "تذکرہ الله الله الله بن محمہ بوقانی سندی کا تذکرہ امام ذہبی نے "تذکرہ اللہ اللہ میں کیا ہے۔ اور اللہ علی صاحب مصافح: امام بغوی متوفی ۱۵ صے ذیل میں کیا ہے۔ اور کھا ہے کہ امام بغوی سے اجازت حدیث کے ساتھ سب سے آخر میں ابوالمکارم فضل الله بن محمد نے روایت کی ۔ یہ ۲۰ ھے آس پاس بقید حیات تھے۔

**



باب:ک

كشاجم بن حسن بن شا كم سندهي رملي

کشاجم اوران کے والد: دونوں کے نام کی بابت اختلاف ہے۔ بعض لوگ ان کا نام محمد اور والد کا خسین بتاتے بیں۔ پورانام اس طرح ہے: محمد ابوافتح بن حسن، یامحمود بن حسین بن شا بک سندھی۔ بیس پورانام اس طرح ہے: محمد ابوافتح کی جگہ ابوائحن کھتے ہیں۔ یہ نہایت بلند پایہ اور سحر رفی۔ بعض لوگ کنیت ابوافتح کی جگہ ابوائحن کھتے ہیں۔ یہ نہایت بلند پایہ اور سحر آفریں شاعر، متعدد فطری صلاحیتوں کے حامل اور بہت با کمال صاحب قلم ہے۔ آفریں شاعر، متعدد فطری صلاحیتوں کے حامل اور بہت با کمال صاحب قلم ہے۔ اپنے دور بیل ' ربح حال الادب '' سمجھے جاتے تھے۔ مصر بیس ایک عرصے تک قیام رہا کیوں کہ مصر انھیں بہت اچھالگا۔ ان کا مکان ' رملہ' بیس تھا (۱)۔ ان کی کئی ایک کتا ہیں ہیں۔ ہستاھ بیس و فات پائی۔

علامہ ابن النديم في 'الفهر ست' ميں بادشا ہوں ،نثر نگارون ،مقررين ،
نامہ برداروں ، خراج وئيس كے افسر ان اور شائى در بار كے دزراء كے تذكر بيس لكھا ہے : كشاجم كى كنيت ابوالفتح اور نام محبود بن حسين ہے ۔ بيم لي زبان وا دب اور شعرو شاعرى ميں بہت مشہور تھے۔ ان كى چند كتابيں يہ ہيں : كتاب ادب النديم ، كتاب الرسائل اور ان كے اشعار كا ايك ديوان ۔

نیز کشاجم کا تذکرہ • ۳۰ ہے بعد کے غیرنٹر نگارجد پیشعراء کی جماعت کے اسائے گرامی میں بھی کیا ہے اور لکھا ہے کہ سندھی بن شامک کے لڑکے: کشاجم کا ایک سوادراق مشتمل شعری دیوان اور کتاب ادب الندیم ہیں۔

⁽۱) في زمانه ومله الله الكريس المراج من المطين معرى كاحصه مواكرتا تها-ع ربسوى-

علامہ ابن الندیم کی عبارت میں ورق سے ورق سلیمانی مراد ہے، جس کے ہرصفے میں بیر سطریں ہوتی تھیں۔(تانی)

سمعانی نے "الانساب" میں لکھا ہے کہ سندھی بن شاکب مشہور شاعر، کشاجم کے دادا ہیں، انھیں سندھی اس لیے کہا جاتا ہے کہ بیے فلیفہ ہارون رشید کے دور میں، جسر فرات، بغداد کے گرال: سندھی بن شاکہ کی اولا دھیں سے ہیں۔

مسعودی "مروج الذهب" میں فرماتے ہیں کہ ابوالفتح محمہ بن حسن سندھی بن شا کہ کا تب معروف بہ کرشاجم" روایت و درایت اور علم واوب کی ممتاز شخصیات میں سے سخے۔ نیز فرماتے ہیں کہ مجھ سے ابوالفتح محمہ بن حسن سندھی ابن شا کہ کا تب معروف بہ کشاجم نے بتایا کہ انھوں نے اپنے ایک دوست کے نام، جو "فرد" - چوہر کھیل میں شہرت یا فتہ تھا ہزد کی غرمت میں اشعار پر مشتمل ایک خط بھیجا۔ پہلا شعردرج ذیل ہے:

ايهاالمعجب الفاخر بالنرد الله ويزهو بها على الاخوان

"اے چوسرے گرویدہ اور اس پرنازاں! تاکہ اس کے ذریعہ دوسرول پر اظہار فخر کرے'۔

ابن العماد حنبلی "شذرات الذهب" کے اندر ۱۳ اله علی وفات یافته
خوریت کے ذیل میں لکھتے ہیں: کشام متازاور عظیم شعراء میں سے ایک،ان کا نام
محود بن حسین ہے۔ یہ نہایت بلند پایہ شعراءاور بہت عظیم المرتبت المل علم وفضل میں
سے تھے۔ بعض حصرات کا توبیہ بھی کہنا ہے کہ" کشام،" نام ان علوم وفنون کا شارت
ہے، جن میں انھیں مہارت حاصل تھی۔ مثلا" کاف" ان کی کتابت کا اختصار ہے
"شین" شعرو خن کا،" الف" انشاء پردازی کا۔ "جیم" علم وجدل ومناظرے کا اور
"میم" منطق کا۔ یہائے حسین ولیح تھے کہ اس میں ضرب المثل بن گئے چنال چہ
اوگ کہتے تھے" املح من کشاجم" کشام میں فریادہ لیے وخوب صورت۔
انھوں نے" السود" کی ظلم وزیادتی پردرج ذیل شعر کہا:

وات میں تیرے رباک کاخمیرے اورظلم بھی ظلمت (تاریکی) ہی ہے ماخوذ ہے "۔ بعض سوائح نگاروں نے ان کے حالات میں لکھا ہے کہ ان کی کنیت ابوالحن اورابوالفتح ہے، سندھی کے لاکے ہیں، 'کشاجم' کے نام سے مشہور ہیں، فلسطین کے نواحی شہر''رملہ' کے رہنے والے تھے۔ کتابت وانشاء پردازی میں سردار، فصاحت وزور بیان میں سب سے آگے تھے۔اپی شخفیق میں اپنے معاصرین سے نمایاں آور متازادر نکتەرى میں اپنے یا ہے کے علماء سے فاکق تھے۔ تعلیم وتدریس کے علوم میں بہت ذہین وطباع اور نہایت ذہین وظین تھے۔ یہ بے مثال شاعر اور جیکتے د کتے ستارے تھے۔انھوں نے اپنالقب'' کشاجم'' رکھا تو لوگوں نے دریافت کیا کہاس لقب كى وجدكيا ہے؟ كہا كاف كاتب كائتين شاعركا، الف اديب كا،جيم جوادكا اورميم منجم (نجومی) کااختصار ہے۔مشہور ہجو گوم بی شاعرادر سیف الدولہ کے والد: ابوالہجاء عبدالله بن حمدان کے درباری شعراء میں تھے۔ بعض روایات میں ہے کہ بیسیف الدوله کے طباخ اور بادر چی تھے۔ان کا شعر بہت نفیس اور ان کی تصنیفات کی خوش ہو برى تيزهى انهى ميس ساليك كتاب المصائد والمطارد " -

''تنقیف اللسان'' میں مذکور ہے کہ ان کے لقب''کثاجم'' میں جتنے حروف ہیں ہرحرف کسی نہ کی علم ون کا غماز ہے۔ بعد میں جب علم طب پڑھلیاس میں ہم ہوگئے اور بیان کے علوم میں سب سے بھاری اور فائق ہوگیا تو ان کے اس لقب میں "طبیب'' کی جانب اشارہ کرنے کے لیے''ط'' کا اضافہ کرکے ''کہا گیا، مگراس اضافہ کے ساتھ لقب کوشہرت نہ کی۔

علامة تعالى نے صاحب تذكرہ: كشاجم بن حسن كاشعاردو صفحات ميں ذكر كئے

میں اور صاحب "کشف الطنون" نے ان کا تذکرہ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ "کتاب المصائد والمطارد" ابوالفتح محد بن صن مثنی کشاجم رلمی متوفی • ۲۵ ھی ہے۔ (قاض)

تاریخ آداب اللغة العربیة میں فرکور ہے کہ کشاجم متوفی ۱۹۳۰ سے
مرادابوالفتح محود بن حسین بن شا کہ ہیں۔ اصلا بندی ہیں اور سندھی کے لقب سے
مشہور ہیں۔ان کا قیام 'رملہ' میں رہائی لیے 'رملی' کے جانے لگے۔ حروف جم کی
مشہور ہیں۔ان کا آیک شعری دیوان ہے جو اسا اھیں ہیروت سے شاکع ہوا۔ان کی
ترتیب پران کا ایک شعری دیوان ہے جو اسا اھیں ہیروت سے شاکع ہوا۔ان کی
ایک کتاب ''کتاب ادب الندیم' ہے بیخضری کتاب ہے، جس میں بادشاہوں
کے ندیم دوزیر کے فرائض دواجبات، ان کے کمالات، اخلاق وعادات اور
منادمت، ساع اور بات چیت کے لیے بلائے جانے کے وقت کیا ذے داریاں
عاکد ہوتی ہیں،ان سے بحث کی گئی ہے۔ ان امور کے تذکرے کے حمن میں مختلف
واقعات اور اشعار بھی فرکور ہیں۔ یہ کتاب مصر میں ۱۲۱۸ ھیں طبع ہوئی۔ علاوہ
ازیں شکار سے متعلق ایک کتاب ''المیزر و '' بھی ان کی جانب منسوب کی جاتی
ہوائی مالد ہیں: ہلی کامنجا

"تحفة الاديب" مين فركور ب كه المكلمنجا ١٣٠ هـ ١٥٥ ه تك بورك بحيين سال" الديب" كا حكم رال ربال المل مالديب كو زبان مين ال كالقب " مرى راوسور مهاردن" تقا-

سلطان مالديب كلمنجأ

"تحفة الاديب" بى مين اس كى بابت بھى تحرير ہے كداس كى مال كانام" ايدع ماوا كلع" تقالة تاريخ سے بياندازه بين بوتا كديه فدكورة الصدر" بلى منجا" كاحقيقى بھائى ماوا كلع" تقالين بين اس نے ٢٦٦ هـ ١٩٤ هـ تك حكومت كى داس كى مدت علم دانى صرف نوكاه

ربی۔اہل مالدیپات "سری مدین مہاردن" کے لقب سے جانتے تھے۔ سلطان مالدیپ کلمنجا بن سلطان یوسف

کتاب مذکور میں اس کا نام یوں لکھا ہے: سلطان کلمنجا بن سلطان یوسف بن محمد اود کلمنجا بن سلطان یوسف بن محمد اود کلمنجا بن سلطان وطبی کلمنجا ۔ بیہ ۱۹۳ ھ میں مالدیپ کا بادشاہ بنااوراس کی مدت بادشاہت سات برس دی۔ اہل مالدیپ کی زبان میں اس کالقب ''مری میسودمہاردن' تھا۔

کنکه بهندی

علامندابن نديم اين شهره آفاق كتاب "الفهوست" كاندرا صحاب تعليم، انجينئرُ دن نقشه سازون، ماهرين موسيقي، حساب دان، نجومي، آلات ادرمشينون کے صانعین اور اصحاب حیل وحرکات کے تذکرے کے ضمن میں لکھتے ہیں کہ کنکہ ہندی کی متعدد کتابیں ہیں۔ اس کی چند کتابیں یہ ہیں: کتاب النودار فی الاعمار، كتاب اسرار المواليد، كتاب القرانات الكبيراور كتاب القرانات الصغير. "كشف الظنون" ميں مذكور ك كر"كتاب منازل القم"كك كى جاس ميں اس في بيان كياب كهيس في اس كتاب مين "جرم" كابواب سدولي ب- كنكه في اس کتاب میں ستاروں کے روحانی نظام اور ان کی گروش وتا ثیر کا ذکر کیا ہے اور "اشنوطاس" کے اسلوب وہنج کے برخلاف کھھا ہے۔ نیز کشف الظنون میں بیھی ہے کہ"کتاب الموت" بھی کنکہ ہی کی ہے۔ وزیر جمال الدین قفطی نے "أخبار الحكماء" مي لكهام كما بومعشر في اين كتاب" الألوف" مي كنك ہندی کے تعارف کے تحت لکھا ہے کہ قدیم ہندوستان کے تمام ارباب علم ودانش کے نزد يك علم نجوم مين "كنك" كامقام ومرتبه نهايت متناز اور بلند إلى مين ناتواس کے دور کی تاریخ کا پچھلم ہوسکا اور نہ ہی اس کے حالات؛ کیوں کہ وہ بہت دور دراز علاقے سے تعلق رکھتا ہے۔ اور ہمارے ملک نیز اس کے ملک کے درمیان، متعدد ویگرممالک حائل ہیں۔البتہ اتنا ضرور ہے کہ اہل ہند، وہ او لین تو م ہیں جن کی سلطنت و حکومت بہت عرصے سے ہے اور ان کا ملک نہایت وسیع و عریض ہے،ان کی حکمت و دانائی مسلم ہے۔علاوہ ازیں علم ومعرفت کے حوالے سے تمام گزشتہ بادشاہوں پران کی فوقیت کا اعتراف "تبریز" میں کیا گیا ہے۔

چین کے بادشاہ سے بات کہا کرتے تھے کہ دنیا کے بادشاہ کل یا نج ہیں اور باقی تمام لوگ ان کی زعیت اور تا بع فر مان ران میں شاہ چین، ہندوستان، ترک، فارس اورردم کے بادشاہ کا ذکر کرتے۔ نیز وہ شاہ چین کوانسانوں کابادشاہ کہتے ، کیوں کہ اہل چین، دنیا میں سب سے زیا دانی سلطنت کے اطاعت شعارا درمکی سیاست کے بیروکار ہوتے ہیں۔ بادشاہ ہندوستان کوعلم وحکمت کا بادشاہ بتائے تھے، کیوں کہ علوم وفنون سے اٹھیں بے پناہ دل چسپی ہوتی تھی۔ ترک با دشاہ کو، ترکون کی بہادری اور جراًت مندی کے سبب درندوں کا بادشیاہ کہتے تھے۔شاہ فارس کوشہنشاہ کہتے تھے، کیوں کے سلطنت فارس بہت وسیع وعریض تھی ،ان سب سلطنوں میں سب سے عظیم اورزیادہ خطرناک بھی تھی۔ یہی وجہ تھی کہ کا ئنات ارضی کے بالکل بیجوں بھی فارس کی سلطنت تھی اور دنیا کے سب سے اہم اور عمدہ علاقوں پر مشتمل تھی۔ جب کہ شاہِ روم کو "ملك الرجال"-انسانون كابادشاه- كيتے تھے۔ كيول كروى سب يزياده خوب صورت اورسب سے کیشش جسم کے مالک اورسب سے مضبوط ہوتے ہیں۔ غرض یے کہ ہندوستان، ہرزمانے میں اور تمام قوموں کے نزدیک حکمت ودانائی کامعدن اورعدا گستری وسیاست ملکی کاسر چشمه ماناجا تار با ہے۔ لیکن چوں كەمندوستان، مارے يہاں سے بہت فاصلے برواقع ہے اس كيے اہل مندكى بہت كم تصانيف ہم تك پہنچيں،ان كے علوم ومعارف كے معمولی حصے ہی ہے ہم واقف ہوسکے اور معدودے چند دانش وران ہندی بابت ہمیں معلومات ہوئیں۔علم نجوم سے متعلق تینوں مشہور" مسلک" اہل ہندہی کے ہیں، لیعنی :سند ہند کا موقف، ارجیمر کا مسلک اورار کند کا نقط نظر _ گرتفصیل کے ساتھ صرف 'سند ہند'' کا موقف

ہی ہم تک پہنچا۔ای موقف کومحد بن موی خوارزی اور حسین بن حمید معروف بدابن الآدی وغیرہ نے اختیار کیا۔سند ہند کی تشریح دہرالداہر ہے، جیسا کہ حسین بن آدی نے علم ہیئت پراپنی کتاب میں لکھاہے۔

موسیقی مے خات اہل ہند کے جوعلوم ومعارف ہم تک پہنچ ان میں ایک وہ کتاب ہے جس کا ہندوستانی زبان میں ''بیافر'' نام ہے۔ اس کی تشریح ''نماد الدحکمة '' ہے جس میں لجن کے قواعد وضوابط اور شر ملانے کے اصول وکلیات فہ کور ہیں۔ اصلاح اخلاق اور تہذیب نفوس کی بابت ان کی ایک کتاب ''کلیلہ و دمنه '' ہم تک پہنچ ۔ یہ کتاب بہت مشہور ومعروف ہے۔ اہل ہند کے جوعلوم ہم تک پہنچ میں اعداد کا حماب بھی ہے، جس کی تفصیل وتشریح ابوجعفر محمد بن موی خوارزی نے کی ۔ یہ حماب دیگر تمام حسابات کی بدنسبت مختصر، قریب الفہم اور بہل خوارزی نے کی ۔ یہ حماب دیگر تمام حسابات کی بدنسبت مختصر، قریب الفہم اور بہل الحصول ہے۔ اس سے اہل ہند کی فرہانت، طباعی ، انتاج اور عمدہ انتخاب واختر اع کا اندازہ ہوتا ہے۔ کنکہ ہندی کی مشہور کتابوں میں : کتاب النوادر فی الاعمار، کتاب اندازہ ہوتا ہے۔ کنکہ ہندی کی مشہور کتابوں میں : کتاب النوادر فی الاعمار، کتاب الموالید، کتاب القرانات الصغیر شامل ہیں۔

این اصبیعہ نے "طبقات الاطباء" میں لکھا ہے کہ کنکہ ہندی، متقد مین اور بڑے دانش وران ہند میں نہایت با کمال دانش ورتھا علم طب، ادویات کی تا ثیر، بچوں کی نفیات اور موجودات کے خواص پراس کی بڑی گہری نظرتھی۔ دنیا کے نقت ، آسانوں کی ترکیب اور ستاروں کی رفتار کا سب سے بڑا عالم تھا۔ ابو معشر جعفر بن محمد بن عربی کی نے اپنی کتاب "الالوف" میں تجربی کیا ہے کہ کنکہ، قدیم زمانے میں تمام دانش وران ہند کے نزید کے علم نجوم میں سب پرفائق تھا، کنکہ کی چندا کے تھنیفات دانش وران ہند کے نزید کے علم نجوم میں سب پرفائق تھا، کنکہ کی چندا کے تھنیفات بھی ہیں: کتاب النودار فی الاعمار، کتاب الموالید، کتاب القرانات الکبیر، کتاب فی القرانات الوہم اور ای طرح ای کی تالیف کتاب فی التوہم اور ای طرح ای کی تالیف کتاب فی احداث العالم و الدور فی القرآن کے نام سے بھی ہے۔

باب:م

ما شاء الله مندي

قاضی صاعد بن احمد اندلی نے ''طبقات الا میم'' میں لکھا ہے کہ ماشاء اللہ مین کاشاران ابل علم میں ہوتا ہے، جنہیں علم نجوم طبعی سے خصوصی اعتناء تھا۔ علم نجوم کہتے ہیں ستاروں کی رفتار اور دنیا میں ان کے اثر ات کے جانے کو عہد اسلام میں ماشاء اللہ ہندی اس میں مشہور ہوئے ۔ یہ بہت کا اہم کتابوں کے مصنف ہیں ۔ ماشاء اللہ ہندی اس میں مشہور ہوئے ۔ یہ بہت کا اہم کتابوں کے مصنف ہیں ۔ غالب گمان میہ ہے کہ صاحب تذکرہ ناشاء اللہ ہندی تیسری صدی ہجری کے ہیں ۔ جہاں تک ماشاء اللہ ابن اثری کا تعلق ہے جس کا نام میشی ۔ ہمنی تیز رو – تھا تو ہیں ۔ جہاں تک ماشاء اللہ ابن الندیم نے یہ ودی تھا۔ خلیفہ منصور اور مامون کے زمانے میں رہا۔ جیسا کہ ابن الندیم نے تذکرہ کیا ہے۔ (تاضی)

حاكم سندان: ما بان بن فضل بن ما بان

ان کے والد فضل بن ماہان، بنوسامہ کے آزاد کردہ غلام ہے۔ مامون رشید کے زمانے میں سندان کوفتح کر کے اس پرقابض ہو گئے ہے۔ ماہان کی وفات کے بعداس کا بھائی، محمد بن فضل نے ماہان بن فضل بعداس کا بھائی، محمد بن فضل نے ماہان بن فضل کے بعداس کا بھائی مفتوحہ علاقوں کا درخ کیا تو ماہان نے سندان پر قبضہ کرلیا اور خلیفہ معتصم باللہ عباسی کے پاس ''ساگوان''کی الی لکڑی جھی ، جیسی اس نے بھی نہ دیکھی تھی۔ اس کی مکمل تفصیل، محمد بن فضل بن ماہان کے تذکرے میں آر ہی ہے۔

مبارك مندى مروزي

شيخ ابوجعفر محد بن عمر عين اين مشهور كتاب "الكفاية الشعبية" ميل لكهت بين كه شهر" مرو" مين ايك شخص نهايت صاحب ثروت تقاراس كاايك مندوستاني غلام تقا جس كانام"مبارك" تها، جےاس نے معمولی پیپول میں خریدا تھا۔ اس غلام كواس نے تحكم ديا كروه اس كے باغ كى د كير بھال كرے۔ ايك مدت كے بعد وہ فض اينے باغ میں آیا اور غلام سے کہا کوئی میٹھا ساانار تو ٹر کر لاؤ۔ چناں چہوہ ایک نہایت سرخ انار لے آیا۔ کیکن جب اس محض نے اسے توڑااور چکھاتو بہت ترش معلوم ہوا۔اس پرغلام ت كها كميس في من على المارلان كوكها تفاء مروورش اور كها كرآ كيا فلام دوبارہ بہت تلاش کرکے برغم خودشیریں انارتو ژکرلایا۔ لیکن جب اسے چکھاتو وہ بھی ترش نكلا۔ تب أقانے غلام سے كہائم استے دنوں سے باغ كى د مكھ بھال كرر ہے ہومگر شایدتم نے بھی اب تک جتنے انار کھائے ہوں، وہ سب ترش رہے۔تم نے میٹھاسمجھ کر توڑا۔غلام نے کہامیرے آتا! نہ قومیں نے اب تک انارہی کھایا اور نہ کوئی دوسرا پھل۔ جب آ قانے اس کی وجہ معلوم کی تو کہا آپ نے باغ کی دیکھ بھال کرنے کے لیے کہا تھا، پھل کھانے کی اجازت نہیں دی تھی۔اس لیے میں نے اب تک ایک بھی پھل نہیں کھایا کہ اگراللہ تعالی تیا مت کے روز مجھ سے سوال کریں کہتم نے دوسرے کا مال ، اس کی اجازت کے بغیر کیوں کھایا تو مجھ سے کوئی جواب ندبن سکے گا۔ بین کر تعجب سے آ قانے کہا اچھا تو تم نے اس حد تک احتیاط سے کام لیا؟ غلام نے جواب دیا ہاں۔ چناں چہوہ مخص اس آن غلام کو لے کر گھر آیا۔ لبنی چوڑی ضیافت کا انتظام کیا، مرو کے تمام رؤساء، حکام اور اصحاب ثروت کوجمع کیا۔ ایک کری لاکران کے بالکل پیچوں ج رتهی اوراس غلام کونهایت زرق و برق لباس بهنایا اور کری بر بشهادیا بهران سربرآ ورده باشندگان "مرو" سے خاطب ہو کر کہا آپ حضرات میں سے پھھلوگ اس مخص کوجانے

ہوں گے اور جونہیں جانے وہ بھی جان لیں کہ بیمیرا غلام ہے،اس کا نام "مبارک"
ہے۔اسے میں نے نہایت معمولی پیپوں میں خرید نے کے بعد اپنے باغ کی دکھ بھال پرلگادیا تھا۔ پھراس نے انار کا پورا واقعہ بیان کیا اور تمام حاضرین سے کہا آپ حضرات گواہ رہیں کہ میں نے اس غلام کوآ زاد کر دیا ہے نیز اپن کڑی کی شادی بھی اس ہے کردی اور اپنی نصف جائیداد بھی اسے بہرکرد ہا ہوں۔

شخ ابوجعفر کا بیان ہے کہ اس روز سے نکاح کے دفت دو لیے کو کرسیوں پر بھانے کا رواج ہوگیا۔ نیز لکھا ہے کہ اس غلام کے اس کی بیوی سے ایک لڑکا بیدا ہوا، جس کا نام 'عبداللہ'' رکھا گیا۔ بیلا کا عہدو بیان کا سب سے زیادہ بکا، سب سے بردھ کر بہادراورسب سے برتر عالم وفقیہ ہوا۔ اس کے علم وتفقہ پرا گر علماء وفقہاء کو ناز تھا تو زہد وعبادت پر عبادوز با دنازال تھے۔ بید سب اس کے والد کی سن نیت کا ثمرہ اور نتیجہ ہے۔ ساس کے والد کی سن نیت کا ثمرہ اور نتیجہ ہے۔ سے صاحب تذکرہ کے سلسلے میں مزید معلومات نمل کیس ۔ (تانی)

متى كلمنجا: سلطان مالديپ

"تحفة الادیب" میں تحریر ہے کہ سلطان می کمنجا کے باپ کی جانب سے نسب کی بابت تاریخ میں کوئی بات نہیں ملتی۔ البتہ اس کی ماں کی بابت معلوم ہے کہ وہ سلطان محمد اوّل کی خالہ تھی۔ اس نے ۱۲۵ھ ہے ۵۸ھ تک کل انیس سال حکومت کی۔ اہل مالدیپ اسے "مری بون ابار ن مہاردن" کہتے تھے۔ حکومت کی۔ اہل مالدیپ اسے "مری بون ابار ن مہاردن" کہتے تھے۔

مخلص بن عبدالله مندي بغدادي

علامہ سمعانی نے "الانساب" میں لکھا ہے کہ ابوالحن مخلص بن عبراللہ مندی مہذی ، مہذی ، مہذبی، مہذبی، مہذبی، مہذبی کی جانب نسبت

کرتے ہوئے اٹھیں ''مہذبی'' کہا جاتا ہے۔ یہ بغداد کے رہنے والے تھے۔اٹھوں نے بغداد میں ابوالغنائم محد بن علی بن میمون نری ،ابوالقاسم بزاراورابوالفضل خبلی وغیرہ سے بغداد میں ابوالقاسم مزاراورابوالفضل خبلی وغیرہ سے ساع حدیث کیا۔ میں نے بھی بغداد ہی میں ان سے بعض احادیث قلم بند کیں۔ مخلص بن عبداللہ چھٹی صدی ہجری کے متھے۔ (تانی)

مسعود بن سليمان ،فريدالدين اجودهني

''نزهة المحواطر''میں ان کی بابت فرکور ہے کہ شخ کیر مشہور ہزرگ امام فریدالدین مسعود بن سلیمان بن شعیب بن احمہ بن یوسف بن محمہ بن فرخ شاہ عمر کی چشتی اجودھنی۔ ان کے دادا: شعیب بن احمہ تا تاری فتنے کے دور میں ہندوستان آئے اور'' ملتان'' کے زیرا نظام'' کھتوال'' کے قاضی بنائے گئے، انھوں نے تضاء کی ذمہ داری بحسن وخوبی انجام دی۔ یہیں شخ فریدالدین مسعود کی ۵۹۵ھ میں پیدائش ہوئی اور کم سی ہی میں' ملتان'' جاکرا ہے دور کے مشہور اسا تذہ علم فن سے حصول علم میں مشغول ہوگئے۔ مولا نا منہاج الدین تر ندی ہے'' النافع'' کتاب بڑھی، ملتان ہی میں حضرت قطب الدین بختیار اوجھی سے ۵۵۸ھ میں ملاقات ہوئی اور ان کے ساتھ دہ لی آگئے اور ایک عرصہ دراز تک ان کی خدمت میں ملاقات مولی اور ان کے ساتھ دہ لی آگئے اور ایک عرصہ دراز تک ان کی خدمت میں رہ کر طریقت کے علوم ومعارف حاصل کیے۔

اس سلیے میں ایک روایت یہ ہے کہ جب ان کی شخ ندکور سے ملاقات ہوئی تو افھوں نے سفر وحضر میں ان کے ساتھ رہنے کی خواہش ظاہر کی الیکن شخ نے افھیں منع کر دیا اور تھیل علوم کا مشورہ دیا۔ چنال چہ خضرت فریدالدین نے '' قندھار'' کا سفر کیا اور دہاں یا نچ سال رہ کر حصول علم میں مشغول رہے۔ پھر ملتان واپس آئے اور وہاں میں خشخ شہاب الدین عمر بن محمد سہروردی ، حضرت سیف الدین با خرزی ، وہاں حضرت شیف الدین با خرزی ،

شخ سعدالدین حموی، حضرت بهاءالدین زکر ماملتانی اور دیگر متعدد مشاریخ وادلیاء کی شرف صحبت سے بہرہ در ہوئے۔ بعد میں دہلی آ کرشنخ قطب الدین کی صحبت میں رمنے لگے۔ یکھ دنوں کے بعد شہر'' ہانی'' جلے گئے، جہاں بارہ برس تک سخت ر ماضت ومحامدے مشغول رہے، جس کے نتیجے میں ان نے خوارق عادات امور، كرامات اورجيرت انكيز روحاني تضرفات كاظهور موااورعوام الناس جوق دورجوق ان كى خدمت مين آنے لگے۔اس كے باعث اپنى جائے قيام" ہائى، كوخير بادكها اور ' کھتوال' جلے گئے، جہال ایک مدت تک قیام پذیرر ہے۔ جب یہال بھی ان کے کشف وکرامات کا حال منکشف ہوگیا اورلوگوں کا سیلاب المرآیا تو وہاں سے اجرت كرك "اجودهن" يلے گئے۔ يہاں اقامت پذير موكر مريدين وسالكين كى تربيت وتزكيه مين مصروف مؤكئے۔ان كاشار كبار اولياء اور بزرگان امت ميں موتا ہے۔ عجیب وغریب روحانی تصرف اور بے پناہ عالم جذب کے مالک تھے۔اصحاب كشف وكرامات بزرگوں ميں، باطنی حالات ميں ان كا برواممتاز مقام تھا، جو بہت مشہور ومعروف ادر کتابوں میں ندکور ہیں۔ان سے خلق خدا کی ایک بڑی تعداد نے اكتباب فيض كياجن مين حضرت نظام الدين اولياء بدايوني، حضرت شيخ علاءالدين صا برکلیری، حضرت جمال الدین خطیب مانسوی، حضرت بدرالدین اسحاق د ہلوی، رجم الله تعالى ثامل ہيں۔

شیخ محد بن مبارک حسین کرمانی نے اپنی کتاب "سیر الاولیاء" میں لکھا
ہے کہ حفرت نظام الدین اولیاء نے ان سے قرآن شریف کے جھ سیارے،
"عوارف المعارف" کا کچھ حصداور شیخ ابوشکورسالمی کی" کتاب التمهید" پڑھی۔
ان کے چندایک ملفوظات یہ ہیں: اللہ رب العزت کو بڑی شرم آتی ہے کہ بندہ دعا
کے لیے اپنے دونوں ہاتھ اٹھائے اوروہ انھیں ناکام واپس کردے، صوفی کو ہر چیز

صاف شفاف نظر آتی ہے اور کوئی بھی چیز اسے مکدر نہیں بناتی۔ صوفی اسے کہتے ہیں جواس پرخوش ہوجواس کے پاس ہے اور جونہیں ہے، اس کی کوشش نہ کرے۔

محربن ابراہیم دیبلی مکی

علامه سمعانی نے "الانساب" بیں لکھا ہے کہ ابوجعفر محمد بن ابراہیم دیبلی نے ابوعبراللہ سعید بن عبرالرحمٰن مخزومی سے "کتاب التفسید" ،ابن مبارک ک "کتاب البر و الصلة" خودمصنف کی روایت سے ابوعبراللہ حسین بن حسن سے روایت کی ہے۔ علاوہ ازیں عبرالحمید بن صبح ہے بھی روایت کرتے ہیں اور خودان سے ابوالحسن احمد بن ابراہیم بن فراس کی اور ابو بکر زخز ذبن ابراہیم بن علی بن مقری نے روایت کی ہے۔ مشتبرالنہ تب میں فراس کی اور ابو بکر زخز ذبن ابراہیم دیبلی سے محمد بن ابراہیم دیبلی کے والیت کی جانب اشارہ ہے۔ انھوں نے ابوعبداللہ مخزومی حسین بن حسن مروزی اور عبد الحمید بن سے محمد بن ابراہیم بن محمد بن ابراہیم دیبلی عبد الحمید بن سے محمد بن ابراہیم بن محمد بن ابراہیم کی جانب اشارہ ہے۔ انھوں نے ابوعبداللہ مخزومی حسین بن حسن مروزی اور عبد الحمید بن سے محمد بن ابراہیم بن محمد دیبلی کے والد ہیں۔

علامة حوى في الميت المعجم البلدان "مين" ديبلي" كى بابت المحاب كراويان حديث كى ايك برئ تعداداس مقام كى جانب نسبت ركعتى ہے، انهى رواة ميں ابوجعفر حمد بن ابراہيم ديبلى بھى شامل ہيں۔ يہ مكه كرمه ميں سكونت پذير شے انھوں في ابوجعفر حمد بن ابراہيم ديبلى بھى شامل ہيں۔ يه مكه كرمه ميں سكونت پذير شے رافعول في ابوجعفر حمد بن ابراہيم دوايت كى۔

"شدرات الذهب" ميں ۱۳۳۳ هميں وفات يا فقة شخصيات كے ذيل ميں امام ذہبى تحريفر ماتے ہيں كه اس سال محدث مكه: شخ ابوجعفر حمد بن ابراہيم ديبلى كى اس مقام "ديبلى" كى طرف نسبت ہے، ان كى وفات مادى الاولى ميں موئى۔ انھيں حمد شين زبوراور ديگر بہت سے محد شين كى وفات ماد جمادى الاولى ميں موئى۔ انھيں حمد بن زبوراور ديگر بہت سے محد شين سے دوايت حديث حاصل ہے۔

"کتاب المؤتلف و المختلف" مین "حرثان وخربان" کے باب کے تخت مرقوم ہے کہ قاضی الوعبراللہ اسحاق بن احمد بن خربان نہاوندی نے محمد بن المراہیم دیبلی وغیرہ سے دوایت کی ہے۔

علاوہ ازیں امام ذہبی "تذکر قرالحفاظ" کے اندر حافظ ابن حباب قرطبی متوفی ۱۳۲۲ھ کے تذکر سے میں لکھتے ہیں کہ ای سال ابوجعفر محمد بن ابراہیم دیبلی مکی کی وفات ہوئی ۔ نیز حافظ الممش ہمدانی متوفی ۱۵۳۵ھ کے حالات میں تحریر کیا ہے کہ مجھ سے فاطمہ بنت جو ہرنے ، ان سے ابوز بیوی نے ، ان سے ابواقتی طائی نے ، ان سے مکہ سے زین الحفاظ احمد بن نفر سے ، ان سے عبد الرحمٰن بن عمر وعطار نے ، ان سے مکہ مکر مہ میں احمد بن فراس نے ، ان سے محمد بن ابراہیم دیبلی نے ، ان سے حسین بن حسن مروزی نے ، ان سے محمد بن عدی نے ان سے حصیت نے اور ان سے ابواسحاق سے بردوایت حضرت براء رضی اللہ عنہ بیان کیا ہے کہ حضرت براء نے فرمایا:

"أهديت لرسول الله عَنْ حلة من حرير فجعل أصحابه يلمسونها ويتعجبون من لينها، فقال رسول الله عَنْ مناديل سعد بن معاذ في الجنة أفضل أو خير مماترون".

"وحضور اکرم علی خدمت میں ایک رئیمی جوڑا ہدیة مجمعا گیا۔ اسے اصحاب رسول چھوکرد کھنے گیا اوراس کی نرمی اور گداز بن پرجیرت کرنے گئے۔ تو حضور اکرم علی نے فرمایا کہ جنت میں سعد بن معاذ کو جوتو لیے دیے ہیں وہ اس جوڑے سے بدر جہا بہتر ہیں "۔ (بخاری وسلم)

امام ابن عبدالبراندلی نے "جامع بیان العلم" میں تحریر فرمایا ہے کہ ہم سے سعید بن نصر اور سعید بن عثمان نے بتایا، ان سے احمد بن دھیم نے، ان سے محمد بن ابراہیم دیبلی نے ، ان سے ابوعبدالتد مخز وی نے ، ان سے سفیان بن عیین نے ، ان سے سفیان بن عیین نے ، ان سے سفیان بن عیین نے ، ان سے عمرو بن دینار نے اور ان سے سعید بن جبر نے کہ میں نے حضرت عبداللہ

بن عباس سے عرض کیا کہ نو قابکالی کا کہنا ہے کہ حضرت خضر کے ساتھ جن موسی کا واقعہ قر آن میں فدکور ہے ان سے بن اسرائیل کے مشہور نبی حضرت مولی مراذبیں ہیں ۔ تو حضرت ابن عباس نے فر مایا وہ جھوٹ کہنا ہے اور کہا کہ مجھ سے حضرت ابی بین کعب نے خر مایا وہ جھوٹ کہنا ہے اور کہا کہ مجھ سے حضرت ابی بین کعب نے خصورا کرم علی ہے کی جانب سے بیان کیا، پھر پوری حدیث بیان فر مائی ۔

محدبن ابراهيم بيلماني مندي

ان سے عبیداللہ بن عباس بن رہیج بخر انی نے روایت حدیث کی ہے، جیسا کہ علامہ حموی نے ''بخر ان'' کی ہاہت عبیداللہ بن عباس کے مذکر سے میں لکھا ہے۔

محمربن احمد بن محمد بوقانی سندهی

علامہ بیکی اپنی شہرہ آفاق کتاب 'طبقات الشافعیة الکبری' میں رقم طراز ہیں کہ ان کا کمل نام یہ ہے : محمد بن احمد بن محمد بن طبیل بن احمد ابوسعید طبیل بوقانی _ کا مہم ان کی پیدائش ہوئی _ انھوں نے ابو بکر بن خلف شیرازی سے ساع حدیث کیا اور ان سے عبدالرحیم بن سمعانی نے روایت حدیث کی اور بتایا کہ ان کی وفات اواخر ماہ محرم ۸۸ ۵ھو' بوقان' میں ہوئی ۔

محربن احمربن منصور بوقاني

انھوں نے حاتم بن محد بن حبان بستی متونی شوال ۱۳۵۳ ہے۔ جناں چاہ من میں میں میں متونی شوال ۱۳۵۳ ہے۔ چناں چاہام ذہبی نے 'تذکر ہ الحفاظ ''کے اندر حافظ ابوحاتم ابن حبان بستی کے حالات میں تصریح کی ہے کہ حافظ ابوحاتم سے حاکم 'منصور بن عبد اللّٰد خالدی ، ابومعاذ عبد الرحمٰن بن محد بن رزق اللّٰد ، ابوالحس محد بن احد بن مارون زوزنی اور محد بن احد بن مصور بوقانی اور دوسر سے بہت سے اوگوں نے روایت حدیث کی۔

محمد بن اسعد بوقانی سندهی

طبقات الشافعية مين مين علامه بكى لكهة بين كه ابوسعيد محمد بن اسعد بن محمد بوقانى نے فقہ حضرت الم مغز الى سے حاصل كى اور واقعه غدر ٢٥٥ ه مين حضرت على بن موى رضا كے ساتھ شهيد كيے گئے۔ الز اكا لقب "سديد" تھا۔ ابن باطیش نے ان كے حالات قلم بند كيے ہيں۔

ابن باطیش سے مشہور فقیہ، محدث اور لغوی عمادالدین ابوالمجدین باطیش اساعیل بن ابوالمجدین باطیش اساعیل بن ابوالبر کات بست الله مراد بین سید کبارعاماء ومحد ثین میں سے مضاور "طبقات الفقهاء" نیز دوسری کتابیں تصنیف کیں ۔ جمادی الآخر ۱۵۵ ھیں ان کی وفات ہوئی۔ (تاسی)

محربن ابوب بن سليمان كلبي بغدادي

علامه سمعانی 'الانساب "میں 'دکاہی " کی بات کھتے ہیں کہ اس سے مرادابو عبداللہ محمد بن ابوب بن سلیمان بن بوسف بن اشروسنبذ اذعود کاہی ہیں۔ یہ بغداد آئے جہاں بروایت ابومہلب، سلیمان بن محمد بن حسن حنی بن اعمش سے ایک منکر حدیث بیان کی ۔ ان سے ابو برمحمد بن ابراہیم بن حسن بن شادان برار نے روایت کی۔ حدیث بیان کی ۔ ان سے ابو برمحمد بن ابراہیم بن حسن بن شادان برار نے روایت کی۔ یہ تیسری صدی ہجری تیطن رکھتے ہیں۔ ''عودی'' کی نبعت سے عود فروحت کرنے والے کی جانب اشارہ ہے۔ (قاض)

محمربن احمر بيروني سندهى خوارزمي

محوی نے "معجم البلدان" میں اُن کی بابت لکھا ہے کہ اُن کا پورانام محمد بن احمد، ابوالر بحان البیرونی الخوارزی ہے۔ بیرون کا مفہوم "برانی" آبادی کے باہر رہے والات کیوں کہ فارتی میں "بیرون دی کہاجا تا ہے۔ حموی نے مزید لکھا ہے کہ میں نے مزید کھا ہے کہ میں نے مزید کھا ہے کہ میں نے اس نسبت کی بابت بعض اصحاب علم سے دریا فت کیا تو انھوں نے بتایا کہ

بيرونى اس كيے كہاجاتا ہے كہوہ خوارزم ميں بہت كم رہتے تھاورا ال خوارزم برديس میں رہے دالے کو میرونی" کہا کرتے ہیں۔ گویا کہوہ ایک عرصہ تک شہرخوارزم کے بیرون میں رہتے رہے۔ ۳۲۲ھ مین وقت سلطان محمود بن سبکتگین غزنوی کی وفات موئی اس وقت' بیرونی' شهرغزنه بی میں تھے۔ میں نے بیرونی کی کتاب' تقاسیم الاقاليم"اورايك خط ديكها ہے جوبيروني نے اس سال لكھا تھا محد بن محمود نيسايوري نے بیرونی کے تذکرے میں لکھا ہے کہ علوم ریاضی میں بیرونی کو بروا درک اور کمال حاصل تھا اور وہ سب پر فاکق تھا۔اس سلسلے میں اس کی ہمسری نہ تو تیز رو گھوڑے كرسكتے ہيں اور نہ ہی عمرہ سل كے دبلے سلے گھوڑے اس كو ياسكتے ہيں ، علاوہ ازيں الله تعالی نے دنیا کی جاروں سمتوں کواس کے زیر تکیس کردیا تھا۔ زمین کی بارش کی اونٹنیاں اس کے سبب بلند ہو گئیں اور اس کی پختہ فصلیں اور پھل جھوم اٹھے۔ستاروں کی پر بہارجگہوں براس کا سائیگن ہے اور آسان کے بیچوں چے اس کا بادل لہرار ہاہے۔ مجهمعلوم مواے کہ جب اس نے"القانون المسعودی" تصنیف کی توسلطان مسعود بن محمود نے اسے اجازت دی کہ ہاتھی پر جاندی کے سکے لا دکر لے جائے ،مگر اس نے عدم احتیاج کاعذر کر کے وہ ساری رقم سرکاری خزانے کووایس کردی۔

البیرونی کا گھر نہایت عالی شان تھا، عوام الناس کی نظر میں اس کی عزت وحیثیت مسلم تھی، اس کے باوجودوہ حصول علم میں ہمہودت منہمک اور تضنیف و تالیف میں مشغول رہتا تھا۔ کتابوں کے درواز ہے کھولتا، ان کی چھوٹی راہوں اور دیتی گوشوں کا احاطہ کیے ہوئے تھا۔ اس کے ہاتھوں سے قلم بھی الگ ندرہتا، اس کی نگاہیں ہمیشہ پڑھنے اور دل غور و فکر میں مشغول رہتیں۔ سوائے نیروز اور مہر جان کے ایام کے، جن بین بیرونی ضروری سامان اور اشیائے خورد کی خریداری میں مصروف ہوتا۔ اس کے علاوہ سال بھراس کا شعار اور لگاؤ تمام تر علم سے رہتا جس سے مشکل بحثوں کی گرہ کشائی ہوئی اور بہت سے چیدہ مسائل کا عقدہ کھلا۔

تاضی کثیرین یعقوب بغدادی نحوی نے اپنی کتاب "الستود" بین بدوایت فقیہ ابوالحن علی بن عینی الوالجی ذکر کیا ہے کہ فقیہ ابوالحن نے بیان کیا کہ ایک روزیس ابور یحان بیرونی کے پاس گیا، اس وقت وہ جال کی کے عالم بیس تھا۔ سائس غرغرار ہاتھا اور سینے میں گھٹن ہور ہی تھی لیکن اس حال میں بھی اس نے جھے سے کہا کہ "جد ات فاسدہ" کے جھے کی بابت ایک روز آپ نے کیا مسئلہ بتایا تھا، ذرا بھر سے بتاد ہیجئے۔ میں اس پرترس کھاتے ہوئے کہا اس حال میں بھی مسئلہ معلوم کرنے کی فکر ہور ہی میں اس پرترس کھاتے ہوئے کہا اس حال میں بھی مسئلہ معلوم کرنے کی فکر ہور ہی ہے۔ اس پر بیرونی نے جواب میں کہا اگر میں دنیا ہے اس حال میں رخصت ہوا کہ جھے یہ مسئلہ بھی معلوم ہوگیا، کیا ہے اس سے بہتر نہیں کہ میں اس سے جابل رہ کر جاؤں؟ بیرن کہ میں نے وہ مسئلہ دوبارہ بیان کیا، جے اس نے یاد کر لیا اور جھے بھی ایک بات بتائی، حس کا اس نے وعدہ کیا تھا۔ اس کے بعد میں اس کے یہاں سے باہر آگیا۔ ابھی راستے ہی میں تھا کہ بچھے جی سائی پڑی۔ معلوم ہوا کہ البیرونی کی وفات ہوگئی۔

جہاں تک شاہان عالم کے یہاں اس کی قدرومزلت اوراہمیت کی بات ہوت اس سلسلے میں مجھے معلوم ہوا ہے کہ شمن المعالی سلطان قابوں بن وشمیر نے جاہا کہ البیرونی کواپی صحبت وہم نشینی کے لیے مخص کر لے اورا پنے ہی محل میں اس کی رہائش کا انظام کردے، نیز یہ بھی کہا کہ میری سلطنت کی حدود جہاں تک ہیں، وہاں تک البیرونی کو کمل اثر ورسوخ اورا قد ارحاصل ہوگا، گرالبیرونی نے انکار کردیا اوراس کی بات نہ مانی کی جب اس کی طبیعت نے اس کو منظور کرلیا تو سلطان قابوں نے اپ بات نہ مانی کی بہائش کا نظم کیا اوراپ ہمراہ ہی می میں رکھا۔ ایک روز خوارزم شاہ ہی کی میں اس کی رہائش کا نظم کیا اوراپ ہمراہ ہی می میں رکھا۔ ایک روز خوارزم شاہ ہاں کی واس کے چرے میں بلایا جائے ، البیرونی کو آنے میں ذراسی ویر ہوگئ تو اس نے بچھ دوسری بات مجھ کر گھوڑ نے کی لگام اس کی طرف موڑ دی اور کمرے پر بینی کر اس نے بچھ دوسری بات سمجھ کر گھوڑ نے کی لگام اس کی طرف موڑ دی اور کمرے پر بینی کر اس نے بیلے ہی کمرے سے باہر نکل آیا اوراس کو خدا کا اثر نا ہی جا بتا تھا کہ البیرونی اس سے پہلے ہی کمرے سے باہر نکل آیا اوراس کو خدا کا اثر نا ہی جا بتا تھا کہ البیرونی اس سے پہلے ہی کمرے سے باہر نکل آیا اوراس کو خدا کا اثر نا ہی جا بتا تھا کہ البیرونی اس سے پہلے ہی کمرے سے باہر نکل آیا اوراس کو خدا کا اثر نا ہی جا بتا تھا کہ البیرونی اس سے پہلے ہی کمرے سے باہر نکل آیا اوراس کو خدا کا

واسط دے کرکہا جووہ کرنا جا ہتا ہے، نہ کرے اس پرخوارزم شاہ نے درج ذیل شعر پڑھا:
العلم من اشرف الولایات علی یاتیه کل الوری ولایاتی

العدم هن اسرت الودیات عظم کن اموری و دیاتی الله در الموری و دیاتی الله در علم من اسرت الودیات عظم کے در علم علم من الموری کے باس نیس جایا کرتا"۔

اس کے بعد البیرونی ہے کہا کہ اگر دنیا کے رسوم وآ داب نہ ہوتے تو میں شمصیں ہرگر نہ بلوا تا ،اس لیے کہا کی شان رفعت و بلندی ہے، نہ کہ پستی وفروتن ۔
ایبا لگتا ہے کہ خوارزم شاہ نے خلیفہ معتصد باللہ عباسی کا وہ واقعہ س رکھا تھا، جس میں آتا ہے کہ ایک روز معتصد، ثابت بن قرہ حرانی کا ہاتھ پکڑے ہوئے باغ کی سیر۔
کررہا تھا کہ اچا تک اپناہا تھ تھینج لیا۔ اس پر ثابت نے معلوم کیا کہ امیر المونین! کیا ہوا؟ متعصد نے جواب دیا کہ میراہا تھ تو آپ کے ہاتھ کے او پر تھا، جب کہ مکم کی شان یہ ہے کہ وہ بلندر ہے، اس کے او پر کوئی چیز نہ ہو۔
شان یہ ہے کہ وہ بلندر ہے، اس کے او پر کوئی چیز نہ ہو۔

سِتُواً 'سلطان نے اس کی بابت البیرونی سے معلوم کیا تو اس نے سلطان کو قائل کرنے کی غرض سے اختصار کے ساتھ اس معاملہ کی وضاحت کی ۔اس دوران بھی بھار سلطان البیرونی کی بات بڑی تو جہ سے سنتا اورانصاف بیندی کا اظہار کرتا۔ الغرض سلطان نے اس کی بات مان کی اوراس وقت سلطان اورالبیرونی کی بات جتم ہوگئی۔

لیکن محمود غرز نوی کے برعکس اس کے لڑ کے مسعود کو علم نجوم سے بڑی دل چھی اور علوم ومعارف کے حقائق سے بڑا لگاؤ تھا۔ ایک روز سلطان مسعود نے البیرونی کے ساتهداس مسكے نيز كائنات ميں شب وروز كے اوفات ميں اختلاف كے اسباب يربات چیت کی اور اپنی اس خواہش کا اظہار کیا کہ جب تک مشاہدے کے ذریعہ اس کی صحت ثابت نہیں ہوجاتی ،کوئی واضح دلیل اسے معلوم ہوجائے۔البیرونی نے اس سے کہااس وتت آب روئے زمین کے تن تنہا ما لک ہیں اور بجاطور پر شہنشاہ کا مُنات کے جانے کے حق دار ہیں۔ اس عظیم مرتبے کے ساتھ یہ بات آپ کوزیب بھی دی ہے کہ آپ گردش حالات کے اسباب، شب دروز کے احوال اور آبادی و صحرامیں ان کی مقدار میں تبدیلیوں سے علم دواتفیت رکھنے کوتر جے دیں۔البیرونی نے مسعود کے لیے شب دروز کے مقدار کی بابت ایک کتاب تصنیف کردی۔اس کتاب میں اس نے علمائے نجوم کے اصول واصطلاحات سے اجتناب کرتے ہوئے ایبا انداز اختیار کیا ہے جس سے وہ مخف بھی علمائے نجوم کے خیالات کو بجھ سکے، جوندان اصطلاحات واصول سے مطمئن ہواور نہ ہی انھیں کسی خاطر میں لاتا ہو۔ سلطان مسعود بن محمود غزنوی چوں کہ عربی زبان کاماہرتھا،اس کیے اس نے بوی آسانی سے اس مسئلے کو سمجھ لیا بھرالبیرونی برخوب خوب نوازشات کیں۔اس طرح البیرونی نے سلطان مسعود ہی حکم سے شب وروز کی حرکت وگردش کے لوازم بربھی ایک کتاب رقم کی۔ پیرکتاب نہایت اہم ادراس فن میں حرف آخر کی حیثیت رکھتی ہے۔اس میں قرآنی آیات سے بہ کثرت استشہاد کیا ہے۔ علاوہ ازي "القانون المسعودي" ني توعلم نجوم دحماب يرتصنيف كرده تمام كمابول كانام

ونثان مثادیا۔ 'الد ستور ''کے نام سے بیرونی کی ایک اور کتاب ہے، جے اس نے جامع المحاس شہاب الدول الواضح مودود بن سلطان مسعود شہید کے نام برلکھا۔

"الستور" كمصنف جن كا تذكره محد بن محود نے كيا ہے، نے لكھا ہے كہ ميں نے البيرونى كاذكراس موقع ہے اس وجہ ہے كيا كده بہت برااد يب اورلغوك تھا۔ اس سلط ميں اس نے متعدد كما بيں بھى كھى ہيں۔ مثلاد يوان الوتمام كى عربی شرح، بيشرح ميں نے اس كے قلم ہے كھى ہوئى ديكھى ہے، محرناتمام ہے، كتاب التعلل باحالة الوهم فى معانى نظم اولى الفضل، كتاب تاريخ أيام السطان محمود واخبار ابيه ، خوارزم شاہ كے حالات پر مشمل: "كتاب المسامرة اور كتاب مختار الاشعار والآثار" جب كم منحم، بيئت، منطق اور حكمت وفلف پراس كى مختار الاشعار والآثار" جب كم منحم، بيئت، منطق اور حكمت وفلف پراس كى تابول كفير مناه كے حالات بر مناه كے مالات بر مخطق اور حكمت وفلف پراس كى تابول مختر مناه كے مناز بين ہے۔ ميں نے "مرؤ" كى جامع مجد ميں اس كى تابول

نیز قاضی بغدادی نے کھا ہے کہ مجھ سے بعض اہل علم نے بتایا کہ البیرونی کے دخون نئی اسلطان مجمود غرنوی نے جب خوار زم پر قبضہ کیا تو البیرونی اوراس کے استاذہ شہور فلفی :عبدالعمداول بن عبدالعمد دونوں کو گرفآر کرلیا اورعبدالعمد پر قرمطی اور طحد ہونے کا الزام لگا کراسے موت کے گھا ہے اتا دویا۔ اس کے ساتھ البیرونی چوں کہ اپنے دور میں علم نجوم کا امام تھا اور بادشا ہوں کو اس طرح کے ساتھ البیرونی چوں کہ اپنے دور میں علم نجوم کا امام تھا اور بادشا ہوں کو اس طرح اپنے ساتھ دکھ لیا۔ بعد میں البیرونی ہندوستان آیا اور اہل ہند کے ساتھ درہ کران کی زبان بھی سے می اور ان کے علوم بھی حاصل کے۔ بعد از ال 'غزنہ' میں سکونت پذیر زبان بھی سے اور ان کے علوم بھی حاصل کے۔ بعد از ال 'غزنہ' میں سکونت پذیر ہوگیا، جہاں میرے اندازے کے مطابق کمی عمریانے کے بعد سے میں میں کو نات ہوئی۔ البیرونی نہایت خوش اخلاق اور پاکیزہ خصاب کا ما لک تھا، اس کی وفات ہوئی۔ البیرونی نہایت پاک صاف تھا۔ علم ونہم میں اب تیک اس جیسا زبان کا پھو ہڑ البتہ کر داروعمل کا بہت پاک صاف تھا۔ علم ونہم میں اب تیک اس جیسا زبان کا پھو ہڑ البتہ کر داروعمل کا بہت پاک صاف تھا۔ علم ونہم میں اب تیک اس جیسا زبان کا پھو ہڑ البتہ کر داروعمل کا بہت پاک صاف تھا۔ علم ونہم میں اب تیک اس جیسا نہ تھا۔ تھا۔ قام ونہم میں اب تیک اس جیسا

کوئی پیدانہ ہوا۔ شعر بھی کہتا تھا، خواہ شعراء کے طبقہ علیا میں شامل ندرہا ہو، تاہم بہت اچھا شاعر تھا اور وہ بھی بادشا ہوں کی صحبت میں رہ کر۔ چناں چہ البیرونی نے ابوالفتح مودود بن سلطان مسعود غرنوی کی بابت ''سختاب سر السرور'' میں طویل تصیدہ کہا ہے جس کے ابتدائی تین آشعار یوں ہیں:

قضی اکثر الأیام فی ظل نعمة الله علی رتب فیها علوت کراسیا فآل عراق قد غذرنی بدرهم الله ومنصور منهم قد ترکی غراسیا و شمس المعالی کان یرتاد خدمتی الله علی نضرة منی وقد کان قاسیا در میرااکثر زماند حسب مرتبه میدول پرفائزده کیش و آرام کے سالیش گزراآل عراق نے محصا یک در جم کوش میرے کھانے کا نظام کیااوران می منصور شمس المعالی جمح سے فرت اور تھارت لی کے باوجود میری فدمت کا خواہاں تھا '۔ المعالی جمح سے فرت اور تھارت لی کوعطیہ دیا ، اس پر البیرونی نے شاعر کی بابت جو اشعار کے ، وہ نہایت زور آوراور فیجے و بلغ بین :

یا شاعر اجاء نی یحزی علی الادب ﴿ وافی لیمد حنی والذم من ادبی و جدته منارطا فی لخیتی سفها ﴿ کلا فلحیته عنونها ذنبی در اس استاع جوای ادب کا اظهار کرنے صرف اس لیے آیا کہ میری تعریف کرے جب کہ ذمت میراشیوہ اور طریقہ ہے۔ جمے وہ خشی داڑھی والا ہے وقرف محسوں ہوا، اس داڑھی کا مراتو میری دم لگتا ہے '(۱)۔

ابن ابواصیبعد نے 'عیون الأنباء فی طبقات الاطباء ' میں البیروٹی کی بابت لکھا ہے استاذ ابور بحان محمد بن احمد البیروٹی سندھ کے ایک شہر' بیرون' کی طرف منسوب ہیں۔ علم و حکمت میں ہمہ وقت مشغول رہتے اور علوم نجوم و ہیئت کے طرف منسوب ہیں۔ علم و حکمت میں ہمہ وقت مشغول رہتے اور علوم نجوم و ہیئت کے

⁽۱) حضرت قاسی صاحب نے مختلف مواقع سے تعلق رکھنے والے بعض دوسرے اُشعار بھی البیرونی کے حوالے سے نقل کئے ہیں، جنہیں از را داختصار ترک کردیا گیاہے۔ (ع،ر،بستوی)

زبردست عالم تھے۔علاوہ ازیں طب و حکمت پر بھی اچھی نظرتھی۔ شخ رکیس بوعلی سینا
کے ہم عصر تھے۔ ان دونوں کے جی بحث ومباحث اور مراسلت بھی ہوتی رہتی تھی۔
مجھے ان سوالات کی بابت شخ رکیس کے جوابات ملے ہیں، جوان سے البیرونی نے
کیے تھے۔ ان جوابات میں طب و حکمت کے اہم اور مفید امور زیر بحث آگئے ہیں۔
البیرونی نے دونورزم میں سکونت اختیار کرلی تھی۔

بعدازاں، ابن اصبیعہ نے البیرونی کی تقنیفات کا ذکر کیا اور آخر میں لکھا ہے کہ البیرونی کی وفات ۱۳۳۰ ھیں ہوئی۔

تقویم البلدان میں علامہ ابوالفد اء نے لکھا ہے کہ ابن سعید فرماتے ہیں کہ شہر 'البیرون' کی جانب ابور بیجان بیرونی کی نسبت ہے۔ بیسندھ کا ایک بندرگاہی شہر ہے، جہاں فارس سے نکلنے والا کھارے پانی کا جھیل ہے۔

تاریخ آداب اللغة العربیة میں فرکورے کہ ابور یحان بیرونی متونی مسوقی مسوقی مسوقی مسوقی مسوقی مسوقی مسوقی اسلام محمد بن احمد البیرونی ہے، جو سندھ کے ایک شہر 'بیرون' کی جانب منسوب ہے۔ چالیس سال تک ہندوستان کا سفر کرتا رہا۔ اس دوران اس نے اہل ہند کے علوم وفنون پر کھی اور ترجمہ کی گئی علمی کتابوں کا مطالعہ کرنے کے علاوہ علمائے ہند کے علوم ومعارف ہے بھی دا تفیت حاصل کی خوارزم میں ایک عرصہ تک مقیم رہا۔ اس کو نجوم، ریاضی اور تاریخ سے زیادہ شغف تھا، ان علوم میں اس نے اہم اور بیش قیمت کتابیں ورثے میں جھوڑی ہیں۔ ان کتابوں میں ، زمانے کی دست بردسے محفوظ کتابیں، ورثے میں جھوڑی ہیں۔ ان کتابوں میں ، زمانے کی دست بردسے محفوظ کتابیں، جن کا ہمیں علم ہوسکا، درج ذبل ہیں:

ا-الآثار الباقية عن القرون المحاليه: يركتاب البيرونى في اميرش المعالى كے ليے تاليف كى اس ميں مرقوم كے اپنے اپنے عهد ميں استعال كرنے كى تاريخول، تواريخ كے اصول ومبادى كى بابت يائے جانے والے اختلاف، فروع تاريخ: ماه

وسال معلق اختلا فات،اس كے محركات دعوامل، مشهورايام جشن ومسرت، اوقات واعمال کے نمایاں ایام نیز ان رسوم سے بحث کی گئی ہے، جن سے ایک قوم اعتنا کرتی تھی، دوسری نہیں۔ گویا یہ کتاب علم توقع وتقویم کی قبیل سے ہے، جے فرانسیسی علم كرونوجيا كہتے ہيں۔اس علم ميں،قديم اقوام كى اصطلاحات ميں اختلاف كى بنيادير ماہ وسال اور دن برجھی غوروفکر شامل ہے۔علاوہ ازین ماہ وسال کی بابت اسور یوں، یونانیوں کی عہد اسلام اور اس کے بعد تک کی تاریخ بھی داخل ہے۔ نیز اسلامی غزوات، پھراس بورے عرصے میں'' تقویموں''کے اندر دقوع پذیر تغیر د تبدیکی ، عہد اورشہروں کی تبدیلی کے ساتھ ساتھ، قدیم فارس مہینوں کے نقشے، اس طرح عبرانیوں، زمانه جابلیت اورعبداسلام میں عربوں، رومیوں، ترکوں اور مندوستانیوں کی تقویمات سے بھی تفصیل کے ساتھ بحث، ایک کا دوئرے سے نقابل اور ایک قوم کی تقویم سے دوسری قوم کی تاریخ نکالنے، بادشاہوں کے حالات اور جھزت آدم علیہ السلام سے لے كرنورات مين مذكور حكمرانول يحيع صه حكومت اوراس بابت مختلف اتوال كاتذكره كيا گیا ہے۔ اس کے ساتھ عیسائیت سے پہلے اشوری، کلدانی قبطی اور یونانی بادشاہوں نیز عیسائیت کے بعد کے دورقبل ازعہد اسلام کے شاہان مند، ان شاہان عالم کے مختلف طبقات، اسلام کی آمدے بعد وفات یانے والے شاہ فاری "برد جرد" تک کے تمام بادشاہوں کی مدت بادشاہت بھی بیان کی گئی ہے۔

اس طرح کتاب فدکور میں سالوں کے آغاز، ان کی کیفیات، یہود وغیرہ کے یہاں معیان نبوت کے حالات، ان کی مانے والی بت پرست اقوام، عہداسلام کے مبتدعین، اہل فارس کے میلوں اہل خوارزم کے فرہب ومسلک، ماہ وسال کی بابت مصر کے قبطیوں کے حساب اور کمی بیشی ، ان کی ملکیت اور عیسائیوں کے تہواروں بابت مصر کے قبطیوں کے حساب اور کمی بیشی ، ان کی ملکیت اور عیسائیوں کے تہواروں اور ان کے مختلف طبقات کے حالات بھی فدکور ہیں۔ اس طرح مجوسیوں، صابیوں، زمانہ جاہلیت کے عرب اور زمانہ اسلام میں لوگ جوجشن اور تہوار مناتے ہیں، ان کا زمانہ جاہلیت کے عرب اور زمانہ اسلام میں لوگ جوجشن اور تہوار مناتے ہیں، ان کا

بھی تذکرہ موجود ہے، ان سب کے علاوہ ایسی بہت سی باتیں اس کتاب میں ذکور سے، جو کہیں اور نہیں مل سکتیں۔ انہی خصوصیات کے باعث مشہور جرمن مبتشر ق عالم: "سخاؤ" نے کتاب ہذا کا انگریزی زبان میں ترجمہ کیا۔ اصل کتاب 'لیبسك "میں مداوراس کا انگریزی ترجمہ لندن میں ۹ کا دھیں طبع ہوا۔

۲-تاریخ الهند (کتاب البند)ان موضوع پرعر فی زبان میں بینا درونایاب کتاب به سے اسکا کھیں انگریزی میں ترجمہ کیا۔اصل کتاب لندن میں کے ۱۸۸اھیں، جب کر جمہ کھی اندن ہی سے اس کے ایک سال بعد ۱۸۸۸ھیں شائع ہوا۔

سا-الفہیم لاوائل صناعة التفہیم : مندسہ (انجینئر نگ) فلکیات اور علم نجوم پر یہ ایک مختصر سا دسالہ ہے۔ اس کے چند نسخ برلین ، آکسفورڈ ، برٹش میوزم اور زک یا شا" کی کتابوں کے ذخیرہ میں مصر میں موجود ہیں۔

م - القانون المسعودى فى الهيئة والنجوم: البيرونى في بير تناب سلطان مسعود بن محمود غزنوى كى خدمت ميں بيش كى، اور اس كے نام پر كتاب كا نام بھى ركھا۔ يه كتاب برلين، برلش ميوزيم اور آكسفور دمين موجود ہے۔

۵-اسطرلاب پرایک رساله برلین اور بیرس میں موجود ہے۔

۲-استیعاب الوجوه الممکنة فی صنعة الاسطرلاب: یه کتاب برلین،
 لیژن اور پیرس مین موجود ہے۔

ک- استخراج الأوتار فی الدائرة بحواص الخط المنحنی فیها: اس مین علم مندسه کے کھمسائل فرکور ہیں۔ان مسائل کی بابت البیرونی کے اپنے کچھ منفرداسلوب اور طریقه کار ہیں۔ بید کتاب لندن میں موجود ہے۔

۸-رسالة فى راسيكات الهند: الكاليك نخائل البريك لندن مين موجود - ۹-مبحث فى مبادى العلوم: البيروني نے اسے فارى زبان ميں لكھا-اس كا عربی ترجمہ پیرس موجود --

ا-رسالة في سير سهمي السعادة والغيب: آكسفور أميل بيكاب موجود - اا- كتاب البحماهير في معرفة الجواهر: البيروني ني بيكاب ملكمظم سلطان الوافق مودود بن معود عن محود غزنوي كي كم سي تاليف كي قي بيكاب سلطان الوافق مودود بن معود بن كرابول من موجود - "اسكوريال" اور" زكى ياشا" كي كتابول من موجود --

محمر بن حارث بيلماني مندي

محدبن حسن كشاجم سندهى رملى

ان کا پورا نام یہ ہے: ابوالفتح محد بن حسن بن سندھی بن شا بک، سندھی رملی مشہور شاعر لقب کشاجم ہے۔کاف کی حتی میں ان کا تذکرہ گزر چکا ہے۔

محمد برجس فخر الدين بن معين الدين بجزى اجميري محمد برجس فخر الدين بن معين الدين بجزى اجميري معرازين: حضرت مولانا عبد الحي حني "نزهة المحواطر" مين ان كي بابت رقم طرازين:

شخ صالح محد بن حسن سجزی فخرالدین بن معین الدین اجمیری، ہندوستان کے مشہور ترین شخ طریقت اور بزرگ۔ان کی ولادت اورنشو دنما شہر "اجمیر" میں ہوئی۔ علم وادب اپنے والد بزرگوار سے حاصل کیا اوران کے بعد طریقت اورارشاد وسلوک کی جلیل القدر ذے داری سنجالی۔ یہ نہایت قناعت پند، پاک سیرت، دین دار اور پر بین گار تھے۔ ریاست اجمیر کے ماتحت ایک گاؤں" مائڈل" کی بیخر زمین کو قابل کی شخر زمین کو قابل کاشت بنا کر بھیتی باڑی کی ،جس سے اپنی اورا پنے اہل وعیال کی گر ربسر کرتے تھے۔ کاشت بنا کر بھیتی باڑی کی ،جس سے اپنی اورا پنے اہل وعیال کی گر ربسر کرتے تھے۔ "اخبار الا خیاد" کی روایت کے مطابق ، اپنے والد کی وفات کے ہیں سال بعد تک بیس موئی۔ بیت دیات رہے۔ "دخن بنہ الا ولیاء" کے مطابق ان کی وفات سے بیس ہوئی۔ جب کہ" گزارار براز" بیس ان کی تاریخ وفات پانچ شعبان ۲۱۱ ھندکور ہے۔

محمر بن بن دیبلی شامی

علامہ ابن الجزری نے 'غایۃ النهایۃ ' میں اکھا ہے کہ ابو بکر محہ بن حسین بن محمد دیا منائی قراءت و تجوید کے عالم اور ثقہ تھے۔ انھوں نے قراءت ہارون اخفش کے دو تلافہ ہ محمد بن نصیر معروف بابن ابو مز ہ اور جعفر بن تحدان معروف بابن ابو داؤد سے عرضاً پر بھی۔ ان سے حافظ ابوالحس علی بن دار قطنی اور عبد الباقی بن حسن نے روایت کی۔ ما حب سوائح شخ محمد بن حسین ، چوھی صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ اس کے ایک استاذ ابن ابو داؤد نیسا پوری مؤدب نزیل ومشق کی وفات لیے کہ ان کے ایک استاذ ابن ابو داؤد نیسا پوری مؤدب نزیل ومشق کی وفات لیے کہ ان کے ایک استاذ ابن ابو داؤد نیسا پوری مؤدب نزیل ومشق کی وفات کے ایک استاذ ابن ابو داؤد نیسا پوری مؤدب نزیل ومشق کی وفات

حاكم قندابيل جمد بن خليل

عمران بن موی بن یجیٰ بن خالد بن بر مک جب سنده کا گورنر ہوا تو امیر المونین معتصم باللہ عباسی نے سرحدی علاقوں کی گورنری کا پروانداس کے نام لکھ دیا۔ اس نے بیفر مان ملتے ہی ''قیقان 'کارخ کیا، جہاں زوطی (جائ) رہتے تھے۔
ان سے جنگ کی اور فتح حاصل کی۔ البیضاء کے نام سے آبک شہر بسایا اور اسے
فرجی چھاؤنی بنادیا۔ قیقان سے ''منصورہ '' اور منصورہ سے چل کر پہاڑ پر واقع شہر
''قدائیل'' بہنچا۔ اس شہر پر محد بن خلیل قابض تھا۔ اس نے محد بن خلیل سے جنگ
کر کے بیشہر فتح کرلیا اور شہر کے معزز اور سر برآ وردہ افرادکو''قصدار'' منتقل کردیا۔
جیسا کہ بلاذری نے ''فتو ج البلدان'' میں تصریح کی ہے۔ لگتا ہے کہ عمران کی
پیدائش اور نشو ونما سندھ ہی میں ہوئی تھی۔

محربن رجاء سندهى نيسا بورى

خطیب نے "تاریخ بعداد" میں تحریکیا ہے کہ ابوعبداللہ محمد بن رجاء سندھی نیسا پوری کے والد ما جد محمد بن محمد "سفرائن" کے رہنے والے سے ۔ انھیں نفر بن شمیل اور کی بن ابراہیم سے ساع حدیث حاصل ہے۔ اور خود ان سے ان کے صاحب زاد ہے: محمد ابراہیم اور محمد بن اسحاق بن خزیمہ نے روایت حدیث کی ۔ جج سے واپسی میں بغداد آئے اور حدیث کا درس دیا۔ بغداد میں ان سے اہالیان بغداد بالحضوص ابو بکر بن ابوالد نیا قرشی اور احمد بن بشر مرشدی نے روایت حدیث کی۔ خطیب فر ماتے ہیں کہ ہم سے کی بن محمد بن عبداللہ بن بشر ان سے معدل نے ، ان سے حسین بن صفوان بروی نے ، ان سے عبداللہ بن ابوالد نیا نے ، ان سے محمد کی محمد بن رجاء سندھی نے ، ان سے نظر بن شمیل نے ، ان سے شعبہ نے اور ان سے عبد اللہ بن جبر سے عدی بن رجاء سندھی نے ، ان سے نظر بن شمیل نے ، ان سے شعبہ نے اور ان سے عدی بن جبر سے عدی بن جبر سے عدی بن ابوالد بنا کیا۔ عدی کا بیان ہے کہ میں نے حضر سے میر بن جبر سے عدی بن واب سے دوایت حضر سے عبد اللہ بن عباس رضی اللہ عنہ بیان فر مار ہے ہے ۔

خطیب کہتے ہیں کہ ابن بشران نے ہم سے بدروایت ای طرح موقوفا ہی بیان کیا۔ جب کہ اسحاق بن راہو بداور حمید بن زنجو یہ نے بدروایت نظر بن شمیل اسے مرفوعاً روایت کی ہے۔ ابن بشران کی طرح وکیج نے بھی بدروایت شعبہ موقوفاً ہی روایت کیا ہے۔

نیز لکھتے ہیں کہ مجھ سے محمد بن احمد بن لیفوب نے، ان سے محمد بن نعیم ضی نے، ان سے محمد بن نعیم ضی نے، ان سے ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ صفار نے املاء بیان کیا۔ ضی اور صفار دونوں نے بتایا کہ ہم سے محمد بن رجاء سندھی نے بیان کیا کہ ان سے نظر بن شمیل نے بہ روایت ہشام بن عروہ عن آبیہ عن عائشہ رضی اللہ عنها عن النبی عبد اللہ عنها عن النبی عبد بیان کیا کہ آب صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

"كلكم راع وكلكم مسؤل عن رعيته" تم من برايك حاكم اور بر ايك اين رعيت كاجواب ده ب-

مزیدلکھا ہے کہ میں نے حافظ ابوعلی سے سنا انھوں نے بتایا کہ محمد بن رجاء سندھی نے جج کیا اور حدیث ندکور بغداد میں بیان فرمائی ۔ جب واپس گھر پہنچ اور اپنی یا دواشت پرنظر ڈالی تو اس میں حضرت عائشہ کا نام تحریز بیں تھا، اس لیے انھوں نے اہل بغداد کو تحریری طور پر اس کی اطلاع دی۔ ابراہیم نے مزید بیان کیا کہ میں نے اہل بغداد کو تحریری طور پر اس کی اطلاع دی۔ ابراہیم نے مزید بیان کیا کہ میں نے تھد بن محمد بن امد معدل سے بروایت ما فظ محمد بن مجد الله بن تحد نی سابھوں نے کہا انھوں نے کہا کہ جات کے بیان کیا کہ میں نے حافظ ابوعبد الله محمد بن یعقوب سے سنا انھوں نے کہا کہ وجاء سندھی ، ان کے لڑے : ابوعبد الله اور پوتے ابو بکر ، نتیوں تقداور شبت ہیں۔

محدبن ذكريا صدرالدين ملتاني

نزهة النحو اطريس ان كى بابت لكها ب شخ امام زابد، عابدقد وه، جحت حفرت محد بن زكريا شخ الاسلام صدرالدين قرشى، اسدى ملتانى كاشارمشهوراوليائے كرام ميں

ہوتا ہے۔ ان کی ولادت ''ملتان' میں ہوئی اور وہیں حدورجہ احتیاط، پاک دامنی، عبادت گزاری اور کھانے پینے میں کفایت شعاری کے ساتھ پرورش ہوئی۔وہ آخرتک اسی روش پر قائم رہے۔اپنے والد کے نہایت نیک وصالح جانشین پر ہیز گار،عبادت گزار، به کثرت روزه ریختے، شب بیدار، ہرونت اور ہرحال میں ذکر خذاوندی میں رطب اللسان، ہرحال میں اس سے لولگائے رکھتے ، اس کی حدود، اوامر اورمنہات پر سخق سے عمل بیراتھ۔ دنیاسے ان کی بے رغبتی کاعالم بی تھا کہ والد کے ترکے میں سے جو پھھان کے حصہ میں آیا، وہ سب راہ خدامیں لٹادیا۔اس ترکے میں مکانات، کیٹروں، برتنوں،ساز وسامان اورز مین جائیداد کے علاوہ ستر لاکھ اشر فیاں بھی ملی تھیں ۔مگر انھوں نے بیسارامال، غرباء ومساکین اور دیگر مشحقین میں تقتیم کردیا اور اپنے پاس کچھ بھی نہ رکھا، سواے ان کیٹروں کے جوان کے اور ان کے اہل خانہ کے بدن پر تھے۔اس پران كے كى مريد نے عرض كيا كہ آپ كے والدمحرم نے تو سونے، چاندى، گھوڑے، گائے ، بیل اور مکانات وغیرہ جمع کئے تھے الیک آپ ایک ہی دن میں سب کا سب گنوا بیٹے اور کچھ بھی اپنے یاس ندر کھا۔ یہ بات س کرآپ ہنس بڑے اور پھر کہا کہ میرے والدمحرم ونیایرغالب تھے، اس لیے دنیاان کے یاؤں میں لغزش بیدانہیں کرسکتی تھی، لیکن مجھے ابھی میدمقام حاصل نہیں ہواہے، مجھے اندیشہ تھا کہ کہیں دنیا میرے اوپر نہ غالب آجائے لہذاسب کچھراہ خدامیں کٹا دیانہ

شخ ضاءالدین نے آپ کے تمام ملفوظات ایک کتاب میں جمع کردیے ہیں،
جس کا نام'' کنوز الفواک' ہے۔ شخ حسن بن عالم حینی نے '' نزھة الأرواح'' میں
اس کتاب کی بوی تعریف کی ہے۔ محد بن زکریا ملتانی سے شخ جمال الدین الجی، شخ احد بن محد قندهادی، شخ علاء الدین بخندی، شخ حسام الدین ملتانی اوران کے لڑک ابوالفتح رکن الدین نیز بہت سے دوسر سے علاء ومشائخ نے اکتساب علم وضل کیا۔
ابوالفتح رکن الدین نیز بہت سے دوسر سے علاء ومشائخ نے اکتساب علم وضل کیا۔

الذين آمنوا اذكروا الله ذكراً كثيراً "كَتْحْتُ فرمايا كه جب الله تعالى كى بندے کے ساتھ خیر کام-املہ کرنا جاہتے اور اسے خوش قسمت بنانا جاہتے ہیں تو اسے دل کی ہم آ ہنگی کے ساتھ زبان سے بھی پابندی کے ساتھ ذکر کی تو فیق ارزانی فرمادیتے ہیں اور ذكرباللمان سے رقی دے كرذكر بالقلب كمرج تك پہنچاد ہے ہيں، كراكرزبان مجھی ذکر سے خاموش ہوجا ہے تو دل خاموش نہیں رہتا۔اسی ذکر کو'' ذکر کثیر'' کہاجا تا ہے۔ کیکن بندے کو بیمر تبدای وقت حاصل ہوتا ہے جب وہ اس نفاق حفی سے بالکل یاک صاف ہوجائے جس کی جانب حضور اکرم علیہ نے اپنے ارشاد:"آ کئر منافقی امتی قراؤها"میری امت کے بیشتر منافق، قراء ہوں گے سے، اشارہ فرمایا ہے۔ اس سے مراد غیر اللہ سے تعلق اور غیر اللہ سے لولگانے کا نفاق ہے۔ جب بندے کو ناجائز بھرناپسندیدہ باتوں سے ظاہری کنارہ شی کی توفیق دی جاتی اور گندے اخلاق اور برے خیالات سے اس کے دل کو پاک ومنزہ کردیا جاتا ہے، تب،اس کے قلب میں ذكرالى كانورضوفشال موتائے۔ تاآل كماس كاذكران ذات بارى كےمشاہدے سے بہرہ ورہوجاتا ہے، جس کے ذکر میں وہ مشغول رہتا ہے۔ یہی وہ مقام بلنداور نعمت عظمیٰ ہے جس کے حصول کی خاطر ہرقوم کے اصحاب بصیرت اور ارباب عزم وہمت ہمرونت كوشش كرتے ہيں۔ والله الموفق والمعين۔

محمد بن زياد، ابن الاعرابي سندهى كوفى لغوى

علامہ ابن خلکان اپن مشہور ومعروف تاریخ میں ان کی بابت فرماتے ہیں کہ ابوعبداللہ محر بن زیا دمعروف برابن الاعرابی کوفی عالم لغت، بی ہاشم کے غلاموں میں سے متھے۔ کیوں کہ بیعباس بن محمد بن علی بن عبداللہ بن عبال بن عبدالمطلب رضی الله عنہما کے غلام ستھے۔ ان کے والد: زیا دسندھی غلام ستھے۔ ایک روایت بیہ کہ بیہ بنوشیبان کے غلام ستھے۔ ابن الاعرابی کی بنوشیبان کے غلام ستھے۔ این الاعرابی کی بنوشیبان کے غلام ستھے۔ گربہلی روایت صحت سے زیادہ قریب ہے۔ ابن الاعرابی کی

م تکھ مینگی تھی ،اشعار عرب کے معتبر راوی ،انساب کے متندعالم اور عربی زبان دانی كے جوالے سے دنیا بھر میں چندمشہور ترین علائے گفت میں سے ایک تھے۔ كهاجاتا بكدابل كوفه مين إيها كوئى دوسر المخص ندتها، جس كى روايت ابن إلاعراني كى برنست ابل بصره سے زیادہ ہم آ ہنگ ومماثل ہو۔ ابن الاعرابی مفضل بن محمضی کے بروردہ تھے۔ان کی ماں نے مفضل سے شادی کر لی تھی۔ابن الاعرابی نے زبان وادب كاعلم، ابومعاوية ضرير مفضل في ، قاسم بن معن بن عبدالرحن بن عبداللدين مسعود جنمیں خلیفہ مہدی نے منصب قضاء پر فائز کیا تفااور امام کسائی سے حاصل کیا۔ جب كماين الاعرابي سے ابراہيم حربي، ابوالعباس تعلب اور ابن السكيت وغيره نے بر حا۔ ابن الاعرالي نے كى ايك علمائے لغت سے بحث ومباحثہ كركے انھيں لا جواب كيا اور بہت سے نا قلان لغت كى تغليط كى فريب الفاظ كى بابت ابن الاعرابي امام مانے جاتے تھے۔ان كاخيال تھا كمابوعبيدہ اوراضمعى دونول كوبى زبان اچھی نہیں آتی۔ نیز ان کا یہ بھی خیال تھا کہ کلام عرب میں ضاداور ظاء کے درمیان تعقیب جائز ہے۔ لیکن بھی بھی ضاد کی جگہ ظاءاور ظاء کی جگہ ضاد پڑھنے كسبب مفهوم غلط موجاتا إوراستشها دمين بيشعر يرها كرتاتها:

إلى الله أشكو من خليل أو ده ﴿ ثلاث خلال كلها لى غائض

"شراس دوست كى تين عادتوں كى شكايت الله كرتا موں جس ميس
ميت كرتا موں ، يتيوں عادتيں مجھ غصد دلانے والى إلى "-

این الاعرابی "غائف" ضادی پر صنے اور کہتے کہ فصحائے عرب سے میں نے اسی طرح سنا ہے۔ این الاعرابی کی مجلس میں اکتساب علم کرنے والوں کی آبیک بردی تعداد شریک ہوتی، جنمیں وہ اہلاء کراتے۔ ابوالعباس تعلب کا بیان ہے کہ میں نے ابن الاعرابی کی مجلس دیمیں، اس میں کم وبیش ایک سولوگ شریک ہوتے تھے۔ یہ لوگ اس سے بڑھتے اور دریا فت کرتے تھے اور وہ بغیر کتاب کے انھیں بڑھاتے لوگ اس سے بڑھتے اور دریا فت کرتے تھے اور وہ بغیر کتاب کے انھیں بڑھاتے

اور جواب دیے جاتے۔ نیز بیان کرتے ہیں کہ دس سال سے زیادہ عرصے تک میں ابن الاعرابی کی صحبت میں رہا مگر میں نے اس پورے عرصے میں بھی بھی ان کے ہاتھ میں کتاب نہیں دیکھی۔ جب کہ میں نے دیکھا کہ اس نے اس عرصے میں جتنی با تنی دوسروں کواملاء کرا میں اگر املاء کر دہ ان یا دداشتوں کو یک جا کیا جائے تو کئی ایک اونٹوں کے بار کے برابر ہوجا کیں گی۔ اشعار کے سلسلے میں تو ان سے براعالم کسی نے بھی نہ دیکھا۔ ایک روز اس نے دیکھا کہ ان کی مجلس میں دوآ دی بحث ومباحثہ کررہے ہیں تو انھوں نے ایک سے معلوم کیا تم کہاں کے رہنے والے ہو؟ اس نے بتایا ''استیجاب' کا دوسرے سے بھی یہی معلوم کیا تو اس نے کہا اندلس کا اس نے بتایا ''استیجاب' کا دوسرے سے بھی یہی معلوم کیا تو اس نے کہا اندلس کا اس بے بتایا ''استیجاب' کا دوسرے سے بھی یہی معلوم کیا تو اس نے کہا اندلس کا اس بے بتایا ''استیجاب' کا دوسرے سے بھی یہی معلوم کیا تو اس نے کہا اندلس کا اس بے بتایا دوسرے واستیجاب این الاعرا بی نے بیشعر پڑھا:

نزلنا على قیسیة یمنیة الله نسب فی الصالحین هجان فقالت وارخت جانب الستر بیننا الله لآیة ارض ام من الرجلان فقلت لها: اما رفیقی فقومه الله تمیم واما اسرتی فیمانی رفیقان شتی الف الدهر بیننا الله وقد یلتقی الشتی فیأتلفان مناهده الله الدهر بیننا الله وقد یلتقی الشتی فیأتلفان مناهده الله الدهر بینا الله وقد یلتقی الشتی فیأتلفان مناهده الله الدهر بینا الله وقد یلتقی الشتی فیأتلفان الله الدهر بینا الله وقد یلتقی الشتی فیأتلفان الله وقد یلتقی الشتی فیأتلفان الله وقد یک یاس سے بوا، جو تیکول پس عمده الله و الله

نسب کی مالک ہے۔ اس نے ہمارے درمیان پردہ کا آؤگر کے کہا! بیدونوں آدی کون
ہیں اور کس علاقے سے تعلق رکھتے ہیں؟ میں نے اس سے کہار فیق سفر کی قوم کا تعلق
قبیلہ تمیم سے ہاور میرا خاندان یمنی ہے۔ دومختلف جگہوں کے دوستوں کوز مانہ نے
کی جاکر دیا اور بھی ایہا ہوتا ہے کہ مختلف چیزیں ال کریا ہم مر بوط ہوجاتی ہیں'۔

محد بن زیاد لابن الاعرابی کے امالی میں سے بداشعار بھی ہیں، جنہیں ابوالعباس تعلب نے روایت کیا ہے، ان کا کہنا ہے کہ ابن الاعرابی نے ہمیں پڑھ کرسنایا:

سقى الله حياً دون بطنان دارهم ﴿ وَبَوْرِكُ فَى مُرْدٍ هَنَاكِ وَشِيْبٍ وَإِنَّى وَإِياهُم عَلَى بعد دارهم ﴿ كخمر بماء فَى الزجاج مشوب

ود اللدتعالي نشيى زمين كوچيور كرسارے اور قبيله كوسيراب كرے، وہال كے جوانوں اور بوڑھوں کی عمر میں برکت دے۔وطن کی دوری کے باوجودمیری ان کی مثال اليي ب جيا ايكسيشي من ياني اورشراب"-ابن الاعرابي كي تصنيفات حسب ذيل بين: ا- ستاب النوادر، میخیم اور برسی کتاب ہے۔ ٣- كتاب صفة المخل ٢- كتاب الانوار ٥- كتاب النبات ٣- كتاب صفة الزرع ۷- كتاب تاريخ القبائل ٧- كتاب الخيل ٩- كتاب تفسيرالامثال ٨- كتاب معانى الشعر اا- كاپنسيالخيل 10- كتاب الالفاظ ۱۳- كتاب نوادر بي فقعس ۱۲- كتاب نوادرالزبيرين ١٦٠- كتاب الذباب وغيره

ابن الاعرابی کے حالات وواقعات، نوادراورامالی بہت ہیں۔ الھلب کابیان ہے کہ میں نے ابن الاعرابی سے سناوہ کہدر ہے تھے کہ جس شب حضرت امام اعظم ابوحنیفہ کی وفات ہوئی، اسی شب میری بیدائش ہوئی۔ لیمنی رجب ۱۵ ھیں۔ دوسرا قول سے کہ امام اعظم کی وفات جیسا کہمورخ طبری نے اپنی تاریخ میں لکھا ہے سار شعبان ۱۳۲ھ میں مقام ''سُرّ میں رأی '' میں ہوئی۔ بعض روایات میں آپ کی وفات کی تاریخ ۱۳۲ھ مذکور ہے۔ مگر بہلی روایت سے جے نماز جنازہ آپ کی وفات کی تاریخ ۱۳۲ھ مذکور ہے۔ مگر بہلی روایت سے جے نماز جنازہ تافی احمد بن ابوداؤ دایادی نے بڑھائی۔

اعرابی، اعراب کی جانب منسوب ہے۔ ابو بکر محد بن عزیز سجستانی معروف بہ عزیز کی اس کتاب میں جس میں قرآن کریم کے غریب الفاظ کی تفسیر وتشریح کی ہے، لکھا ہے کہ رجل اعجم اور رجل اعجمی دونوں طرح سے لکھا جاتا ہے۔ جب کہ

ال خص کی زبان میں مجمیت ہوخواہ اس کا تعلق عربوں سے ہی کیوں نہ ہو۔اس طرح رجل مجمی ہے جم کی طرف منسوب ہوتا ہے، چاہے وہ شخص نصیح وبلیغ عربی زبان پر کتنا ہی قادر ہو۔اورا گرکوئی شخص بدوی ہوچا ہے اہل عرب میں سے نہ ہو،اسے اعرابی کہاجاتا ہے۔اس طرح رجل عربی اہل عرب کی جانب منسوب ہے چاہے، وہ بدوی نہ ہو۔

خطیب بغدادی نے تاریخ بغداد میں تصریح کی ہے کہ محر بن زیادہ ابوعبداللہ مولی بنو ہاشم معروف بدابن الاعرابی عظیم لغوی عالم سے، بوری دنیا میں چند گئے پینے علائے لغت میں ان کا شارتھا۔ لغت والی میں مرجع ومصدر سے، انھیں لغات بہت یا دستے۔ کہا جا تا ہے کہ اہل کوفہ میں ایسا کوئی عالم نہ تھا، جو ابن الاعرابی سے زیادہ اہل بعرہ کی روایت سے قریب اور مشابہ ہو۔ ابن الاعرابی کا خیال تھا کہ اسمی اور بعرہ کو اچھی اور فضیح عربی زبان بالکل نہیں آتی تھی۔ ابن الاعرابی نے شخ ابو معاویہ مربع میں اسحاق حربی، اور ایسان الاعرابی سے ابواسحات ابراہیم بن اسحاق حربی، ابوالحباس تعلب، ابوعکر مہتی اور ابوشعیب حرانی نے روایت کی۔

نیز لکھا ہے کہ ابن الاعرائی تقد ہے۔ مزید فرماتے ہیں کہ ہم سے حسن بن الا بحر نے بیان کیا، وہ کہتے ہیں کہ ہم سے ابوجعفر احد بن یعقوب بن یوسف اصبائی خوی نے ذکر کیا کہ جہاں تک ابوعبد اللہ محمد بن زیاد اعرائی کی بات ہے تو ان کا وہ ی انداز تھا جو اس سے پہلے کبار محد ثین، دیگر علاء اور فقہا کا رہا ہے۔ ابن الاعرائی کو لغات، جنگوں اور انساب کا سب سے زیادہ علم تھا۔ مجھ سے ابوعبد اللہ بن عرف اور بعض دوسر ے علاء نے بتایا کہ ابوالعباس بن کی نے بیان کیا کہ مجھ سے ابن الاعرائی نے ذکر کیا اور کہا احمد! تمہارے آنے سے پہلے میں نے ان لوگوں کو ایک اونٹ کے بوجھ ذکر کیا اور کہا احمد! تمہارے آنے سے پہلے میں نے ان لوگوں کو ایک اونٹ کے بوجھ کے بدقد ربا تیں الماء کرا کیں۔ ابوالعباس کا مزید بیان سے کہ لخات اور حفظ لغات کا علم ابن الاعرائی کو فات ہوگئی اور ہم ان کی کتابیں خرید نے کغرض سے گئے تو ہم نے دیکھا الاعرائی کی وفات ہوگئی اور ہم ان کی کتابیں خرید نے کی غرض سے گئے تو ہم نے دیکھا الاعرائی کی وفات ہوگئی اور ہم ان کی کتابیں خرید نے کی غرض سے گئے تو ہم نے دیکھا

کهان کی ساری کتابوں میں فتحہ کےعلاوہ کوئی دوسرااعراب نظرنہ آیا۔ الگ الگ کاغذات اور بوسیدہ ٹکڑوں پرلکھی ہوئی ہیں۔ بھی ابن الاعرالی

کے ہاتھے میں کوئی کتاب ہیں دیکھی گئی، ابن الاعرابی نہایت تقداور معتبر تھے۔

قطی ہی کابیان ہے کہ ابوداؤد نے ابن الاعرابی ہے معلوم کیا کہ کیا آپ کے علم میں ہیں ہے کہ استولی 'استولی کے معنی میں بھی آتا ہے؟ کہا میر علم میں نہیں ہے ۔ ابوداؤد کے حوالے ہے منقول ہے کہ اتحوں نے کہا ایک دوزہم ابن الاعرابی کے پاس بیٹھے تھے کہ ایک شخص نے آکر کہا ابوعبداللہ! ارشاد خداوندی ''الگر حسن علی العوشِ استوی ''کا کیا مطلب ہے؟ جواب دیا کہ اللہ تعالی عرش پر ہیں جسیا کہ اس نے خودہی اس آیت میں بتایا ہے۔ اس شخص نے کہا ابوعبداللہ! ایرانہیں جسیا کہ اس نے خودہی اس آیت میں بتایا ہے۔ اس شخص نے کہا ابوعبداللہ! ایرانہیں ہے، بلکہ استوکی کامفہوم'' استولی '' ہے۔ اس پر ابن الاعرابی نے کہا خاموش! محصی اس کے بارے میں کیا علم؟ اہل عرب کسی کی بابت' استولی علی الشی'' ای وقت کہتے ہیں جب اس کا کوئی مدمقابل بھی ہو۔ ان دونوں میں غالب آجا ہے اس نیس ہے۔ وہ تو اپنے عرش پر ہے، جیسا کہ اس نے خودہی بتایا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو نہیں ہے۔ وہ تو اپنے عرش پر ہے، جیسا کہ اس نے خودہی بتایا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو ایک دوسرے برغلبہ یائے کے بعدہی استعال کیا جا تا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو ایک دوسرے برغلبہ یائے کے بعدہی استعال کیا جا تا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو کیا دوسرے برغلبہ یائے کے بعدہی استعال کیا جا تا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو کے بعدہی استعال کیا جا تا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو کے بعدہی استعال کیا جا تا ہے۔ استیلاء کا لفظ تو کے بعدہی استعال کیا جا تا ہے۔

علامہ ابن النديم ' الفھر ست ' ميں رقم طراز ہيں کہ ابوالعباس تعلب کابيان ہے کہ ميں نے ابن الاعرابی کی مجلس ديھی ہے۔ اس ميں تقريباً ايک سولوگ شريک ہوتے ہے۔ ابن الاعرابی سے بيلوگ پڑھتے اور سوالات بھی کرتے ہے اور وہ بغير کسی کتاب کے دیکھے جوابات دیتے۔ ميں دس سال سے زيادہ عرصے تک ابن الاعرابی کی خدمت ميں رہا، مگر ان کے ہاتھ ميں بھی کوئی کتاب ہيں دیکھی۔ ابن الاعرابی کی خدمت ميں رہا، مگر ان کے ہاتھ ميں بھی کوئی کتاب ہيں دیکھی۔ ابن الاعرابی کا انتقال مقام ' سُرُ من د أی ' ميں ہوا۔ اس وقت ان کی عمراس سال سے تجاوز کر گئی تھی۔ ابوالعباس کہتے ہیں کہ ابن الاعرابی نے لوگوں کو آتی ہا تیں اللاء کرائی تجاوز کر گئی تھی۔ ابوالعباس کہتے ہیں کہ ابن الاعرابی نے لوگوں کو آتی ہا تیں اللاء کرائی

میں کہ انھیں اگر یک جاکر دیا جائے تو کئی اونٹوں کے اوپر لا دکر لے جائی جائیں گ۔
اشعار میں تو ان سے بردھ کر کوئی دوہرا نظر آیا ہی نہیں۔ انہی کا بیان ہے کہ ابن
الاعرابی نے قاسم بن معن سے پڑھا اور مفضل بن محمد سے اعا پڑھا۔ ابن الاعرابی
بیان کرتے تھے کہ وہ مفضل کے پرورش کر دہ ہیں جن سے میری ماں نے بعد میں
نکاح کرلیا تھا اور یہ کہ میں نے ابن الکوئی کے خط میں پڑھا۔ ابوالعباس کہتے ہیں کہ
تعلب نے بیان کیا کہ میں نے ۱۲۵ ھیں ابن الاعرابی سے سناوہ کہدرہ سے کہ
جس شب میں امام ابو حفیہ کی وفات ہوئی ، اسی شب میں میری پیدائش ہوئی۔
اعرابی کی وفات اس میں ہوئی کی عمرا کیا ہی سال جا رماہ اور تین دن ہوئی۔

محرین نے ''مصحم البلدان' میں ابن الاعرابی کی بابت لکھا ہے کہ ابوعبداللہ محرین زیاد معردف بداین الاعرابی ، بنو ہاشم کے غلام ستھے، کیوں کہ عباس بن محرین علی بن عبداللہ بنو ہاشم کے علام ستھے، کیوں کہ عباس بن محرین علی بن عبداللہ اللہ المطلب کے موالی میں سے ستھے۔ان کے والد: زیاد سندھی نزاد غلام ستھے۔

 استاذا حمامین نے "ضحی الإسلام" میں کھا ہے کہ ہندی الاصل مشہور علائے لفت میں سے ایک ابن الاعرابی ہیں۔ان کے والد زیاد سندھی غلام ہے۔
ابن الاعرابی لفت، ادب عربی اور اشعار عرب کے علائے اعلام میں سے ایک ہے۔ انھوں نے لوگوں کو اتنی با تیں الملاء کرا میں کہ اگر انھیں یک جا کیا جائے تو گئی اونٹ راٹھوں نے لوگوں کو اتنی با تیں الملاء کرا میں کہ اگر انھیں سے جا کیا جائے تو گئی اونٹ پرلادی جا میں گی علاوہ ازیں بہت ی کتابیں تھنیف کیں۔ بہت سے المل علم نے ان کے سامنے زانو سے تلمذ تہد کیا۔ جن میں سب سے زیادہ مشہور تعلیب اور ابن السکیت ہیں۔ گر ابن الاعرابی کی بھے ہی کتابیں ہم تک بھی سیسی جو یہ ہیں ۔ کتویں السکیت ہیں۔ گر ابن الاعرابی کی بھی تی کتاب ، گھوڑوں کے نالوں اور ان کے نسب پرایک کتاب ، گھوڑوں کے نالوں اور ان کے نسب پرایک کتاب ، تھوڑوں کے نالوں اور ان کے نسب پرایک کتاب ، تھوڑوں کے نالوں اور ان کے نسب پرایک کتاب ، نیز ان کی ایک کتاب ، میں الانواز "ہے۔

احرامین نے دوسری جگہ کھا ہے کہ اہل کوفہ میں طبقہ قراء سے تعلق رکھنے والوں میں ایک محر بن زیاد معروف بدابن الاعرائی بھی ہیں۔ ان کے والد "اعرائی" نہ سے جیسا کر" این الاعرائی" ہے بھی میں آتا ہے، بلکہ سندھی غلام سے ان کا لقب" ابن الاعرائی" اس لیے بڑا کہ اہل عرب کسی بھی ایسے شخص کو جو بدوی ہوخواہ عربی نہ ہو "رجل اعرائی" کہدویا کرتے ہیں۔ ای طرح "درجل عربی" اس شخص کو کہا جاتا ہے جو اہل عرب میں سے ہو، خواہ بدوہی کیوں نہ ابن الاعرائی علم نحوم میں بہت مشہور ہیں دیم بی زبان کے کہا دائمہ میں شار ہوتے ہیں۔ اس کے علاوہ عربی اشعار کے بہت برے رہی دیا وی سے ان کا حافظ بڑاز بردست تھا، جیسا کے اسمعی کابیان ہے۔

محربن عبدالله سندهى بفرى

ابوالحن محر بن عبدالله سندهی بصری سے ابوالحن احمد بن عبدالله بن جعفر بن محمد بصری کلائی نے روایت کی۔

حموی نے ان کا تذکرہ شہر بھر ہ کے ایک مطے اور مارکیٹ "کلاء" کے ضمن

میں کیا ہے۔اس کے علاوہ راقم سطور کوان کی بابٹ کچھ معلوم نہ ہو سکا۔اندازہ ہے کہ بیتیسر کی صدی ہجری کے تھے۔(تاض)

محمر بن عبداللدديبلي شامي ابوعبداللدزام

علامداین الجوزی نے "صفة الصفوة" بیل کھاہے کہ" دیبل" کے چیرہ دچنیدہ لوگوں میں سے ابوعبداللہ دیبلی بھی ہیں۔ نیز لکھاہے کہ ہم سے محمد بن ابومنصور نے ، ان سے حسین بن احمد فقیہ نے ، ان سے بلال بن محمد نے ، ان سے جعفر خلدی نے ، ان سے احمد بن سروق نے اور ان سے محمد بن منصور طوی نے بیان کیا کہ میں نے ساکہ ابوعبداللہ دیبلی فرمار ہے بھے کہ مجھ سے بعض احباب نے بات کی اور کہا کہ میں اپنے اہل فاند کے لیے کوئی گھر خرید لول۔ چنان چہ میں نے ایک گھر خرید لیا۔ اللہ درب العزت نے مجھ کے ، میرے ایک دوست نے آج شب فلال جگہ یہاں سے اتنی مسافت پر مجود کا پچھا کے ، میرے ایک دوست نے آج شب فلال جگہ ، یہاں سے اتنی مسافت پر مجود کا پچھا کے ، میرے ایک دوست نے آج شب فلال جگہ ، یہاں سے اتنی مسافت پر مجود کا پچھا کے ، میرے ایک دوست نے آج شب فلال جگہ ، یہاں سے اتنی مسافت پر مجود کا پچھا کے ، میرے ایک دوست نے آج شب فلال جگہ ، یہاں سے اتنی مسافت پر مجود کا پی اس سے بیغام شیح دیا کہ میر اباز دوکاٹ دیا گیا ہے ، لبذا میرے لیے دعا کریں۔ اس کے بعد انصول نے کی ہوئی جگہ سے جوڑ بھیجا، میں نے اسے لوٹادیا دوراسے پھاڑ دیا اور اللہ تعالی نے میری سابقہ حالت ، عالی کردی۔

علامه ابن الجزرى بي "غاية النهاية في طبقات القراء" من الكها على معرفا وقراءة محد بن عبدالله ابوعبدالله ديبلى في علم قراءت جعفر بن محد بن سقيط عيم ضا وقراءة حاصل كيا اور حروف كي روايت ، عبدالرزاق بن صن اورسكن بن بكرويه سي ك سبكى في "في في من محدد يبلى كة تذكر مين الكها به كه مين في في في من محدد يبلى كة تذكر مين الكها به كه مين في ان كي كتاب كي بعض شخول بريد لكها بهوا و يكها كدوه "سبط المقرى" بين مين في ان كي كتاب كي بيال" المقرى" بين على المقرى "بين عبد كدالل ديبل كي بيال" المقرى "كي القب سيدوا وي مشهور بين : مقرئي شام جب كدالل ديبل كي بيال" المقرى "كي لقب سيدوا وي مين مقرئي شام بين الوعبد الله ديبلى اوراحم بن محمد الذي سيدونون بي تيسرى صدى بجرى كاس ياس كي الوعبد الله ديبلى اوراحم بن محمد الذي سيدونون بي تيسرى صدى بجرى كاس ياس كي

بیں گرشاید سبط المقری میں المقری سے ابوعبد اللہ دیم المقری میں المقری سے ابوعبد اللہ دیم المقری میں المقری میں محمد بن سندھی میں

محربن سندهی کی، مشہور مغنی: اسحاق موصلی کے معاصر تھے اور خود بھی مغنی اور شاعر تھے۔ ابوالفرج اصفہانی نے اپنی کتاب ''الا عانمی '' میں درج ذیل اشعار تقل کرنے کے بعد لکھا ہے کہ بعض حضرات کا کہنا ہے کہ بیا شعار محمد بن سندهی کی کے بین، جنہیں اس نے اسحاق موصلی کی موجودگی میں ترنم کے ساتھ پڑھ کر سنایا تھا۔ تو اسحاق نے اس سے حاصل کیا:

یا ابا الحارث! قلبی طائر الله فاستمع قول رشید موتمن لیس حب فوق ما احببتکم فله غیر ان اقتل او استجن حسن الوجه، نقی لونه فله طیب النشر، لذیذ المحتضن "ابوالحارث! میرادل پرنده ب، سوتم ایک، نیک امانت دار شخص کی بات بغور سنوی تبهاری محبت کے بعد میر نزد یک اس سے برا صرکوئی چیز بیاری تبیس کہ میں تمل بوجاوس یادیوان دیر همین، رنگ صاف سخم ا، خوشبو یا کیزه اور گودالذین "

صاحب تذکره دوسری صدی ججری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (تاضی)

محربن عثمان لا مورى جوز جاني

"نزهة المحواطر" میں ان کی بابت لکھا ہے: شخ فاضل محمہ بن عثمان بن ابراہیم بن عبرالخالق جوز جانی امام سراج الدین بن منہاج الدین نقہ اور دوسر معلوم عربیہ میں با کمال عالم سے ان کی بیدائش "لا ہور" میں اور نشو ونما" سمر قند" میں ہوئی۔ انھوں نے اپنے دور کے اسا تذہ علم فن سے اکتماب علم کیا۔ بعد میں امراء و حکام سے قریب ہوگئے۔ چنال چہ سلطان شہاب الدین غوری نے سام کے میں لا ہور میں فوج کی قضا کا عہدہ انھیں دیا، جس پر ہے کئی سال تک فائز رہے ۵۸۹ ھیں بہاء الدین

سام بن محد بامیانی نے انھیں 'بامیان' طلب کر کے قاضی القصاۃ کا منصب تفویض کیا اور بامیان کے مدرسین کا نگرال مقرر کیا۔ نیز جملہ شری منصب: خطابت، اختساب اور قضاء وغیرہ انھیں تفویض کر دیے۔ ان کا تذکرہ ان کے صاحب زادے : عثمان بن محمد بن عثمان جو زجانی نے اپنی کتاب 'خطبقات ناصری' میں کیا ہے۔ اسی طرح نورالدین عوفی نے بھی اپنی کتاب 'طبقات ناصری' میں ان کا تذکرہ کیا ہے۔ نیزان کورالدین عوفی نے بھی اپنی کتاب 'لباب الألباب' میں ان کا تذکرہ کیا ہے۔ نیزان کے علم فضل اور شرافت و نجابت کی تعریف بھی کی ہے۔

محر بن عبدالو بإب فزوین نے "لباب الألباب" پراپی تعلیقات میں لکھا عبے کہ تاج الدین کی جس وقت "سیستان" کے حاکم سے جنگ ہوئی ،اس وقت اس نے محر بن عثمان جوز جانی کو خلیفہ ناصر لدین اللہ عباسی کے پیاس بغداد سفیر بنا کر بھیجا تھا۔ دو سری مرتبہ غیات الدین بلبن نے انھیں سفیر بنا کر بغداد بھیجا۔ جب بیدو سری مرتبہ بغداد سے واپس آتے ہوئے" مکران" پہنچے تو وہیں اجیا تک ان کی وفات ہوگئی۔۔یہ واقعہ ۹۹ھے کے بچھ ہی دنوں بعد پیش آیا۔

محداول بن عبدالتدسلطان مالديب

شخ مح سعید دیدی بن فقیہ حسین صلاح الدین بن موی دیدی از ہری مالدی اپنی کتاب "فیح مح سعید دیدی بن فقیہ حسین صلاحین محلایب "میں لکھتے ہیں کہ یہ سلطان محداول بن عبداللہ ہے۔ اس نے سر پر آ رائے سلطنت ہونے کے بارہ سال بعد ماہ رہتے الاول ۲۸۸ ھیں اسلام قبول کیا۔ اس کے بعد کے حالات بالکل معلوم نہیں قبول اسلام کے بعد بھی یہ بارہ سال تخت سلطنت پر متمکن رہا، اس طرح اس کی مدت بادشا ہت مجموعی طور پر بجیس سال ہوتی ہے۔ بارہ سال بت برسی کے زمانے میں اور تیرہ سال قبول اسلام کے بعد۔ اس حیاب سے یہ ۱۳۵ ھیں بادشاہ بنا ہوگا، جیسا کے علامہ تاج الدین نے بھی ذکر کیا ہے۔ بادشاہ جیسا کے علامہ تاج الدین نے بھی ذکر کیا ہے۔

جب کہ مشہور سیاح ابن بطوطہ نے اپنے سفر تا ہے جس ۵۴۸ ہے میں اسلام قبول کرنے والے سلطان کا نام 'احمر شنورازہ'' لکھا ہے۔ مگر دونوں میں کوئی تضاربیں کہ بیہ دونوں ایک ہی تضاربیں کہ بیہ دونوں ایک ہی خص کے دونام تھے۔ سلطان احمر شنورازہ نہایت دین دارہ صالح ، جری ، بارعب، رعایا میں ہر دل عزیز اور فقراء ومساکین سے محبت کرنے والاتھا۔ بیاسی شاہی خاندان کا فردتھا، جس میں سولہ سلطان ہوئے ،آخری سلطان کا نام داؤ دھمنی ہے۔

قاضی حسن تاج الدین کی تاریخ مالدیپ میں ندکور ہے کہ تحد بن عبداللہ نے (جے محد درمونت) بھی کہا جاتا ہے، اپنی سلطنت کے بارہ سال بعد مشہور عالم وصوفی حضرت مش الدین تبریز کی کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا۔لیکن میہ بات ابن بطوطہ کی تضریح کے خلاف ہے۔ ابن بطوطہ دورانِ سیاحت مالدیپ سلطان محمد جمیل کے دور سلطنت میں پہنچا ہے۔

ابن بطوط یہاں منصب قضاء پر بھی رہااور مالدیپ کے ایک معزز اور سربر آوردہ شخص کی لڑکی ہے اس کی شادی ہوئی، جس ہے ایک لڑکا بھی پیدا ہوا۔ چند سال قیام کرنے کے بعد ابن بطوط مالدیپ ہے روانہ ہوکر اگلی منزل کے لیے عازم سفر ہوگیا۔
اس دوران اس نے جو بچھ دیکھا، دوسروں سے سنا اور مالدیپ میں اس کی آمد سے روانگی تک جو بھی حالات رونما ہوئے ،اس نے سیاحوں کی عادت کے مطابق سب بچھ قلم بند کرلیا، اس نے اس عرصے میں پیش آنے والی معمولی اور چھوٹی سے چھوٹی بات تک کونظر انداز نہ کیا، بلکہ ساری با تیں اپنی مشہور زمانہ کتاب 'سفر نامدا بن بطوط نہ میں درج کردیں۔ اس میں ابن بطوط نے سلطان محمد درمونت کے قبول اسلام کی بابت درج کردیں۔ اس میں ابن بطوط نے سلطان محمد درمونت کے قبول اسلام کی بابت ایک بجیب وغریب واقعہ ذکر کیا ہے۔ یہ واقعہ مقامی لوگوں نے اس سے بتایا۔

اس نے لکھا ہے کہ اسلام لانے سے پہلے اس سلطان کا نام ''احمد شنورازہ'' تھا۔اس نے شخ ابوالبر کات بربری مالکیؒ کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا۔ نیز یہ کہ جس زمانے میں ابن بطوطہ مالدیپ پہنچا ہے،اس وقت تمام اہل مالدیپ مالکی ند ہب ہی کے پیرہ کار تھے۔ان دونوں تاریخوں سے ایسا لگتا ہے کہ اہل مالدیپ کے یہاں الیک کوئی مدون ومرتب تاریخ نہیں تھی جس میں مالدیپ کے حالات درج ہوتے۔ نہوز ذمانہ شرک میں اور نہ ہی جب وہ اسلام لے آئے ،اس کے بعد ہیں۔ای طرح متعدد صدیاں گذر گئیں۔البتہ سلاطین مالدیپ کے نام ضرور مدّ ون تھے، نیز ان کے سریر آرائے سلطنت ہونے اور وفات کی بھی تاریخیں مرتب تھیں۔ بیاجتمام سلطان محمد در مونت کے قبول اسلام کے بعد شروع کیا گیا۔ یہی وجہ ہے کہ قاضی حسن تاج الدین نے اپنی کتاب میں گزشتہ زمانوں میں پیش آمدہ کسی بات کوذکر نہیں کیا، بلکہ صرف سلاطین مالدیپ کے ناموں اور بعض ان واقعات ہی سے تحرض کیا ہے جو بلکہ صرف سلاطین مالدیپ کے ناموں اور بعض ان واقعات ہی سے تحرض کیا ہے جو بلکہ صرف سلاطین مالدیپ کے ناموں اور بعض ان واقعات ہی سے تحرض کیا ہے جو بلکہ صرف سلاطین مالدیپ کی زبان زد تھے۔ اس وقت بانچا؟ اس کی بنیادی وجہ بھی ان کے یہاں مدق ناتوں تاریخ کا فقد ان ہے۔

ابن بطوطہ مالدیپ دوسری مرتبہ سلطانہ ہند کہادگلع کے شوہر عبداللہ کلع کے دورا ہارت میں آیا، مگر اس وقت صرف معدود ہے چند دن ہی مالدیپ رہا۔ ابن بطوطہ نے اپنے سفرنا ہے میں جو بات کھی ہے، وہی قرین قیاس اورصحت سے زیادہ قریب معلوم ہوتی ہے۔ (واللہ اعلم) کیوں کہ مالدیپ آ مدکا اس کا زمانہ، سلطان محد درمونت کے زمانہ قبول اسلام سے زیادہ قریب ہے۔ جب کہ قاضی حسن تاج الدین نے اپنی کتاب، ابن بطوطہ کی مالدیپ آ مدکے تین سوانتا لیس سال بعداور سلطان محد درمونت کے عہد باوشا ہت کے پانچے سوپنیتیس سال بعداس وقت تالیف سلطان محد درمونت کے عہد باوشا ہت کے پانچے سوپنیتیس سال بعداس وقت تالیف سلطان محد درمونت کے عہد باوشا ہت کے پانچے سوپنیتیس سال بعداس وقت تالیف کی ، جب مالدیپ کا تعلم داں سلطان محمد بن الحاج علی تکلی بن قاضی کمیر بن قاضی محمد اطوی تھا۔ انھوں نے اپنی کتاب میں اس امر کی بھی صراحت کی ہے کہ سلطان محمد میں کوہی وزیر جمال الدین بھی کہا جا تا تھا۔

تحفۃ الادیب کے شروع میں جو گوشوارہ دیا گیاہے، اس میں تصریح ہے کہ محمد

الاول نے ۱۹۸۸ ه میں اسلام قبول کیا۔ اس وقت وہ بالدیپ کا بادشاہ تھا اور وفات الاول نے ۱۹۸۸ ه میں اسلام قبول کیا۔ اس وقت وہ بالدیپ کا ۱۲۵ ه میں ہوئی۔ اس کی مدت بھم رانی تیرہ سال رہی۔ متقد مین اہل مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب ' سری بون ادیت مہاردن' تھا۔

ابن بطوطہ نے لکھا ہے کہ جھ سے بچھ تقہ اور معزز اہالیان الدیپ مثلاً: فقیہ عیسیٰ یمنی، فقیہ معلم علی، قاضی عبراللہ اور دیگر متعدد لوگوں نے بیان کیا کہ ان جزائر کے باشند ہے سارے کے سارے کا فرومشرک تھے۔ اس وقت ہر ماہ ایک دیو ہیکل جن سمندر کی طرف سے آتا، ایبا لگتا جیے وہ قند بلوں سے جگمگاتی ہوئی کوئی شتی ہو۔ اہل مالدیپ کامعمول تھا کہ جب وہ اس عفریت کود کھتے تو ایک کنواری لڑکی کو بناسنوار کے اس ''بت خانے'' میں داخل کردیتے۔ یہ بت خانہ ساحل سمندر پر بنا ہواتھا۔ اس میں ایک روشن دان بھی تھا۔ اس لڑکی کو بت خانے میں ہی رات کو چھوڑ دیتے، پھر جب صبح کو آتے تو وہ آئیس مردہ ملتی۔ وہ لوگ ہر ماہ قرعدانداذی کرتے، دیتے ، پھر جب صبح کو آتے تو وہ آئیس مردہ ملتی۔ وہ لوگ ہر ماہ قرعدانداذی کرتے، حس کے نام کا قرعد نکتا، اسے اپنی لڑکی دینی ہوتی تھی۔ پھر ایسا ہوا کہ مراکش کا ایک مخص جس کا نام '' ابوالبر کات بر بری' تھا، مالدیپ آیا۔ یہ قرآن کریم کا حافظ تھا۔ اور'' جزیرہ ہمل'' آج کل اسے'' مائے' کہا جاتا ہے، کہی مالدیپ کی راجدھانی بھی ہے، میں ایک بوڑھیا کے مکان پر فروکش ہوا۔

ایک روزیشخص بوڑھیا کے گھر میں اندر گیا تو دیکھا کہ سمارے اہل خانہ گریہ وزاری کررہے ہیں۔ اس نے صورت حال جانے کی کوشش کی، مگر گھر کی عورتیں اے سمجھانہ کیس۔ایک ترجمان کو بلایا گیا۔اس نے بتایا کہ اس ماہ قرعہ ای بڑھیا کے نام نکلا ہے اور اس کی صرف ایک ہی لڑک ہے جے وہ جن یقیناً قتل کردے گا۔یہ ماجرا سن کر ابوالبر کات مراکشی نے اس بوڑھیا ہے کہا تیری لڑکی کے عوض میں خود آج رات بت خانہ جاؤں گا۔ یہ خفس خوب صورت اور بے ریش تھا۔ چنال چہلوگوں نے اس رات اسے بت خانہ جاؤں گا۔ یہ تال کردیا۔ یہ خفس خوب صورت اور بے ریش تھا۔ چنال چہلوگوں نے اس رات اسے بت خانہ جاؤں گا۔ یہ تیں داخل کردیا۔ یہ خفس کی بہلے سے باوضو تھا، اس لیے تلاوت

قرآن میں مشغول ہوگیا۔ بت خاند کے روش دان سے جن نکلا ،مگر میلی حالہ تلاوت كرتار ما _ جب اتنى دورى يرجن بهنيا، جهال سے تلاوت كى آواز سناكى ديے لكى تو سمندر میں ڈوب گیا۔ بیمراکشی ای طرح مبح تک تلاوت کرتار ہا۔ مبح کو بوڑھیا،اس كابل خانداورجزيره كےدوسرے تمام باشندے آئے تاكد حسب معمول اوكى كونكال كراسے نذراتش كرديں۔ جب بت خانے كاندر كئے توديكھا كرمراكشي نوجوان حلاوت كررما ہے۔ بيلوگ اسے اپنے بادشاہ كے ياس لے كر گئے، جس كانام '' شنوراز '' تھا اور سارا واقعہ اس سے بتایا۔ بادشاہ کو بہت جیرت واستعجاب ہوا۔ اس مراکشی نے بادشاہ کے سامنے اسلام کو پیش کیا اور قبول اسلام کی ترغیب دی۔اس پر بادشاه نے کہا کہتم ہمارے یہاں ایک ماہ تک مزیدرہو، جیسے تم نے اس بار کیا، اگر ایسے ہی اگلے ماہ بھی کردکھایا اور جن ہے نیچ گئے تو میں مسلمان ہوجاؤں گا۔ چناں جہ نوجوان رک گیااوراللدنے بادشاہ کا دل اسلام کے لیے کھول دیا۔ مہینہ بورا ہونے سے تہلے ہی وہ مسلمان ہوگیا۔ای کے ساتھ اس کے جملہ اہل خانہ،آل اولا داوراس کے اعوان سلطنت بھی اسلام میں داخل ہو گئے۔ جب الکے مہینے کی وہ متعینہ تاریخ آئی تواس مراکشی کو پھر بت خانے میں داخل کیا گیا، لیکن اس بارجن آبا ہی نہیں اور مین تک تلاوت میں مشغول رہا مین کوسلطان مالدیپ اور اس کے سارے لوگ آئے توانھوں نے دیکھا کہمراکشی تلاوت کررہا ہے۔ چنال چدانھوں نے اپنے ہی ہاتھوں سے بتوں کوتو ڑ ڈالا، بت خانے کومنہدم کردیا۔ جزیرہ ''مالے' کے تمام باشندوں نے اسلام قبول کرلیااور انھوں نے دوسرے جزیرے والوں کے پاس بھی پیغام بھیجا، چنال چہ وہ سب کے سب مسلمان ہو گئے۔

اس کے بعد بھی بیمراکشی نوجوان مالدیپ میں رہااوراس کاسب کے دلوں میں برااعز از واحتر ام رہااور انھوں نے بھی اس مسلک مالکی کواختیار کرلیا، جواس کا مسلک تھا۔ اس وجہ ہے اہل مالدیپ تا ایس دم بقول ابن بطوط اہل مراکش کی بہت تعظیم

کرتے ہیں۔اس مراکشی نے ایک مبحد بھی بنائی جو مالدیپ میں بہت مشہور ہے۔ میں اس مبحد کے گئاور ہے پر دیکھا کہ لکڑی پریتی حریک نندہ ہے: سلطان احمد شنورازہ نے ابوالبر کات بربری مراکشی کے ہاتھ پر اسلام قبول کیا۔ قبول اسلام کے بعد سلطان احمد شنورازہ نے تمام جزیروں ہے لیکس وخراج کی جملہ آمدنی کا ایک تہائی حصہ مسافروں سے لیے وقف کردیا، کہا یک مسافر کے ہاتھوں ہی اس نے اسلام قبول کیا تھا۔

این بطوطہ نے لکھا ہے کہ:

اس جن کی وجہ سے قبول اسلام سے پہلے ان جزیروں کے بہت سے
باشند ہے ہلاک وہربادہو چکے تھے، جب میں مالدیپ گیا تو جھے اس بات کامطلق
کوئی علم نہ تھا۔ ایک شب میں کوئی کام کرد ہاتھا کہ میں نے سنالوگ برآ واز بلند تکبیر
وہلیل پڑھ رہے ہیں۔ بچ سروں پرقر آن شریف اٹھائے ہوئے اور خوا تین تانب
کے برتن بجارہی ہیں۔ بید کھی کر جھے تعب ہوااور میں نے پوچھا یہ کیا ہے؟ کہنے گئے
کیا سمندر کی جانب نہیں و یکھا؟ جب میں نے سمندر کی طرف و یکھا تو کیا و کھتا
ہوں کہ جیسے ایک بڑی شتی ہواور اس کے چاروں طرف قندیل اور چراغ ہی چراغ
جول رہے ہوں۔ لوگوں نے بتایا کہ بہی عفریت اور جن ہے۔ اس کی عادت ہے کہ
جراہ واک مرتبہ باہر نکاتا ہے اور جب ہم اس طرح کرتے ہیں، جیسا کہ آپ نے
ابھی دیکھا تو یہ میں بغیر کی طرح کا نقصان پہنچائے ، لوٹ جا تا ہے۔

میں نے اس کتاب کے مختلف مقامات پرسلاطین مالدیپ کا تذکرہ لکھا ہے، ذیل میں ان کے نام درج کئے جارہے ہیں، ساتھ ہی ہرایک کا زمانہ اقتدار بھی درج ہے: ۱- محداول بن عبداللہ قبول اسلام سے الا ۵ ھ تک۔

۳- على از ۵۸۰ صله ۵۸۸ ص

۲- متی مخازالا ۵ صتاه ۵۸

۵- د بی کلمنجا ۵۹۵ صتا ۱۰ الا ه

٣- رهي مناز ١٨٥ هنا ١٩٥٥ ه

ے۔ کمنی ۱۳۰ هتا ۱۵۵ ه

٧- وطبي منجا ١١٠ هنا ١١٠ ه

9- ایم طمخیا ۲۲ ها ۱۳ هم ۱۹۳ ه ۱۱- کلمخیا ۲۷ هم ۱۲ هم ۱۲ هم ۱۳ هم ۱۳ هم ۱۵- کلمخیا ۲۵ هم ۱۹۳ هم ۱۵- کلمخیا ۱۵- کلمخیا ۱۹۳ هم ۱۹۳ هم ۱۵- کلمخیا ۱۹۳ هم ۱۳ هم ۱۹۳ هم ۱۹ هم ۱۹ هم ۱۹ هم ۱۹ هم ۱۹ هم ۱۹ هم ۱۳ هم ۱۹ هم ۱۳ هم

۸- بری کلمنجا ۱۵۵ ه تا ۲۲ ه ۱۰- بلی کلمنجا ۱۲ ه تا ۲۲ ه ۱۲- محمد او د کلمنجا ۱۲ ه تا ۲۷ ه ۱۲- بوسف کلمنجا ۲۸۲ ه تا ۲۹۳ ه

سلطان مالديب بمحداود منجا

اس کی بابت 'تحفة الادیب ''میں تحریر ہے کہ بیسلطان وطبی کمنجا بن قہریا ما کا لڑکا ہے۔ اس نے ۱۹۷ھ سے ۲۵۲ھ تک کل نوسال تک حکومت کی ، اہل مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب 'سری اربیسور مہاردن' تھا۔

محمد بن على بن احمد ابو بكر بامياني سندهي

ہامیان کے تذکرے کے شمن میں علامہ حموی نے لکھا ہے کہ ابو بکر محد بن علی بن احمد بامیانی محدث اور دوسرے محدث بن احمد بامیانی محدث اور دوسرے اخترام برہ مسمولی میں وفات ہوئی۔

محمد بن عبدالرحمٰن بيلماني كوفي

امام بخاری نے ۱۹۰۰ تا ۱۵۰ ہے عرصے میں وفات پانے والے کہاراہل علم وفات پانے والے کہاراہل علم وفات پانے دارے کے من میں اپنی تاریخ ''التاریخ المصغیر ''میں کھا ہے کہاں عرصے میں وفات پانے والوں میں محمد بن عیثم ابوذر حضری بھی ہیں۔ انھوں نے محمد بن عبدالرحمٰن ابن البیلمانی اور محمد بن عبدالرحمٰن البیلمانی مولی عمر سے ساع حدیث کیا۔ امام نسائی ''محتاب الضعفاء'' میں لکھتے ہیں کہ محمد بن عبدالرحمٰن عن ابیہ مشکر الحمٰن عن ابیہ مشکر عن محمد بن عبدالرحمٰن عن ابیہ مشکر الحمٰن عن ابیہ مشکر عن الحدیث ہے۔ ورمحد بن عیم عن محمد بن عبدالرحمٰن بن بیلمانی متر وک الحدیث ہے۔ حافظ ابن حجر نے ''تھذیب التھذیب ''میں صراحت کی ہے کہ محمد بن حافظ ابن حجر نے ''تھذیب التھذیب ''میں صراحت کی ہے کہ محمد بن

عبدالرحمٰن بیلمانی کوئی مولی آل عمر نے اپ والداوروالد کے ماموں ہے روایت کی ہے، حالاں کہ ماموں سے ہائی ہیں ہے۔ محمد بن عبدالرحمٰن سے سعید بن بشیر بخاری، عبداللہ بن عباس بن رہے حارثی، محمد بن حارث بن زیاد حارثی، محمد بن کشر عبدی اورابو سلم موی بن اساعیل وغیر ہم نے روایت کی ہے۔ عثمان داری نے بحی بن معین کے حوالے سے بیات کہی ہے کہ محمد بن عبدالرحمٰن نا قابل اعتبار ہے۔ امام بخاری اور نسائی نے منکر الحدیث بتایا ہے۔ امام بخاری نے بیعی لکھا ہے کہ امام حمیدی فرماتے سے کہ محمد بن عبدالرحمٰن نا قابل اعتبار ہے۔ امام بخاری اور نسائی نے منکر الحدیث بتایا ہے۔ امام بخاری اور نسائی نے منکر الحدیث بتایا ہے۔ امام بخاری اور نسائی نے منکر الحدیث بتایا ہے۔ امام بخاری نے بیعی ککھا ہے کہ امام حمیدی فرماتے سے کہ محمد بن عبدالرحمٰن ضعیف ہے اور یہ کہ امام ابو حاتم نے بھی صفر ب الحدیث فرمایا ہے۔ امام ابن عدی فرماتے ہیں کہ ابن المبیلمانی جو بھی حدیث روایت کر ہے تو اس میں آفت اس کی وجہ سے آتی ہے اور ابن المبیلمانی جو بھی حدیث روایت کر ہے تو اس میں آفت اس کی وجہ سے آتی ہے اور اگراس سے حمد بن حادی شاروایت کر ہے تو اس میں آفت اس کی وجہ سے آتی ہے اور اگراس سے حمد بن حادیث روایت کر ہے تو سے میں۔

ابن جرقر ماتے ہیں کہ ابن حبان نے فر مایا کہ تھر بن عبدالرحمٰن نے اپنے والد سے ایک ایسے ننخ کی روایت کی ، جوآنے والی حدیث کے ما نند ہے۔ اس ننخ کی تمام تر مرویات موضوع ہیں ، ندان ہے استدلال کرنا چائز ہے اور نہ ہی بیان کرنا الا یہ کہ از راہ تعجب ان کو بیان کیا جائے۔ امام ساجی نے فر مایا کہ تھر بن عبدالرحمٰن منکر الحدیث ہے۔ عقبلی فر ماتے ہیں کہ تحد فہ کور سے صالح بن عبدالجبار اور تحد بن حارث الحدیث ہے۔ منکر روایات بیان کی ہیں۔ امام حاکم فر ماتے ہیں کہ تحد فہ کور نے اپنے والد کے واسطے سے حضرت ابن عرش سے روایت کی ہے۔

حموی نے "معجم البلدان" میں لکھا ہے کہ "بیلمان" کی طرف محد بن عبدالرحل بیلمان کی طرف محد بن عبدالرحل بیلمان کی نسبت ہے۔ انھوں نے عبیداللہ بن عبال بن رہیج النجر انی الیمنی سے حدیث روایت کی ہے۔ بلا ذری کی کتاب" فتوح البلدان " میں ذکور ہے کہ "بیلمان" سندھ وہند کے شہرکانام ہے، جس کی طرف بیلمانی تلواری منسوب ہیں۔

محمر بن عثمان زوطی بصری

علامہ 'ابن خلدون' نے اپن تاریخ میں لکھا ہے کہ ' دوط' اوباش اور غارت کر لوگوں کی آبی جائی اور غارت کر استے پر کنٹرول کر کے بری تاہی جائی اور کی آبی عالم اور کی آبی عالم اور کی آبی عالم اور کی آبی علاقوں اور کی آبی علاقوں کے ایک شخص ' محمد بن عثان' کوان علاقوں کا والی وجا کم مقرر کردیا۔ ان کا آخری جا کم ''ساق' نقار محمد بن عثان دولمی بھری تیسری صدی ہجری کے آس یاس کا ہے۔ (قاض)

محمد بن على ملكرا مي واسطى

نوهة الحواطر من مرقوم ہے گئید شریف محد بن علی بن سین بن ابوالفرح بن ابوالفرح بن ابوالفرح بن ابوالفرات بن ابوالفرات سین واسطی بلگرامی، حضرت امام حسین السبط کی نسل سے سے ۔ ان کی ولا دت اورنشو ونما دونوں بندوستان میں ہوئی ۔ طریقت کاعلم شخ قطب اللہ بن بختیار اوچی ہے حاصل کیا۔ بعد میں ۱۲ ہم میں اپنے تلا تم ومریدین کے ہمراہ' بلگرام' آئے اور وہاں کے باشندوں سے جنگ کی۔ بلگرام کے راجہ 'راجہ سری' کوئل کرکے وہیں سکونٹ پذیر ہوگئے۔ سلطان شن الدین التش کی جانب سے مختر' وصول کرنے کا وسخط شدہ فرمان بھی حاصل کرلیا۔ ۱۲۲ ہو میں بلگرام میں ایک نہایت مضبوط قلد تعمیر کرایا۔ ان کا لقب 'صاحب الدعوۃ الصغری' تھا۔ چوں کہ یہ لقب عوام الناس کے لیے وشوار اور تلفظ مشکل تھا، اس لیے اس کو مختر کرکے لفظ ' صغری' ان کے نام کا جزبنادیا گیا۔ ان کی وفات ۱۳۵ ہو میں ہوئی ۔

محد بن عبداللد ابوالمندر ساري حاكم منصوره

محدين عركا مُذكره مسعودي في مروج الذهب "مين كيا إوراس في

وقت محد بن عمر بقید حیات تھا۔ اس کا تذکرہ اس کے دالد: ابومنذر عمر بن عبداللہ حاکم منصورہ کے تذکرے میں پہلے گزرچکا ہے۔

محد بن فضل بن مامان : حامم سندان

علامه بلاذري في فتوح البلدان "ش تفري كى ب كرجه سيمنعور بن حاتم نے بیان کیا کہ صل بن ماہان بنوسامہ کا غلام تھا۔ اس نے سندان فتح کر کے اس بر کنٹرول قائم کرلیا اور مامون رشید کی خدمت میں ایک ہاتھی بھیج کراس سے مكاتبت كى _ نيزاس في سندان مين الني تعير كرده جامع معدمين مامون كى بيعت کے لیے لوگوں کو دعوت بھی دی۔ جب اس کا اِنتقال ہو گیا تو اس کے لڑے جمہ بن فضل بن مامان نے اس کی جگہ لے لی اور ستر بردی بردی کشتیاں کے کرعازم مند ہوا۔ بهت سول کونل کردیا اور 'فالے' کوفتح کرلیا، پھرسندان واپس ہوا۔ اس وقت اس كا بهائى مامان بن فضل سندان يرقابض موهميا تها- اوراس في خليفه معتصم بالله عباس سے مکا تبت کرلی اور اس کے یاس "ساگوان" کی اتن موثی اور لمی لکڑی ہدیۃ " بھیجی، جیسی اس نے بھی نہ دیکھی تھی۔ مندوستان کامفتو حدعلاقہ اس کے بھائی کے زير قبضة تفار الل مندفي اس يرحمله كرك قبل كرديا - بعد مين الل مند" جب سندان یر قابض ہوئے تو انھوں نے سندان کی جامع مسجد مسلمانوں کے لیے چھوڑ دی جس میں وہ نماز کے لیے جمع ہوتے اور خلیفہ کے لیے دعا کرتے تھے۔

اسی انتشار اورقل وخوں ریزی کی بابت معروف عربی شاعر ابوالعما ہیہ نے درج ذمل شعرکہا: (قاضی)

ما على ذا كنا افترقنا يستدا ﴿ نَ وَمِا هَكَذَا عَهَدُنَا الْإِخَاءُ تَصْرِبِ النَّاسِ بِالْمَهِنَدُ الْبِيبِ ﴿ ضَ عَلَى عَدْرُهُمْ وَتَنْسَى الوَفَاءُ

'' ہم نے اس بنیاد پر مقام سندان میں جدائی نہیں اختیار کی تھی، ہماراعہد خلوص ووفا ایسانہیں تھا۔لوگ غدر کر کے ہندوستان کی چیکتی ہ دکمتی تلواروں سے دار کرتے ہیں اور وفا داری بھول جاتے ہیں''۔

مامون رشید کی مدت خلافت ۱۹۸ھ سے ۱۲ ہے تک رہی۔ اس کے بعد معتصم بالله متوفی سا۲۲ صفلیفه موارسندان کی میر مامانی حکومت، مامون رشید کی آمارت سے لے كرمعتصم باللہ كے زمانے تك ربى۔ ابوالعماميدكى وفات ااسم يا ١٣١٧ ه ميں ہوئی۔ابوالعتاہیہنے اپنے ان اشعار میں جس انتشار، بنظمی اور تل وغارت گری کی طرف اشارہ کیا ہے، وہ ۲۰۰۰ھ کے بعد کے ابتدائی دس سالوں یا اس کے معا بعدر ونما ہوئی تھی۔اس خودمخار ماہانی حکومت کے عباس سلطنت کے ساتھ باضابطہ اور مشحکم تعلقات تتھے۔ بیریاست' بہر ا' میں تھی، جؤ بہت مسلمان نواز تھی اورمسلمان بھی اے ببندیدگی کی نظر ہے دیکھتے تھے۔ اس کا اندازہ اس طرح ہوتا ہے کہ معروف مسلم تاجر"سلیمان" جو ۲۳۷ھ کے آس پاس جوکہ ماہانی سلطنت سے بالکل قریبی زمانہ ہے، ہندوستان اور چین گیا، اس نے اپنے سفر نامے میں لکھا ہے کہ شاہان "ببهرا" عموماً بچاس برس تک تخت حکومت پرجلوه گررہتے ہیں۔اس طویل مدت حکومت نیز اینے حکمرانوں کی طویل العری کے تعلق سے اہل' کبلہر ا'' کا خیال ہے كه بيسب مسلمانوں سے محبت اور انھيں قدر ومنزلت كى نگاہ سے د سي مخبت اور انھيں قدر ومنزلت كى نگاہ سے د سي مخبت اور انھيں ہے۔شاہان ہند میں کوئی بھی ایبانہیں ہے، جوحا کم بلہر اکی برنسبت مسلمانوں کوزیادہ جا ہتا ہو،ای طرح باشندگان بلہر ہ بھی مسلمانوں سے بہت محبت رکھتے ہیں۔

ابوزیدسرانی نے اپنسفرنا ہے میں لکھا ہے کہ اس نے ۲۹۴ھ کے آس بال، بہر اکاسفر کیا ارریاست بہر ہ کی بہت ی چیزوں کا تذکرہ بھی کیا ہے۔ یہ بات ہمیں ایک ایشخص نے بتائی، جواس وقت بہت معروف و شہور آ دمی ہے اور جس کی بابت ہمیں دروغ بیانی کا شبہ بھی نہیں ہے۔ کیوں کہ ہندوستان کے دیگر علاقوں کی بہنبیت

ریاست بلہر ہ ملک عرب سے زیادہ قریب ہے اور ہروقت اس کی خبریں معلوم ہوتی رہتی ہیں۔علامہ اصطح ی نے لکھا ہے کہ" کتبایت" سے صیور" تک بلیر ہ کےعلاقے میں كئى ايك حاكم وراجه بين _ يرسب كافرول كى رياستين بين _ مگران شهرول مين مسلمان بھی ہیں اور حکومت باہرہ کی جانب سے مسلمانوں کا حاکم کسی مسلمان ہی کو بنایا جاتا ہے۔ یہاں کئی مساجد بھی ہیں، جن میں نماز باجماعت پڑھی جاتی ہے۔ مزید لکھاہے کہ قامهل، سندان، صیموراور کنبایت میں ایک ایک جامع مسجد بھی ہے۔ ان شہروں میں مسلمانوں کے احکام نافذ ہیں۔مشہور مورخ: بزرگ بن شہر یار ناخدا را مہر مزی نے "عجائب الهند" ميں لكھا ہے كرياست بلہر اكا ندر، مسلمانوں كا حاكم مسلمان ہى بنایا جاتا ہے، اس کا لقب "بنرمن" ہوتا ہے۔ جیسے مسلم ممالک میں" قاضی" ہوا کرتا ہے۔ ہنرمن ہمیشمسلمان ہی ہوتا ہے، جو فدہب اسلام کے مطابق فیصلہ کرتا ہے۔ نیز ید کہ "صیمور" میں"سیراف" کے ایک عالم عباس بن ماہان سے، جوشہر کے ہنرمن (قاضی) تھے۔ واضح رہے کہ سندان اہم گزرگاہ تھا۔ یہاں'' تسط'' ایک یونانی دوا، تھجور ك درخت اور نركل به كثرت يائ جاتے تھے۔ يشهرايك عظيم بندرگاه بھى تھا۔ مقام سویارہ اورسندان کے نیج پانچ مرحلوں کا فاصلہ ہے، ای طرح سندان اور ضیمور کے مابین بھی اتنی ہی مسافت ہے۔نیز" تانہ"-تھانہ-بھی سندان سے قریب ہی واقع ہے۔اس کے علاوہ علاقہ مجرات بھی سندان سے قریب ہے۔ یہاں عرب اور دیگر مسلمان برای عزت اور آرام سے رہتے ہیں۔ ابن رستہ نے لکھا ہے کہ یہ جزیروں کا ملک ہے۔ اہل عرب سامان تجارت لے كريہاں جاتے ہيں۔ يدلوگ عرب تاجروں كے ساتھ حسن سلوك كامظاہره كرتے اوران كے سامان خريدتے ہيں۔ يخريد وفروخت سونے اور درہم سے ہوتی ہے، جے مقامی زبان میں "طاطری" کہاجا تاہے۔

ان دراہم پر دہاں کے حاکم وقت کی تصویر اور وزن کندہ ہوتا ہے۔ جب عرب تاجراموال تجارت فروخت کرکے فارغ ہوتے اور واپسی کا ارادہ کرتے ہیں

تو حاکم سندان سے کہتے کہ آپ ہمارے ساتھ اپنے کچھ آدمی کردیں، تاکہ ہم بہ حفاظت آپ کے ملک سے باہر نگل جا کیں۔ اس پر حاکم کہتا کہ ہمارے یہاں ایک بھی چور نہیں ہے۔ آپ اطمینان خاطر رکھیں اور چلے جا کیں۔ بالفرض اگر آپ کے مال ودولت کے ساتھ کوئی بات پیش آتی ہے تو وہ آپ بھھ سے لے لیں، میں ضامن ہول ۔ ان حالات وواقعات سے بنہ چلتا ہے کہ ماہانی سلطنت اگر چھلیل مدت تک ہی رہی، تاہم اس نے سندان، اگوا۔ بمبئی اور گجرات کے اطراف میں تک ہی رہی، تاہم اس نے سندان، اگوا۔ بمبئی اور گجرات کے اطراف میں نہایت ایکھا ارات اور نقوش چھوڑنے۔

محربن مامون لا مورى خراساني

حموی نے "معجم البلدان" میں کھا ہے کہ ابوعبداللہ محری مامون بن رشید بن مرسید اللہ مطوی لہا دری (لا ہوری) لا ہور سے طلب علم کے لیے عاز سفر ہوئے اور خراسان میں اقامت اختیار کی۔ جہال فقہ شافعی پڑھی اور نیسا پور میں ابو بکر شیرازی اور ابونفر قشیری کے تلافہ ہے ساع عدیث کیا۔ پھر بغداد آکر ایک عرصے تک مقیم رہے۔ پھر آذر با نیجان کے آخری قصبے میں سکونت اختیار کرلی۔ یہ وعظ ونصیحت کیا کرتے تھے۔ اس کی وجہ سے آخری قصبے میں سکونت اختیار کرلی۔ یہ وعظ ونصیحت کیا کرتے تھے۔ اس کی وجہ سے آخیں ملاحدہ نے ۲۰۱۳ ھیں شہید کردیا۔

محربن محرديبلي

"الانساب" بین علامه سمعانی کیسے بین که ابوالعباس محمد بن احمد بن احمد بن عبدالله وراق دیبلی ، زاہد وعاہد، صالح اور صاحب فضل و کمال عالم شے ۔ انھول نے ابو خلیفہ فضل بن حباب جمحی ، جعفر بن محمد بن حسن فریا بی ، عبدان بن احمد بن موسی عسکری ، محمد بن عثمان بن ابوسوید بھری اور ان کے معاصر علماء و محد ثین سے موسی عسکری ، محمد بن عثمان بن ابوسوید بھری اور ان کے معاصر علماء و محد ثین سے حدیث کیا ۔ ان کی وفات ، ماہ حدیث کیا ۔ ان کی وفات ، ماہ

رمضان ۳۴۵ ه من ہو گی۔ نماز جناز ہابوعمرو بن نجیدنے پڑھا گی۔

محمد بن محمد لا بحوري اسفرا كيني

علامه موصوف نے "الانساب" میں لکھا ہے کہ ابوالقاسم محمود (محمہ) بن خلف لوری (لا ہوری) فقیہ اور مناظر سے ۔ انھوں نے فقہ میر ہے دادا: امام ابوالمظفر سمعانی سے پڑھی اور حدیث کا ساع ان سے نیز دوسر ہے محدثین سے کیا۔ میں نے بھی خود ان سے "اسفرا کین" میں جہاں سکونت اختیار کر کی تھی چند احادیث سی ہیں۔ ان کی وفات ۴۹ ھے آس یاس ہوئی۔

محدبن محدبن رجاءاسفرا كيني جرجاني

امام مہی "تاریخ جرجان" میں لکھتے ہیں کہ ابو برجر بن محمد بن برجاء بن سندھی جرجانی نے اسحاق بن ابراہیم اور حضرت امام احمد بن ضبل وغیر ہما ہے دوایت کی۔

امام ذہبی نے "تذکر ہ الحفاظ" میں لکھا ہے کہ حافظ امام ابو برمحمد بن رجاء ابن السندھی اسفرا کینی شیح کے مصنف اور شیح مسلم کے تخریخ کے کنندہ ہیں د انھوں نے اسحاق بن راہویہ، امام احمد بن حنبل، علی بن مدین، ابن نمیر، ابو بکر بن ابوشیہ اور ان

جیسے دوسر سے اعلام محدثین سے ہاع حدیث کیا۔ یہ کیر الاسفار سے۔ ان سے ابوعوان، ابوحالد بن شرقی، محد بن صالح بن بانی، ابن حزم، ابونفر محد بن محداور دوسر ہے حضرات نے روایت حدیث کی۔ امام حاکم فرمات ہیں کہ بید دین دار، شبت و ثقداور اپنے دور کے سب سے عظیم عالم ومحدث تھ،۔ انھیں اپنے دادا: رجاء سمیت ایک جماعت محدثین سب سے عظیم عالم ومحدث تھ،۔ انھیں اپنے دادا: رجاء سمیت ایک جماعت محدثین سب سے عام حدیث کا شرف حاصل ہے۔ بشر بن احد کا ایان ہے کہ ان کی وفات ۲۸۱ ھ

علامه سمعانی فی "الانساب" میں ان کا بورانام بوں لکھا ہے: ابو برحمر بن محمد بن رجاء سندھی خطلی ۔ ابن العماد عبلی فی "شدر ات المذهب" میں ۲۸۱ھ میں وفات بانے والے علاء وحد ثین کے تراجم کے ذیل میں لکھا ہے کہ ابن فاصر الدین نے اپنی نظم میں ان کی بابت کہا ہے:

كذا الفتى محمد بن سندهى الله كالخشني القرطبي عدى

مزیدلکھا ہے کہ محد بن محد بن رجاء سندھی اسفرا کینی کی کنیت ابو بکرتھی۔ بیرحافظ حدیث اور تفتہ و ثبت تنصیہ ان سے جحت قائم ہوتی اوراستدلال بھی کیا جاتا۔ رہے مسلم پرانھوں نے بخ بھی کی ہے۔

اسخراج حدیث کامطلب بیہ وتاہے کہ کوئی حافظ حدیث مثلاً سی مسلم کو لے۔
اس کی تمام احادیث الگ الگ اپنی سند کے ساتھ ذکر کر ہے، جس میں وہ تقدروات کا التزام نہ کرے۔ گریہ سندامام مسلم کے طریق کے علاوہ ہو۔ پھرامام مسلم کے شخ یا شخ سے اوپر کسی ایک جگہ دونوں طریق مل جا ئیں۔ بسااوقات اسخراج کنندہ، بعض ایسی احادیث کونظر انداز کر دیتا ہے، جس کی اسے کوئی قابل اظمینان سندنہ ملے اور بھی کسی راوی پر معلق کر دیتا ہے۔ جب کہ بعض اوقات اصل کتاب کے مؤلف کے طریق راوی پر معلق کر دیتا ہے۔ جب کہ بعض اوقات اصل کتاب کے مؤلف کے طریق سے ان احادیث کوذکر تاہے۔ بارتی میں بہت سے مفاظ حدیث نے تخ تی دواوین حدیث سے اعتزاء کیا۔ عام طور پر ضحیحین بخاری و مسلم پر ہی انھوں نے اس سلسلے میں حدیث سے اعتزاء کیا۔ عام طور پر ضحیحین بخاری و مسلم پر ہی انھوں نے اس سلسلے میں صدیث سے اعتزاء کیا۔ عام طور پر ضحیحین بخاری و مسلم پر ہی انھوں نے اس سلسلے میں حدیث سے اعتزاء کیا۔ عام طور پر ضحیحین بخاری و مسلم پر ہی انھوں نے اس سلسلے میں

اکتفاء کیا، کیوں کہ بہی دونوں کتابیں علم حدیث میں سب سے عمدہ اور بہتر کتاب ہیں۔ انہی میں سے ایک، ابو بکر سندھی اسفرا کینی کی میشخرج بھی ہے۔ محمد بین محمد بدر الدین محکمری سندھی

صاحب "نوهة المحواطر" في ابت لكھا ہے كه سيد شريف برالدين محمد بن محمد بن ابراہيم سيني بھرى سندھى كا شارصاحب علم وضل اور صلاح وتقوى علاء ميں ہوتا ہے۔ ان كى بيدائش بروز جعرات، شعبان ١٩٣٠ ھ ميں شهر" بھكر" ميں ہوئى اور و بين نشو ونما بھى ہوئى۔ انھوں نے اپنے والدسين بن علی سين نجارى سے اخذ علم كيا۔ واضح ہوكہ انھوں نے سيد جلال الدين سے ميكے بعد ويلى ما في ونوں صاحب زاديوں زہرہ پھر فاطمہ كى شادى كى تھى۔ ان كے ايك ورفوں صاحب تذكرہ بعنى اپنے والدكى وفات كے بعد" جھونى" وجھانى) منتقل ہوگيا۔ يہاں اس كى نسل اب بھى پائى جاتى ہے۔ محمد بن محمد كى وفات سے محمد بن محمد كى وفات ہے۔ محمد بن محمد كى وفات ہوں ہوں ہوں تد فین بھی عمل میں آئی۔

محربن محرصدرالدين بمكرى سندهى

زیمۃ الخواطر میں ان کی بابت مذکورہے سید شریف صدرالدین محمد بن ماہم بن زید بن جعفر سینی بھکری سندھی خطیب ۔ بیاہ ہے دور کے کہارعلماء میں شار ہوتے ہتھے۔ ان کی پیدائش بھی شہر'' بھک'' میں دس رجب ۹۰۱ ھیں ہوئی۔ وہیں میلے بردھے جوان ہوئے اور شادی کی۔ ہندوستان میں ان کی نسل بائی جاتی ہے، ان کی وفات ۲۱ مرم م الحرام ۲۲۹ ھیں ہوئی۔ قبرقلعہ بھکر میں موجود ہے۔

محدبن فيح الومعشر سندهي مدني

خطیب نے '' تاریخ بغداد' میں ذکر کیا ہے کہ محدین ابومعشر سندھی کے والد:

ابومحشر کا نام جی بن عبدالرحمٰن مدنی ہے۔ انھیں فلیفہ مہدی نے مدینہ منورہ سے بغدادر ہے کے لیے بھی دیا تھا۔ جہاں وہ سکونت پذیر ہوگئے۔ جمد بن ابومعشر کی کنیت ابوعبدالملک ہے۔ انھوں نے ابن ابی ذئب اور ابو بکر ہذلی کود یکھا ہے اور ایخ والد سے کتاب المفاذی وغیرہ ٹی ہیں۔ محمد بن نجے سے ان کے دونوں ساخت والد سے کتاب المفاذی وغیرہ ٹی ہیں۔ محمد بن نجے سے ان کے دونوں صاحب زادوں: داؤ داور حسین کے علاوہ ابوحاتم رازی، محمد بن لیث جوہری اور ابولیعلی موسلی نے روایت کی ہے۔ امام ابوحاتم فرماتے ہیں کہ بیصدوق ہیں۔ فطیب نے مزید کھا ہے کہ ہم سے ابواحمد بن علی بن نفر نے، ان سے احمد بن جعفر مدنی بن جمد ان سے محمد بن ابومعشر مدنی بن جوہری نے، ان سے محمد بن ابومعشر مدنی

بن تمدان مسیقی نے بغداد میں ان سے تحد بن کید جوہری نے ،ان سے تحد بن ابو معتمر مدنی نے اور انھوں نے کہا کہ ہم سے نافع نے بدروایت حضرت عبداللّذ بن عمر الله بیان کیا:

"قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: کل مسکر حمر، وان

أسكر كثيره فقليله حرام"

"حضورا کرم سلی الله علیه وسلم نے ارشاد فرمایا ہر نشر آور چیز شراب ہے۔اگر کسی چیز کی زیادہ مقدار سے نشہ بیدا ہوتا ہوتو اس کی معمولی مقدار بھی حرام ہے"۔ مجد بن ابوالفوارس کا بیان ہے کہ ہم سے محد بن حمید مخرمی نے اور ابن سے علی

محدین ابوالفواری کابیان ہے کہ ہم سے گھ بن حمید مخری نے اور ان سے ملک بن حسین بن حبان نے ذکر کیا کہ میں نے اپنے والد کی خود ان کے ہاتھ سے کھی ہوئی تحریر دیکھی ہے، جس میں تقریح ہے کہ میں نے ابوز کریا بجی بن معین سے ابن ابو معشر ابو عبد الملک کی بابت معلوم کیا تو افعوں نے فرمایا کہ وہ 'مصیصہ'' میں ہمارے پاس آئے ہے۔ جب کہ مصیصہ کی معجد تغییر ہورہی تھی۔ میں نے اس کی بابت جہاج سے دریافت کیا تو وہ خاموش رہے تھے، پھر جھے سے کہنے گے کہ میں یہ بابت کہنا نہیں چاہتا تھا لیکن جب آپ نے معلوم کرلیا تو میرے لیے بتانا سنروری ہوگیا سنے اوہ میرے پاس آیا تھا اور جھے سے وہ کتابیں مانگیں تھیں، جو میں نے اس ہوگیا سنے اوہ میرے پاس آیا تھا اور جھے سے وہ کتابیں مانگیں تھیں، جو میں نے اس کے والد سے تی ہیں۔ میں نے وہ کتابیں وے دیں چناں چہ اس نے انھیں نتل

كرليا _ مرجه سے وہ كما بين اس نے ئي بين بيں۔

خطیب لکھے ہیں کہ مجھ سے ابوطالب بحی بن علی بن طیب آبن الدسكری نے طوان میں ان سے ابولیعلی احمد بن علی بن طوان میں ان سے ابولیعلی احمد بن علی بن منی نے بیان کیا کہ ابولیعلی نے فرمایا کہ تحد بن ابولیعشر ابوعبد الملک تفتہ ہیں نیز فرمایا کہ تحد بن ابولیعشر ابوعبد الملک تفتہ ہیں نیز فرمایا کہ جمد بن ابولیعشر مدنی کی وفات ۲۲۲۲ ھیں ہوئی۔

آ گےرقم طراز ہیں گہم سے محد بن حسین قطان نے ،ان سے قاضی احد بن کال نے اور ان سے قاضی احد بن کال نے اور ان سے داؤد بن محد بن ابومعشر نے بتایا کہ میرے والد کی وفات کال نے اور ان سے داؤد بن محمد بن ابومعشر نے بتایا کہ میرے والد کی وفات کال ہے اور ان سے داؤد بن محمد بن ابومعشر میں ہوئی۔ اس وفت ان کی عمر ۹۹ رسال آٹھ دن تھی۔

حافظ ابن جرائم تهافیب المتهافیب "علی لکھے این کرمحرین جی الومعشر بن عبد الرحمٰ سندهی ابوعبد الملک مولی بن ہاشم نے امام ابن ابی ذب کود یکھا ہے اور امام موصوف کے علاوہ المینے والد، نظر بن منصور غیری اور ابونو ج انصاری سے روایت کی ہے۔ محر بن بح سے امام تر ندی، بچی بن موی بلخی ، دونو لائے : داؤد وسین ، ابن ابی الد نیا، ابوحاتم رازی ، ابو یعلی موصلی ، ابن جر برطبری ، ابو بکر بن مجذر ، ابوحار جمزی اور دوسر برمتعدد علماء نے روایت کی ہے۔

امام ابوجاتم فرماتے ہیں کہ ان کا مقام صدق وراست بازی ہے۔ حسین بن حبان کہتے ہیں کہ میں نے محمد بن تیجے کی بابت ابوز کریا بھی بن معین سے معلوم کیا تو فرمایا کہ وہ 'مصیصہ' آئے تھے۔ تب میں نے ان کے متعلق جاج ہے۔ معلوم کیا تو انھوں نے بتایا کہ محمد بن تیجے نے مجھ سے وہ کتابیں ما تکیں ، جو میں نے اس کے والد سے تی تقییں میں نے وے دیں اور اس نے انھیں نقل کرلیا ، مگر مجھ سے سنا والد سے تی تقییں ہوئی فرماتے بالکل نہیں ہے۔ ابو یعلی فرماتے بالکل نہیں ہے۔ ابو یعلی فرماتے بیں کہ وہ تقد ہیں۔ ابن قانع کا بیان ہے کہ ان کی وفات ۲۲۳ ھیں ہوئی جب کہ ان

کے لڑے: داؤد بن محمد نے بیان کیا کہ وفات کا اور اس وقت وہ نانوے سال اور آسمہ دن کے تھے۔خطیب فرماتے ہیں کہ ابوالحسین بن قطان نے ان کا شاران لوگوں میں کیا ہے، جوغیر معروف ہیں۔ گرید ابوالحسین کا ابنا تصور ہے لہذا معتبر نہیں۔ کیوں کہ انھوں نے بہت سے مشہور ومعروف علماء ومحد ثین کو بھی غیر معروف قرار دیا ہے اور انہی کی روش ابو محمد ابن حزم نے بھی اختیار کی ہے۔ حالاً آس کہ انھیں یہ کہنا جا ہے تھا کہ ہم انھیں نہیں جانے ہاں ممکن ہے کہ اس سے ان کی مراد ایک دوسرے عالم ہوں ، جن کا بھی نام محمد بن تیجے ہی ہے۔

محموداع الدين بن سليمان بن شعيب

ان کا اسم گرای اس طرح ہے : محمود بن سلیمان کمال الدین بن شعیب بن احمد بن یوسف بن محمد بن فرخ شاہ ، اعر الدین ۔ بیار سرائے کا اور شخ فریدالدین مسعود گئج شکر کے برادرا کبر متھے۔ ان کے والد سلطان شہاب الدین غوری نے عہد میں کا بل سے ملتان آئے اور ملتان کے نواحی شہر کھتوال (چکوال) کے عہد و قضاء پر فائز ہوئے۔ ان کی شادی ملا وجیہ الدین فجندی کی صاحب زادی سے ہوئی۔ جس سے کھتوال ہی میں تین نرینہ اولا دیدا ہوئیں۔ ان میں صاحب ترک ہموداع زالدین سب سے بڑے ، شخ مسعود فریدالدین بخطے اور نجیب الدین متوکل چھوٹے تھے محمود اعر الدین کی وفات کھتوال ہی میں ہوئی اور و ہیں والد متوکل چھوٹے تھے محمود اعر الدین کی وفات کھتوال ہی میں ہوئی اور و ہیں والد مرحوم کے ساتھ دفن بھی کے گئے۔ (تاریخ فرشت)

مسعود بن سعد بن سلمان: شاعر لا هور

عظیم شاعر :مسعود بن سعد بن سلمان لا ہوری کے والد: سعد،سلاطین غزنہ

کے زمانے میں "ہمدان" سے لاہور آئے اور وہیں شادی کرے آباد ہو گئے۔
صاحب تذکرہ شخ مسعودی ولا دت اور نشو ونما لاہوری میں ہوئی اور وہیں کے علماء
وفضلا سے کسب علم کیا۔ یہ عربی، فاری اور ہندوستانی تیوں قربانوں میں شعر کہتے
سے شعراء سے خاصی مناسبت بھی تھی۔ان کا ایک عربی شعرودری ویل ہے
ولیل کان الشمس صلت مجراها فی ولیس لھا نحو المشادق عرجع
فقلت بقلبی طال لیلی ولیس لی فی من الهم منجاة وفی البصر مفرع المفاد بند بھوں ہوئی ہوئی ہوئی ہے
د بعض را تیں ماند بورج ہوئی ہیں جورائے سے بھل کر شرق تک نہیں
لون سکتا۔ تو میں نے اسے دل میں کہارات المی ہوگی ہم سے نجات کا کوئی ذرایعہ
نہیں اور پناہ کے لیے کوئی جگریں '۔
ان کی وفات ۱۵ سے میں ہوئی۔ (تاضی)

عاكم مشكى مظهر بن رجاء

ابداسیاق ابراہیم بن محراصطری نے اپنی کتاب 'المسالك و الممالك 'میں ریاست مران اوراس کے اطراف وجوانب کے بیان میں لکھا ہے کہ بوائی مران سے متصل ایک جگہہے جس كانام 'مشكی ' ہے۔ اس پرمطیر بن رجاء نامی ایک شخص نے قضہ کرلیا تھا۔ بیصرف خلیفہ وقت کے نام كا خطبہ دیتا ہے اور کسی مسئلے میں خلیفہ عبان كی اطاعت نہیں كرتا۔ اس كی حدود حكر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حكر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حكر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حكر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حكر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حکر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حکر انی تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں کی حدود حکر ان تقریباً تین مراحل پر بیں۔ یہاں

جب کے مقدی بیٹاری نے اس کانام "مشکہ" ذکر کیا ہے اور است کران کا ایک شہر قرآر دیا ہے۔ حموی نے لکھا ہے کہ مشکی "کرمان" سے متصل ایک شہر ہے، جس پر مہم سے آس باس مظفر بن رجاء نے قبطہ کرلیا۔ بعدازان حموی نے بھی درائی فظی ترمیم کے ساتھ وہ ی تفصیل کھی ہے، جواسطیری نے ذکری ہے۔ (قاضی)

معين الدين بيانوي

قاضی سیر معین الدین کی ولادت اور انتقال دونوں" بیانہ" میں ہوئے۔ یہ سلطان علاء الدین غوری کے عہد میں" بیانہ" کے قاضی تھے۔ مردوں اور عورتوں دونوں کے معاملات اور اختلافات دیکھتے تھے۔ جب عورتوں کا کوئی مسئلہ پیش کیا جا تا تو چہرہ ڈھک لیتے اور فیصلہ فرماتے تھے۔ ان کا ایک واقعہ بہت مشہور ہے ایک شخص نے ان سے شکایت کی کہ اس کی بیوی ایک دوسر ہے محص کے پاس چلی گئی ہے۔ افعوں نے اس عورت کوسنگ سار کئے جانے کا تھم دیا۔ مگر شہر کے خطیب نے اس عورت کوسنگ سار کئے جانے کا تھم دیا۔ مگر شہر کے خطیب نے اس عورت کو یہ تدبیر بتائی کہ تم قاضی صاحب سے یوں کہنا کہ یہ حرکت بھے سے بربنائے جہالت سر ذو ہوئی تھی اور میں سے جسی تھی کہ جیسے ایک مرد کے لیے چارعورتیں بربنائے جہالت سر ذو ہوئی تھی اور میں سے جسی کے اس کے جائز ہیں، ایسے ہی ایک عورت کے لیے بھی چارم د جائز ہوں گے۔ جب قاضی صاحب نے اس کی بیہ بات نی تو فرمایا کہ جس شخص نے اسے یہ تدبیر سوجھائی ہے، حالت کی ناک ٹوٹ جائے۔ اتفاق دیکھئے کہ خطیب فدکور دوران خطبہ منبر سے گرے۔ بسی سے ان کی ناک ٹوٹ جائے۔ اتفاق دیکھئے کہ خطیب فدکور دوران خطبہ منبر سے گریں۔ جس سے ان کی ناک ٹوٹ خائے۔ اتفاق دیکھئے کہ خطیب فدکور دوران خطبہ منبر سے گریں۔ جس سے ان کی ناک ٹوٹ کی ناک ٹوٹ گا۔ (اخبارالا منیاء)

معروف بن زكريا منرمن صيمو رى كوكني

مسعودی نے ''مروج الذهب'' میں لکھاہے کہ میں سلطنت بلہری (وہھی رای) کے علاقہ ''لا' (ہندوستان) کے مشہور شہرصیور (چیمور) ۴۰۰ سے میں آیا۔
اس وقت صیمور کا حاکم ''حاج''نائی ایک فی تھا۔ (بعض نحوں میں اس کا نام ''جانح''
لکھا ہوا ہے) اور تقریباً دس ہزار مسلمان وہاں آباد تھے۔ ان میں کچھو ہیں بیدا ہوئے تھے، کچھ سیراف، عمان، بھرہ اور بغداد وغیرہ ممالک اسلام کے باشندے تھے، جو یہاں آکر آباد ہوگئے تھے۔ انہی میں سے کھم عروف ومشہور اور بڑے تاجر

بھی تھے۔مثلاً: موسی بن اسحاق چندابوری۔ اس وقت وہاں کے 'مہنر بن' کے عہد ے پر ابوسعید معروف بن زکریا فائز تھے۔ ہنر من سے مراد مسلمانوں کی سربر اہی اور صدارت تھی۔ اس عہدے پر کوئی معزز اور سربر آوردہ مسلمان فائز ہوتا ہے، جو مسلمانوں کے تمام معاملات کا ذیے دار اور ان کا حاکم ہوتا ہے۔ ''بیاس '' سے مسلمانوں کے تمام معاملات کا ذیے دار اور ان کا حاکم ہوتا ہے۔ ''بیاس '' سے ایے مسلمان مراد ہیں جو ہندوستان ہی میں پیدا ہوئے۔

بزرگ بن شہر یار نا خدارامہر مزی نے اپنی کتاب 'عجائب الھند' میں مسلمان ہی ہوتا ہے۔ جو والی بہر اکی جانب سے مقرر کیا جا تا ہے۔ اس کا لقب ' ہنر من' ہوتا ہے۔ جو والی بہر اکی جانب سے مقرر کیا جا تا ہے۔ اس کا لقب ' ہنر من' ہوتا ہے۔ یہ اس فتم کا ایک عہدہ ہے، جینے سلم مما لک میں قاضی کا ہوا کرتا ہے۔ ہنر من ہمیشہ مسلمان ہی ہوتا ہے۔ ہنر من ہمیشہ مسلمان ہی ہوتا ہے۔ جو فد ہب اسلام کی روشنی میں فیصلے کرتا ہے۔ نیز لکھا ہے کہ صیموں میں سیراف کے ایک فیص سے عباس بن ماہان بھی مسلمانان صیمور کے ہنر من سے۔ میں سیراف کے ایک فیص سے عباس بن ماہان بھی مسلمانان صیمور کے ہنر من سے۔ ہنر من بر ہمن کے وزن پر ہے۔ اصلاً یہ لفظ فاری زبان کا ہوا در مرکب ہے' ہنر من شے۔ مند'' سے لیکن قاضی کے معنی میں اسے استعمال کرلیا گیا۔ بر ہمن کے وزن کی رعایت مند'' سے لیکن قاضی کے معنی میں اسے استعمال کرلیا گیا۔ بر ہمن کے وزن کی رعایت کرتے ہوئے کہ بر ہمن بھی ہندوؤں میں اس شخص کو کہا جا تا ہے جو فر ہمی عالم ہو۔ (تاضی)

حاكم طوران :مغيره بن احمد

علامہ اصطحری نے ''طوران' کے متعلق''المسالك الممالك' علی الکھا ہے کہ اس کا مرکزی شہر' تصدار' ہے۔قصدارا یک شہرکانام ہے، جس کے تحت کی ایک گاؤں اور شہر ہیں۔اس وقت اس کا حاکم مغیرہ بن احمہ ہے، بیصرف خلیفہ بغداد کے نام کا خطبہ پڑھتا ہے۔اس حاکم کی جائے تیام'' کیزکانان' نامی ایک شہرہے۔ حوی نے ''قصدار'' کی بابت لکھا ہے کہ اصطحری رقم طراز ہیں کہ حاکم قصدار معمر بن احمہ نامی ایک شخص ہے، جو خلیفہ بخداد کے ماتحت ہے اور اس کی قیام گاہ

'کیز کابان' ہے۔

موی نے تصداری بابت اصطر کی کے حوالے سے جوبات کھی ہے، لگا ہے کہ کا تب سے اس میں مہوہ و گیا ہے۔ چنال چداس نے مغیرہ کی جگہ معمراور کیز کا نان کی بجائے کیز کا بان لکھ دیا۔ ہوسکتا ہے کہ مغیرہ بن احمد چوتھی صدی ہجری کا ہواور شایداس کا نام ابن حقل نے دومعین بن احمد "کھا ہے۔ (تانی)

مفتى بن محربن عبداللد بأسندى

محوی نے "معجم البلدان" میں لکھا ہے کہ باسندسین کے زیر اور نون ورال کے سکون کے ماتھ ہے۔ یہ ایک شہر کا نام ہے، جس سے مفتی بن محد بن عبد اللہ باسندی کا تعلق تھا۔ مفتی بن محمد نے ابوالحسین محمد بن حسن رہوازی کا تب سے روایت کی اور مفتی بن محمد سے ابوسعید احمد بن مالینی نے۔

علامه مقدی بشاری نے 'احسن التقاسیم 'کے اندراعلام اوران کی بابت اختلاف کے بیان کے ذیل میں لکھا ہے کہ باسند نام کے دوشہر ہیں: ایک صغانیان میں اور دوسراسندھ میں۔ حموی نے بیدوضا حت نہیں کی باسند ندکور سے سندھ کا شہر مراد ہے یا صغانیان کا؟ بلکہ انھوں نے صرف ''مدینہ'' کالفظ لکھ کرچھوڑ دیا۔ اس طرح یہ ابہام دور نہ ہوسکا کہ مفتی بن حمد باسندی، ہندی ہیں یا صغانی۔''واسند' نام کا بمبئی کے اطراف میں ایک ریلوے اسٹیشن بھی ہے۔ باء کو واو سے اس طرح واوکو باء سے بدلنا، آبل ہند کے یہاں ایک عام بی بات ہے۔ واو سے اس طرح واوکو باء سے بدلنا، آبل ہند کے یہاں ایک عام بی بات ہے۔ اس لیے ''واسند'' بھی مراد ہوسکتا ہے۔ (تامی)

مكحول بن عبداللدسندهي شامي

ابن خلكان في تاريخ من لكها م كما بوعبدالله ككول بن عبدالله شامي ان

لوگوں میں سے ہیں،جنہیں'' کابل' میں قیدی بنایا گیا تھا۔ابن عائشہ کہتے ہیں کہ مکول، قبیلہ قیس کی ایک خاتون کے غلام تھے۔سندھی نژاد تھے، عربی فضیح نہیں بولتے تھے۔ مورخ واقدی فرماتے ہیں کہ بیقبیلہ بزیل کی ایک عوربت کے غلام تنص بعض تاریخی روایات کے مطابق بید مفرت سعید بن عاص اور بعض کے مطابق بنولیث کے غلام تھے۔ان کے دادا: شاذل "مرات" کے تھے،جنہوں نے شاہ کابل کی لڑکی ہے شادی کر لی تھی۔ بعد میں ان کی وفات ہوگئ، اس وفت ان کی بیوی امیدسے تھی۔ چنال چہوہ اینے باپ کے یہاں چلی آئی، جہاں ایک لڑکا ''شہراب'' بیدا ہوا۔ بیلا کا کل میں ہی اینے ماموں کے یہاں رہا۔ اس کے یہال "و مکحول" پیدا ہوئے۔ جب مکول برے ہو گئے تو قیدی بنا لیے گئے اور حضرت سعید بن عاص کے قبضہ میں آ گئے۔ انھوں نے قبیلہ مزیل کی ایک خاتون کوازراہ سہدے دیا،جس نے انھیں آزاد کردیا۔امام کول،امام اوازاعی کے اتالیق رہے۔ان کا قیام وشق میں رہا۔ان کی زبان میں عجمیت کے آثار بہت نمایاں تھے۔ بیعض عربی حروف بدل کریر ها کرتے تھے۔ یہ جمیت ،اال سندھ میں عموماً پائی جاتی ہے۔

مورخ ابن قتیہ نے لکھا ہے کہ امام واقدی کا بیان ہے کہ کھول، کا بل کے قید یوں میں سے ہیں۔ ابن عائشہ فرماتے ہیں کہ کھول قبیلہ قیس کی ایک عورت کے غلام سندھی نژاد تھے زبان فسیح نہتی ۔ نوح بن قیس نے فرمایا کہ کی امیر نے کھول سے تقدیر کے بارے میں معلوم کیا تو انھوں نے جواب دیا ''اساھر آنا'' کیا میں کوئی ساحراور جادوگر ہوں؟ ساحر کی جاء کو ہاء سے بدل کر پڑھا۔ معقل بن عبداللہ علی قریش کا بیان ہے کہ میں نے سنا کہ کھول ایک شخص سے کہ درہے تھے ''ماذا فعلت تلك الهاجة '' یہاں بھی' حاجة ''جاء طی کی جگہ ہائے مہملہ پڑھی۔ ان کی وفات سال ہوئی۔

ابوالماق شرازی نے مطبقات الفقهاء "میں لکھا ہے کہ یہ کامل کے

قید بول میں سے تھے۔ ابن عائشہ کا بیان ہے کہ بی قبیلہ قیس کی ایک عورت کے غلام، سندھی نژاد تھے اور عربی زبان ان کی صاف نہیں تھی۔

شدرات الدهب بین ابن تنبه کی ذکرکرده ندکوره الصدر تفصیل کے بعد تحریر بے کہ ابن ناصر الدین نے 'شوح بدیعة البیان' میں لکھا ہے کہ کول، مسلم بن شاذل بن صغد بن شروان کا بلی بزلی کے لڑکے ہیں۔ بعض روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کی کثبیت ' ابوتر اب' ہے۔

امام ذہبی نے "تذکوة الحفاظ" میں تحریر فرمایا کہ محول اہل شام کے عالم ہیں۔ان کی کنیت ابوعبداللہ ہے۔والد کا نام مسلم ہے،قبیلہ مذیل کی طرف نسبت كرتے ہوئے بدلى كہاجاتا ہے۔ يەنقىداور حافظ حديث بيں قبيلة بذيل كى أيك خاتون کے غلام تھے۔ بیاصلا کابل کے رہنے والے ہیں بعض لوگ کہتے ہیں کہ بیہ " كسرى" كى اولاد ميس سے بيں۔ دمشق ميں ان كا مكان "سوق الاحد" كے كنارے واقع ہے۔ بيروايت مديث من بہت ارسال كرتے ہيں۔ نيز حضرت الى ابن كعب، حضرت عباده بن صامت اورحضرت عائشة وغيره كبارصحابه سے روايت حدیث میں تدلیس بھی کرتے ہیں۔ انھوں نے حضرت ابوامامہ باہلی، واثلہ بن اسقع ، انس بن ما لك، محمود بن ربيع ، عبدالرحمن بن عنم ، ابوادريس خولاني ، ابوسلام ممطور اور دوسر نے بہت سے لوگول سے روایت صدیث کی اور خودان سے ایوب بن موسى، علاء ابن حارث، زيد بن واقد، توربن يزيد، حجاج بن ارطاة، إمام اوزاعي، سعید بن عبدالعزیز اور دوسرے بہت ہے حضرات نے حدیث کی روایت کی۔ ابن اسحاق کہتے ہیں کہ میں نے امام مکول ہے۔ سناوہ فرمارے تھے کہ میں نے طلب علم میں ساری زمین کا چکر لگایا۔ ابو وہب نے بدروایت مکحول بیان کیا کہ انھوں نے فرمایا میں مصرمیں آزاد ہوااور میراخیال ہے کہ جتناعلم بھی مجھے وہاں ملاء سب کوجمع کرلیا۔اس کے بعد عراق آیا ، پھر مدینہ منورہ ان دونوں شہروں میں بھی جتنا علم تھا، سارامیں نے حاصل کرلیا۔ بعدازاں شام آ کرسارے علوم کو چھان پھٹک کر

صاف کیا۔امام زہری نے لکھا ہے کہ اہل علم کل تین ہیں،جن میں سے ایک مکول بھی ہیں۔ ابوحاتم فرماتے ہیں کہ میرے علم میں پورے شام کے اندر مکحول سے زیادہ فقہ كاعلمكسى كونبيل ہے۔ابن زرير كابيان ہے كميں نے محول كويد كہتے ہوئے ساكم میں حضرت سعید بن عاص کے یہاں تھا تو انھوں نے جھے مصر میں قبیلہ بزیل کی ایک عورت کو ہبہ کردیا۔ میں مصرے اس وقت نکلا جب مجھے میریفین ہو گیا کہ مصر میں جتنا بھی علم ہے، سارا میں نے حاصل کرلیا ہے اور میں نے امام تعنی جیسا عالم نہیں دیکھا۔سعید بن عبدالعزیز کابیان ہے کہ کھول نے فرمایا کہ میرے سینے میں جو بات بھی محفوظ ہے، اسے میں جب جا ہوں بیان کرسکتا ہوں۔ اس کے بعد کہتے ہیں كمكول، امام زبرى سے علم وفقه میں بہت بر سے ہوئے تھے۔ نیز فرقه تدربیہ بالكل برى اورالگ تھلگ تھے۔سعید بن عبدالعزیز بی كابیان ہے كہ ایك بار امام مکحول کودس ہزارا شرفیوں کی تھیلی دی گئی، تو وہ ان میں سے لوگوں کوایک گھوڑے کی قیمت بیاس دیناردیتے رہے۔کہاجا تاہے کہان کی زبان میں لکنت تھی ،جس کی وجہ سے وہ "قاف" کی جگہ" کاف" پڑھا کرتے تھے۔ ابومسبر اور ایک بوری جماعت کابیان ہے کہ کھول کی وفات ااھ میں ہو گی۔ جب کہ ابونعیم کابیان ہے کہ وفات ااھيں ہوئي ليعض لوگوں نے تاريخ وفات کچھاور بيان کی ہے۔

امام مکول کے حالات، سیروتراجم کی جملہ کتابوں میں نہایت نثر ح وبسط کے ساتھ مذکور ہیں۔ (قاضی)

حاكم ملتان بمنبه بن اسدقرشي

مسعودی نے ''مروج الذھب'' میں ''ملتان' کے تذکرے میں لکھا ہے کہ حاکم ملتان جیسا کہ میں پہلے لکھ چکا ہوں ، سامہ بن لوی بن غالب کی سل سے تعلق رکھتا ہے۔ اس کے پاس طاقت وقوت اور لشکر بہت ہیں۔ یہ سلمانوں کی بڑی سرحدوں میں سے ایک سرحد کا محافظ ہے۔ ریاست ملتان کے تحت ایک لا کھیس گاؤں آتے ہیں۔

ملتان میں جیسا کہ کہا جاتا ہے ایک بت ہے، جس کانام "مولتان" ہے۔ سندھ اور ہندوستان کے لوگ دور دراز علاقوں سے نذرانے پڑھاوے، مال ودولت، ہیرے جواہرات، عوداور شمقیم کی خوشبو لے کرملتان آتے ہیں اور ہزاروں کی تعداد میں لوگ اس کی زیارت کوجاتے ہیں۔ حاکم ملتان کی دولت کا غالب ترین حصہ، اس خالص عود پر شمتل ہے، جولوگ اس بت کے لیے لاتے اور جس کے ایک اوقیہ کی قیمت ایک سو رینار ہوتی ہے۔ اس بت پراگرانگوشی سے مہرلگائی جائے تو انگوشی کا نشان پڑجاتا ہے، جیسے کہ موم وغیرہ پر پڑجایا کرتا ہے۔ اس کے علاوہ بھی بہت سی محیرالعقو ل با تیں ہیں، جیسے کہ موم وغیرہ پر پڑجایا کرتا ہے۔ اس کے علاوہ بھی بہت سی محیرالعقو ل با تیں ہیں، ادادہ کرتے ہیں اور مسلمان ان سے جنگ کرنے کی پوزیش میں نہیں ہوتے تو مسلمان ان سے جنگ کرنے کی پوزیش میں نہیں ہوتے تو مسلمان ہیں دیا کرتے ہیں اور مسلمان ان سے جنگ کرنے کی پوزیش میں نہیں ہوتے تو مسلمان ہیں میرک آ مدم سے کے بعد ہوئی، اس وقت ہیں۔ شہر ملتان میں میرک آ مدم سے کے بعد ہوئی، اس وقت ہیں اس متر ہی تھا۔

اصطح ی نے "مسالك الممالك" میں اکھا ہے کہ ملتان ہے باہر نصف فرتخ کے فاصلے پر بہت ی عمارتیں ہیں، جنہیں "جندراور" کہاجا تا ہے۔ یہ امیر ملتان کی قیام گاہ ہیں۔ امیر صرف جمعہ کے روزیہاں ہے ہاتھی پر سوار ہوکر ملتان جا تا اور نماز جمعہ پڑھتا ہے۔ اہل ملتان کا امیر اس وقت، سامہ بن لوی بن غالب کی سل کا ایک شخص ہے، جس نے ملتان پر قبضہ کرلیا تھا۔ بیرہا کم منصورہ کے زیر ملکی نہیں رہتا ہے۔خلیفہ عباسی کے نام کا خطبہ پڑھتا ہے۔ملتان میں ایک بت ہے، جس کی بہت بڑی آمدنی کا متجہ ہے۔ ایسا مجمی ہوا کہ راجگان ہند نے بنو مدبہ پر جملہ کیا، شکر جرار لے کر ملتان تک آگے، مگر بہت میں ہوا کہ راجگان ہند نے بنو مدبہ پر جملہ کیا، شکر جرار لے کر ملتان تک آگے، مگر غلبہ بنو منبہ ہی کو حاصل ہوا۔ اس لیے کہ بنو منبہ کی دولت، تو ت و طاقت بہت زیادہ غلبہ بنو منبہ ہی کو وات اس بت کی بابت تکھا ہے ۔ اصطح کی نے ملتان کے اس بت کی بابت تکھا ہے کہ جو مال ودولت اس بت پر ہے۔ اس بت کی بابت تکھا ہے کہ جو مال ودولت اس بت پر ہے۔ اس بت کی بابت تکھا ہے کہ جو مال ودولت اس بت پر ہے۔

چڑھاوے کے طور پر چڑھایا جاتا ہے، آسے حاکم ملتان لے لیا کرتا ہے اور ای میں سے بت کے بچار یوں پرخرج کرتا ہے۔

ابن حوال نے لکھا ہے کہ ملتان سے باہر ایک فرح کے فاصلے برامیر ملتان کی قیام گاہ ہے۔امیرملتان سامہ بن لوی بن غالب کی سل سے تعلق رکھتا ہے۔ یہ سی دوسرے کے زیرتگیں نہیں ہے۔البتہ خطبہ خلفائے بنوعباس کے نام کا پڑھتا ہے۔ ابن رسته في "الاعلاق النفيسة" من تصريح كى ب كملتان من يكه لوگ ہیں،جن کا خیال ہے کہ وہ سامہ بن لوی کی سل سے ہیں ، انہیں ہومنبہ کہا جاتا ہے۔ یہی لوگ ہندوستان کے اس علاقے کے حاکم ہیں۔ بیامیر المونین کے نام کا خطبہ پڑھتے ہیں۔مقدی کابیان ہے کہ ملتان منصورہ ہی کی طرح ہے۔ گرمنصورہ كى برنسبت زياده آباد ہے۔ ملتان میں پھل كم ہوتے ہیں، مگر بہت سے ملتے ہیں۔ ایک درہم میں تمیں روٹیاں مل جاتی ہیں۔ یہ بہت خوبصورت شہرے، اس کی عمارتیں، سیراف کی عمارتوں جیسی ہیں، ساگوان کی لکڑی کی گئی منزلہ عمارتیں ہیں۔ اہل ملتان میں نہ تو زنا کاری کا وجود ہے نہ ہی شراب نوشی کا۔ اگر کسی کواس میں مبتلایاتے ہیں تو اسے تل کرتے یا حد جاری کردنتے ہیں۔خرید وفروخت میں بہلوگ نة دروغ كوئى سے كام ليتے ہيں، نہ بى نات اور تول ميں كى كرتے ہين - پرديسيوں، جن کی غالب اکثریت عربول شیمل ہے، سے بڑی محبت کرتے ہیں۔ ایک دریا ملتان سے ہو کر بہتا ہے، اسی دریا کا یانی پہلوگ یتے ہیں۔ ملتان میں بیداوار بہت ہوتی ہے۔ تجارت کی حالت بڑی اچھی ہے، خوش حالی عام ہے اور با دشاہ انصاف پسند ہیں۔بازار میں ایک بھی عورت بے بردہ نظر نہیں آتی اور نہ ہی برسرعام کو کی شخص كسى عورت سے بات چيت ہى كرتا ہے۔ يہاں كا يانى خوش ذا كقد، زندگى ير بہار، موسم خوش گوار ہے۔ شرافت بہت ہے، فاری زبان بھی اور بولی جاتی ہے۔ تجارت برسی نفع مند ہے۔ لوگوں کی صحت بہت اچھی رہتی ہے۔ البنتہ شہر میں گندگی ہے۔ مکانات بہت کمزور ہیں۔ ہوا ختک اور گرم رہتی ہے، ای وجہ سے یہاں کے لوگ گندمی رنگ ماکل بہ سیا ہی ہوتے ہیں۔

فذکورہ بالاتحریروں سے اندازہ ہوتا ہے کہ بنومدبہ کی سیاست کتنی اچھی اوران کی سیرت وکردار کتنا بلندتھا۔ نیزید کہ ملک اور اہل ملک پر اسلامی احکام کا نفاذ کس حد تک تھا۔ (تاضی)

منصور، شاعر مندي

علامه ابن النديم في "الفهرست" ميل منصور كا تذكره بهى ، شعرائے محدثين ابعض اسلاى عہد كے شعراء اور اپنے دور ك ساھ آك كے الن كے اشعاد كى مقدار كے بيان كے شمن ميں كيا ہے۔ اس كا تذكرہ "بيان النساء المحوائر و المماليك" كے عنوان كے شمن ميں كيا ہے اور لكھا ہے كہ منصور ہندى ، هنصور يمثل كا غلام تفا۔ منصور دوسرى صدى اجرى سے تعلق ركھتا ہے۔ (قاض)

منصور بن سندهی اسکندرانی

علامہ سیوطی نے "حسن المحاضرة" میں لکھا ہے کہ ابوعلی منصور بن سندھی دباغ اسکندرانی نخاس، نے سلفی سے روایت کی اور رہیج الاول ۲۴۲ ھیں وفات بائی۔ دباغ اسکندرانی نخاس، نے سلفی سے روایت کی اور رہیج الاول ۲۴۲ ھیں وفات بائی۔ مشدر ات الذهب میں سندھی کی جگہ "سید" اور دباغ کی جگہ "دماع" ندکور ہے۔ ایسایا تو کتابت کی غلطی کے سب ہے، یا طباعت کی ۔ (قاضی)

منصور بن محرسندهی اصبهانی

علامه ابن الجزري عاية النهاية "مين تحرير مات بين كه ابوالقاسم منصور بن على مدان الجزري على منهور ومعروف مجود اور قارى تصرف انهول نعلم تجويد محد سندهى وراق اصبهاني، منهور ومعروف مجود اور قارى تصرف

قراءة شخ على بن حسن شمشاطی سے شہر واسط عبن حاصل کیا۔ شمشاطی ، نبست امام زبی نے کھی ہے، جب کہ حافظ ابو علاء محمد بن جعفر بن احمد نے ان کی نبست دوشمشطی ' ذکر کی ہے۔ نیز لکھا ہے کہ بیام تجوید میں بہت ماہر متھے۔ شخ علی بن حسن کے علاوہ انھوں نے شخ ابراہیم بن احمد بر وری ، محمد بن جعفر اصبانی ، زید بن علی بن ابو بلال ، محمد بن بیٹم بن خالد ، ابو بکر شذائی اور علی بن محمد انصاری ہے بھی اخذ و استفادہ کیا۔ جب کہ خود منصور بن محمد سے ابوالفضل خزاعی ، احمد بن محمد نفی ، عبدالله بن محمد زراع طبر انی اور عثمان بن محمد بن ابراہیم مالکی نے قران شریف پڑھا اور حروف بن محمد زراع طبر انی اور عثمان بن محمد بن عبدالله اسکاف نے کی ۔ حافظ ابو عبدالله فرمات کی روایت ان سے احمد بن محمد بن عبدالله اسکاف نے کی ۔ حافظ ابو عبدالله فرمات ہیں کہ منصور بن محمد کی وفات کوایک زمانہ ہوگیا ، ان کی عمر لمبی نہ ہوئی ۔

یں مہ سوربی میں معاقب کے شخ ابوالحن صاحب تذکرہ کا تعلق جو تھی صدی ہجری سے تھا کیوں کہ ان کے شخ ابوالحن بن علی بن عبد الحمید شمشاطی ، ثغری واسطی ۳۸۳ھ تک بہ قید حیات رہے۔ (قائنی)

منكه مشهور مندى طبيب

علامہ ابن النديم نے ''الفهرست'' ميں جہاں فلاسفہ طبعيات، مناطقہ، ان کی کتابوں کے نام، ان کی مختلف نقول، شرحوں، ان ميں سے موجود کتابوں، کتابوں ميں مذکور اور نابيديا اليم کتابوں کا ذکر کيا ہے، جو بائی جاتی تھیں گر ہندوستان اور نظی ناقلین کے ہاتھوں میں ضائع ہوگئیں، دہاں منکہ کی بابت لکھا ہے ہندوستان اور نظی ناقلین کے ہاتھوں میں ضائع ہوگئیں، دہاں منکہ کی بابت لکھا ہے کہ منکہ ہندی، اسحاق بن سلیمان بن علی ہاشمی کے وابستہ گان میں سے تھا، جو ہندی سے عربی میں ترجمہ کیا کرتے ہے۔

بعد از ال طب کے موضوع پر اہل ہند کی عربی زبان میں پائی جانے والی کتابوں کے ذیل میں تحریر کیا ہے کہ 'سسر د' کی کتاب دس مقالوں پر مشتمل تھی ، کی کتاب دس مقالوں پر مشتمل تھی ، کی کتاب دس مقالوں پر مشتمل تھی ۔ بین خالد بر کئی نے منکہ ہندی کو تھم دیا تھا کہ وہ بیارستان میں اس کی شرح کھے۔

مورخ ابن اصبیعہ نے "عیون الانباء" بیں اکھا ہے کہ منکہ ہندی علم طب کا بہت براعالم، بہت اچھامعالی محیم ودانا اورفلفی تھا، بیان چندلوگوں بیں شامل تھا جن کا علوم ہند کے حوالے سے نام لیاجا تا ہے۔ علاوہ ازیں ہندوستانی اورفاری زبان کا ماہر تھا۔ اس نے زہر سے متعلق "شاناق ہندی" کی کتاب کا ہندوستانی زبان سے فاری بیں ترجمہ کیا۔ بی خلیفہ ہارون رشید کے دورخلافت بیل موجود تھا۔ خلیفہ کے علاج کی خاطر ہی ہندوستان سے عراق گیا اورخلیفہ کا کامیاب علاج کیا۔ بعض کتابوں میں راقم نے پڑھا ہے کہ منکہ ہندی، اسحاق بن سلیمان بن علی ہا شمی کے متعلقین میں شامل تھا اور ہندوستانی زبان سے فارسی اور عربی میں ترجمہ کرنے پر مامور تھا۔

"احبان المخلفاء والبرامكة"كواك يبات بيان كاجاتى ب کہ ایک بار ہارون رشید سخت بیار ہو گیا۔ شاہی اطباء نے علاج ومعالجہ کیا ، مگرا فاقہ نہ ہوا۔خلیفہ سے ابوعمر المجمی نے کہا کہ ہندوستان میں ایک طبیب ہے منکہ ، جو براعالم اور فلاسفی بھی ہے۔ اگر امیر المونین اسے طلب کرنے کے لیے کسی کو بھیج دیں تو ہوسکتا ہے کہ اللہ رب العزت اس کے ہاتھوں شفاعطا فرمادیں۔ چنال چہ خلیفہ۔ ن اس شخص کو وا فرمقدار میں زادراہ دے کر ہندوستان بھیجا۔ منکہ عراق پہنچا اور خلیفہ کا علاج كيا_الله كي حكمت كماس كعلاج سے خليفہ شفاياب موكيا-اس خوشي ميں مارون رشیدنے اس کامعقول ماہاندوظیفہ جاری کرنے کے ساتھ بہت باری دولت بھی مرجت کی ایک روز منکہ شاہی باغ سے گزرر ہاتھا کہ اس نے ایک بوڑھے مخض کو دیکھا، جس نے جا در بچھا کر، اس میں بہت ی جڑی بوٹیاں ڈال رکھی تھیں . اور بآواز بلند کہدر ہاتھا کہ میرے پاس ایک ایسامعون ہے، جو بیک وقت دائمی بخار، ت وق، ٹائیفا کڈ، پیٹھ اور گھٹوں کے درد، بواسیر، ریاحی امراض، جوڑول کی تکلیف، آنکھوں کی تکلیف، پیٹ کی جملہ پریشانیوں، سردور، پیشاب کے فیکاؤ، فالج اور رعشہ جیسی تمام بیار بول کی دواہے۔الغرض اس نے کوئی ایسی بیاری نہ

چھوڑی جس میں بیددوامفید نہ ہو۔ منکہ نے اپنے تر جمان ہے معلوم کیا بیخف کیا کہدرہا ہے؟ جب اس نے بتایا تو منکہ نے مسرا کرکہا کی بھی ہو، اتنا ضرورہ کے کہ شاہ عرب جابل انسان ہے۔ اس لئے کہ بیٹوس جو پی کہدرہا ہے، اگر وہ سب بیٹی ہو تا اس نے مجھے ہندوستان ہے بلوا کر مجھے میر ہابل خانہ ہے کیوں جدا کیا اور میری خاطرا ہے اخراجات کیوں برداشت کیے؟ جب کہ اس کا مقصد خودای کے کل کے برابر میں ہی حاصل ہورہا تھا اور اگر ایسانیس ہے تو پھر خلیفہ نے اسے آل کیوں نہ کردیا۔ اس لئے کہ شریعت میں ایسے آدی کا خون مبارح ہے۔ اس کی وجہ بیہ کہ اگراسے آل کردیا گیا تو صرف ایک جان کے ذیال سے بہت سے لوگوں کی زندگیاں نے جا کیں گی اور اگراسے چھوٹ دی گئی تو ہرروز کمی نہ کی کی جان لے گا، نہ صرف نے جا کیں گی اور اگراسے چھوٹ دی گئی تو ہرروز کمی نہ کی کی جان لے گا، نہ صرف نوا داور مملکت کی میں اور چار آدمیوں کی بھی جان لے سکتا ہے۔ بید دین میں فیاداور مملکت کی مروری کے متر ادف ہے۔

موسى سيلاني

علامه ابن الاثير جزريٌ في آب اللباب في تهذيب الانساب "مين ان كيابت صرف اتنالكها محرف سيلاني كم تعلق ابن معين فرمات مين كمية قد بين -

Mark The Control of the State o

موسى بن سندهي جرجاني

امام مہی "تاریخ جرجان" میں لکھتے ہیں کہ ابو محد موسی بن سندھی جرجانی برجانی برجانی کرابازی نے ۱۳۳۰ ہیں حضرت وکیج بن جراح، ابومعاویہ ضریر، ابراہیم بن ابوخالد اور یعیش بسطامی وغیرہ محدثین سے روایت کی۔ موسی بن سندھی کے پاس امام وکیج کی کئی ایک کتابیں بھی تھیں ہے ملاوہ ازیں انھوں نے شابداور اساعیل بن تکیم ہے بھی روایت کی۔ ان کے بارے میں حافظ عبداللہ بن عدی فرماتے ہیں کہوہ ثقہ ہیں۔ محد

بن عمر بن علاء صرفی جب بھی ہم سے حدیث بیان کرتے تو یون قرمایا کرتے سے: حدثنا ابو محمد موسی بن سندھی سگاك، الثقة ، المامون۔

امام مہی مزید لکھتے ہیں کہ ہم سے ابو بکر اساعیل نے ، ان سے عمر ان بن موی نے ، ان سے موی بن سندھی نے ، ان سے وکیج بن جراح نے اور ان سے ابوز بیر نے بروایت حضرت جاربر بن عبد الله رضی الله عنه بیرحدیث بیان کی کہ حضور اکرم صلی الله علیہ وسلم نے ارشا وفر مایا:

"بين العبد وبين الكفر ترك الصلوة :قال قلت لجابر: هل كنتم تعدون شيئاً من الذنوب شركا؟ قال :معاذ الله"

" بندے اور کفر کے درمیان حد فاصل نماز نہ پڑھنا ہے۔ ابوز بیر کا بیان ہے کہ میں نے حضرت جابر ہے معلوم کیا، کیا آپ حضرات کسی گناہ کو شرک بھی سیجھتے معلوم کیا، کیا آپ حضرات کسی گناہ کو شرک بھی سیجھتے معلوم کیا، کیا آپ حضرات کسی گناہ کو شرک بھی سیجھتے میں معاذ اللہ"۔

فيزرةم طراز بيل كهم سے احمد بن موى بن عيلى في ان سے على بن محمد في ان سے موى بن سوى بن جوريد في ان سے موى بن سرق في ان سے ابوم عاور شریر نے ، ان سے عوام بن جویر بید في ، ان سے موى بن سرق في مایا:

سے حسن نے بروایت حضر ت عبد الرحمٰن بن سمرة بی محدیث بیان کی که انھوں نے فرمایا:

"قال لی رسول الله صلی الله علیه وسلم: یا عبد الرحمن!

لاتسنل الامارة"

" بجھے سے اللہ کے رسول سلی اللہ خلیہ وسلم نے فر مایا عبد الرحمٰن! ا مارت وگورنری طلب مت کرنا"۔ طلب مت کرنا"۔

ا مام موصوف یمی عدیت درج ذیل طریقہ سے بھی بیان کرتے ہیں کہ ہم سے ابوالحن بن ابوعمر نے ، ان سے علی بن محد جو ہری نے ، ان سے موسی سندھی اور ابراہیم بن ابوغ الدعطار نے اور ان دونوں سے وکیج بن جراح نے ، ان سے علی بن رفاعہ نے اور ان حوزت حسن بھری نے بدر فایت حصرت عبد الرحمٰن بن سمرہ بیان کیا ہے۔ اور ان سے حصرت حسن بھری نے بدر فایت حصرت عبد الرحمٰن بن سمرہ بیان کیا ہے۔

مزیدفرماتے ہیں کہ جمر بن علی بن زہیر کی بیوی ام عبدالرحمٰن نے موی بن سندھی سے سے بیہ بات نقل کی کہ ہیں نے اپنے بچا: ابونفر سہم بن ابراہیم سہی کے ہاتھ سے لکھا ہوا و یکھا کہ ہم سے ابو بکر جمر بن احمد بن اساعیل نے ، ان سے عبدالرحمٰن بن محمد بن علی بن زہیر جرجانی نے ، ان سے میر سے والد نے کہا کہ جھے سے دہیر جرجانی نے ، ان سے میر سے والد نے کہا کہ جھے سے میری اہلیہ نے بیان کیا کہ ہم سے موی بن سندھی نے اور ان سے وکیج بن جراح نے بہدر دوایت ہشام بن عروہ عن ابھی عائشہ بیان کیا کہ حضرت عائشہ نے فرمایا:

"قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: من امتشط قائما ركبه الدين"
"د حضورا كرم صلى الله عليه وسلم في فرما يا كه چوخص كفر ابوكر كتاكها كركا، ال

ابو برحمر بن احمد بن اساعیل کا بیان ہے کہ زمیر نے فرمایا کہ میں نے اپنی والدہ سے کہا کہ ابا جان نے آپ کی روایت سے جھ سے بیصدیث بیان کی ہے،
آپ بنا کیں کہ اس صدیث کا ماجرا کیا ہے اور پس منظر کیا ہے؟ والدہ نے کہا کہ موک بن سندھی تمہارے والد کے پاس اکثر آیا کرتے تھے۔ ایک روز انھیں بختی ضرورت سے اپنے ساتھ لے جانے کے لیے میرے گھر آئے تمہارے ابانے کنگھاما نگا اور کو سے اپنی کھڑے کے لیے میرے گھر آئے تمہارے ابانے کنگھاما نگا اور بن جراح نے بیصدیت بیان کی ہے۔ امام مہی نے ابوغلی حسن بن حفص جرجانی کے بن جراح نے بیصدیت بیان کی ہے۔ امام مہی نے ابوغلی حسن بن حفص جرجانی کے تذکرے میں بی جمی لکھا ہے کہ انھوں نے موسی بن سندھی سے روایت کی ہے اور وہ صاحب موسی بن سندھی سے روایت کی ہے اور وہ صاحب موسی بن سندھی سے روایت کی ہے اور وہ صاحب موسی بن سندھی سے روایت کی ہے اور وہ صاحب موسی بن سندھی کے نام سے مشہور تھے۔

آگے امام موصوف رقم طراز ہیں کہ محد بن پربید بن سالم استرآبادی نے موی بن سندھی ہے روایت کی ہے۔ آگے ابواسحاتی ابراہیم بن موی کے تذکرے میں کھتے ہیں کہ ابو بحر جعفر بن محد فریا بی کا بیان ہے کہ میں جرجان گیا اور وہاں عصار ، سباک اور موی بن سندھی ہے احادیث کھیں۔

علامہ سمعانی نے ابواسحاق ابراہیم بن موسی زوزنی کے حالات کے شمن میں لکھا ہے کہ ابو بکر محمد بن حسن فریا ہی کہتے ہیں کہ جرجان جا کر میں نے صفار ، سباک اور موسی بن سندھی سے احادیث کھیں۔ان دونوں روایتوں میں جواختلاف ہے ، اسے قار ئین کرام خود ملاحظہ کرسکتے ہیں۔(ناض)

موسى بن اسحاق چندا بورى صيمورى كوكني

مسعودی نے لکھا ہے کہ میں ۱۳۰۳ھ میں شہر صیمور (چیمور) ہندوستان گیا۔اس وقت وہاں سربرآ وردہ تا جروں کی ایک بڑی تعداد موجود تھی۔مثلاً موسی بن اسحاق صندابوری۔

صیمور کی بابت باقی تفصیلات ،معروف بن زکر یاصیموری کے تذکرے میں گزرچکی ہیں۔(قاضی)

بزرگ بن شہر یار نے ''عجائب المھند'' میں لکھا ہے کہ ابو پوسف بن مسلم
نے ، ان سے صیمور میں ابو بکر نسوی نے اور ان سے موسی صند ابوری نے بیان کیا کہ
ایک روز میں حاکم صند ابور سے بات کر رہاتھا کہ وہ اچا نک بنس پڑا اور مجھ سے معلوم
کیا کہ تصییں معلوم ہے میں کیوں بنسا؟ میں نے کہانہیں تو اس نے بتایا کہ اس دیوار
پرایک مرغانی ہے وہ کہ رہی ہے کہ اس وقت ایک پردیسی مہمان آیا ہوا ہے۔ (تاضی)
موسی بن اسحاق صند ابوری ، چوشی صدی ہجری کے تھے۔
موسی بن اسحاق صند ابوری ، چوشی صدی ہجری کے تھے۔

مهراج شاه مندوستان

خلیفہ مہدی نے راجگان ہند کے نام دعوت اسلام کے خطوط بھیجے تھے۔ یہ تمام راجگان ،مسلمانوں کے زیر تگیں تھے۔ ان میں سے جن پندرہ راجگان ہندنے اسلام قبول کیا ، ان میں ملک ہندم ہراج بھی شامل تھا۔ بین خاندانِ پورس کا فردتھا۔ (تاض)

مهروك بن را بق ،حا كم الور

بزرگ بن شہر یار' عجانب الهند' میں لکھتے ہیں کہ مجھ نے مندوستان کی جوبا نیں، ابو محد حسن بن عمرو بن محوبہ بن حرام بن حموبہ بجیری نے ''بھرہ'' میں بیان كي تهين ان مين سيجمي بتايا تھا كەمين ٢٨٨ ھا مين شهر ' منصوره' مين تھا۔ اس وقت منصورہ کے ایک معتبر ومنتند عالم دین نے مجھ سے بیان کیا کہ"الرا" بے راجہ نے _ پیر ہندوستان اور اس کے آس پاس کے تمام راجاؤں میں سب ہے بڑا راجہ تھا،اس کی حدودریاست بالائی کشمیرے زیریں کشمیرتک پھیلی ہوئی تھیں،اس کا نام مهروك بن رایق تھا --- • ۲۷ ھا میں جا کم منصورہ عبداللّٰد بُن عمر بن عبدالعزیز کو خط لکھا۔ اس میں اس سے درخواست کی کہ ہندوستانی زبان میں مذہب اسلام کی تخریج وتفییر میرے لیے کر دی جائے۔ حاکم منصورہ نے ایک عراقی نژاد شخص کو بلایا، جو بہت تیز طرار، زیرک اور سمجھ دار نیز بلند قامت شاعر بھی تھا۔اس کی نشو ونما چوں کہ ہندوستان ہی میں ہوئی تھی ،اس لیےاسے ہندوستان کی مختلف زبانیں آتی تھیں۔ حاکم منصورہ نے راجہ 'الرا' 'کی خواہش اس سے بتائی۔ چنال چہاس نے ایک لمی نظم کہی ،جس میں نہ ب اسلام کی جامع تعریف وتشریح ذکر کی ے حاکم منصورہ نے بیظم راجہ الراکے بہاں بھجوادی۔ جب راجہ 'الرا'' کے سامنے نظم پڑھی گئی تو اسے بہت پیندآئی اور حاکم منصورہ کے نام دوسرا خط لکھ کر درخواست کی کہظم لکھنے والے کواس کے پاس بھیج دیا جائے۔ چناں چہوہ مخص گیا اور پورے تین سال تک اس کے یہاں قیام پذیررہا۔ جبمنصورہ واپس آیا تو حاکم منصورہ امیر عبداللہ نے اس سے راجہ 'الرا' ' کی بابت معلوم کیا۔اس نے اس کے تمام حالات بیان کیے اور کہا کہ جب میں راجہ الرائے بہال سے رخصت ہوا تھا، اس وقت وہ دل وزبان ے اسلام قبول کر چکا تھا۔ گر حکومت وسلطنت چلی جانے کے اندیشے سے اس کا

اعلان نه كرسكا تقارات فض في بيهى بنايا كه داجه الرافي مجه سے كما كه ميں مندوستانی زبان ميں قرآن كريم كي تفيير وتشريخ اس كے سامنے بيان كرول تفيير كرتے موئے جب ميں سوره يسين تك يہ بجا اور درجه ذيل آيت كي تشريخ كى:

"قَالَ مَنْ يُحْيِى الْعِظَامُ وَهِي رَمِيمٌ، قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَاهَا أَوَّلَ مَرُّةً وَهُو يَكُلُ حَلْقِ عَلِيمٌ،

تو وہ اپ تخت سے اٹھا اور فرش پر چلنے لگا۔ فرش کیا تھا اور پائی کا جھڑکا کہ ہونے کے سبب تر بھی۔ اس نے اپنی پیشائی زمین پر رکھ دی اور ذار و قطار رونے لگا یہاں تک کہ اس کی پیشائی کھڑ آلود ہوگی۔ پھر جھے سے مخاطب ہو کر کہنے لگا، بہی لائق عیادت رب ہے جواول اور قد بھ ہے، جس کی طرح کوئی بھی نہیں ہے۔ اس کے بعد اس نے اپنے لیے الگ ایک کمرہ بنوایا اور اپ اعوان وانصار سے بیر ظاہر کیا کہ میں ایک اہم کام کے سبب تنہائی میں پھھ وقت گزار نا چاہتا ہوں۔ اس کمرے میں وہ چیکے سے نماز پڑھا کرتا تھا، تا کہ کی کو خرد نہ ہوسکے۔ اس شخص نے یہ بھی بتایا میں وہ چیکے سے نماز پڑھا کرتا تھا، تا کہ کی کو خرد نہ ہوسکے۔ اس شخص نے یہ بھی بتایا کہ کہ کہ دراج الرانے اسے تین دفعہ میں ساست سوئن سونا عطا کیا۔

راجه بذا تیسری صدی جمری کا ہے۔ (اروڑ موجودہ واقع پاکستان) الورکا راجہ تھا۔ بزرگ بن شہر یارک کتاب میں جو ہر گجگہ "الرا" کھا ہوا ہے یہ کتابت یا طباعت کی غلطی کا نتیجہ ہے۔ (قاض)

母母母



the state of the s

ناقل ہندی

علامہ ابن النديم زبر،اس كے اثرات كے موضوع براهی گئ كتابول كے ذیل میں كھتے ہیں كر اجساس الحیات "نائی كتاب، ناقل مندى كی تالیف ہے۔

are the old there it was the fill

نجح بن عبد الرحمٰن ، الومعشر سندهي مدني

ان كى بابت خطيب بغدادي لكصة بيل كما بومغشر في بن عبدالرحن سندهى مدنى نے حضرت ابوامامہ ال بن صنیف کود مکھا ہے اور محد بن کعب قرظی ، نافع مولی ابن عمر، سعیدمقبری، محد بن منکدراور بشام بن عرده سے ساع حاصل ہے۔خودان سے ان كرائے : محد سميت يزيد بن مارون ، محد بن عمر واقدى، اسحاق بن عيسى طباع اور محدین بکارین ریان وغیرہ نے روایت کی خلیفہ مہدی نے انھیں مدین منورہ سے بغداد بلوایا تھا، جہال تاحیات سکونت پذیررے۔ بیمغازی کےسب سے بوے عالم تھے۔ فضل بن مارون بغدادی ہے منقول ہے، انھوں نے کہا کہ میں نے محمد ین ابومعشر سے سنا، انھوں نے بتایا کہ میرے والدسندھی نزاد تھے، منھنوں میں سوراخ تھا اور خیاط تھے۔ جب لوگوں نے بوچھا کہ پھر سغازی کس طرح یاد کئے؟ جواب دیا حضرات تا بعین کرام ان کے استاذ کے یہاں بیٹا کرتے تھے اور آپی میں مغازی کا تذکرہ کیا کرتے تھے،اس طرح انھوں نے مغازی یادکر کیے۔ اس کے بعد خطیب نے ان کے متعلق علماء کی جرح وتعدیل کا تفصیل سے

ابن سع يا الطبقات الكبرى "مين ارقام فرمات بين كه يرقبيله بنومخروم كى ایک عورت کے مکاتب تھے۔ بدل کتابت اداکر کے آزاد ہو گئے تو ام موی بنت منصور حمیر بیرنے ان کاولاء خریدلیا۔ • ےاھ میں بغداد میں ان کی و فات ہوئی۔ امام بخارى نے"التاريخ الصغير" بين ان كى بابت لكھا ہے كہ في ابومعشر سندھی ام سلمہ کے غلام تھے۔ ان کی روایت کردہ حدیث میں اختلاف ہے۔ اس كتاب ميں ايك اور جگه تضريح كى ہے كہ يچيٰ بن معين، ابومعشر سندھي ہے حديث نہیں لیتے تھے،انھیںضعیف فی الحدیث گردانتے اورہنس کران کا تذکرہ کرتے تھے۔ ابن النديم نے''الفھوست'' ميں تحرير کيا ہے کہ ابومعشر سندھی، وا قعات و سيرك عالم نيزمحدث تصدان كتابول مين ايك "كتاب المغازى" -امام ذہبی نے "تذکرة الحفاظ" ين تحرير كيا ہے كم ابومعشر فيح سندهي، مدنى فقیہ، مغازی کے عالم تھے۔ ان کا نام جے بن عبدالرحمٰن ہے۔ بن مخزوم کی ایک عورت ے مكاتبت كركے بدل كتابت اسے اداكر ديا۔ بعد ازاں، جيسا كه بيان كياجاتا ہے، ام موی بنت منصور نے ان کاولاء خریدلیا۔ حفظ ویا دداشت میں نقص کے باوصف سیلم کے ایک برتن تھے اور حفزت اسامہ بن مہل کی زیارت کا شرف حاصل ہے۔ انھوں نے محدین کعب قرظی ، موی بن بشار، نافع ، ابن المنکد ر، محد بن قیس اور ان کے علاوہ ایک جماعت سے روایت حدیث کی۔البتہ سعید بن المسیب سے ملا قات نہیں ہے۔ یہ بات، جامع ابوعیسیٰ تر مذی میں مذکور ہے۔ مگر میں سمجھتا ہوں کہ سعید ہے مراد ،سعید مقبری ہیں، نہ کے سعید بن المسیب، اس لیے کہ ابومعشر سندھی نے حضرت ابن المسیب سے بہ کثرت روایت حدیث کی ہے۔ ابومعشر سندھی سے ان کے صاحب زادے جمر کے علاوہ عبدالرزاق، ابونعیم، محد بن بکار، منصور بن ابومزاحم ادر دوسرے بہت ہے لوگول نے روایت حدیث کی۔ یجیٰ بن معین ان کی بابت فرماتے ہیں کہ بیتوی فی الحديث نبيس بي -امام احمد بن عنبل كہتے ہيں كہ يدمغازى كے برے عالم، صدوق تے، گراسناد درست نہیں کرتے تھے۔ ابونعیم کہتے ہیں کہ ابومعشر سندھی تھا دران کی زبان میں لکنت تھی۔ چنال چہوہ کہتے تھے ''حدثنا محمد بن قعب ''بجائے کعب کے۔ امام ابوزرعہ نے انھیں صدوق کہا ہے۔ امام نسائی فرماتے ہیں کہ تو گئیں ہیں۔ امام ذہبی فرماتے ہیں کہ تو گئیں ہیں۔ امام ذہبی فرماتے ہیں کہ تا ہم امام نسائی نے ابومعشر سے احتجاج واستدلال کیا ہے، البت حضرات شیخین نے ان کی روایت سے کوئی حدیث ذکر نہیں کی ہے۔ ان کا رنگ سفید نیک مقد اور جسم بھاری تھا۔ خلیفہ مہدی نے انھیں عراق طلب کر کے ایک ہزار و بنار و طیفہ جاری فرمادیا تھا اور ان سے کہا کہ آپ ہمارے دربائہ میں رہیں، تا کہ لوگ علم فقد حاصل کر لیں۔ ابومعشر کی وفات ماہ درمضان و کاھیں ہوئی۔

این العماد نے ''شدرات الدھب'' میں تحریر کیا ہے کہ ابومعشر سندھی کا نام، نجے بن عبدالرحمٰن مدنی ہے۔ یہ مغازی اور اخبار کے مشہور عالم ہیں۔ یہ عمدہ فی الحدیث نہیں ہیں۔ ابن معین فرماتے ہیں کہ یہ ناخوا ندہ سے اور خودان کی سند حدیث سے احتیاط کرنے سے ''العبو'' کے مصنف لکھتے ہیں کہ انھوں نے محمد بن کعب قرظی اور دوسرے کبار محدثین سے روایت کی ہے۔ خلیفہ مہدی نے انھیں اپنی صحبت میں رکھا تھا۔ ان کی رنگت سفید نیلگوں تھی اور یہ مولے بدن کے سے۔ کہا جاتا ہے کہ ان کا لقب' سندھی' لقب بالضد کی قبیل سے ہے۔

نجيب الدين متوكل: برا درشيخ فريدالدين سيخ شكر

شخ نجیب الدین بن شعیب بن احمد الملقب به "متوکل" شخ فرید الدین مسعود سخخ شکر کے حقیق بھائی اور مرید شھے۔ ان کے والد فتنہ تا تار کے زمانے میں سندھ آکر دہائش پذیر ہوگئے تھے۔ شخ نجیب الدین علوم ظاہری وباطنی دونوں کے جامع اور کشر العیال تھے۔ اس کے باوجود معاش کے تیک نہ تو کسی طرح کی تک ودوکرتے اور نہ بی اس سلسلے میں کوئی فکر دامن گیر دہا کرتی تھی۔ عبادت وریاضت میں یک سوئی نہ بی اس سلسلے میں کوئی فکر دامن گیر دہا کرتی تھی۔ عبادت وریاضت میں یک سوئی

ے منہمک رہے۔ انہاک کاعالم بیتھا کہ انھیں دنوں اور مہدیوں کے نام کی بھی خبر نہیں ہوتی ، نہ ہی معلوم تھا کہاں سے کما ئیں اور کہاں خرج کریں۔ ایک مرتبہ شخ نورالدین نے جب ان سے یو چھا کیا آپ شخ فریدالدین کے بھائی ہیں؟ فرمایا ہاں میں ان کا بھائی ہوں۔ کی عارف نے ان سے معلوم کیا آپ ہی نجیب الدین متوکل ہیں؟ فرمایا کہ ہیں آو "متاکل" (کھانے والا ہوں) نہ کہ متوکل۔ ۹ ررمضان ۲۲ ھیں ان کی وفات ہوئی اور شخ قطب الدین اوچھی کے پہلومیں فن کئے گئے۔ (اخبار الامنیاء)

نفرسندهی، زنج قوم کے سربراہ

مؤرخ طبری" تاریخ طبری" کے اندر ۲۷۷ ھے ذیل میں لکھتے ہیں کہ قوم زنج کے قائد کے رفیق وصاحب: سلیمان بن جامع نے دریائے وجلہ کے متصل جن قصبات وديهات ير قبضه كيا تقاء ان ميں سے بيشتر ير ابوالعباس بن موفق نے قبضة كرايا وصيديد ميس بهي ان كالشكرى بهارى تعدادموجودهي، جس كى قيادت نفر سندھی نامی ایک مخص کے ہاتھ میں تھی۔ بدلوگ جہاں بھی جاتے ، اس کو دیران كردية ، جنا اناج غله لے جاسكتے ، اٹھاكر لے جاتے اور جہاں اقامت گزين ہوتے، اس جگہ کوآباد کرتے تھے۔ ابوالعباس نے اسے سیدسالاروں کی ایک جماعت کوجس میں شناہ، (دمشجور) فضل بن موی بن بغااور اس کا بھائی: محمد شامل تھے، مھوڑوں کے ساتھ صینیہ کی طرف روانہ کیا۔ ابوالعباس خود بھی اینے وزیرنصیر کے ہمراہ گھوڑے برسوار ہوا، اور''برمساور'' کوعبور کرلیا۔ زنجیوں کالشکر بھی مقابلے ے لیے مقام" ہرت" کے بینے گیا۔ ابوالعباس نے بھی تھم دیا کہ تمام گھوڑوں کو دریائے د جلہ عبور کرکے'' ہرت' مینجایا جائے۔ جب زنجیوں نے گھوڑے د کیھے تو وہ سخت دہشت ز دہ ہو گئے اور فورا کشتیوں میں جابیٹھے اور تھوڑی ہی دہر میں شذا اور سمیریات ان کے قبضہ ہے نکل گئے۔ جب فرار کی کوئی راہ نظر نہ آئی تو زمجیوں نے

ہتھیارڈال دیے۔ان میں سے کھی وقل اور کھی وقیدی بنالیا گیا۔ جب کہ بعض نے اپنے آپ کو دریائے دجلہ کی موجوں کے حوالے کردیا۔ ابوالعباس کے لشکر نے چاولوں سے بھری بری ان کی کشتیوں پر قبضہ کرلیا۔ نیز زنجوں کے سردار نفر سندھی کو بھی پکڑ لیا۔ پھی ذنجی فکست کھا کر''طبشا'' کی جانب فرار ہو گئے اور پھی''موق الجنیس'' کی جانب ابوالعباس بہت سارا مال غنیمت کے کراور صیدیہ کوفتے کرنے کے بعد زنجوں کو وہاں سے جلاوطن کر کے اپنی جائے قیام واپس آیا۔

نفرسندھی کی بابت، اس نے زیادہ تفصیل راقم کودست یاب نہ ہوگی۔ یہ زنجوں کا سیدسالارتھا۔ ان کے ساتھ بنوعباس کی ضد میں جاملاتھا۔ یہ تلیسری صدی ہجری نے تعلق رکھتا ہے۔ (تامنی)

نصرالله بن احد سندهي بغدادي

خطیب بغدادی لکھے ہیں کہ ابوائس نفر اللہ بن احمد بن قاسم بن سیمامعروف بابن السندی ''دائیے'' باب الازج میں رہتے تھے۔ انھوں نے ابوالقاسم بن سنبک سے روایت مدیث کی اور میں نے ان سے مدیث کھی ہے۔ بیصدوق تھے۔ مزید لکھے ہیں کہ ہم سے نفر اللہ بن احمد نے ، ان سے عمر بن محمد بن ابراہیم مشاہد نے ، ان سے محمد بن محمد بن سلیمان باغندی نے ، ان سے ملی بن عبداللہ مدین مشاہد نے ، ان سے ملازم بن عمر بمانی نے ، ان سے عبداللہ بدر حنی نے اور ان سے قیس بن طلق نے ، ان سے ملازم بن عربی انی نے ، ان سے عبداللہ بدر حنی نے اور ان سے قیس بن طلق نے ، ان سے والد حضر سے طلق بن عبداللہ بن علی کی روایت سے بیان کیا کہ انھوں نے فر مایا:

" نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے یہاں ایک بچھونے بھے ڈنک ماردیا تو آپ نے مجھ پر جھاڑ پھونک کی اور بچھوکو ماردیا"۔ فری قعدہ ۳۳۳ ھیں ٹھر اللہ کی وفات ہوئی۔ نفراللہ کے والد: ابو بکر احمد بن قاسم بن سیمانیج کا تذکرہ گزر چکا ہے۔ باب الازج، مشرقی بغداد میں ایک بہت بڑا محلہ تھا، جس میں بہت سے باز اراور متعدد محلے تھے۔ ان میں سے ہرمحلہ اتنا بڑا تھا کہ پوراا یک شہر معلوم ہوتا تھا۔ (قاض) نصر بن سندھی بغدادی

جاحظ نے اپنی مشہور کتاب ''البیان و التبیین ''میں لکھا ہے کہ بی عباس کے فلاموں میں سے سندھی کے دونوں لڑکے: ابراہیم اور نفر بھی ہے۔ نفر تاریخ اور احادیث کے بڑے عالم شے اور ابن الکئی اور بیٹم کی حدیث سے تجاوز نہ کرتے ہے۔ نفر بن سندھی بن شا مک، خلیفہ ابوجعفر منصور کے آزاد کردہ فلام شے اور خلاقت عباسیہ کے اہم فردشار ہوتے تھے۔ ان کا تعلق دوسری صدی ہجری سے ہے۔ (تانس) نفر بن شیخ حمید باطنی ملتانی

یہ بات واضح نہیں ہے کہ نصر بن شخ حمید باطنی، ملتان کا حاکم تھایا نہیں۔ البتہ اتناضرور ہے کہ یہ چوتھی صدی ہجری کے نصف ثانی کا ہے۔

نفيس سندهى بغدادي

جاحظ نے ''البیان و التبیین ''میں لکھائے کہ میں نے اپنے ایک خادم سے
پوچھا کہ اس غلام نے کن لوگوں میں اسلام قبول کیا؟ تو اس نے بتایا کہ اصحاب سند
نعال میں، اس سے اس کی مراد سندھی جوتے بنانے والے تھے۔ کتاب مذکور کے
مخشی نے اس پرلکھائے کہ جاحظ کے اس خادم کا نام ''نفیس' تھا۔

ایمامعلوم ہوتا ہے کہ جاحظ کے اس خادم نفیس کا تعلق شہر '' کتبایت' سے تھا۔ اس لیے اس کی صنعت کے سلسلے میں جوتوں کی جانب اشارہ کیا۔ کیوں کہ کتبایت کے بے ہوئے جوتے عرب اور عراق کے بازاروں میں تیسری صدی تک بہت مشہور تھے جیسا کہ مسعودی نے لکھا ہے کہ'' کنبایۃ'' ہندوستان کا ایک شہر ہے، یہی وہ شہر ہے جس کی جانب''نعال کنبائیۃ'' مفسوب ہیں۔ یہ جوتے اسی شہر میں بنتے ہیں۔ نفیس سندھی تیسری صدی ہجری کا ہے۔(انامنی)

شيخ الشيوخ: نوح بكري سندهي

ان کی بابت ' تحفة الکوام' کی تحریر کا خلاصد درج ذیل ہے:

شخ الشیوخ نوح بھکری سہروردی ، سندھ کے اجل اولیاء اللہ اور شخ شہاب
الدین سہروردی کے کامل ترین مریدین وخلفاء میں سے تھے۔ بھکر میں جے قدیم
زمانے میں ' فرستہ' کہاجا تا تھا، رہائش پذیر ہے۔ کہتے ہیں کہ شخ بہاء الدین زکریا
ملتانی نے ، شخ سہروردی سے بیعت ہونے اورا کتاب فیض کرنے کے بعد جب آن
سے ملتان واپس جانے کی اجازت چاہی تو شخ سہروردی نے اجازت دیتے ہوئے
ان سے فرمایا کہ فرستہ ، سندھ میں میرا ایک نہایت نیک تلمیذر ہتا ہے، وہ میر سے
یاس اپنا چرائے ، بٹی اوراس کا تیل لے کرآیا اور صرف مجھ سے اکتاب فیض کیا۔
یاس اپنا چرائے ، بٹی اوراس کا تیل لے کرآیا اور صرف مجھ سے اکتاب فیض کیا۔
جب تم سندھ جانا تو اس سے ضرور ملا قات کرنا۔ مگر خدا کا کرنا ایسا ہوا کہ شخ بہاء الدین
جس وقت فرستہ پنچے تو آخیں معلوم ہوا کہ نوح بھکری کی وفات ، و پیکی ہے۔
جس وقت فرستہ پنچے تو آخیں معلوم ہوا کہ نوح بھکری کی وفات ، و پیکی ہے۔
جس وقت فرستہ پنچے تو آخیں معلوم ہوا کہ نوح بھکری کی وفات ، و پیکی ہے۔

نهق مهندي

ابن النديم في "الفهرست" كاندر معلمين، مهندسين، ارتماطيقين، علمائے موسيقى، حساب دانوں، علمائے نجوم، مختلف الات كے بنانے والوں، علمائے موسيقى، حساب دانوں، علمائے نجوم، مختلف الات كے بنانے والوں، ارباب خيل وحركات كے تذكر سے ذيل ميں لكھا ہے كمانہى ميں "مندى" مدى تھے۔ان كى ايك كتاب كانام" كتاب المواليد الكبير" ہے۔

باب:و

وطبى كلمنجا ،سلطان مالديب

تختہ الا دیب میں وطی کلمنجا کی بابت تحریر ہے کہ اس نے ۱۱۰ ھے۔ ۱۳ ھے۔ ۲۳ ھے تک تک پورے بیس سال مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب تک پورے بیس سال مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب "دمری دعمّا سور مہاردن' تھا۔

ياب: ٥

بارون بن محر بعروجی اسکندرانی

حموی نے ''بروص'' بھروچ کی بابت لکھا ہے کہ ابو محمد ہارون بن محمد بن مہلب سلفی بھرو جی ہندی کی نسبت اسی شہر کی جانب ہے۔ میری ان سے ملاقات ''اسکندر یہ' (مصر) میں ہوئی۔

یہ بہت نیک اور صالح تھے۔ گراپنا مائی الضمیر ، عربی یا فاری میں بہ مشکل تمام ہی اداکر پاتے تھے۔ یہ جج بیت اللہ کے شرف سے بہرور تھے اور اس وقت میں از ان دینے کی خدمت انجام دے رہے تھے۔ میں از ان دینے کی خدمت انجام دے رہے تھے۔ موصوف ہے متعلق مزید تفصیل نیل سکی ۔ بیسا تویں صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (قاضی)

ہارون بن موسی ملتانی سندھی

حیوانات کے مذکرے کے ضمن میں حموی نے لکھا ہے کہ ملتان، سندھ میں

ہارون بن موی نا می ایک محف تھا یہ قبیلہ از دکا غلام تھا۔ علاوہ ازیں بلند پایہ شاعر،
بہادرو ہے باک، اپنی قوم میں معزز وصاحب وجا بت اور ملتان سے ملحقہ، سندھ
کے علاقے کا حاکم تھا۔ ایک دفعہ یہ اپنے ایک قلعہ میں تھا کہ بندوستان کے راجہ
سے اس کی ٹر بھیٹر ہوگئ۔ بندوستان کے راجہ نے ہاتھیوں کے لشکر کو مقابلے کے
لیے آگے کر دیا۔ یہ دیکھ کر ہارون بن موسی اپنی افواج کی صف کے بہا منے نمودار ہوا
اور ہاتھیوں کے سردار، بڑے ہاتھی کی طرف کو بڑھا۔ ہارون نے اپنے کرتے کے
یہ پہلے سے ہی ایک بلی چھپار کھی تھی۔ جب اس ہاتھی کے قریب پہنچا تو اس کے
اور بلی چھوڑ دی۔ اس سے گھبرا کر بڑا ہاتھی بھا گ کھڑ ابوااور بہی تدبیراس راجہ کی
قریب بہنچا تو اس کے
قریب بہنچا تو اس کے
گلست کا سبب ہوئی۔ راجہ مقتول ہوا اور مسلمان فتح یاب۔ ہارون بن موسی نے
ایک لمی نظم کے اندراس واقعہ کوذکر کیا ہے۔ جس کا پہلاشعر درج ذیل ہے:

أليس عجيباً بإن تلقه الله فطن الاسد في جرم الفيل(١)

مؤرخ ابودلف نے ہارون بن عبداللہ ملتانی مولی ازد کی ''ملتانی ''نسبت کے پس منظر کے تعلق سے لکھا ہے کہ اس کے آباء واجداد، قدیم زمانے سے ملتان میں آباد ہیں اور ہارون کی پیدائش اور نشو ونما بھی ملتان ہی میں ہوئی ۔ بیہ بہت مشہور شاعر تھا۔ اس کے اشعار کتب تاریخ میں فدکور ہیں۔ لہذا ہوسکتا ہے کہ ہارون بن موی اور ہارون بن عبداللہ دونوں ایک ہی ہوں اور والد کے نام میں غلطی ہوگئی ہو۔ ہارون بن موی تیسری صدی ہجری سے تعلق رکھتا ہے۔ (قاضی)

مبة الله بن مهل سندهي اصبهاني

ہبة الله بن مهل سندهی نے شخ ابوعبدالرحمٰن سلمی کے شاگر دوخادم: ابوسعیدمحمد

⁽۱) بیقسیده سر ها شعار پر مشمل ب، حضرت قاضی صاحب نے درج کتاب کیا ہے، گرناچر نے اختصار کے لیے حذف کردیا۔ (ع، ر، بستوی)

بن علی بن محمد خشاب نیسا بوری متوفی ا ۴۴ هاور ابومعالی بغدادی ہے روایت کی اور ان سے حافظ ابن عسا کراور علامہ سمعانی نے روایت کی۔

علامہ سمعانی نے "الانساب" کے اندر ابوسعید محد بن علی بن محد ختاب کے تذکرے میں لکھا ہے کہ ہمارے لیے ان سے محد بن فضل فرادی اور مبتہ اللہ بن مہل سندھی نے روایت کی۔

امام ذہبی نے "کذکرہ العضاظ" میں امام ابو معالی بغدادی متوفی ۲ کا ہے۔
ترجمہ میں لکھاہے کہ انھوں نے مبة اللہ بن سندھی سے اصبان میں ساع حدیث کیا ہے۔
مبة اللہ بن مہل سندھی جیسے عظیم المرتبت شیخ وعالم کے حالات مزید نہ ل
سکے۔ بید نہ صرف حدیث کے عالم سخے، بلکہ اس میں امام بھی ہے۔ اصبان میں
دہتے ہے۔ ان کا تعلق یا نچویں صدی ججری سے تھا۔ (تاض)

ہدی کلمنجا ،سلطان مالدیپ

تحفة الادیب میں مذکورہ کہ ہدی کلمنجا کی ماں کا نام''ہریا ما واکلع'' تھا، جو قہریا ما واکلع کی لڑکی تھی۔ ہدی کلمنجا کا جدی نسب تو تاریخ میں مذکورہ۔ یہ محقہ ۱۵۵ ھیں سریر آرائے سلطنت ہوا اور ۲۹۲ ھ تک پورے سات سال حکومت کی، اہل مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب''سری ویرابارن مہاردن' تھا۔

بلى كلمنجا ، سلطان مالديب

تحفۃ الادیب،ی میں الی منجا کی بابت بھی تحریب کہ ایدع ماواکلع نامی خاتون نے بوقبل کلو الکندری سے شادی کی،جس سے سلطان ہلی کلمنجا پیدا ہوا۔ الکندری مالدیپ کے ایک جزیرہ کانام ہے۔ اس نے ۱۲۲ ھے ۱۲۲ ھ تک محض ڈیڑھ برس ہی مکومت کی۔ اہل مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب "سری سنھا ابار ن مہاردن "تھا۔

بيموءملك سنده

جیمو، سنکھار بن دودہ بن بھونکر بن سومرہ کی بیوی تھی۔ سنکھار کا چوں کہ کوئی امورسلطنت لڑکا نہ تھا، جو تخت وتاج کا وارث ہوتا، اس لیے اس کی بیوی نے ہی امورسلطنت اپنے ہاتھوں میں لے لیے اور ''شہرطور وتہری'' کے خاندان سومرہ کے تخت پراپنے بھائیوں کو بھادیا۔ بید مکھ کرسومرہ خاندان کے ایک شخص اور'' قلعہ دھمکہ'' کے حاکم: ''دودہ'' نے چند دنوں کے بعد، ملک کے اطراف واکناف سے اپنی قوم کے افراد اور اپنے بھائیوں کو بھی کرے ''دھیمو'' کے بھائیوں سے جنگ کی اور انھیں''شہر طور وتہری'' کی سلطنت سے بے فل کر دیا۔ (تختہ الکرام)

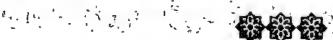
یہاں یہ بات قابل ذکر ہے کہ سومرہ، سندھ کا ایک خانہ بدوش خاندان تھا، جس نے سندھ پر قبضہ کر کے ۲۲۵ھ سے ۵۲م تک حکومت کی۔ اس خاندان کی تاریخ بالکل معلوم نہیں۔ ہاں اتنا ضرور ہے کہ زمانہ کدیم سے اس خاندان کے لوگ سندھ میں رہ رہے ہیں۔ آل تمیم سے تعلق رکھنے والے آخری عباس گورز کے بعد سے سندھ میں ان کی حکومت رہی۔ درحقیقت سندھ پر قبضہ بنوتمیم کے عہد تک اس خاندان کے بعض افراد کا ہی تھا۔ بنوتمیم کے بعد بیخود مخارجا کم بن گئے اور • ۵۵ھ تک حکومت وسلطنت ان کے ہاتھ میں رہی ۔ منتخب التو اربخ میں مذکور ہے کہ سلطان ، عبدالرشید بن سلطان محمود غرنوی جب با دشاه بنااوراس کی حدود سلطنت ، سنده تک بہنچ گئی تو چوں کہ ہے کم عقل بے وقوف اور امور مملکت سے لا برواہ تھا، اس لیے امرائے سندھ نے بغاوت کردی۔اور "تہری "کے نواحی علاقوں میں خاندان سومرہ کے کچھلوگوں نے بھی ۲۵م میں خروج کیا اور اپنے ہی خاندان کے ایک مخص ''سومرہ'' کواپنا حکمراں نامز دکر دیا۔ جب کہ بیلوگ *سندھ کے ن*زاحی علاقوں پر دوسو سال سے قابض حلے آرہے تھے۔ تاہم خلفائے بنوعباس کے فرماں بردار تھے اور

أنفي سالان خراج بهي اداكرتے تھے۔

امرائے خاندان سومرہ کی ایک عادت میتھی کہوہ دیگراتوام سے تعلق رکھنے والے اوگوں پرمبرلگادیا کرتے اور کہتے کہ بیسارے لوگ ہمارے غلام ہیں۔ بیخودتو عمامه باندھتے، گردوسروں کو پیم تھا کہ سروں پر بنی ہوئی رسی باندھا کریں، عمامہ نہ باندھیں۔ای طرح بیایے ہاتھ اور یاؤں کے ناخن جڑے اکھاڑڈ التے اور وجہ جواز کے طور پر کہا کرتے تھے کہ اس طرح ہم، دوسروں سے متاز نظر آتے ہیں۔ جب سی عورت کے بہاں ولادت ہوتی توبیاس کے پاس بیں جاتے بلکا سے بول بى عضو معطل بنا كر جيور ويت مي كهدنون بعدايك ذبين عورت نے ايك تدبير اختيار كى، جس سے يہ عادت ختم ہوگئ ۔ بدلوگ بھیٹر کے بھنے ہوئے گوشت كے ہمراہ شراب پیتے تھے اور اس سلسلے میں یہاں تکظم وتعدی سے کام لیتے کہ اگر کسی گھریر مردنه ہوتے تو عورتوں ہے ہی بھیر جرالے جایا کرتے۔ بعد میں ای بات کو لے کر سومرہ اورسمہ قوموں کے درمیان شدید جنگ ہوئی اس سے بعد سے 'سمہ' کے لوگ سندھ کی حکومت وریاست پرقابض ہو گئے۔اس سے پہلے توم''سمہ' زبین دارادر كاشت كارتهى - (تخة الكرام)

علامہ سیدسلیمان ندوی نے لکھا ہے کہ خاندان سومرہ کے لوگ اساعیلی فرقہ سے تعلق رکھتے تھے۔ اور کھانے بینے ، نیز شادی بیاہ کی بعض گفرید رسوم بھی ان کے یہاں پائی جاتی تھیں۔ بایں ہمہ بیلوگ خودکومسلمان شار کرتے تھے اور اپنالقب '' ملک فیروز'' رکھر کھا تھا۔ ان کا فد ہب، قرامط اور اساعیلیوں کے فدا ہب کا ملخوب تھا۔ انہی فیروز'' رکھر کھا تھا۔ ان کا فد ہب، قرامط اور اساعیلیوں کے مزاہب کا ملخوب تھا۔ انہی لوگوں نے ہندوستان میں بیہ بات پھیلائی کہ حضرت علی رضی اللہ عنہ 'وشنو'' کے مظہر اور اور تاریس حکام سومرہ کے پاس، اساعیلیوں کے مرکز: قلعۃ الموت سے مبلغین آیا اور اور تاریس حکام سومرہ کے پاس، اساعیلیوں کے مرکز: قلعۃ الموت سے مبلغین آیا کہ کے بیاری کے ہدتک اور اور تاریس کے مرکز تو تھے۔ ان کی حکومت کم از کم تین سو پھیٹر سال، سلطان محرکہ تعلق کے عہد تک رئیں۔ (عرب وہندے تعلقات)

خاندان سومره کے حکام وامراء اوران کی مدت وسلطنت درج ذیل ہے: ا-سومره اول ۲- بهونگر بن سومره اول ، وفات: ۱۲ مه هدت حکومت: ۱۵ ارسال س- دوده بن مجو تراول: ۲۳ رسال س- سنهار: ۱۵ ارسال אי אין אין אין ۵- هيف:۳۳رسال ٨- محتو:٣٣٠ رسال، ے- دودہ فانی: ۱۲سال ١٠- محرطور: ١٥ ارسال 9- محصير واول: ١١رسال اا- كھيزا ثانى: چندسال ١١٠- دوده ثالث: ١٠١٠ יוו- אוליייות ולו יייור שייילי אוניון ١٥- محوكر ثاني: ١٥ ارسال -12- פפנפנוש: 27 ניון ١٩- يجونكر ثالث: • ارسال ١٠٠ مير - فاندان سوم ه كا آخرى عام الى كى حكومت كا خاتم ا 2 كومس سلطان فرخلق کے عبد حکومت میں



المناف ال



باب: ی

يجي ابومعشر سندهى

امام ابومعشر محمد بن احمد بن مهاد دولا في نے اپن گرال قدر تاليف "كتاب الكنى و الأسماء" كاندران حضرات كانذكره كرتے بوئ ، جن كى كنيت "ابو معشر" ہے، كھا ہے كہ ان بيل سے ابومعشر يحيى سندهى مولى ابن ہاشم بيل نيزلكھا ہے كہ ان بيل سے ابومعشر يحيى سندهى مولى ابن ہاشم بيل نيزلكھا ہے كہ بيل نے عباس بن محمود سے سنا كہ بيل نے يجی بن معين سے سنا، انھول نے فرمايا كہ بيل نے عباس بن محمود سے سنا كہ بيل نے يجی بن معين سے سنا، انھول نے فرمايا كہ ابومعشر كانام محمود ہولى ام موى بيل ۔

غالبًاصاحب تذكره دوسرى صدى بجرى المعشر زياده بن كليب اور الومعشر المام دولا بى نے حضرت ابراہیم مختی کے تلمیذ: ابومعشر زیاده بن كلیب اور الومعشر الموسف بن برید براء كا تذكره كیا ہے۔ ظاہر ہے كہ ابومعشر بحتى سندهى موكى ابن ہاشم اور ابومعشر بحتى بن عبد الرحمٰن سندهى مولى ام موسى بنت منصور میں واضح فرق ہے۔ اور ابومعشر بحتى بن عبد الرحمٰن سندهى مولى ام موسى بنت منصور میں واضح فرق ہے۔ عملامہ دولا بی نے بھی بیان كیا ہے۔ (تاضی)

یجی بن محراموی ، حاکم سنده

ابودلف مسہر بن مہلہل نے اپنے سفر نامے کے اندر'' ملتان' کے تذکر بے میں تحریر کیا ہے کہ بیشہر بیخی بن محداموی کے قبضہ بیس ہے، جومنصورہ کا بھی حاکم ہے۔ بلکہ سندھ بورا کا بورا اس کے زیر تگیں ہے۔ ملتان میں حکومت مسلمانوں کی ہے اوراس کا کرتا دھرتا حضرت علی بن ابوطالب کی نسل میں سے ہے۔ جامع مسجد

اس عظیم شہر کے متصل ہی ہے۔ یہاں اسلام کی شان و شوکت ظاہر و باہر ہے اور امر بالمعر وف اور نہی عن المنکر کا خوب رواج ہے۔ یہاں سے روانہ ہو کر میں سندھ کے ایک شہر '' منصورہ'' گیا، جہاں خلیفہ اموی مقیم تھا، بیا ہے نام کا خطبہ بڑھتا اور حدود وقصاص نافذ کرتا ہے۔ بیتمام سندھ کیا خشکی ، کیا سمندرسب کا مالک ہے۔ منصورہ سے سمندرکا فاصلہ بچاس فرس نے ۔ اس کے ساحل پرشہر ''دیبل'' ہے۔ جموی نے چین کے تذکرے میں ایبانی لکھا ہے۔

یکی بن محراموی، تیسری صدی ججری کا ہے۔ لگتا ہے کہ اس کی ولا دت اور نشو ونما سب کچھسندھ ہی میں ہوئی۔ بیسندھ کے بیش تر علاقوں کا حاکم تھا۔ اس کے دور حکومت میں اسلامی قوانین کا بغاذ بھر پورانداز میں رہا۔ اس حوالے سے آج بھی ، اس اطراف میں اس کی خاصی شہرت ہے۔ (تانی)

يزيد بن عبدالله قرشي بيسري مندي

امام ابن ابوحاتم رازی نے دسکتاب المجوح و التعدیل" میں تصریح کی ہے کہ
یزید بن عبداللد قرشی بیسری نے عمر بن محمری سے روایت حدیث کی اور خود یزید سے علی
بن ابوہاشم طبراخ وغیرہ نے نیز لکھا ہے کہ نہ بات میں نے اپنے والدسے تی ہے۔

مسعودی نے "صیمور" کے بیان میں لکھا ہے کہ یہاں تقریباً دس ہزار بیاسرہ آباد ہیں۔ پھر لکھا ہے کہ یہاں تقریباً دس ہزار بیاسرہ آباد ہیں۔ پھر لکھا ہے کہ بیاسرہ "سے مرادوہ مسلمان ہیں، جن کی بیدائش ہندوستان میں ہوئی، بیاسرہ ان کالقب ہے۔ بیا سرہ کاواحد" بیسر" ہے اور جمع "بیاسر"

گراتی زبان میں '' بے 'دوکوکہا جاتا ہے۔ جب کہ ''مرہ'' راس کو۔اس طرح ' ''بیبر'' کامعنی ہوتا ہے'' دوراسین'' دوسروں والا۔ اس سے مراد ایس شخص ہے جس کے والدین میں سے ایک ہندی نزاد ہواور دوسرا عربی نژاد۔ غالباً برید بن عبداللہ تیسری صدی ہجری ہے تعلق رکھتے ہیں۔(قاض)

لعقوب بن مسعود بن سليمان اجودهني

شیخ یعقوب بن فریدالدین بن سلیمان بن احمد بن یوسف بن محمد بن فرخ شاه عمری اجودهنی ، حضرت شیخ مسعود فریدالدین کے سب سے چھوٹے صاحب زاد ہے سیھے۔ میہ جود وکرم اور سخاوت و دریا دلی میں بہت مشہور سے ملامتیہ جارہے سے کہ نواحی امروہ یمن قبل کردیے گئے۔اور پھر کچھ ہتانہ چل سکا۔

شی جمہ بن مبارک کرمانی بیان کرتے ہیں کہ میں ایک مرتبہ یعقوب کے ہمراہ ''اودہ'' گیا۔ اتفاق ہے ای شب حاکم اودہ شدید بیار ہوگیا۔ اس کے بیٹ میں صد درجہ درد پیدا ہوگیا۔ اطباء نے ہمکن علاج کیا، گر بجائے شفا کے مرض مزید شدت اختیار کرگیا۔ تب کی نے کہا کہ شخ لیعقوب بن شخ فریدالدین آج کل یہاں شدت اختیار کرگیا۔ تب کی نے کہا کہ شخ لیعقوب بن شخ فریدالدین آج کل یہاں آئے ہوئے ہیں، البذا آخیں بلوایا جائے۔ چناں چہ آپ تشریف لائے۔ حاکم اودہ کے پاس بیٹھ گئے اور اس کے بیٹ پراپی دوانگلیاں رکھ کر کچھ پڑھا اور اللہ رب العزب نے اس مح شفاد ہے دی۔ اس سے خوش ہوکر حاکم اودہ نے آخیں بہت مارا مال اور بیش قیمت کیڑے ازراہ نوازش عطا کئے۔ گر آپ نے سارا کا سارا اس سارا مال اور بیش قیمت کیڑے ازراہ نوازش عطا کئے۔ گر آپ نے سارا کا سارا اس کے حاجوں اور در بانوں میں تقسیم کر دیا اور خود کھے بھی نہاے۔ (کرانات الاولیہ)

يوسف اول، سلطان مالديب

تحفة الادیب میں اس کی بابت تحریر ہے کہ یوسف اول ، سلطان علی کامنجابن سلطان محمد اور کامنجابین سلطان محمد اور کامنجا بن سلطان وطبی کامنجا کا حقیق بھائی تھا۔ اس نے ۱۸۴ھ سے ۱۹۳ ھ تک کل سامت سال ، مالدیپ پر حکومت کی۔ اہل مالدیپ کی زبان میں اس کا لقب ''سری بونا دیت مہاردن' تھا۔

AND STUDIES HOLD SE

بابالآباء

ابوجعفرسندهى

امام دہیں نے "مذکو ق الحفاظ" میں عمر و بن مالک راسی کی بابت لکھا
ہے کہ امام تر ندی نے بیان کیا کہ امام بخاری نے فرمایا کہ بیعمرو بن مالک کذاب
ہے ،اس نے ابوجعفر سندھی کی کماب بہ طور عاریت لے کر اس میں بہت کی احادیث کی کرویں۔

ابوجعفر سندھی کے بارے میں اس سے زیادہ کوئی بات راقم کون ل کی۔ گر اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ یہ طیم المرتبت محدث تھے اور ان کی ایک کتاب بھی تھی۔ بیتیسری صدی ہجری سے تعلق رکھتے تھے۔ (تاض)

الوحارشهمندى بغدادي

ابو حارث، خلیفہ مہدی عباسی کے دور خلافت میں مرکاری بیت المال کے نزانوں کے گرال اور ذے دار تھے۔ معودی نے 'مروج الذهب' میں اکھا ہے کے خلیفہ مہدی خاص وعام کے نزدیک ہردل عزیز تھا۔ اس کی وجہ بیتی کہ اس نے تخت خلافت پر بیٹھتے ہی گزشتہ حکومتوں کی جانب سے کیے گئے مظالم پرنظر ثانی کی افروں کے آل سے باز رہا، ڈرنے اور گھرانے والوں کوامن دیا، مظلوم کے ساتھ انساف کیا اور خوب خوب دادود ہش کی۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ خلیفہ منصور کے زمان میں جو چھلا کو در ہم اور چودہ ہرار دینار بیت المال میں جی چھلا کو در ہم اور چودہ ہرار دینار بیت المال میں جی کے تھے، وہ سارے نیز مہدی کے دور میں جی کے دصول کیا گیا تھا، سارا کا سارا خم ہوگیا۔ جب بیت

المال فالی ہوگیا تو بیت المال کے فازن وکران ابو صارت ہندی نے مہدی کے پاس
آکر بیت المال کی چابیاں اس کے سامنے بھینک دیں اور کہا جب سارا خزانہ ختم
ہوگیا تو ان چابیوں کا اب کیا کا م؟ بین کرمہدی نے خراج وعشر کی وصولی کے لیے
ہیں آ دمیوں کو حکم دیا۔ چناں چہ چند ہی دنوں میں بہت سارا مال بیت المال میں
آگیا، اس کے سبب ابو صارت تین روز تک فلیفہ مہدی کی خدمت میں نہ آسکے۔ جب
تین روز کے بعد آئے تو مہدی نے بوچھا تا خیر کیوں ہوئی ؟ ابو حارث نے کہا کہ بیت
المال کے اموال کی تر تیب وقیح میں لگار ہا، اس لیے نہ آسکا۔ اس پرمہدی نے کہا تم
المال کے اموال کی تر تیب وقیح میں لگار ہا، اس لیے نہ آسکا۔ اس پرمہدی نے کہا تم
المال کے اموال کی تر تیب وقیح میں لگار ہا، اس لیے نہ آسکا۔ اس پرمہدی نے کہا تم
برسی نہیں اور احق ہو۔ یہ تھے ہو کہ بیت المال جب فالی ہوگیا تو اگر ہمیں ضرورت
برسی نہیں آسکتے۔ اس پر ابو حارث نے کہا حادثہ جب بیش آتا ہے تو اس
بات کا انظار نہیں کرتا کہ آپ مال کی وصولی کر کے اسے جمع کر لیں۔

مؤرخ این ظکان نے بھی اپی تاریخ میں والی خراسان: ابوعبراللہ داؤدبن عمر بن طہمان سلمی کے تذکرے میں یہی بات تحریری ہے۔ چنال چرکہا ہے کہ ابو حارث ہندی بیت المال کا خزانہ خالی ہوگیا تو خلیفہ مہدی کے پاس آ کرکہا کہ جب سارا مال آپ نے خرج کرڈالا تو ان چاپیوں کا کیا مطلب؟ اس لیے آپ کی سے کہیں کہ چابیاں جھ سے لے لے فلیفہ مہدی نے کہا نہیں چابیاں اپنے پاس ہی رہندی دنوں میں پیسے آ جا کمیں گے۔ چنال کہا نہیں چابیاں اپنے پاس ہی رہند دور ندر دیا در تحد فراسا جو دوسول یالی کے لیے الیے کارند بروانہ کردیا در قدر رہن میں اپناہا تھ ذراسا دوک لیا۔ نیتجا آتا مال جمع ہوگیا کہ ابو حارث اس نے حاضرین در بارسے پوچھا رک سبب تین روز تک خلفہ کے یہاں نہ آ سکے۔ اس نے حاضرین در بارسے پوچھا کہ اس احتی اعراقی کو کیا ہوگیا؟ جب اس سے تاخیر کی وجہ بتائی گئ تو اس نے ابو حارث کو بلوایا اور کہا آئی تاخیر کیوں کی؟ ابو حارث سے تاخیر کی وجہ بتائی گئ تو اس نے ابو حارث کو بلوایا اور کہا آئی تاخیر کیوں کی؟ ابو حارث نے جواب دیا کہ درہم ودینار بہت حارث کو بلوایا اور کہا آئی تاخیر کیوں کی؟ ابو حارث نے جواب دیا کہ درہم ودینار بہت

جمع ہو گئے تھے۔ اس پر فلیفہ نے کہا احمق! تم یہ بچھتے تھے کہ اب درہم و دینارہارے
پاس نہیں آئیں گے؟ ابو حارثہ نے عرض کیا امیر الموسین! جب کوئی بات پیش
ہوائے اور پییوں کی ضرورت پڑے، وہ کام بغیر پیپوں کے ہونے والا نہ ہوتو اسے
اس بات کا انظار نہیں ہوتا کہ آپ کا رندے ہیں کر پیسے یک جا کرلیں۔

مهدی نے ابوحار شہ جو بیکہا کہ 'انت اعرابی احمق ' تواس سے بیہ شہدنہ ہونا جا ہے کہ ابل عرب ' اعرابی' بدوکو شہدنہ ہونا جا ہے کہ ابل عرب ' اعرابی' بدوکو کہتے ہیں، جا ہے وہ عربی نہ ہو۔

ابورواح سندهى بفري

جاحظ نے "کتاب الحیوان" میں اکھا ہے کہ خرج کرنے کے سلسلے میں اللہ سندھ کا ایک خاص مزاج ہے۔ یکی وجہ ہے کہ بھرہ میں جتنے صراف ہیں، سب کے یہاں "کیشیر" کوئی نہ کوئی سندھی ہی ہے۔
ای نقط منظر سے محمد بن سکن نے ابورواح سندھی کوخر بدا تھا، جس نے انھیں بہت سارا مال کما کردیا۔

ابورداح سندهی، مولی محربن سکن کاتعلق تیسری صدی جری سے تھا اوریہ بہت برو مصراف تھے۔ (مانی)

ابوزهر برختي ناخدا مندي سيرافي

بزرگ بن شہریار نے 'نعجائب المهند'' میں تحریر کیا ہے کہ ابوزھر برخی نا خدا، سراف کے برے اور سربرآ وردہ افراد میں سے تصاور اہل ہند کے غرب کے پیروکار بحوی تھے۔ مگرتمام اہل سیراف کی نظر میں امانت دار تھے۔ ببی وجہ تھی کہ لوگ ان کی بات مانے اور ان کے یہاں آپ روپٹے بیسے اور اپی والا دکو چھوڑ جاتے تھے۔ بعد میں اسلام قبول کر لیا اور بہت نیک وصالے ہو گئے۔ جزیرۃ النساء کی رہے والی ایک فیا۔ رہنے والی ایک خاتون کو پیغام نکاح دینے کی وجہ سے جج بھی کیا۔ ابوزھر برختی نا خدا، چوتھی صدی ہجری ہے تعلق رکھتے تھے۔ (قاض)

الحسالم زوطي مندي بصري

یے حضرت علی کے مہد خلافت میں ''سیا بج'' کے والی سے۔ نہایت نیک طبیعت کے آدمی ہے۔ بلا ذری نے حیات المبلدان'' میں لکھا ہے کہ جماعت نیا بجہ، بھرہ کے بیت المال میں ملازم سے ان کی تعدادانیک روایت کے مطابق چالیس تھی اور دوسری روایت کے مطابق چارسو۔ جب حضرت طلحہ بن عبداللہ اور حضرت زبیر بن عوام بھرہ آئے ، اس وقت عثان بن حنیف انصاری، حضرت علی کی جانب سے والی بھرہ سے تو جماعت سیا بجہ نے حضرت علی رضی اللہ عنہ کی تشریف آوری تک، بیت المال ان کے حوالے کرنے سے انکار کردیا۔ انکار پر انھوں نے علی الصباح ''سیا بج'' براچا تک حملہ کرکے آخیں قبل کرڈ الا۔ اس جملہ آور جماعت کی قیادت حضرت عبداللہ براچوں اور سیا بجہ کوشام اور بین آدمی سے۔ حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ نے دولی اور سیا بجہ کوشام اور نیک آدمی سے۔ حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ نے تدیم ڈوطیوں اور سیا بجہ کوشام اور نیک آدمی سے۔ حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ نے تدیم ڈوطیوں اور سیا بجہ کوشام اور بیک کے ذولی کی ساحلی علاقوں میں بھیج دیا تھا۔ اس طرح خلیفہ ولید بن عبدالملک نے بھی بھی ذوطیوں کوانطا کی اور اس کے اطراف میں شعل کردیا تھا۔

سائجہ اصل میں 'سیاہ بچ' ہے۔ سیاہ بچہ سندھ کے بہادراورزورآ ورلوگوں کو کہاجاتا تھا۔ ابن الفقیہ ہمدانی نے ''کتاب البلدان' میں '' یمن' کے بارے میں کہاجاتا تھا۔ ابن الفقیہ ہمدانی نے ''کتاب البلدان' میں '' یمن الوگ، قبط میں کھا ہے کہ امام کلبی فرماتے ہیں کہ مصر میں سب سے بہادراور جری لوگ، قبط ہیں، شام میں ''جراجہ'' ،، الجزیرہ میں 'جراحیہ'' ائل سواد میں نبط ، سندھ میں قوم میا بجہ عمان میں حررن اور یمن میں سامران۔

"زط" جائ کامعرب ہے۔ جائ، زمانہ جاہیت ہی میں عرب کئے مجھے تصاوران میں سے ایک بری تعداد، حصرت بمرضی اللہ عند کے عہد میں اسلامی الشکر میں بہت ہے میں بہت ہے میں بہت ہے کار بائے نمایاں انجام دیے۔ (تانی)

بلاؤرى نے لکھا ہے كدروطي (جائف) ابل فارس كي فوج ميں شامل تھے، انس الل فادر نے قید کرلیا تھا۔ بیسندھ کے رہے والے تھے۔ان میں سے جو لانے والے بھے، انھیں گرفتار کرلیا تھا۔ جب انہوں نے "اساورہ" کا انجام سنا تو اسلام قبول کرلیا اور حضرت ابوموی اشعری کی خدمت میں آئے۔آپ نے اساورہ ی طرح انھیں بھی بھرہ میں آباد کیا۔ای ذیل میں بلا ذری نے مزید لکھا ہے کہ شیروید اسواری نے انھیں خالد بن معمراور بن سدول کے ہمراہ قبیلہ بمرین واکل میں آبادكرنا حاماء كرانفون نے اس كومنظور ندكيا اور بنوجيم مين آباد موسے اس وقت تك امره میں نہ تو قبیلہ از دے لوگ متے اور نہ جی عبد مس کے علامہ بلاؤری لکھتے ہیں كرسا بجر،اساوره كے ساتھ شائل ہو مجے۔ جب كر بول اسلام سے يہلے بيلوك اور زوطی دونوں بی ساحلی علاقوں بیں رہتے اور بھیٹر بھر بول کے ربوز کے ساتھ گھاک اور جارے کی الاش میں سر گردان رہا کرتے تھے۔ جب اساور و، زوطی اور سیا بجہ یک جا ہو گئے تو قبیلہ بوہم کے لوگوں نے ان سے جھڑا کرنا شروع کردیا۔ اس كے بتیج میں اساورہ تو بنوسعد كے ساتھ ہو گئے اور زوطی اور سیا بحد بنو حظالہ كے ساتھ اور کفار ومشرکین ہے ان کے ساتھ جنگیں بھی کیں۔ پہلوگ ابن عامر کے ہمراہ " فراسان" بھی محے ، مرندتو جنگ صفین میں انھوں نے حصدلیا، نہ ہی جنگ جمل میں شریک ہوئے۔ نیز ابن عامرے ساتھ قبیلہ ابنوافعث کے ایک مسلے میں بھی شریک رہے۔اس کی وجہ سے جاج نے ان میں سے بہت سوں کوادھرادھرمنتشر كرديا، مكانات منيدم كردي، وظف كم كردي اور وكاولو جااول كرديا - اوران

سے کہا کہ شرط یہ ہے کہ تم ہمارے درمیان ہونے والی جنگ میں کسی بھی فریق کا ساتھ نہیں دوگے مگر انھوں نے اپنے او برعا کد کی جانے والی سیاسی زندگی سے کنارہ کش رہنے کی شرط کے باوجود، سیاسی زندگی میں جصہ لینا شروع کیا اور انھیں اپنی جبلی صلاحیتوں کا مظاہرہ کرنے کا بھر پورمیدان بھی میسر آگیا۔

چنال چیملامہ بلاؤری نے لکھائے کہ جاج نے سندھ سے وہاں کے زوطیوں کی ا ميك بروى تعداد، نيز سنده كى بعض دوسرى قومون كومع ابل وعيال ومويشى لاكر ومسكر" کے شیمی علاقے میں آباد کیا توبیاس شیمی علاقے کے بورے حصے برقابض ہو گئے اور وہاں ان کی سلیں بھی خوب بھلیں بھولیں۔ای کے ساتھ بہت سے بھگوڑے غلام اور محمد بن سلیمان بن علی کے مامول اور قبیلہ بالمد کے غلام بھی ان کے ساتھ جا ملے۔اس سے انھیں قراقی اور سلطان کی عظم عدولی کا حوصلہ ہوا۔ اس سے پہلے بیلوگ زیادہ سے زیادہ بیکرتے کہ سلطان سے کوئی معمولی سی چیز مانگ لیتے یاکسی ستی برحملہ کرے جتنا لوث سكتے ،لوث ليتے تھے۔ مامون رشيد كے عهدامارت ميں ايك وقت ايسا بھي آيا كم لوگ ان کےعلاقے سے نہایت احتیاط کے ساتھ گزرتے تھے۔ اس قزاقی کے سبب، بقرہ سے جوکشتیاں سامان لے کر بغداد آتی تھیں وہ سب رک گئیں۔ لیکن جب معتصم بالله خلیفه مواتواس نے خودکو ان کے لیے فارغ کرے "مجیف بن عنبہ" نامی ایک خراسانی شخص کوان سے جنگ کرنے کی ذھے داری سونی اور بہت سے نامی گرامی سید سالاراورایک لشکر جراراس کے ساتھ روانہ کیا۔ نیز عجیف نے اس مقصد کے لیے جتنے يسيطلب كيه، بلا چون وچرا فراجم كئے۔ عجيف نے ان شيمي علاقوں اور بغداد كے درمیان ملکے تھلکے اور چھر برے بدن کے گھوڑ ہے جا بجا تعینات کردیے۔ اس کی وجہ سے زوطیوں کی خبریں دن میں بھی مختلف اوقات میں اور رات کے ابتدائی حصے میں بغداد بن جایا کرتی تھیں۔معتصم کے حکم پر عجیب نے بھاری سامان خوردونوش کے ساتھ و ما می کشتیاں داخل کردیں۔ جب زوطی انھیں اوٹے آئے تو سب کے سب گرفتار کرلیے گئے، ایک بھی فی کرنہ جاسکا اور مجیف انھیں جھوٹی جھوٹی کشتیون میں سوار کرکے بغداد لے آیا۔ معتصم نے ان میں سے کھی کو " خانقین" میں بایا اور ہاتی کو "عین زربہ" اور مرحدی علاقوں میں منتشر کردیا۔

اس تفصیل سے معلوم ہوتا ہے کہ زوطی بنوامیداور بنوعباس دونوں زمانوں میں این ایک الگ اکائی بنانے میں کامیاب رہے۔ای طرح بھرہ، واسط اور بغداد کے درمیان شیمی علاقوں میں انھیں اپن سر گرمیاں جاری رکھنے کے لیے مناسب جگہ بھی مل كمى تقى _ بصره اور واسط كايد درمياني نشيى علاقه، بهت وسيع وعريض تفاريهان بهي دریائے دجلمیں طغیانی کے سببسلاب آیا تھا،جس کی وجہ سے مزیدوسیے ہو گیا تھا۔ مؤرخ ابن اثیرنے بیان کیاہے کہ بیلوگ جم ین میں بھی تھے اور لکھاہے کہ زوطی اور سیا بجہ بحرین کے علاقہ ''خط'' میں رہتے تھے۔ ۲۰۵ھ میں مامون رشید نے عیسی بن بزید جلودی کوان کے مقابلے کا حکم دیا۔ پھر ۲۰۶ھ میں داؤ دین ماہتور کواس مہم کے لیے نامزد کیا۔ اس کے بعدابن اثیرنے بھی عجیف بن عدبہ کی ان کے ساتھ جنگ کی و بی بات تھی ہے، جوابھی مذکور ہوئی اور سے کہ بیے جنگ ۲۱۹ ھیں ہوئی۔ مسعودي نے "كتاب التنبيه والاشراف" ميں تفريح كى ہے كہ جب خلیفہ معصم باللہ عبای کے عمال وگورنروں نے اس کے عہد میں ظلم وزیادتی کی تو مندوستان کی ملاح قوم، جن کے باس کشتیاں اور کشکر عظیم تھا، انھوں نے ساحل فارس، عمان، بصرہ اور واسط کے درمیانی علاقے پر قبضہ کرلیا۔ پھرز وطیوں نے نشیبی علاقول نیز بھرہ، واسط اور بغداد کے تمام مقبوضہ علاقوں سے انھیں بے دخل کر دیا اور خود قزاتی اورخوں ریزی کرنے لگے۔ بیلوگ بہت بڑی تعداد میں تھے جو ہندوستان کی ہوش ربا گرانی کے سبب وہاں سے نقل مکانی کرے کرمان، اہواز کے اطراف وا کناف اور فارس میں آباد اور ان برقابض بھی ہو گئے۔ جنب ان کی حیثیت بہت معتمكم موكى اور كرفت مضبوط تومعتصم في أنفين خانقين ، جلولاء، عين زربهاورشام

کے سرحدی علاقوں میں منتشر کردیا۔ ای وقت سے شام میں جینسوں کارواج ہوا، اس
سے پہلے جینسوں کو دہاں کوئی جانتا ہی نہیں تھا۔ جب کہ ایک روایت یہ ہے کہ شام کے
سرحدی اور ساحلی علاقوں میں جھینسوں کی ابتداء بھرہ، بطائح اور طفوف میں آباد آل
مہلب کی جینسوں سے ہوئی۔ بعد میں جب بزید بن مہلب قبل کردیا گیا تو بزید بن
عبدالملک بن مروان نے بہت سے زوطیوں کوان علاقوں میں شقل کردیا۔

ابوسعيد مالكي مندي

علامہ مہودی نے ''وفاء الوفاء'' میں روضہ اقدس کے آداب ذیارت کے ضمن میں کھا ہے کہ بر ہان این فرحون نے علائے بالکیہ میں سے ابوسعید ہندی کی روایت سے نقل کیا ہے۔ انھوں نے فرمایا کہ جو خص روضہ اقدس کے پاس تھر نا چاہے۔ اس کے بعد حضرت عبداللہ بن عمرضی اللہ عنہ کا سلام ذکر کیا اور فرمایا کہ بجی حضرت عرکا طریقہ تھا۔ امام ما لک نے بھی دیر تک کھڑا نہ ہونے کی بابت ابن عمر کی پیروی کی ہے۔ جب کہ بعض دوسرے علائے مالکیہ نے طول قیام کو بند کیا ہے اور بہی اکثر علائے مالکیہ کا مسلک ہے۔ اور بہی اکثر علائے مالکیہ کا مسلک ہے۔ عبول قیام کو بند کیا ہے اور بہی اکثر علائے مالکیہ کا مسلک ہے۔ عبورت نے اندازہ ہوتا ہے کہ ان کا شار کہا رعلائے نہ ہوگی۔ نہ کورہ بالا عبارت سے اندازہ ہوتا ہے کہ ان کا شار کہا رعلائے نہ جب کہ بوتا تھا، مسائل کی بابت جن کے اقوال نقل کیے جاتے تھے۔

الوسندهي

ان کابورانام مہیل بن ذکوان کی واسطی ہے۔

ابوصلع سندهى

علامہ ابن الندیم نے "الفہ رست" میں اسلامی عبد کے بعض شعراء نیز شعراء نیز شعراء نیز شعراء کے محد ثین اورا پنے زمانے تک ان شعراء کے اشعار کی مقدار کے بیان میں ابو صلع صلع سندھی کا بھی ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ شعرائے ممالیک میں سے ابوصلع سندھی بھی ہیں۔ ان کے اشعار تیں اوراق پر شتمل ہیں۔

مقالہ رابعہ کفن ٹانی میں اکھا ہے کہ جب ہم ہے لکھتے ہیں کہ فلال شعر، دس ورق کا ہے، تو ورق ہے ہماری مراد، ورق سلیمانی ہوتی ہے، جس کے ایک صفحے پر ہیں سطریں ہوتی ہیں۔ اس لیے جتنے اشعار کا میں نے تذکرہ کیا ہے وہ کم ہول یا زیادہ انھیں اس مقدار پر شتمل سمجھا جائے۔ ہم نے یہ بات ازراہ تقریب لکھی ہے اور مرورایا م کے ساتھ ساتھ جو یجو میں نے دیکھا ہے، اس کی بنیاد پر لکھا ہے، نہ کہ شار کرنے کے مقصد سے۔ اس طرح ابو سندھی کے کل اشعار کی تعداد بارہ سوہوتی ہے۔

علامة قرویی نے ''آئار البلاد'' میں ذکر کیا ہے کہ ابوصلع سندھی نے درج ذیل اشعار کے:

لقد أنكر أصحابى وما ذلك بأمثل المثالة الما مدح وسهم الهند في المقتل(١)
د مير احباب في الم كوبيول كا الكاركرويا ، حالال كرتريف كوقت جب كرمندوستاني تيرمقتل مين موريها الكاراجها نهين "-

⁽۱) قاضی صاحب نے یہاں کل آٹھ اشعار ذکر کے ہیں، گر اختمار کے سب راقم نے مرف بہلاشعر کیاہ۔ (ع ربتوی)

ابو صلع سندهی، قومی شاعر نتھے اور غالبًا بید دوسری صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (قامنی)

الوعطاء سندهى كوفي

علامه ابوالقرح اصبهائى نے "كتاب الأغانى" ميں لكھا ہے كه ابوعطاء سندھی کا پورانام بہے: اللح بن بیارمولی بی اسد، ومولی عنز و بنساک بن حقین اسدى نشو دنما كوفه مين بهوئى _ بيخضرى بين عهد بنواميدا درعهد بنوعباس دونول مين رے ہیں۔انھوں نے بنوامیاور بنو ہاشم کی مدح بھی کی۔ان کے والد: سارسندھی تجمي تته، زبان عربي تصبح نه بولتے تھے۔ ای طرح خودعطاء کی زبان میں بھی لکنت شدیده می علامه موصوف نے مزید لکھا ہے کہ ابوعطاء سندھی کا شارخلفائے بنوامیہ کے شعراءاوران کے ثناخوانوں میں ہوتا ہے۔ بیانھیں حددرجہ عزیز اورمجوب خاطر بھی تھے۔اگر چہ خلافت عباسیہ کا بھی کچھ زمانہ اٹھیں ملاء مگراس میں ان کوئی خاص اہمیت اور یو چھنہ ہوئی، اس وجہ سے بنوعباس کی ہجو کی۔ان کی وفات خلیفہ منصور عباس کے آخری دورخلافت میں ہوئی۔ابوعطاء سندھی، سب سے نیادہ برجستدگوء حاضر جواب اور جری و بہا در تھے۔ بنوامیہ اور بنوعباس کے درمیان ہونے والی جنگ میں یہ بھی شریک تھے۔ جب اٹھیں آزاد کردیا گیا توان کے مال داسیاب میں بہت زیادہ اضافہ ہوا، اس کے سبب ان کے سابقہ آقاؤں کوضد اور لا کے ہوئی اور انھوں فے ان کے غلام ہونے کا دعوی کردیا۔ ابوعطاء سندھی نے یہ بات اسین بھائیوں سے بتائی تو انھوں نے کہاتم ان سے کتابت کا معاملہ کرلو۔ان لوگوں نے جار ہزار بدل كمابت مقرركيا _ جے ابوعطاء نے اداكر ديا اور آزادي حاصل كى _ ابن تتيب في الشعر والشعواء "ميلكمام كمابوعظاء سندهى كا نام مرزوق تھااور یہ بنواسد بن خزیمہ کے مولی تھے۔شعر بہت بلند کہتے تھے۔ مگر

زبان بین لکنت تھی۔ حماد نے بیان کیا کہ ایک روز بین، حماد بخر د، حماد بن زبرقان خوی اور بحر بین مصعب مزنی ساتھ بیشے ہوئے تھے۔ ہم نے ایک دوسرے کو دیکھا اور کہنے گئے کہ آج ہماری مجلس بین کی طرح کی کوئی کی نہیں ہے، کاش کہ ابوعطاء سندھی کو بھل نے کہ آج ہماری جہاں چہ ہم نے ابوعطاء سندھی کو بلانے کے لیے ایک آ دی کو بھیج دیا۔ پھر کہنے گئے کہ ابوعطاء سے نداق کون کرے گا؟ یہاں تک کہ وہ کہنے گئے: حماد کہتے ہیں بین نے کہا کہ بیکام میں کردں گا۔ استے میں ابوعطاء آگے اور آتے میں کہا ''مو ھبامو ھبا ھیاك الله'' بائے ہوز کے ساتھ حائے طی کی جگہ پر۔ ہم نے کہا اندر تشریف لا ہے، وہ آگئے۔ ہم نے پوچھا کیا آپ نے شام كا کھانا کھالیا نے کہا اندر تشریف لا ہے، وہ آگئے۔ ہم نے پوچھا کیا آپ نے شام كا کھانا کھالیا ہے؟ جواب دیا بال ''قلہ تاسیت''ہم نے کہا پانی پئیں گے؟ کہنے ہاں راویہ نے کہا ابوعطاء! آپ کی نگاہ کیس ہے؟ کہنے گئے تھیک ہے' دھسن''

جافظ نے ''البیان و التبیین'' میں لکھا ہے کہ ابوعطاء نے اپنی ملاقات کو آئے ہوئے ایک شخص کی بابت جوابوعطاء کی بیوی کو اشارہ کررہا تھا بیشعر کہا:

کل ھنینا و ماشر بت مرنیا ﷺ نم قم صاغوا فغیر کریم
لا احب الندیم یوھن بالعین ﷺ إذا ماخلا بعرس الندیم
''مزے ہے کھا کہ بتم نے رغبت سے پائی نہیں بیا پھر ذات کے ساتھ جا کتم
معزز نہیں ہو میں ایسے دوست سے محبت نہیں کرتا جو دوست کی بوی کے ساتھ خلوت میں آئے سے اشارہ کرے''۔

جاحظ نے مزیدلکھا ہے کہ ابوعطاء سندھی نے ابومعشر عبیداللہ بن عباس کندی سے کہا کہ انھوں نے تمہارے بھائی کو ہلاک اور تمہیں کا فرقر اردے دیا ہے، اس کے بعد تمہارا کیا خیال ہے؟ پھرخود ہی عبیداللہ سے کہا کہ اگر جعفر زندہ ہوتا تو وہ نہ ہما، گرتم قبل کردیے جائے۔

شخ محر بن شاكر بن احمد كتى في "فوات الوفيات" مين لكهاب كمالكي بن بیار ہی ابوعطاء سندھی مولی بنی اسد ہیں۔ان کی پیدائش کوفیہ میں ہوئی۔انھوں نے خلافت امیداورخلافت عباسیدوونوں کا زمانہ پایا ہے۔ان کے والدسندهی نژاد جمی تھے۔ عربی زبان صاف نہیں بولتے تھے۔ نیز ابوعطاء کی زبان میں بھی عجمیت اور كنت تقى _ جب بي تفتكوكرت ، توبات به آساني سمجه مين نه آتي تقى - انهول نے سليم بن سليم كلبي ح متعلق چنداشعار كم ان مين سے دودرج ذيل مين:

اعوزتني الرواة يا سليم! ﴿ وأبي أن يقيم شعرى لساني وغلا بالذي احجم صدري الله وجفاني لعجمتيسلطاني "اے کیم! میرے پاس راوی (ناقل کلام) نہیں ہیں، میری زبان اشعار میک نہیں اداکریاتی میرے سنے نے راز ہائے نہاں کوعیاں کردیا، میری قوت نے لکنت کے سبب جھے ہے بے وفائی کی'۔

چناں چدابن سلیم کے عظم پر ابوعطاء کوایک ترجمان دیا گیا، جس کااس نے "عطاء" نام رکھااور اینامتینی بنالیا۔ اس نے اس کے اشعار بیان کئے۔ اس کے بعد جب بھی ابو عطاءسى كاشان مين مدحية شعروغيره يزهناجا بهتاتوا يخترجمان سے بردهوا تاتھا۔

كت بين كدابوعطاء نے ايك روز اسے متبنى ترجمان سے كہا" وانا منذ داوتك وقلت لبيك، ماانت تصناً "اصل مين كهنا بي تقا" وانك منذ ان دعوتك وقلت لبيك ما كنت تصنع"كدجب ميل في مصيل أواز دى اورتم نے لبیک کہا، تو اس وقت کیا کررہاتھا؟ ابوعطاء بنوامیداور بنوعباس میں ہونے والی جنگ میں بنوامیہ کی طرف ہے شریک ہوااور خوب خوب دادشجاعت دی۔اس جنگ میں ابوعطاء کامتنی ابن ہبیرہ کے ساتھ مارا گیا اور خود شکست خوروہ ہوکر بھاگ کھڑا ہوا۔ علامہ مدائن نے بیان کیا ہے کہ ابوعظاء جنگ لڑر ہاتھا، اس کے سامنے قبیلہ بنو مر ہ کا ایک شخص: ابویزیدتھا، جس کے گھوڑے کی کوچیں کا ف دی گئی تھیں۔اس نے

ابوعطاءے کہاتم اپنا گھوڑ المجھے دے دو میں تمہاری طرف ہے بھی جنگ کروں گا اور ا بني طرف ہے بھی۔ اس وقت ابو ہزید اور ابوعطاء دونوں کو ہی اپنی ہلا کت کا یقین ہو چلاتھا۔ چناں چہ ابوعطاء نے اپنا گھوڑ ااسے دے دیا۔ ابویزیدمری گھوڑے پر بیٹھا اورنہایت برق رفاری کے ساتھاہے آپ کو بچا کرنگل بھا گا،اس پر ابوعطاء نے کہا: لكالساعي إلى لمع السراب لعمرك إننى وأبا يزيد رايت مخيلة فطمعت فيها وفي الطمع المذلة للرقاب وما أغناك عن سرق الدواب فما اعياك من طلب ورزق واشهد أن مرة حي صدق ولكن لست فيهم في النصاب " بخدا میں اور ابو ہزید حمیکتے ریت کی طرف دوڑنے دالے مخص کے مانند ہیں۔ مجھے برے والا بادل نظر آیا تو میں نے اس کی طبع کرلی جب کہ طبع اور لا کی میں گردنوں ک ذات ہے۔ بھلاطلب جبتو سے مصیر کس چیز نے روکا، چو یابوں کی چوری سے تمہیں کس نے بے نیاز بنادیا۔ میں سے کہنا ہوں کدمرہ بلاشبہ سچا قبیلہ ہے کیکن تو ان كے معياد كائبيں ہے'۔

علامہ دائی سے یہ محقول ہے کہ تھی بن زیاد حارثی ، حادراویدادر مسلم بن هیرہ کے مابین شاعرانہ چیقلش تھی۔ مسلم کی خواہش تھی کہ جماد کوایک ایسے شخص کی زبان میں پیش کرے جواس کی ہجو کررہا ہو ۔ حمادراوید کا بیان ہے کہ مسلم نے ایک روز ہجھ سے یجی بن زیاد حارثی کی موجودگی میں کہا کیاتم ابوعطاء سے کہتے ہووہ (زج) (جرادہ) اور (مجد بنی شیطان) کہدکر دکھائے؟ میں نے کہا ہاں۔ اس پرتم نے کیا افعام رکھا؟ کہنے لگا کہ میرا اپنا فچر مع زین ولگام کے انعام ہے۔ میں نے اس سے وعدہ وفائی کی پختی ہے لیا۔ اس بیٹے گیا اور محمد بنی شیطان کی ہے تھی اسے خوش آ کیا اور ہمارے یاس بیٹے گیا اور کہنے لگا (مو ہبا بکم مر ہبابکم) ہم نے بھی اسے خوش آ کہ یہ کہا۔ شام کا کھانا پیش کیا تو اس نے انکار کردیا اور نبیز کی فرمائش کی ، چناں چے ہم نے نبیذ لاکراسے دی ،

جے اس نے اتنازیادہ پی لیا کہ اس کی آئیسیں سرخ ہوگئیں۔ پھر میں نے کہا:

این لی إن شنت ابا عطاء! ﴿ يقينا كيف علمك بالمعانی(۱)

"ابوعطاء بتاوًا گرمیں بیٹنی علم چا ہوں تو مجھے کہاں ملے گا؟ معانی كی معلومات

تہاری کسی ہے؟"۔

حمادراو یہ کہتے ہیں میں نے دیکھا کہ اس کی آنکھیں اور بھی زیا دہ سرخ ہوگئیں اور چہرے پر عصد کے آثار نمایاں تھے۔ میں بیدد کھے کرڈر گیا اور کہا ابوعظاء! یہ بچھ سے پناہ ہانگنے والی جگہ ہے اور جو بچھ محملے والا ہے، اس کا نصف تمہارا ہوگا۔اس نے کہا مجھ سے چھے چھے جاؤ۔ میں نے اسے سارا واقعہ بنا دیا۔ تب اس نے کہا ناس ہو تیرا تو بھی نے گیا اور تیرا انعام بھی۔ تو ہی اسے لے لے خدا اس میں تمہارے لیے برکت دے، مجھے اس کی کوئی نشرورت نہیں ہے اور مسلم بن ھیر ہ کو برا بھلا کہتا چلا گیا۔

ایک مرتبه ابوعطاء سندهی، نفر بن سیار کی خدمت میں آیا اور اس کی شان میں میتردہ پڑھا: پیقصیدہ پڑھا:

قالت بریکة بنتی وهی عافیة ﴿ إِنْ المقام علی الإفلاس تعذیب "میری بی بریک نے جب که وه عافیت می تھی کہا، فقر وافلاس کے ساتھ گزربسر ایخ کوعذاب میں مثلا کرنا ہے"۔

چناں چرنفر بن سیار نے جالیس ہزار درہم اسے دیے جانے کا حکم دیا۔ ابو عطاء کی وفات • ۸اھ کے بعد ہوئی۔

نزهة المحواطر مي تحرير ہے كدال نے سليمان بن سليم كلبى سے كہا "اعوزتنى الرواة يا ابن بسليم!"

اورمزيد بياشعار يزهے:

ثم أصبحت قد انخت ركابي الله عند رحب الفناء والأعطان

(۱) يبال كل آئه اشعار شهر جنسي نظرانداز كرديا مماية - (ع ربسوى)

فاعطنی ماتضیق عنه رواتی الله بفصیح من صالح الغلمان یفهم الناس ما أقول من الشعر الله فإن البیان قل أعیانی واعتمدنی بالشكر یا ابن سلیما الله فی بلادی وسانر البلدان ستری فیهم قصائد غرا الله فیك سباقة بكل لسان در پرضح كوكشاده حن اور باژك پال می نے اپن سواری بانده دی سوتم محصایک نیک فیح و بلغ غادم کی شکل می و و چیز دوجس سے میر روات عاجز بیس برولوگوں كومیر را شعار مجمل می و و چیز دوجس سے میر روات عاجز بیس برولوگوں كومیر را شعار مجمل می كون كه میں صاف صاف بات كہنے عاجز ہوگیا ہوں ۔ اورا ے فرزند سلیم! براه كرم میر راس ملک اور دیگر ممالک میں میرااعتما و بحال كرو عنقریب و بال این بارے میں شاندار تصیدے باؤگے جو ہر دبان بردوال ہوں گئے۔

چناں چہلیمان بن سلیم نے ایک ترجمان دیے جانے کا حکم دیا ہ جسے اس نے اپنامتبنی بنا کراس کی نسبت سے اپنی کنیت اختیار کی۔ اس کے بعد جب بھی ابوعطاء کسی کی مدح وغیرہ میں کوئی شعر کہنا جا ہتا تو ترجمان کو حکم دیتا اوروہ پڑھ کرسنا تا۔

صحی الاسلام میں احمد امین نے لکھا ہے کہ ابوعطاء سندھی دولت امویہ وعباسیہ کا مخضری شاعر ہے۔ اس کے والد سندھی نسل کے تھے، ان کی زبان بھی صاف نہیں تھی۔ اس کالڑ کا مسلمانوں میں پرورش پا کرعظیم شاعر ہوا، اگر چہاس کی زبان میں بھی لکنیت شاریدہ تھی، جس کے باعث اسے مجبوراً ایک بیچ کوساتھ رکھنا پڑا، تا کہ اسے خود شعر نہ پڑھنا پڑے۔

فاندان بنوعباس کے لوگ ابوعطاء ہے اس وجہ سے بخت نفرت کرتے تھے کہ اس نے خلفائے بنوامید کی شان میں بہت ہے مدحیہ قصا کد کیم تھے۔ لیکن جب اقتر اربنوامیہ نے نکل کرخاندان بنوعباس میں آگیا تو اس نے بھی اپنا قبلیہ بدلنا چاہا، گربنوعباس نے اسے منظور نہ کیا، اس کی وجہ سے ان کی فدمت کرنے لگا۔ اس قبیل

كادرج ذيل شعرب:

فلیت جور بنی مروان عادلنا ﴿ ولیت عدل بنی العباس فی النار
"بنومروان کاظلم بھی مارے تن میں انساف ہے، کاش بنوعباس کا انساف
بھی جہنم کی نذرہو''۔

ابوتمام طائی نے ''دیوان جماسہ'' علی اس کے درج ذیل اشعار تقل کیے ہیں:
ذکر تك والحطی یخطر بیننا ﴿ وقد نهلت منا المثقفة السمر فوالله ما أدری وإنی لصادق ﴿ أداء عرانی من صبابك أم سحر فإن كان سحرا فاعلر بنی علی الهری ﴿ وإن كان داءا غیره فلك العدر ''میں نے تم کواس وقت بھی یاد کیا جب ہمارے درمیان خطی نیز ہے جل رہ شھا ورگندی رتگ کے سید سے نیز ول نے ہمارا خون بیا۔ بخدا میں کے کہا ہوں کہ محصے میرے مثل کا مرض لاتی ہوگیا ہے یا میں محرفردہ ہوگیا ہوں۔ اگر سحر ہے وجمعے عبد کے سلط میں معدور بھی اورا گرم کے علاوہ کوئی مرض معدور بھی اورا گرم کے علاوہ کوئی مرض ہوں۔ اگر سحر ہے تو جمعے عبد کے سلط میں معدور بھی اورا گرم کے علاوہ کوئی مرض ہوں۔ اگر سے تو تو معدور ہے'۔

ای طرح "با ب المواتی " میں بھی ابوتمام نے ابوعطاء کاوہ شاہ کارم شیہ بھی نقل کیا، جواس نے عروبی هیرہ کی وفات پر کہا تھا۔ اس کا پہلاشعر ہے: (آبلا ان عینا لم تجدیدہ و اسط) عمرو بن هیر ہ کو خلیفہ ابوجعفر منصور نے امان دینے کے بعد "واسط" میں قتل کرادیا تھا۔ جب کہ "العقد الفرید" میں مذکور کے کہ ابراہیم بن هیر ہ کو جب "واسط" میں قتل کرادیا تھا۔ جب کہ "العقد الفرید" میں ابوعطاء سندھی نے میم شید کہا تھا۔

ابوعطاء سندهی اوراس کے دالد، دونوں قبیلہ بنواسد بن خزیمہ کے غلام ہے۔
بعد میں ابوعطاء عمر و بن ساک بن حصین اسدی، یا عنتر ہ بن ساک کا غلام ہوگیا تھا۔
اس نے ابوعطاء کو آزاد کر دیا۔ جب شعر وی نے سبب ابوعطاء کی قدر ومنزلت میں
اضافہ ہوا اور اسے جاہ ور تبہ بھی حاصل ہوگیا تو اس سے اس کے سابقہ مالک نے چار

ہزار درہم لیے، جس کی بناء پراس نے، مذکورہ رقم اداکر نے کے بعد مالک کی ہجوگ۔
ابوعطاء کا نام اللح یا مرز وق تھا اور اس کے دالد کا نام بیار۔ جب کہ ابوعطاء کنیت اس
نے اپنے متبنی بنائے ہوئے ترجمان کی نسبت سے اختیاری کی۔ ابوعطاء پر جوش اور شجاعت انگیز نہایت با کمال شاعر تھا۔ کتاب الا غانی وغیرہ میں اس کے حالات بہت شرح وسط کے ساتھ مذکور ہیں۔ ابوعطاء کی وفات ۱۲۸ھ میں ہوگی۔علامہ کتی نے ''فوات الوفیات'' میں تحریر کیا ہے کہ ابوعطاء کا انتقال • ۱۸ھ کے بعد ہوا۔
نے ''فوات الوفیات'' میں تحریر کیا ہے کہ ابوعطاء کا انتقال • ۱۸ھ کے بعد ہوا۔

ابوعبدالله ديبلي، قاري شام

مشهورز امداورتارك الدنياالمقرى ابوعبدالتدمحد بن عبدالتدديبلي -

ابوالعباس سنرهى بغدادي

ان کا نام فضل بن مخیت قطیعی سندهی ہے۔

الوعلاء مندى بغدادي

شیخ ابوعلاء ہندی بغدادی کومقری ابو بھر محد بن حسن مرزقی سے ساع حاصل ہے۔ علامہ محوی نے ''مرزقہ'' کے بارے میں لکھا ہے کہ یہ بغداد سے آگے دریائے وجلہ کے ساحل پر ایک بستی ہے۔ اس کے اور بغدداد کے درمیان تین فرسخ کی مسافت ہے۔ اس بست کرتے ہوئے شیخ ابو بھر محمہ بن حسن کومرزقی مسافت ہے۔ اس بست کرتے ہوئے شیخ ابو بھر محمہ بن حسن کومرزقی کہا جاتا ہے۔ انہوں نے ابو جعفر ابوالحسن بن نقورہ ، ابوالخنائم اور ابوالحسین بن مہدی سے حدیث کی روایت کی ہے۔ یہ تقد اور صالح ہیں۔ ان سے خفاف بن ناصر ، ابوعسا کر اور ابوعلاء ہندی نے ساع حدیث کیا ہے۔

ابوعلاء مندی کے متعلق اس سے زیادہ کچھ معلوم نہ ہوسکا۔ لگتا ہے کہ بیرحافظ ابن حسا کرمتو فی اے ۵ جائے ہم عصر تھے۔ ان کے شخ ابو بکر مرز تی کی وفات شروع محرم ے ۵۲۷ ھیں ہوئی۔ اس لحاظ سے ابوعلاء مندی چھٹی صدی ہجری سے تعلق رکھنے

والے ہوئے۔(تامنی)

ابوعلى سندهى بغدادي

شخ يوسف بن اساعيل بهاني نے اپني كتاب "جامع كر امات الاولياء" میں ابوعلی سندھی کے تذکرے میں لکھا۔ ہے کہ ابونصر سراج نے ابویز بذکی روایت سے بیدوا قعد تقل کیا کہ ایک بار ابوعلی سندھی جومیرے استاذبھی ہیں بہیرے پاس آئے اوران کے ہاتھ میں چڑے کی ایک تھیلی تھی۔اٹھوں نے جب اسے زمین پر ڈالاتواس میں ہیرے جواہرات بھرے ہوئے تھے۔ میں نے ان سے عرض کیا یہ آب کوکہاں طے؟ فرمایا یہاں راست میں ایک وادی سے گزرہوا۔ میں نے دیکھا کہ چراغ کی طرح میتھیلی روش ہے۔ چنان چہ اے اٹھالیا۔ اس پر میں نے وریافت کیا آب اس وادی میس وقت داخل ہوئے تھے؟ فرمایا سابقہ حال ووجد کے انقطاع کے وقت قشیری نے لکھا ہے''النز ہة''میں مذکور ہے کہشخ کبیر ابوعلی سندھی ارباب حقیقت میں سے تھے اور پیر کہ ابوین پرطیفو زبن عیسیٰ متو نی ۲۲۱ھ نے ان کی صحبت اختیار کی۔ ابویز بدکابیان ہے کہ میں انھیں قرآن کی سورت کی تلقین كرتا، جس مے فرض نماز سيح پر هيكيں اور په مجھے تو حيد خداوندي آور حقائق كى تلقين كيا كرنتے تھے۔ ابويزيد بى سے منقول ہے كہ ايك بارمبرے ياس ابوعلى سندھى آئے۔ ان کے ساتھ چڑے کی ایک تھیلی تھی۔اسے اُٹھوں نے میرے سامنے زمین پرڈال دیا، تو کیا دیکھتا ہوں کہ رنگ برنگے ہیرے جواہرات بھرے پڑے ہیں۔ میں نے ان سے معلوم کیا کہ آپ کو یہ کہاں سے ملے؟ کہنے لگے یہاں ایک وادی ہلی،جس میں یہ چراغ کی مانند چمک رہے ستھ، چناں چہمیں نے اٹھالیا۔ میں نے عرض کیا وادى مين آنے كاوقت كيساتھا۔؟ فرمايا حال سے انقطاع كاوقت تھا۔ پھر پوراواقعہ ذكركيا _اس كامطلب بيه ب كمان كانقطاع خال كوفت أهيس ان جوابرات میں مشغول کردیا گیا ہے۔ ابو بزید کا مزید کہنا ہے کہ مجھ سے ابوعلی سندھی نے فرمایا کہ پہلے میں اس حال میں تھا، جس میں مجھے رہنا چاہیے تھا، پھر اس کے بدلے دوسرے حال میں چلا گیا۔ اس کا مفہوم ہیہ کہ بندہ اپنے افعال پرنظر ڈالٹا ہے اور ان افعال کواپی جانب منسوب کرتا ہے۔ لیکن اس کے دل پر معرفت الہی کے انوار غالب آجاتے ہیں تو ایسامحسوں ہوتا ہے کہ ہر چیز اللہ تعالی سے ہی قائم ہے، اس کو معلوم ہے اور اس کی جانب لوٹ کرجارہی ہے۔ ابونھر عبداللہ بن سرائی طوی نے ابوعلی سندھی کا تذکرہ اپنی کتاب ''اللہ معی' میں کیا ہے۔

ان کے متعلق' تحفہ المکوام' میں تحریر ہے کہ ابویز بد بسطائی کے اسا تذہ سے نقل کرتے ہوئے '' شرح شطحیات'' کے حوالے سے'' نفحات'' شل نے کوالے سے'' نفحات'' شل فرکور ہے کہ ابویز بدنے بیان کیا کہ میں نے ابوعلی سندھی سے علم فنا اور علم تو حید حاصل کما اور انھوں نے مجھ سے سورہ فاتحہ اور سورہ اخلاص پڑھی۔

شخ ابوعلی سندهی بغدادی کاتعلق تیسری صدی ججری سے تھا۔ (تاضی)

ابوالفوارس صابوني سندهى مصرى

ان کا نام احمد بن محمد بن حسین بن سندهی ہے اور لقب منددیار مصر۔ ابوالفرح سندهی کوفی

ابوجعفرطوی نے "الفھرست" باب النی میں لکھا ہے کہ ابوالفرج سندھی کی ایک کتاب ہے۔ یہ بات ہمیں تلعکم کی ابوہ مام عن جمیدعن قاسم بن اساعیل عن احمد بن رباح کے حوالے سے ایک جماعت نے بتائی ۔ احمد بن رباح نے براہ راست ابوالفرج سے یہ بات نقل کی ۔ ملاحظہ ہو معجم المصنفین تذکرہ ابان بن محمد سندھی کوئی ۔ سے یہ بات نقل کی ۔ ملاحظہ ہو معجم المصنفین تذکرہ ابان بن محمد سندھی کوئی ۔

حاكم طوران: ابوالقاسم سندهي بصري

ان کا تذکرہ مؤرخ ابن حوال نے کیا ہے اور "طوران" کی بابت تقریح کی ہے کہ

یہاں کا حکمراں، ابوالقاسم نامی آیک بھری شخص ہے، یہی وہاں کا حاکم بھی ہے، قاضی بھی اور سید سالار عسا کر بھی ۔اس کے باوجوداسے تین اور دس میں تمیز کرنانہیں آتا۔

ان کا تعلق چوتھی صدی ہجری سے تھا۔ بہ ظاہر ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ان کی بیدائش اورنشو ونما سندھ میں ہو گی تھی۔ (قاض)

الوحمه مندى بغدادي

ابو محمد ہندی بغدادی نے امام فرج سے روایت حدیث کی اور خودا بومجر سے علی بن محمد مدائن نے روایت کی۔

علامہ بلاؤری نے "فتوح البلدان" میں لکھا ہے کہ مجھ سے علی بن محمد البدان" میں لکھا ہے کہ مجھ سے علی بن محمد البدائی نے بدروایت، امام فربح، ابو محمد ہندی کے حوالے سے بیان کیا کہ جب راجہ داہر مارا گیا تو سندھ پر محمد بن قاسم کا غلبہ ہوا۔

علاوہ ازیں کوئی اور ہات ان کے متعلق معلوم نہ ہوسکی۔ یہ تیسری صدی ہجری سے تعلق رکھتے ہیں۔ (قاضی)

ابومحمر ديبلي بغدادي

خطیب بغدادی نے '' تاریخ بغداد' میں احمد بن حسین ابو محمد جربری متوفی اساھ کے تذکرے میں۔ ان کا شار کبارصوفیہ میں ہوتا تھا اور جنید بن محمد بغدادی بھی ان کا بعداحتر ام کرتے تھے۔ لکھا ہے کہ ابوعبدالرحمٰن کا کہنا ہے کہ میں نے ابوسعید بن ابوحاتم سے سناوہ کہدرہے تھے کہ ابو محمد دیبلی نے بتایا کہ وفات سے بچھ پہلے ہم نے دریافت کیا کہ سلوک واحسان کے سلسلے میں آپ کے بعد ہم کس کے یاس بیٹھیں؟ فر مایا ابو محمد جربری کے۔

ابو گھر دیبلی، حضرت جنید بغدادی کے اجل خلفاء میں سے تھے اور تیسری صدی ہجری سے تعالی رکھتے تھے۔ (قاضی)

ابومعشر سندهى

علامه دولانی نے "کتاب الکنی والاسماء" میں ان کی بابت صرف اتنا لکھا ہے: ابومعشر سندھی مولی ابن ہاشم -

ابوقبيل مندي

کشف الظنون میں تحریب کہ سی التوهم فی الأمراض والعلل'' ابوقبیل ہندی کی ہے۔

ابوہندی

امام رازی نے "کتاب المجوح و التعدیل" میں ان کے بارے میں لکھا
ہے کہ ابوہ ندی نے حضرت انس رضی اللہ عنہ ہے روایت کی ہے ادران سے ابوعاصم
نبیل نے اور لکھا ہے کہ بیہ بات میں نے خودا بیخ والدسے تی ہے۔
لام ذہبی نے "میزان الاعتلال" میں لکھا ہے کہ ابوہ ندی نے حضرت انس بن مالک
سے حدیث "المطیر" کی روایت کی ہے ادران سے ابوالقاسم نے ۔ بیغیر معروف ہیں۔
ابوالہ ندی ثانی

امام ابو حاتم رازی ان کی بابت لکھتے ہیں کہ ابوالہندی نے ابوطالوت سے
ساع کیا ہے اور ان سے معتمر نے اور بیکہ بیہ بات میں نے اپنے والدسے نی ہے۔
امام ذہبی نے لکھا ہے کہ ابوالہندی بید دوسرے ہیں، انہوں نے ابوطالوت
سے اور ان سے معتمر بن سلیمان نے روایت حدیث کی ہے۔ مگر غیرم مروف ہیں۔

ابو مندي کوفي ، شاعر

ابن فعل الله عمرى في مسالك الابصار في ممالك الأمصار "كاندر

سجستان کی شراب کی دوکان کے بیان میں لکھاہے کہ جب ابوہندی کو سجستان ' بھیج دیا گیا تو وہ شراب کی دوکان پر ہی رہتا اور اپنے ایک ہم نشین کے ساتھ شراب پیا کرتا۔ ایک روز دونوں نے اتنی زیادہ شراب پی لی کہ بے ہوش ہو گئے اور نیند آگئی۔ جب شیح کی ہوا چلی تو ابوہندی کی آ بھی کھی ۔ دیکھا شراب کا مطا گر بڑا ہوا ہے اور این میں تھوڑی سی شراب نے رہی ہے۔ چناں چہ مطے کوسیدھا کر کے گلاس میں شراب انڈیلی اور اپنے ہمنشین کے یاس آ کراسے ادھرادھر سے حرکت دی اور چند اشعار کے۔(۱)

جیرہ کے ایک شراب فانے کے تذکرے میں لکھاہے کہ عون، خوش طبع، خوش نوش اور خوش پوشاک تھا۔ کوفہ کے نوجوان اس کی دوکان پر شراب پینے اور اس کے مقابلے میں کسی دوسرے کو ترجیح نہیں دیتے تھے۔ ایک رات، ابو ہندی شاعر نے بھی اس کے یہاں شراب پی۔ تا آل کہ صادق ہوگئی اور مرغ نے بانگ دینی شروع کردی۔وہ یوم شک تھا۔ جب ابو ہندی سے کہا گیا کہ بیدرمضان کا دن ہے تو اس نے جواب میں پیشعر پڑھا:

شربت النحمر فی رمضان حتی الله و ایت البدر للشعری شریکا فقال اخی : الدیوك منادیات فقلت له: وما یدری الدیوكا(۲) فقال اخی : الدیوك منادیات فی فقلت له: وما یدری الدیوكا(۲) در میں نے ماہ رمضان میں آئی شراب لی لی کہ بدر منیر شعری ستاره کا بم پلے نظر آیا۔ میرے بھائی نے کہا کہ مرغ اعلان کررہے ہیں، میں نے اس سے کہا مرغوں کوکیا خبرے ''۔

ابو ہندی، ممتاز اور معروف ومشہور شاعر تھا۔ اس نے اپنے وطن اور اپنی عادات واطوار کی بابت ان اشعار کی مدوسے خود ہی بتادیا۔ بیمتقد مین شعراء میں سے ہے۔ (تاضی)

⁽۱) یمبال پانچ اشعار درج سے چنھیں ترجمہ پی نظرانداز کر دیا گیاہے۔(ع یہ بہتوی) (۲) یمبال کل پانچ اشعار حضرت قاضی صاحبؒ کے نقل کیے ہتے۔ بندے نے صرف دوشعر ذکر کرنے پراکتفاء کیاہے۔(ع یہ بہتوی)

ابوموسى ديبلي بغدادي

علامه ابن الجوزگ نے صفة الصفوة "كاندر، مشهورومعروف زابدوعا بدحفرت ابويزيد بسطاى كے حالات ميں ايك حديث قال كى ہے جومع سندومتن درج ہے:

"أخبرنا محمد بن أبى منصور، قال أخبرنا المبارك بن عبدالجبار، قال أنا محمد بن على الصورى، قال حدثنا أحمد بن الحسن المالكي، قال : نا على بن جعفر البغدادى قال : قال أبو موسى الديبلى ابن أخت أبى يزيد البسطامي، أنبانا أبو يزيد البسطامي، يعنى طيفور بن عيسى، قال : أنبانا محمد بن منصور الطوسى، قال : أخبرنا سفيان بن عيينة عن محمد بن سوقة عن نافع بن جبير عن أم سلمة قالت:

"ذكر رسول الله عليه الجيش الذي يحسف بهم، فقال أم سلمة : لعل فيهم المكرة، قال : إنهم يبعثون على نياتهم"

"الله كرسول سلى الله عليه وسلم في ال تشكر كالذكرة فرمايا، جيه زين مين وحنساديا جائد كارس برجفزت ام سلمه رضى الله عنها في عرض كيا منايد وه لوگ مكاروريا كاربول مي تو آب صلى الله عليه وسلم في فرمايا: انفيس ان كي نيتول كر اعتبار سے دوباره زنده كيا جائے گا"۔

علامہ ابن الجوزی نے اپنی اس کتاب میں ابوموس دیبلی کے حوالے سے شخ ابویزید بسطامی کے متعددا قوال ذکر کئے ہیں، جودرج ذیل ہیں:

ا-ابوموی دیبلی کابیان ہے کہ میں نے حضرت ابویزید کوفر ماتے ہوئے سنا کہ سارے لوگ حساب و کتاب سے نیج رہے اور بھاگ رہے ہوں گے۔ مگر میں اللہ تعالی سے عرض کروں گا کہ میراحساب لے۔ جب ان سے دریا فت کیا گیا ایسا کیوں؟

تو فرمایا شایداللہ تعالی اس دوران 'عبدی '' اپنابندہ کہہ کر جھے مخاطب فرما کیں اوراس پر میں ' لبیک' کہوں۔اللہ رب العزت کا جھے' عبدی ' کہنامیرے نزدیک دنیا و مافیہا ہے کہیں زیادہ اچھاہے۔اس کے بعداللہ تعالی کی جومرضی ہوفیصلہ کریں۔

۲-ابوموی دیبلی کابیان ہے کہ میں نے ایک شخص کوسنا کہ وہ حضرت ابویزید سے عرض کرر ہا تھا کہ آب مجھے کوئی ایساعمل بتادیں، جس کے باعث جھے اللّٰد کا تقرب حاصل ہوجائے فر مایا اولیاء اللّٰد ہے محبت کروتا کہ وہ تم سے محبت کریں۔ اس لیے کہ اللّٰد رب العزت اولیاء کے قلوب پرنظر ڈ النّا ہے، ممکن ہے کہ اپنے ولی کے قلب میں اسے تمہارانام ملے اور اس پرتمہاری مغفرت فرما دے۔

س- کہتے ہیں کہ میں نے حضرت ابویز یدسے سنا کہ میرا قلب آسان پر لے جایا گیا۔ جہال طواف اور گھو منے پھر نے کے بعد واپس آیا۔ اس پر میں نے دریا فت کیا اپنے ساتھ آپ کیا لے کرآئے ؟ فرمایا محبت اور دضائے الہی۔

۳-وہی حضرت ابو ہزید بسطامی کے حوالے سے بیان کرتے ہیں کہ انھوں نے فرمایا جب میں نے دیکھا کہ دنیا میں تولوگ نکاح، کھانے اور پینے سے لذت اندوز ہور ہور ہے ہیں اور آخرت میں منکوح اور ملذوذ سے لطف اندوز ہول گے تو میں نے دنیا میں توایق لذت کا بہامان ، ذکر خدا کواور آخرت میں اللہ کی طرف دیکھنے کو بنالیا۔ (۱)

ابوموی دیبلی بغدادی، حضرت شخ ابویزید بسطای متوفی ۲۷ه کےخواہر زادہ اور تیسری صدی ہجری کی ممتاز شخصیات میں سے تھے۔ مگر مجھے ان کے مزید حالات معلوم نہ ہوسکے۔ (تاض)

**

⁽۱) چند اور اتوال بھی حفرت تامنی ماحب ؓ نے نقل کئے تھے، گر اختماد کے چین نظر احتر نے حذف کرویے۔(ع)د بستوی)

بإبالابناء

ابن الاعرابي سندهي كوفي لغوي

ان کا نام محمد بن زیاد ہے، کنیت ابوعبداللہ، ابن الاعرابی سے مشہور بیں متازلغت دال گزرے ہیں۔

ابن ابوقطعان ديبلي

ان كانام الوالقاسم شعيب ن خدد يلى ب-

ابن خامدو يبلي

ان کااسم گرامی حسن بن حامد بن حسن دیبلی ہے۔

ابن دهن مندي بغدا دي

ابن ندیم نے 'الفہرست' میں کھا ہے کہ ابن دھن شفا فانہ ترجمہ کتب کا گراں تھا۔ اس نے ایک کتاب کا ہندوستانی زبان سے، عربی زبان ہیں ترجمہ کیا تھا۔ ایک دوسری جگہ کھا ہے کہ 'استا کر الجامع' نامی کتاب، ابن دھن کی تشریح ہے۔ اس طرح ' سندستاق' بمعنی (صفوہ النجع) بھی شفا خانہ 'برا مکہ کے مگراں ابن دھن کی تفییر ہے۔

ایبالگتاہے کہ معروف طبیب ابن دھن ہندی دوسری صدی ججری سے تعلق رکھتاہے۔(تاضی)

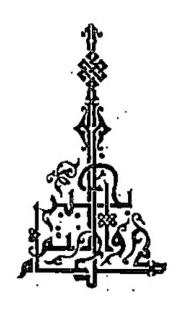
ابن السندى بغدادي

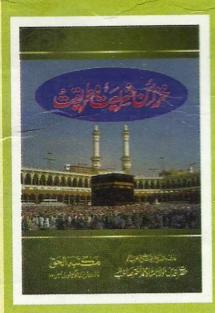
ان کا بورا نام یہ ہے: ابو براحرین قاسم بن سیالبیع۔ ابن السندھی سے • شہور ہیں ۔

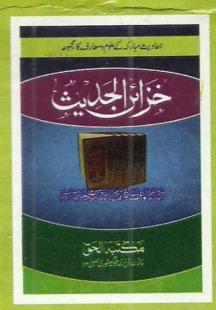
ابن قمانس مندي

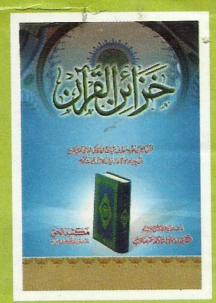
مشہور ومعرد ف ہندوستانی طبیب ''شانات'' ہی ابن قمانص کے نام سے جانا جاتا تھا۔

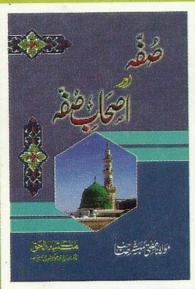
> ا بن الہندی ان کا نام احمد بن سعید مالکی ہمدانی ہے۔

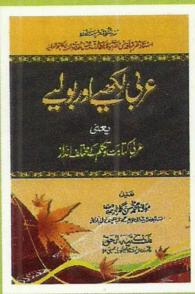




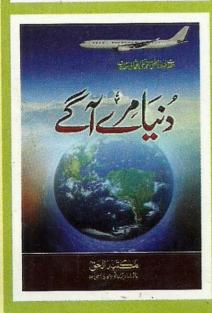


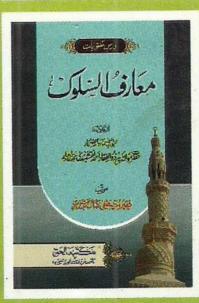


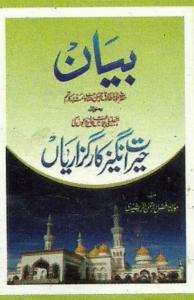












Graphics

مُحَكِّىنِ الْحُونُ مُحَكِّىنِ الْحُونُ مُحَكِّىنِ الْحُونُ مُحَلِّى الْحُونُ مُعْلَى الْحُونُ مُعْلِمُ الْحُونُ الْحُونُ مُعْلِمُ الْحُونُ مُعْلِمُ الْحُونُ مُنْ الْحُونُ مُعْلِمُ الْحُونُ ال

310/-